प्रज्ञापनासूत्र

प्रथम खंड समाप्त

ज्जवेहि य छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—'जहन्नगुणकालयाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जहा कालवन्नपज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वन्नगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा जाव अजहन्नमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। सेत्तं रूविअजीवपज्जवा। सेत्तं अजीवपज्जवा।

पन्नवणाए भगवईए पञ्चमं विसेसपयं समत्तं ५।

स्पर्शपर्याय वडे छ स्थान पतित छे. ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के 'जघन्यकाळावर्णवाळा पुद्गल द्रव्यना अनन्त पर्यायो छे.' एम उत्कृष्टकाळावर्णवाळा संबंधे जाणवुं. मध्यमकाळावर्णवाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे जेम काळावर्ण पर्यायोनी वक्तव्यता कही तेम बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी वक्तव्यता कहेवी, यावत्—मध्यमरुक्ष पुद्गलद्रव्य स्वस्थानने आश्रयी छस्थानपतित होय छे. एम रूपी अजीवपर्यायो कह्या. एम अजीवपर्यायो कह्या.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां पांचमुं विशेषपद समाप्त.

३३. जहन्नठिइयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता० । से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! जहन्नठिइए पोग्गले जहन्नठिइयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइअट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईएवि चउट्ठाणवडिए।

३४. जहन्नगुणकालयाणं भंते ! पोग्गलाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता० । से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पोग्गले जहन्नगुणकालयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासप-

---

३३. जघन्यस्थितिवाळा पुद्गलो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य जघन्यस्थितिवाळा पुद्गल द्रव्यनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थानपतित छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थानपतित छे, स्थिति वडे तुल्य छे, वर्णादि अने आठ स्पर्शपर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा पुद्गलो संबंधे जाणवुं. मध्यस्थितिवाळा सबंधे पण एमज समजवु. परन्तु ते स्थिति वडे चतुःस्थानपतित होय छे.

३४. जघन्यकाळावर्णवाळा पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यकाळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य जघन्यकाळावर्णवाळा पुद्गल द्रव्यनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थानपतित छे, अवगाहना अने स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे, काळावर्णपर्यायो वडे तुल्य छे, बाकीना वर्ण, गंध, रस अने

हणए पोग्गले जहन्नोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लफासेहिं य छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, नवरं ठिईए तुल्ले। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते! पोग्गलाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता०। से केणट्ठेणं०? गोयमा! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइअट्ठफासपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिए।

---

३२. जघन्यअवगाहनावाळा पुद्गलो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यअवगाहनावाळुं पुद्गलद्रव्य जघन्यअवगाहवाळा पुद्गलद्रव्यनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे तुल्य छे, अने स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे. वर्णादि अने आठ स्पर्श पर्याय वडे छस्थान पतित छे. उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबंधे पण एमज समजवुं, परंतु स्थिति वडे तुल्य छे. हे भगवन्! अजघन्यअनुत्कृष्ट अवगाहनावाळा पुद्गलो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! अजघन्यअनुत्कृष्टअवगाहनावाळो पुद्गलस्कन्ध अजघन्यअनुत्कृष्टअवगाहनावाळा पुद्गलस्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे, प्रदेशस्वरूपे छस्थानपतित छे, अवगाहना वडे चतुःस्थानपतित छे अने स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. वर्णादि अने आठ स्पर्श पर्याय वडे छस्थान पतित छे.

घन्नगंधरसउवरिल्लचउफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसपएसियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता०। से केणट्ठेणं भंते ! एव वुचइ ? गोयमा ! उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइअट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। अजहन्नमणुक्कोसपएसियाणं भंते ! खंधाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता०। से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसपएसिए खंधे अजहन्नमणुक्कोसपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइअट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए।

३२. जहन्नोगाहणगाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता०। से केणट्ठेणं० ? गोयमा ! जहन्नोगा-

---

स्कन्धो संबधे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! उत्कृष्टप्रदेशवाळो स्कंध उत्कृष्टप्रदेशवाळा स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे. अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थान पतित छे. वर्णादि वडे तथा आठ स्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित होय छे. मध्यमप्रदेशपरिमाणवाळा स्कन्धोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! मध्यमप्रदेशवाळो स्कन्ध मध्यमप्रदेशवाळा स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहना अने स्थितिरूपे चतुःस्थान पतित छे अने वर्णादि अने आठ स्पर्शपर्यायो वडे छस्थान पतित छे.

सगुणसीतेवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं उसिणनिद्धलुक्खे जहा सीते। परमाणुपोग्गलस्स तहेव पडिवक्खो सव्वेसिं न भण्णइ त्ति भाणियव्वं।

३१. जहन्नपएसियाणं भंते! खंधाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नपएसिए खंधे जहन्नपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए। ठिईए चउट्ठाणवडिए।

अने स्थितिरूपे चतुःस्थान पतित होय छे. वर्णादिपर्याय वडे छस्थान पतित छे, शीतस्पर्श वडे तुल्य छे, बाकीना सात स्पर्शपर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टशीतस्पर्शवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमशीतस्पर्शवाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे जेम शीतस्पर्श संबन्धे कह्युं तेम उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्श संबन्धे जाणवुं. परमाणुपुद्गल संबन्धे तेमज समजवुं. परन्तु सर्व परमाणुओने प्रतिपक्ष वर्णादि न कहेवा.

३१. जघन्यप्रदेशवाळा स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यप्रदेशवाळो स्कन्ध जघन्यप्रदेशवाळा स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे. अवगाहनारूपे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो प्रदेश अधिक होय. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे. वर्ण, गंध, रस अने उपरना चार स्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित होय छे. उत्कृष्टप्रदेशवाळा

हन्नगुणसीयस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले, उसिणनिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणसीतेवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एव चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहन्नगुणसीताणं अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! जहन्नगुणसीते अणतपएसिए जहन्नगुणसीतस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणसीतेवि । अजहन्नमणुक्को-

---

जघन्यशीतगुणवाळा असंख्यातप्रदेशिक पुद्गलो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यशीतगुणवाळो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यशीतगुणवाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे, अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थान पतित छे. वर्णादिपर्याय वडे छस्थान पतित छे. शीतस्पर्शपर्याय वडे तुल्य छे अने उष्ण, स्निग्ध अने रूक्षस्पर्शपर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टशीतस्पर्शवाळा संबंधे जाणवुं. मध्यमशीतस्पर्शवाळा संबन्धे पण एमज समजवु. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. जघन्यशीतगुणवाळा अनंतप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यशीतगुणवाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यशीतगुणवाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे. अवगाहना

जाव दसपएसियस्स नव पएसा वुड्ढिज्जंति। जहन्नगुणसीयाणं संखेज्जपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणसीते संखिज्जपएसिए जहन्नगुणसीतस्स संखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए, सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले, उसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणसीयाणं असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणसीते असंखिज्जपएसिए ज-

---

वर्ण, गंध अने रसपर्याय वडे छस्थान पतित होय छे. शीत स्पर्श वडे तुल्य होय छे. उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षस्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टशीतगुणवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमशीतगुणवाळा संबन्धे पण एमज समजवुं, परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. एम यावत्–दशप्रदेशिक स्कन्ध सुधी जाणवुं, परन्तु अवगाहना वडे प्रदेशनी वृद्धि करवी. यावत् दशप्रदेशिकने नव प्रदेशोनी वृद्धि करवी. जघन्यशीतगुणवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यशीतगुणवाळो संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यशीतगुणवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे द्विस्थान पतित छे. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि वडे छस्थान पतित छे, शीतस्पर्शपर्याय वडे तुल्य छे, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षपर्याय वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टशीतगुणवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमशीतगुणवाळा संबंधे एमज समजवुं, परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे.

सगुणसीतेवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणसीताणं दुपदेसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणसीते दुपएसिए जहन्नगुणसीतस्स दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसअब्भहिए। ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले, उसिणनिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपएसिए, णवरं ओगाहणट्ठयाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा,

---

शीतगुणवाळा परमाणुपुद्गल संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यशीतगुणवाळो परमाणु जघन्यशीतगुणवाळा परमाणुनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्ण, गंध अने रस वडे छस्थान पतित छे, शीत स्पर्श वडे तुल्य छे. उष्ण स्पर्श होतो नथी. स्निग्ध अने रुक्षस्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टशीतस्पर्शवाळा संबंधे जाणवुं. मध्यमशीतगुणवाळा संबंधे पण एमज समजवु, परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. जघन्यशीतगुणवाळा द्विप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यशीतगुणवाळो द्विप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यशीतगुणवाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे. अवगाहना वडे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय, अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो प्रदेश अधिक होय. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे,

कक्खडस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए, कक्खडफासपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकक्खडेवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकक्खडेवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं मउयगुरुयलहुएवि भाणियव्वे। जहन्नगुणसीयाणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणसीये परमाणुपोग्गले जहन्नगुणसीतस्स परमाणुपुग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए, सीयफासपज्जवेहि य तुल्ले, उसिणफासो न भण्णति, निद्धलुक्खफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीएवि। अजहन्नमणुक्को-

---

ए प्रमाणे नील (लीला) राता, पीळा, धोळा, सुरभिगंध, दुरभिगंध, तिक्त (कडवा), कटु (तीखा) कषाय (तुरा), अम्ल (खाटा) अने मधुररसपर्याय वडे वक्तव्यता कहेवी. परन्तु सुरभिगंधवाळा परमाणुपुद्गलने दुरभिगंध न कहेवो अने दुरभिगंधवाळाने सुरभिगंध न कहेवो. तिक्तने बाकीना रस न कहेवां. ए प्रमाणे कटुकादि संबन्धे पण समजवुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. जघन्यकर्कशगुणवाळा अनंतप्रदेशिक स्कन्धो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यकर्कशगुणवाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यकर्कशगुणवाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहना अने स्थितिरूपे चतुःस्थान पतित छे. वर्ण, गंध, अने रस वडे छस्थान पतित छे. कर्कशस्पर्शपर्याय वडे तुल्य छे अने बाकीना सात स्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकर्कशगुणवाळा संबंधे जाणवुं. मध्यमकर्कशगुणवाळा संबंधे एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थानमां अपेक्षाए छस्थान पतित होय छे. एम मृदु, गुरु अने लघु स्पर्श संबंधे पण कहेवुं. जघन्य-

जहन्नगुणकालए अणंतपएसिए जहन्नगुणकालयस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नादिअट्ठफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं नीललोहियहालिद्दसुक्किल्लसुब्भिगंधदुब्भिगंधतित्तकडुकसायअंबिलमहुररसपज्जवेहि य वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधो न भण्णइ, दुब्भिगंधस्स सुब्भिगंधो न भण्णइ, तित्तस्स अवसेसं न भण्णति, एवं कडुयादीणवि, अवसेसं तं चेव। जहन्नगुणकक्खडाणं अणंतपएसियाणं खंधाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणकक्खडे अणंतपएसिए जहन्नगुण-

---

प्रदेशरूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे, काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे अने बाकीना वर्णादि अने उपरना चार स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. अवगाहना वडे चतुःस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळावर्णवाळा संबन्धे जाणवु. मध्यमकाळावर्णवाळा संबन्धे एमज समजवु. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थानपतित होय छे. जघन्यकाळावर्णवाळा अनंतप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यकाळावर्णवाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जघन्य-काळावर्णवाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे. अवगाहनारूपे चतुःस्थानपतित छे. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे. बाकीना वर्णादि अने आठ स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळावर्णवाळा माटे पण समजवु. मध्यमगुणकाळावर्णवाळा संबन्धे पण एमज समजवु. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित छे.

चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । एवं अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए असंखिज्जपएसिए जहन्नगुणकालगस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णादिउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा !

प्रदेशिक स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्य काळावर्णवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यकाळावर्णवाळा संख्यात प्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे द्विस्थानपतित छे, स्थिति वडे चतुःस्थानपतित छे, काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे अने बाकीना वर्णादि वडे तथा उपरना चार स्पर्श वडे छ स्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळावर्णवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमकाळावर्णवाळा संबन्धे एमज समजवुं, परन्तु स्वस्थानने आश्रयी षट्स्थानपतित होय छे. जघन्यकाळावर्णवाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जघन्यकाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धना अनन्त पर्यायो छे ? हे गौतम ! जघन्यकाळावर्णवाळो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यकाळावर्णवाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे,

भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए दुपएसिए जहन्नगुणकालयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसअब्भहिए। ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसवण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपएसिए, नवरं पएसपरिवुड्ढी ओगाहणाए तहेव। जहन्नगुणकालयाणं भंते! संखिज्जपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए संखिज्जपएसिए जहन्नगुणकालगस्स संखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए

समजवुं. परन्तु स्वस्थानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. जघन्यकाळावर्णवाळा द्विप्रदेशिक स्कन्ध सबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम ! जघन्यकाळावर्णवाळो द्विप्रदेशिक स्कन्ध जघन्य काळावर्णवाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे. अवगाहना वडे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो प्रदेश अधिक होय. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित, काळावर्णपर्याय वडे तुल्य अने बाकीना वर्णादि अने उपरना चार स्पर्शवडे छस्थानपतित होय छे. एम उत्कृष्टकाळावर्णवाळा सबन्धे जाणवुं. मध्यमकाळावर्णवाळा सबन्धे एमज जाणवु. परन्तु स्वस्थान—मध्यमकाळवर्णने आश्रयी छस्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे यावत् दशप्रदेशिक स्कन्ध सुधी जाणवु. परन्तु अवगाहनामां ते प्रमाणेज प्रदेशनी वृद्धि करवी. जघन्यकाळावर्णवाळा सख्यात-

डिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइअट्ठफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए।

३०. जहन्नगुणकालयाणं परमाणुपुग्गलाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणकालए परमाणुपुग्गले जहन्नगुणकालगस्स परमाणुपुग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसा वण्णा नत्थि। गंधरसफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। एवमजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि, णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाणं भंते! दुपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं

द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे, स्थिति वडे तुल्य छे, वर्णादि तथा आठ स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमस्थितिवाळा संबन्धे एमज जाणवुं, परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे.

३०. जघन्यकाळावर्णवाळा परमाणुपुद्गल संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्य काळावर्णवाळो पुद्गलपरमाणु जघन्यकाळावर्णवाळा परमाणुपुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थानपतित छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे. बाकीना वर्णो नथी. गंध, रस अने बे स्पर्शपर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळावर्णवाळा परमाणु संबन्धे जाणवुं. मध्यमकाळावर्णवाळा संबन्धे पण एमज

डिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवर ठिईए चउट्ठाणवडिए । जहन्नठिइयाणं असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नठिइए असंखिज्जपएसिए जहन्नठिइयस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइए एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए । जहन्नठिइयाणं अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नठिइए अणंतपएसिए जहन्नठिइयस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए, छट्ठाणव-

---

प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमस्थितिवाळा संबन्धे पण एमज समजवु. परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. जघन्यस्थितिवाळा असंख्यातप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यस्थितिवाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए. द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित होय छे, स्थिति वडे तुल्य छे, वर्णादि अने उपरना चार स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमस्थितिवाळा संबन्धे पण एमज समजवु, परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे. जघन्यस्थितिवाळा अनंतप्रदेशिक स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यस्थितिवाळा अनन्त प्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए

पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएस-अब्भहिए । ठिईए तुल्ले, वण्णाइचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए । एवं जाव दसपएसिए, नवरं पएसपरिवुड्ढी कायव्वा । ओगाहणट्ठयाए तिसुवि गमएसु जाव दसपएसिए, एवं पएसा परिवड्ढिज्जंति । जहन्नठिइयाणं भंते ! संखिज्जपएसियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नठिइए संखिज्जपएसिए खंधे जहन्नठिइयस्स संखिज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणव-

---

स्कन्ध जघन्यस्थितिवाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे. अवगाहनारूपे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेशन्यून अने अधिक होय तो प्रदेश अधिक अवगाहना होय. स्थिति वडे तुल्य, वर्णादि अने चार स्पर्श वडे छस्थान पतित होय. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमस्थितिवाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे यावत्–दशप्रदेशिक सुधी जाणवुं. परन्तुं प्रदेशनी वृद्धि करवी. अवगाहना वडे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट–ए त्रणे पाठमां यावत्–दशप्रदेशिकने प्रदेशनी वृद्धि करवी. जघन्यस्थितिवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यस्थितिवाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे द्विस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे द्विस्थान पतित छे. स्थिति वडे तुल्य छे. वर्णादि अने चार स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए

तयएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए।

२९. जहन्नठिइयाणं भंते! परमाणुपुग्गलाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेण भंते! एवं वुचइ? गोयमा! जहन्नठिइए परमाणुपोग्गले जहन्नठिइयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तुल्ले, वण्णाइदुफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिइयाणं दुपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ? गोयमा! जहन्नठिइए दुपएसिए जहन्नठिइयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

---

मध्यमअवगाहनावाळा अनन्त प्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे. वर्णादि अने आठ स्पर्श वडे छस्थान पतित छे.

२९. जघन्यस्थितिवाळा परमाणुपुद्गलो सबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यस्थितिवाळो परमाणुपुद्गल जघन्यस्थितिवाळा परमाणुपुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे, अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे तुल्य छे. वर्णादि अने बे स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. एम उत्कृष्टस्थितिवाळा परमाणु सबन्धे पण जाणवुं. मध्यमस्थितिवाळा सबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे. जघन्यस्थितिवाळा द्विप्रदेशिक स्कन्ध सबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहो छो? हे गौतम! जघन्यस्थितिवाळो द्विप्रदेशिक

खंधे जहन्नोगाहणस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए,ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव,नवरं ठिईएवि तुल्ले। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए अणंतपएसिए खंधे अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगस्स अणं-

---

एमज जाणवुं. परन्तु स्वस्थान–मध्यम अवगाहनाने आश्रयी चतुःस्थानपतित छे. जघन्यअवगाहनावाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यअवगाहनावाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि तथा उपरना चार स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. उत्कृष्ट अवगाहनावाळो स्कन्ध पण एमज जाणवो. परन्तु स्थिति वडे तुल्य छे. मध्यमअवगाहनावाळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! मध्यमअवगाहनावाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध

घातनी अवस्थामां कर्मस्कन्ध जाणवो. ते वचेनो पण दंड, कपाट, मंथान अने अन्तर पूरवारूप चार समयनो काळ छे, माटे तुल्य काळ छे. बाकीना सूत्रो सुगम होवाथी पदनी समाप्ति पर्यन्त पूर्वे कहेली भावनाने अनुसारे स्वयमेव उपयोगपूर्वक विचारवां. परंतु जघन्य प्रदेशवाळा स्कन्धो द्विप्रदेशिक अने उत्कृष्टप्रदेशवाळा स्कन्धो सर्वोत्कृष्ट अनन्तप्रदेशवाळा जाणवा.

आचार्यश्रीमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकामां विशेषपदनो अनुवाद समाप्त.

मणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नोगाहणए असंखिज्जपएसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स असंखिज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसोगाहणएवि। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! अणंतपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नोगाहणए अणंतपएसिए

छे, अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थानपतित छे, वर्णादि तथा चार स्पर्श पर्याय वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवगाहनावाळा स्कन्ध संबन्धे जाणवुं. मध्यमअवगाहनावाळा स्कन्ध संबन्धे पण एमज जाणवुं. परन्तु स्वस्थान—मध्यम अवगाहनाने आश्रयी द्विस्थानपतित छे. जघन्यअवगाहनावाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यअवगाहनावाळो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यअवगाहनावाळा असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे चतुःस्थानपतित छे, अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थानपतित छे. वर्णादि तथा उपरना चार स्पर्शो वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवगाहनावाळा स्कन्ध संबन्धे जाणवुं. मध्यमअवगाहनावाळा स्कन्ध संबन्धे पण

सुगम होवाथी स्वयं उपयोग राखी विचारवुं. परन्तु अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी उत्कृष्ट अवगाहनाना विचारमां ते "स्थिति वडे तुल्य छे" उत्कृष्टअवगाहनावाळो अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध ते कहेवाय के जे समस्त लोकव्यापी होय ते अचित्त महास्कन्ध के केवलिसमुद्-

जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसअब्भहिए । एवं जाव दसपएसिए णेयव्वं, णवरं अजहन्नुक्कोसोगाहणए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपएसियस्स सत्त पएसा परिवड्ढिज्जंति । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! संखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए संखेज्जपएसिए जहन्नोगाहणगस्स संखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइचउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । अजहन्न-

---

अवगाहनावाळो चतुःप्रदेशिक स्कन्ध पण जाणवो. परन्तु अवगाहना वडे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो प्रदेश अधिक होय. ए प्रमाणे यावत्–दश प्रदेशिक स्कन्ध सुधी जाणवुं. परन्तु मध्यम अवगाहना संबंधे प्रदेशनी वृद्धि करवी. यावद्–दस प्रदेशिकने सात प्रदेशोनी वृद्धि करवी. जघन्यअवगाहनावाळा संख्यातप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध जघन्यअवगाहनावाळा संख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे द्विस्थानपतित

अवगाहनाने आश्रयी प्रदेशनी वृद्धि करवा वडे वृद्धि अने हानि त्यां सुधी कहेवी यावत् दशप्रदेशिक स्कन्धमां सातप्रदेशनी वृद्धि करवी. ते आ प्रमाणे कहेवी–'अजघन्यअनुत्कृष्ट–मध्यमअवगाहनावाळो दसप्रदेशिक स्कन्ध मध्यमअवगाहनावाळा दसप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए अवगाहनारूपे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो एक प्रदेश, बे प्रदेश, यावत्–सात प्रदेश न्यून होय. जो अधिक होय तो एक प्रदेश, बे प्रदेश, यावत्–सात प्रदेश अधिक होय. बाकीनुं सूत्र

हणओ नत्थि । जहन्नोगाहणयाणं भंते ! तिपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहा दुपएसिए जहन्नोगाहणए, उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि । जहन्नोगाहणयाणं भंते ! चउपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! जहा जहन्नोगाहणए दुपएसिए तहा जहन्नोगाहणए चउप्पएसिए, एवं जहा उक्कोसोगाहणए दुपएसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि । एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि चउप्पएसिए, णवर ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले, सियमब्भहिए ।

द्विप्रदेशिक स्कन्ध नथी. जघन्यअवगाहनावाळा त्रिप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्ता पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जेम जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक स्कंध संबन्धे कह्युं तेम जाणवुं. उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. ए प्रमाणे मध्यमअवगाहनावाळा संबन्धे पण जाणवुं. जघन्यअवगाहनावाळा चतुःप्रदेशिक पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जेम जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक संबन्धे कह्युं तेम जघन्यअवगाहवाळा चतुःप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पण कहेवुं. जेम उत्कृष्टअवगाहनावाळो द्विप्रदेशिक स्कन्ध कह्यो तेम उत्कृष्टअवगाहनावाळो चतुःप्रदेशिक स्कन्ध पण कहेवो. एम मध्यम-

---

स्कन्धनी जघन्य अवगाहना एक प्रदेशरूप, मध्यम अवगाहना द्विप्रदेशरूप अने उत्कृष्ट अवगाहना त्रिप्रदेशरूप छे चतुःप्रदेशिक स्कन्धनी जघन्य एक प्रदेश, उत्कृष्ट चार प्रदेशरूप अने मध्यम अवगाहना द्विप्रदेश अने त्रिप्रदेशरूप एम बे प्रकारनी छे ज्यारे एम छे त्यारे मध्यमअवगाहनावाळो चतुःप्रदेशिक स्कन्ध मध्यम अवगाहनावाळा चतुःप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए जो न्यून होय तो अवगाहनामां एक प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो एक प्रदेश अधिक होय ए प्रमाणे पञ्चप्रदेशिकादि स्कन्धोमां मध्यम

२८. जहन्नोगाहणगाणं भंते ! दुपएसियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए दुपएसिए खंधे जहन्नोगाहणस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सेसवन्नगंधरसपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीयउसिणणिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'जहन्नोगाहणाणं दुपएसियाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव। अजहन्नमणुक्कोसोगा-

---

अनन्तगुण रुक्ष पुद्गलो सुधी कहेवी.

२८. जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो द्विप्रदेशिक स्कंध जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, काळावर्णपर्याय वडे, बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षपर्याय वडे छस्थान पतित छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं के जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक पुद्गलोना अनन्त पर्यायो कह्या छे. उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. मध्यमअवगाहनावाळा

---

२८. 'जहन्नोगाहणाणं भंते ! दुपएसियाणं' जघन्यअवगाहनावाळा द्विप्रदेशिक स्कन्धोना केटला पर्यायो होय छे ? इत्यादि. द्विप्रदेशिक स्कन्धनी जघन्य अवगाहना एक प्रदेशरूप छे अने उत्कृष्ट द्विप्रदेशरूप छे. अहीं वच्चे अन्तर नहि होवाथी मध्यम अवगाहना नथी. ए माटे कह्युं छे के–'अजहन्नमणुक्कोसोगाहणओ नत्थि' मध्यमअवगाहनावाळो द्विप्रदेशिक स्कन्ध नथी. त्रिपदेशिक

२७. एकगुणकालगाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! एकगुणकालए पोग्गले एकगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, अट्ठहिं फासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसगुणकालए। सखेज्जगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए। एवं असंखिज्जगुणकालएवि, नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए। एवं अनंतगुणकालएवि, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जहा कालवन्नस्स वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वन्नगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खे।

---

२७. एकगुणकाळा पुद्गलो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! एकगुणकाळा पुद्गल एकगुणकाळा पुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित, अवगाहनारूपे अने स्थिति रूपे चतुःस्थान पतित, काळा वर्ण पर्याय वडे तुल्य, अने बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा आठ स्पर्शपर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे दसगुण काळा पुद्गलो संबंधे जाणवु. सख्यातगुण काळा पुद्गलो संबंधे एमज जाणवु. परन्तु स्वस्थान–सख्यातगुणकाळावर्णने आश्रयी द्विस्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे असख्यातगुण काळा वर्णने आश्रयी जाणवु. परतु स्वस्थाननी अपेक्षाए चतुःस्थान पतित होय छे. एम अनन्तगुण काळापुद्गलो संबंधे जाणवु, परन्तु स्वस्थान–अनन्तगुण काळा वर्णने आश्रयी छ स्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे जेम काळा वर्णनी वक्तव्यता कही छे तेम बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी पण वक्तव्यता यावत्

२६. एगसमयठिइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगसमयठिइए पोग्गले एगसमयठिइयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते, ठितीए तुल्ले, वण्णाइअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए । एवं जाव दससमयठिईए । संखेज्जसमयठिइयाणं एवं चेव, णवरं ठिईए दुट्ठाणवडिए । असंखेज्जसमयठिइयाणं एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए ।

---

२६. एक समयस्थितिवाळा पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! एक समयस्थितिवाळा पुद्गल एक समयस्थितिवाळा पुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे, स्थिति वडे तुल्य छे, अने वर्णादि तथा आठ स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे यावत् दससमयस्थितिवाळा पुद्गल संबन्धे जाणवुं. संख्यातसमयस्थितिवाळा संबन्धे एमज जाणवुं. परंतु ते स्थिति वडे द्विस्थान पतित छे. असंख्यात समयस्थितिवाळा पुद्गलो संबन्धे एमज समजवुं. परन्तु ते स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय छे.

२५–२७. 'एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं भंते' हे भगवन् ! एक प्रदेशावगाढ पुद्गलोना केटला पर्यायो छे ? इत्यादि सूत्र छे. अहीं एक प्रदेशावगाढ पुद्गलो "द्रव्यरूपे तुल्य छे अने प्रदेशरूपे छ स्थान पतित होय छे." कारण के अमुक एक प्रदेशने आश्रयी रहेल परमाणु आदि पण द्रव्य छे, अने आ बीजा एक प्रदेशने आश्रयी रहेल द्विप्रदेशादिक स्कन्ध पण द्रव्य छे. माटे द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे. प्रदेशार्थरूपे षट्स्थान पतित छे. केमके अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनी पण एक आकाश प्रदेशने विषे अवगाहनानो संभव छे. बाकी बधुं सुगम छे. ए प्रमाणे स्थिति अने भावने आश्रयी सूत्रोनो उपयोग पूर्वक विचार करवो.

दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिं य छट्ठाणवडिए । असंखेज्जपएसोगाढाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढे पोग्गले असंखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए ।

छस्थान पतित छे. असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गलो संबन्धे पृच्छा.हे गौतम ! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि तथा आठ स्पर्श वडे छस्थान पतित छे.

अपेक्षाए बे प्रदेश अधिक छे ए प्रमाणे एक एक प्रदेशनी वृद्धि करता वडे चतुःप्रदेशादि स्कन्धने विषे हानि अथवा वृद्धि यावत् दसप्रदेशवाळा स्कंध सुधी कहेवी ते दस प्रदेशना स्कन्धने विषे आ प्रमाणे कहेवु—जो न्यून होय तो एक प्रदेश, बे प्रदेश, यावत्–नव प्रदेश न्यून होय, जो अधिक होय तो एक प्रदेश अधिक बे प्रदेश अधिक यावत्–नव प्रदेश अधिक होय ए बधो विचार पूर्वे कह्या प्रमाणे स्वय करवो ३ सख्यातप्रदेशिक सूत्रमा सख्यातप्रदेशिक स्कन्ध "अवगाहनारूपे द्विस्थानपतित होय छे" अने ते द्विस्थानक सख्यातभाग अने सख्यातगुण वडे जाणवा ४ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धमा "अवगाहना रूपे चतुः चार स्थानको होय छे" अने ते चार स्थानको असख्यातभाग, सख्यातभाग, सख्यातगुण अने असख्यातगुण वडे जाणवा ५ अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने विषे पण अवगाहनारूपे चार स्थानको जाणवा कारण के तेने अनन्त प्रदेशनी अवगाहनानो असभव होवाथी अनन्तभाग अने अनन्तगुण वृद्धि के हानिनो असभय छे

हणट्टयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं दुपएसोगाढेवि। संखिज्जं-पएसोगाढाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! संखेज्जपए-सोगाढे पोग्गले संखिज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए

पुद्गलो संबंधे जाणवुं. संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे द्विस्थान पतित छे. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि तथा उपरना चार स्पर्श वडे

न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. ज्यारे बन्ने द्विप्रदेशिक स्कन्धो द्विप्रदेशावगाढ-बे आकाशप्रदेशमां रहेला होय के एकप्रदेशावगाढ-एक आकाशप्रदेशमां रहेला होय त्यारे तेओ बन्ने तुल्य अवगाहनावाळा होय छे. ज्यारे तेमांनो एक स्कन्ध द्विप्रदेशावगाढ होय अने एक एकप्रदेशावगाढ होय त्यारे एकप्रदेशावगाढ स्कन्ध द्विप्रदेशागाढनी अपेक्षाए प्रदेशन्यून होय छे अने द्विप्रदेशावगाढ तेनी अपेक्षाए प्रदेशाधिक होय छे. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, त्रिप्रदेशिक स्कन्धना सूत्रमां "अवगाहना वडे कदाच न्यून होय"-इत्यादि. ज्यारे बन्ने त्रिप्रदेशिक स्कन्धो त्रिप्रदेशावगाढ, द्विप्रदेशावगाढ के एकप्रदेशावगाढ होय त्यारे ते अवगाहनावडे तुल्य छे, परंतु ज्यारे एक त्रिप्रदेशावगाढ के द्विप्रदेशावगाढ होय अने बीजो द्विप्रदेशावगाढ के एक प्रदेशावगाढ होय त्यारे द्विप्रदेशावगाढ अने एकप्रदेशावगाढ अनुक्रमे त्रिप्रदेशावगाढ अने द्विप्रदेशावगाढनी अपेक्षाए एक प्रदेश न्यून होय छे. अने त्रिप्रदेशावगाढ अने द्विप्रदेशावगाढ तेनी अपेक्षाए एक प्रदेश अधिक होय छे. ज्यारे एक त्रिप्रदेशावगाढ छे अने बीजो एकप्रदेशावगाढ छे त्यारे एकप्रदेशावगाढ स्कन्ध त्रिप्रदेशावगाढनी अपेक्षाए बे प्रदेश न्यून छे, अने त्रिप्रदेशावगाढ तेनी

रिह्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिए । अणंतपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ।

२५ एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगा-

---

अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! अनन्तप्रदेशिक स्कंध अनन्तप्रदेशिक स्कंधनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे छस्थानपतित, अवगाहनारूपे चतुःस्थानपतित, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित अने वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे छ स्थान पतित छे.

२५. एकप्रदेशावगाढ पुद्गलो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! एकप्रदेशावगाढ पुद्गल एकप्रदेशावगाढ पुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे,प्रदेशरूपे छस्थान पतित छे, अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि तथा उपरना चार स्पर्श वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे द्विप्रदेशावगाढादि

---

२५ परमाणुथी आरंभी असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध पर्यन्त तथा केटलाएक अनन्त प्रदेशिक स्कन्धोने तथा एक प्रदेशावगाढथी मांडी संख्यात प्रदेशावगाढ स्कन्धोने शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षरूप चार स्पर्शो होय छे माटे ते स्पर्शोवडे ज परमाणु वगेरे छस्थानपतित होय छे, परंतु बाकीना स्पर्शो वडे होता नथी *द्विप्रदेशिक स्कन्धना सजग्म द्विप्रदेशिक स्कन्ध अवगाहनारूपे कदाच

हीणत्ति । संखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए संखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे संखेज्जभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा, अह अब्भहिए एवं चेव । ओगाहणट्ठयाएवि दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! असंखिज्जपएसिए खंधे असंखिज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइउव-

---

संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध संख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे. प्रदेशरूपे कदाच न्यून, कदाच तुल्य के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो संख्यातमो भाग न्यून होय के संख्यातगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो एमज होय. अवगाहनारूपे द्विस्थानपतित होय. स्थिति वडे चतुःस्थानपतित होय. वर्णादि वडे तथा उपरना चार स्पर्श पर्याय वडे षट्स्थानपतित होय. असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो ? हे गौतम ! असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे तुल्य छे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे, वर्णादि वडे तथा उपरना चार स्पर्शपर्याय वडे छ स्थान पतित होय छे. अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! तेना

देश-प्रदेशरहित कहेवाय छे; परंतु काल अने भावरूपे अप्रदेश नथी. कारण के-"अपएसो दव्वट्ठयाए" द्रव्यार्थपणे अप्रदेश छे-एवुं शास्त्रनुं कथन छे. माटे काळ अने भाव वडे परमाणुना सप्रदेशपणामां कोइपण प्रकारे दोष नथी.

वडिए, चउहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहि य छट्ठाणवडिए। एवं तिपएसिएवि, नवरं ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे वा दुपएसहीणे वा, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए वा दुपएसमब्भहिए वा। एवं जाव दसपएसिए, नवरं ओगाहणाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपएसिए, णवरं नवपएस-

होय. ए प्रमाणे त्रिप्रदेशिक स्कंध संबंधे जाणवु. परन्तु अवगाहना वडे कदाच न्यून, कदाच तुल्य अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेश न्यून होय के बे प्रदेश न्यून होय. जो अधिक होय तो प्रदेश अधिक होय के बे प्रदेश अधिक होय. ए प्रमाणे दश प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहेवुं परन्तु अवगाहनामां प्रदेशनी वृद्धि यावत् दश प्रदेश सुधी करवी. अने अवगाहना नव प्रदेश न्यून जाणवी. संख्यातप्रदेशिक स्कंधो संबंधे पृच्छा हे गौतम! तेओना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम!

आदिनो विचार करवा योग्य छे आदि शब्दथी मध्यम अने उत्कृष्ट अवगाहना, जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट स्थिति तथा जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट काळा वगेरे वर्णादिनु ग्रहण करवु त्यारबाद 'जघन्यादिप्रदेशानाम्' पदथी जघन्यप्रदेशवाळा, उत्कृष्टप्रदेश वाळा अने अजघन्योत्कृष्टप्रदेशवाळानो विचार करवानो छे

तेमा प्रथम परमाणु आदिनो विचार करे छे-'परमाणुपोग्गलाणं भंते'! हे भगवन्! परमाणु पुद्गलोना केटला पर्यायो कह्या छे? इत्यादि परमाणुओ स्थितिवडे चतुःस्थानपतित होय छे कारण के परमाणु एक समयथी आरंभी असंख्याता काळ सुधी एक स्थळे रहे छे काळा वगेरे वर्णना पर्यायथी षट्स्थानपतित होय छे कारण के एक परमाणुना पण अनन्त पर्यायो अविरोधपणे होय छे (प्र०)—परमाणु प्रदेशरहित छे तो तेना अविरोधपणे अनन्त पर्यायो केम होय? अने अनन्त पर्यायो होय तो सप्रदेशपणानो प्रसंग प्राप्त थाय? (उ०)—वस्तुतत्त्वनु अज्ञान होवाथी उपरनी शंका अयुक्त छे परमाणुना द्रव्यरूपे अंशो नथी, माटे अम

अणंतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणंतभागअब्भहिए वा असंखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जभागअब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए वा असंखिज्जगुणअब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा। एवं अवसेसवन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। फासाणं सीयउसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'। दुपएसियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए। ठिईए चउट्ठाण-

ख्यातमो भाग, संख्यातमो भाग, संख्यातगुण, असंख्यातगुण के अनन्तगुण अधिक होय. ए प्रमाणे ते परमाणु बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्यायो वडे अने स्पर्शमां शीत, उष्ण स्निग्ध अने रुक्षपर्याय वडे पण छस्थान पतित होय छे. ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के 'परमाणुपुद्गलोना अनन्त पर्यायो कह्या छे.' द्विप्रदेशिक स्कंधो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेना अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! द्विप्रदेशिक स्कन्ध द्विप्रदेशिक स्कन्धनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे. अवगाहना रूपे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो प्रदेशन्यून (अवगाहना) होय, जो अधिक होयतो प्रदेशअधिक होय. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित होय. वर्णादि वडे अने उपरना चार स्पर्श वडे छस्थान पतित

प्रथम एकादि क्षेत्रप्रदेश–आकाशप्रदेश वडे संगत–सहित परमाणु आदिनो विचार करवानो छे. त्यारपछी 'कालप्रदेशो–काळना एकादि समयो वडे, त्यारपछी भावप्रदेशोवडे एटले एकगुणकाळा वगेरे वर्णादिवडे सहित, त्यारबाद जघन्य अवगाहनादिवाळा परमाणु

लस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइगुणहीणे वा असंखिज्जइगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए वा असंखिज्जगुणअब्भहिए वा। कालवन्नपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे अणंतभागहीणे वा असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा

प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थिति वडे कदाच न्यून, कदाच तुल्य अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातगुण न्यून होय के असंख्यातगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय. काळावर्णपर्यायवडे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो अनंतमो भाग, असंख्यातमो भाग, संख्यातमो भाग, संख्यातगुण, असंख्यातगुण के अनन्तगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो अनन्तमो भाग, अस-

---

गुणकाळा वगेरे रूपे अने त्यारपछी अन्यप्रदेशादिना भेद वडे विचार करवो योग्य छे कह्यु छे के—

" अणुमाइओहियाणं खेत्तादिपएससगयाण य। जहन्नोगाहणाइण चेव जहन्नादिदेसाण " ॥

एनो अक्षरार्थ आ प्रमाणे छे—प्रथम 'अणुमाइ ओहियाणं' परमाण्वादि सामान्यनो विचार करवानो छे, त्यारपछी 'क्षेत्रादिप्रदेशसगतानाम्'-क्षेत्रादि सगत-सहित परमाणु आदिनो विचार करवा योग्य छे आदि शब्दथी काळ अने भाव ग्रहण करवा एटले

अणंता दुपएसिया खंधा, जाव अणंता दसपएसिया खंधा, अणंता संखिज्जपएसिया खंधा, अणंता असंखिज्जपएसिया खंधा, अणंता अणंतपएसिया खंधा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'ते णं नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता'।

२४. परमाणुपोग्गलाणं भंते! केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'परमाणुपुग्गलाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा! परमाणुपुग्गले परमाणुपोग्ग-

---

अनन्ता छे? हे गौतम! संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनन्ता छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'संख्याता नथी, असंख्याता नथी पण अनन्ता छे'? हे गौतम! अनन्त परमाणुपुद्गलो छे, अनन्त द्विप्रदेशिक स्कंधो छे, यावत्–अनन्त दसप्रदेशिक स्कंधो, अनन्त संख्यातप्रदेशिक स्कंधो, अनन्त असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने अनन्त अनन्त प्रदेशिक स्कन्धो छे. ते हेतुथी एम कहुं छुं के परमाणुपुद्गलो संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनन्ता छे.

२४. हे भगवन्! परमाणुपुद्गलोना केटला पर्यायो छे? हे गौतम! परमाणुपुद्गलोना अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'परमाणुपुद्गलोना अनन्त पर्यायो छे'? हे गौतम! परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गलनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे,

---

२४. हवे दंडक-पाठना क्रमथी परमाणुपुद्गलादिना पर्यायो विचारवा योग्य छे. दंडकनो क्रम आ प्रमाणे छे–प्रथम सामान्यतः परमाण्वादिनो, त्यारपछी एक प्रदेशादि अवगाढ परमाणु आदिनो, त्यारपछी एकसमयादिस्थितिवाळा परमाणु वगेरेनो, त्यारपछी एकगुणकाळा इत्यादिनो, त्यारपछी जघन्यादि अवगाहनाना प्रकार वडे, त्यारपछी जघन्यस्थित्यादिना प्रकार वडे, त्यारपछी जघन्य

२२. अरूविअजीवपज्जवा णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा–धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा, अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्स देसे, अहम्मत्थिकायस्स पएसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए।

२३. रूविअजीवपज्जवा णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता। तंजहा–खंधा, खंधदेसा, खंधपएसा, परमाणुपुग्गला। ते णं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता' ? गोयमा ! अणंता परमाणुपुग्गला,

---

२२. हे भगवन् ! अरूपीअजीवपर्यायो केटला प्रकारना छे ? हे गौतम ! दस प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ धर्मास्तिकाय, २ धर्मास्तिकायनो देश, ३ धर्मास्तिकायना प्रदेशो, ४ अधर्मास्तिकाय, ५ अधर्मास्तिकायनो देश, ६ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ७ आकाशास्तिकाय, ८ आकाशास्तिकायनो देश, ९ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने १० अद्धासमय (काळ).

२३. हे भगवन् ! रूपीअजीवपर्यायो केटला प्रकारना कह्या छे ? हे गौतम ! चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ स्कंधो, २ स्कंधदेशो, ३ स्कंधप्रदेशो अने ४ परमाणुपुद्गलो. हे भगवन् ! ते (स्कन्धादि पुद्गलो) संख्याता, असंख्याता के

आ प्रमाणे सूत्रनो उपन्यास कर्यो छे" परमार्थथी तो धर्मास्तिकायपणु, धर्मास्तिकायदेशपणु अने धर्मास्तिकायप्रदेशपणु इत्यादि (पर्यायरूपे) जाणवु

२३ 'ते णं भंते किं संखेज्जा' इत्यादि ते स्कन्धादि प्रत्येक संख्याता, असंख्याता के अनन्ता छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—अनंता छे एनो विचार करे छे-'से केणट्ठेणं भंते' ते शा हेतुथी छे इत्यादि बधु पाठसिद्ध जाणवु

२१. अजीवपज्जवा णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता । तंजहा-रूविअजीवपज्जवा य अरूविअजीवपज्जवा य ।

अजीवपर्याय.

२१. हे भगवन् ! अजीवपर्यायो केटला प्रकारना छे ? हे गौतम ! बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—रूपीअजीवपर्यायो अने अरूपीअजीवपर्यायो.

स्थितिवडे त्रिस्थानपतित कहेवा. एनो पूर्वे विचार करेलो छे. हवे उपसंहार कहे छे-'एम जीवपर्याया कह्या'.

२१-२२. हवे अजीवपर्यायो संबन्धे प्रश्न करे छे-'अजीवपज्जवा णं भंते ! कइविहा पन्नत्ता'? हे भगवन् ! अजीवपर्यायो केटला प्रकारना कह्या छे ? भगवन्त उत्तर आपे छे के-रूपीअजीवपर्यायो अने अरूपीअजीवपर्यायो एम बे प्रकारे कह्या छे. रूप ए गन्ध, रस अने स्पर्शनुं उपलक्षण (सूचक) छे. तेथी रूप, गन्ध, रस अने स्पर्श जेओने छे ते रूपी, तेवा प्रकारना रूपी अजीवना पर्यायो एटले पुद्गलना पर्यायो कहेवाय छे. तेथी विपरीत अरूपी अजीवना पर्यायो एटले अमूर्त अजीवना पर्यायो छे. अरूपी अजीवना पर्यायो दस प्रकारना छे, ते बतावे छे-'धम्मत्थिकाए' इत्यादि. धर्मास्तिकाय संपूर्ण अवयववाळुं-प्रदेशना प्रचयरूप द्रव्य छे. तेना अर्धादिरूप विभाग ते धर्मास्तिकायनो देश. धर्मास्तिकायना निर्विभाग (जेनो भाग न कल्पी शकाय तेवा) सूक्ष्म भागो ते धर्मास्तिकायना प्रदेशो. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायना स्कन्ध, देश अने प्रदेश ए त्रण भेदनो विचार करवो. एथी परस्पर अभेदरूप अवयव-अवयवीस्वरूप धर्मास्तिकायादिक वस्तु छे एम प्रतिपादन कर्युं. दसमो अद्धासमय छे. (प्र०)-अहीं पर्यायो कहेवानो प्रारंभ कर्यो हतो छतां द्रव्य मात्रनो उपन्यास केम कर्यो ? (उ०)-पर्याय अने पर्यायी-द्रव्यनो अभेद बताववा माटे द्रव्यनो उपन्यास कर्यो छे. ए प्रमाणे पछीना ग्रन्थ संबन्धे पण जाणवुं. मूळ टीकाकारे कह्युं छे—" अहीं सर्वत्र पर्याय अने पर्यायी (द्रव्यना) अभेद जणाववा माटे

मणूसे भाणियव्वे । वाणमंतरा जहा असुरकुमारा । एवं जोइसियवेमाणिया, नवरं सट्ठाणे ठिईए तिट्ठाणवडिए भाणियव्वे । सेत्तं जीवपज्जवा ।

व्यंतरो सबंधे असुरकुमारनी पेठे कहेवुं. ज्योतिषिक अने वैमानिको संबंधे एमज जाणवुं. परन्तु स्वस्थानमां अपेक्षाए त्रिस्थान पतित कहेवा. एम जीवपर्यायो कह्या.

कहेयो कारण के उपर कहेला स्वरूपवाळु सौथी जघन्य अवधिज्ञान मनुष्यने परभवथी आवेलु होतु नथी, पण ते भवमां थाय छे, अने ते पर्याप्तावस्थामां थाय छे, परंतु तेने योग्य विशुद्धिना अभावथी अपर्याप्तावस्थामां होतु नथी, अने उत्कृष्ट अवधिज्ञान भावचारित्रवाळाने होय छे, माटे जघन्य अवधिज्ञानवाळो के उत्कृष्ट अवधिज्ञानवाळो अवगाहनावडे त्रिस्थानपतित होय छे अजघन्योत्कृष्ट-मध्यम अवधिज्ञान परभवथी पण आवेलु होय छे, तेथी अपर्याप्तावस्थामां पण तेनो संभव होवाथी मध्यमअवधिज्ञानवाळो अवगाहना वडे चतुःस्थानपतित छे जघन्यअवधिवाळो, उत्कृष्टअवधिवाळो अजघन्योत्कृष्ट—मध्यमअवधिवाळो स्थितिवडे त्रिस्थानपतित होय छे कारण के असंख्यात वरसना आयुषवाळाने अवधिज्ञाननो असंभव छे, अने संख्यात वरसना आयुषवाळाने स्थितिवडे त्रिस्थानपतितपणु होय छे जघन्यमनःपर्यवज्ञानी, उत्कृष्ट मनःपर्यवज्ञानी अने अजघन्योत्कृष्ट मनःपर्यवज्ञानी स्थितिवडे त्रिस्थानपतित छे, कारण के चारित्रवाळाने ज मनःपर्यवज्ञाननो संभव छे, अने तेओनु आयुष संख्याता वरसनु होय छे ६ केवलज्ञान सूक्ष्म केवलिसमुद्घातने आश्रयी अवगाहनावडे चतुःस्थान पतित होय छे ते आ प्रमाणे-केवलिसमुद्घातने प्राप्त थयेल केवलज्ञानी बाकीना केवली करता असंख्यातगुण अधिक अवगाहनावाळा होय छे अने तेनी अपेक्षाए बाकीना केवलज्ञानीओ असंख्यातगुण न्यून अवगाहनावाळा होय छे स्वस्थानने-अवगाहनाने आश्रयी बाकीना केवलज्ञानीओ त्रिस्थानपतित होय छे वळी संख्याता वरसनु आयुष होवाथी स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे व्यन्तरो असुरकुमारना जेम जाणवा ज्योतिषिको अने वैमानिको पण तेमज जाणवा परन्तु ते

दंसणी जहा ओहिनाणी। जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि, जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि, जत्थ दंसणा तत्थ णाणावि अन्नाणावि। केवलनाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'केवलनाणीणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! केवलनाणी मणूसे केवलनाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं केवलदंसणपज्जवेहि य तुल्ले। एवं केवलदंसणीवि

पेठे अने अवधिदर्शनी अवधिज्ञानी पेठे जाणवा. पण ज्यां ज्ञान छे त्यां अज्ञान नथी, ज्यां अज्ञान छे त्यां ज्ञान नथी, परन्तु ज्यां दर्शन छे त्यां ज्ञान अने अज्ञान बन्ने होय छे. हे भगवन् ! केवलज्ञानी मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के केवलज्ञानीने अनन्त पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! केवळज्ञानी मनुष्य केवलज्ञानी मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, अवगाहनावडे चतुःस्थान पतित, स्थिति वडे त्रिस्थान पतित तथा वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श वडे छस्थान पतित होय छे. केवलज्ञान पर्याय वडे तुल्य छे. एम केवलदर्शनी मनुष्य संबंधे कहेवुं.

अने श्रुतज्ञान पर्याय अने चक्षु अने अचक्षु ए बे दर्शनो वडे षट्स्थानपतित छे. उत्कृष्टआभिनिबोधिक सूत्रमां स्थितिवडे त्रिस्थान पतित छे. कारण के उत्कृष्ट आभिनिबोधिकवाळो अवश्य संख्याता वरसना आयुषवाळो होय छे, केमके असंख्यात वरसना आयुषवाळाने तेवा प्रकारना भवस्वभावथी सौथी उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान थतुं नथी. अने संख्याता वरसना आयुषवाळो तो पूर्वे कहेली युक्तिथी स्थितिवडे त्रिस्थानपतित होय छे. ५ जघन्यअवधिसूत्रमां अने उत्कृष्टअवधिसूत्रमां अवगाहना वडे त्रिस्थानपतित

न्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए, ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले, मणनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसोहिनाणीवि। अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणी एवं चेव, नवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहा ओहिनाणी तहा मणपज्जवनाणीवि भाणियव्वे, नवरं ओगाहणट्ठयाए तिट्ठाणवडिए। जहा आभिणिबोहियणाणी तहा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीवि भाणियव्वे। जहा ओहिनाणी तहा विभंगनाणीवि भाणियव्वे, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी य जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहि

छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा बे ज्ञान वडे छस्थान पतित छे. अवधिज्ञानपर्याय वडे तुल्य, मनःपर्यव ज्ञानपर्याय अने त्रण दर्शन वडे छस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवधिज्ञानी संबंधे जाणवुं. मध्यमअवधिज्ञानी संबंधे पण एमज समजवुं, परन्तु अवगाहना वडे चतुःस्थान पतित अने स्वस्थान—अवधिज्ञानने आश्रयी छस्थान पतित छे. जेम अवधिज्ञानी संबंधे कह्युं तेम मनःपर्यवज्ञानी संबंधे कहेवुं. परन्तु ते अवगाहना वडे त्रिस्थान पतित होय छे. जेम आभिनिबोधिकज्ञानी कह्या तेम मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी कहेवा, जेम अवधिज्ञानी कह्या तेम विभंगज्ञानी कहेवा. चक्षुदर्शनी अने अचक्षुदर्शनी आभिनिबोधिक ज्ञानीनी

त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान न कह्यां अजघन्यअनुत्कृष्टस्थितिवाळा मनुष्य संबंधी सूत्र अजघन्यअनुत्कृष्ट अवगाहनावाळा मनुष्यसूत्रनी पेठे जाणवुं ५. जघन्य आभिनिबोधिकवाळा मनुष्यसूत्रमां बे ज्ञान अने बे दर्शनो कहेवा कारण के जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाळो जीव अवश्य अवधि अने मनःपर्यव ज्ञान रहित होय छे, कारण के तेने प्रबळ ज्ञानावरण कर्मनो उदय होय छे जो एम न होय तो जघन्य आभिनिबोधिकज्ञान न होय तेथी बाकीना ज्ञानदर्शननो असंभव होवाथी आभिनिबोधिक पर्यायवडे तुल्य छे

भिणियोहियनाणीवि, नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। अजहन्नमणुक्कोसाभिणियोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणियोहियनाणी, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं सुयनाणीवि। जहन्नोहिनाणीणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नोहिनाणी मणुस्से जहन्नोहिनाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तिट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, व-

---

पर्याय वडे अने बे दर्शन वडे छस्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टआभिनिबोधिकज्ञानवाळा संबंधे जाणवुं. परन्तु स्थिति वडे त्रिस्थान पतित, त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छस्थान पतित होय छे. मध्यमआभिनिबोधिकज्ञानवाळा उत्कृष्टआभिनिबोधिक ज्ञानवाळानी पेठे जाणवा. परन्तु स्थिति वडे चउस्थान पतित अने स्वस्थान–आभिनिबोधिक ज्ञानने आश्रयी छस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी संबंधे पण जाणवुं. हे भगवन्! जघन्यअवधिज्ञानी मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! अनन्तपर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यअवधिज्ञानी मनुष्योने अनन्तपर्यायो होय छे'? हे गौतम! जघन्यअवधिज्ञानी मनुष्य जघन्यअवधिज्ञानी मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहना अने स्थिति वडे त्रिस्थान पतित

मनुष्यो संमूर्च्छिम होय छे, अने संमूर्च्छिम मनुष्यो अवश्य मिथ्यादृष्टि होय छे. माटे तेओने अज्ञान ज होय छे पण ज्ञान होतां नथी. उत्कृष्टस्थितिवाळा मनुष्य सूत्रमां "बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे." कारण के उत्कृष्ट स्थितिवाळा मनुष्यो त्रण पल्योपमना आयुषवाळा होय छे, तेओने अज्ञान तो अवश्य होय छे, पण ज्यारे छ मासनुं आयुष बाकी रहे छे अने वैमानिक देवोनुं आयुष बांधे छे त्यारे सम्यक्त्वनी प्राप्ति थवाथी बे ज्ञान होय छे. अवधि अने विभङ्ग असंख्याता वरसना आयुषवाळाने होतां नथी' माटे

णुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा। जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नाभिणिबोहियणाणी मणूसे जहन्नाभिणिबोहियणाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, एवं उक्कोसा-

---

मध्यमकालावर्णवाळाने पण एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थान–कालावर्णने आश्रयी छ स्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श संबन्धे जाणवुं. हे भगवन्! जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे.? हे गौतम! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळो मनुष्य जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहना अने स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे छस्थान पतित छे. आभिनिबोधिकज्ञानपर्याय वडे तुल्य छे. श्रुतज्ञान-

---

नपतित जाणवो मति, श्रुत, अवधि अने मनःपर्यव ए आदिना चार ज्ञान वडे षट्स्थानपतित छे कारण के द्रव्यादिनी अपेक्षाए थता क्षयोपशमनी विचित्रताथी ते चारे ज्ञाननु तारतम्य होय छे केवलज्ञान पर्याय वडे तुल्य छे कारण के सर्व समावरणना क्षय थवाथी प्रगट थयेला केवलज्ञानमां भेद होतो नथी बाकी बधु सुगम छे जघन्यस्थितिवाळा मनुष्यसूत्रमां जघन्य स्थितिवाळा मनुष्योने बे अज्ञान वडे–मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान वडे छ स्थानको कहेवा, पण बे ज्ञानवडे न कहेवा कारण के जघन्यस्थितिवाळा

छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। [3]जहन्नगुणकालयाणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणकालगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नम-

---

पर्याय वडे तुल्य छे. [3]जघन्यगुणकाळा वर्णवाळा मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के—'जघन्य काळावर्णवाळा मनुष्योने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! जघन्यकाळावर्णवाळो मनुष्य जघन्यकाळावर्णवाळा मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, अवगाहना अने स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे. वाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा चार ज्ञान वडे षट्स्थान पतित छे. केवळज्ञानपर्याय वडे तुल्य छे. त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छ स्थानपतित छे. अने केवळदर्शनपर्याय वडे तुल्य छे. एम उत्कृष्ट काळावर्णवाळा संबन्धे जाणवुं.

थती नथी. वळी तेओने 'बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे'. कारण के उत्कृष्ट अवगाहनावाळा असंख्यात वरसना आयुषवाळा होय छे अने असंख्यात वरसना आयुषवाळाने तथास्वभावथी अवधिज्ञान अने विभङ्गज्ञाननो असंभव छे, माटे बे ज ज्ञान अने बे ज अज्ञान होय छे. तथा अजघन्यअनुत्कृष्ट–मध्यम अवगाहनावाळो संख्याता वरसना आयुषवाळो अने असंख्यात वरसना आयुषवाळो पण होय छे. असंख्यात वरसना आयुषवाळाने पण बे गाउनी उंचाइ होय छे माटे अवगाहनावडे पण ते चतुःस्थानपतित समजवो. तेम स्थितिवडे चतुःस्था-

घइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नठिइए मणुस्से जहन्नठिइयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिइएवि, नवरं दो नाणा दो अन्नाणा दो दंसणा। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए,केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले,तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं

'जघन्य स्थितिवाळा मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे.हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'जघन्यस्थितिवाळा मनुष्योने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो मनुष्य जघन्यस्थितिवाळा मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे अने स्थितिरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहनारूपे चतुःस्थान प्राप्त छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा बे अज्ञान अने बे दर्शनवडे छ स्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवु. परन्तु तेने बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन होय छे. मध्यमस्थितिवाळा संबन्धे पण एमज जाणवु. परन्तु स्थिति अने अवगाहनानी अपेक्षाए चतुःस्थानपतित, आदिना चार ज्ञान वडे छस्थान पतित, केवलज्ञानपर्याय वडे तुल्य, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छस्थानपतित अने केवलदर्शन-

उत्तर देवकुरुना मनुष्योनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग न्यून त्रण पल्योपम अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपमनी छे " पल्योपमना असंख्यातमा भाग न्यून त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळो पूर्ण त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळानी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग न्यून होय छे अने बीजो तेनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग अधिक छे माटेनी वृद्धि अने हानि प्राप्त

वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, नवरं ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए। दो नाणा दो अन्नाणा दो दंसणा। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। जहन्नठिइयाणं भंते! मणुस्साणं के-

---

छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान, बे अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे षट्स्थान प्राप्त छे. उत्कृष्टअवगाहनावाळा माटे पण एमज समजवुं. पण स्थितिवडे कदाचित् न्यून होय, कदाचित् तुल्य होय अने कदाचित् अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय. तेने बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन होय छे. मध्यमअवगाहनावाळा संबन्धे पण एमज समजवुं. परन्तु अवगाहना अने स्थितिवडे चतुःस्थान प्राप्त होय छे. आदिना चार ज्ञान वडे षट्स्थान प्राप्त छे, केवलज्ञान पर्यायवडे तुल्य छे, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे षट्स्थान प्राप्त छे, केवळदर्शनपर्यायवडे तुल्य छे.

हनावाळामनुष्य सूत्रमां 'ठिईए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए' इत्यादि. स्थितिवडे कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय एम कह्युं छे, कारण के उत्कृष्टअवगाहनावाळा मनुष्यो त्रण गाउना उंचा होय छे अने त्रण गाउनी उंचाइवाळानी स्थिति जघन्यथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग न्यून त्रण पल्योपम अने उत्कर्षथी परिपूर्ण त्रण पल्योपम होय छे. जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे के-"हे भगवन्!

२०. जहन्नोगाहणगाण भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'जहन्नोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए मणूसे जहन्नोगाहणगस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए,

---

२०. हे भगवन् ! जघन्यअवगाहनावाळा मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के—'जघन्यअवगाहनावाळा मनुष्योने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो मनुष्य जघन्यअवगाहनावाळा मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, स्थितिवडे त्रिस्थान प्राप्त

विभङ्गनो असंभव छे, मूलटीकाकार कहे छे के 'ओहिविभङ्गेसु नियमा तिट्ठाणवडिए, किं कारणं ? भन्नइ—ओहिविभङ्गा असंखवासाउयस्स नत्थि त्ति' तेनो अवधिज्ञान अने विभङ्गज्ञानने विषे अवश्य त्रिस्थानपतित होय छे शा कारणथी ? तेनो उत्तर ए छे के अवधि अने विभङ्ग असंख्यात वरसना आयुषवाळाने होता नथी

२० जघन्यअवगाहनावाळा मनुष्य सूत्रमां मनुष्यो स्थितिवडे तिर्यंच पंचेन्द्रियनी पेठे त्रिस्थान पतित कहेला छे जघन्य अवगाहनावाळो मनुष्य पण अवश्य संख्याता वरसना आयुषवाळो होय छे अने संख्याता ,वरसना आयुषवाळो स्थितिवडे त्रिस्थान पतित होय छे 'तिहिं नाणेहिं' अने त्रण ज्ञान वडे छ स्थान पतित होय छे ज्यारे जो कोइक ,तीर्थंकर के अनुत्तरौपपातिक देव अप्रतिपाती—जेनो पात न थाय एवा अवधिज्ञान वडे जघन्य अवगाहनामां उत्पन्न थाय त्यारे अवधिज्ञान पण होय छे माटे 'त्रण ज्ञान वडे' छ स्थान पतित होय छे एम कह्यु छे विभंगज्ञान सहित नरकथी नीकळी तथास्वभावथी जघन्य अवगाहनामां उत्पन्न थतो नथी, माटे विभंगज्ञान होतु नथी, माटे बे अज्ञान वडे छ स्थान पतित होय एम कह्यु छे उत्कृष्टअवगा

कारण ए छे के-अहीं जेना शरीरनी अवगाहना एक हजार योजन प्रमाण छे ते उत्कृष्ट अवगाहनावाळो कहेवाय छे अने ते संख्याता वरसना आयुषवाळो अने पर्याप्त होय छे, तेथी तेने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान संभवे छे, अने ते उत्कृष्ट अवगाहनावाळो संख्याता वरसना आयुषवाळो होवाथी स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे. अजघन्यअनुत्कृष्ट-मध्यम अवगाहनावाळा सूत्रमां स्थिति वडे तेओ चतुःस्थानपतित होय छे, कारण के मध्यमअवगाहनावाळो असंख्याता वरसना आयुषवाळो पण होय छे, तेथी पूर्वोक्त युक्तिथी तेमां चतुःस्थानपतितपणुं घटी शके छे. जघन्यस्थितिवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियना सूत्रमां बे अज्ञान ज कहेवां, पण ज्ञान न कहेवां. कारण के जघन्य स्थितिवाळा लब्धिअपर्याप्त ज होय छे, अने तेमां सास्वादन सम्यग्दृष्टिनी उत्पत्ति थती नथी. उत्कृष्ट स्थितिवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्रमां तेने बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे.' कारण के उत्कृष्टस्थितिवाळो तिर्यंच पंचेन्द्रिय त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळो होय छे. तेथी तेने बे अज्ञान अवश्य होय छे, परन्तु ज्यारे तेनुं छ मासनुं आयुष बाकी होय छे अने वैमानिकनुं आयुष बांधे छे त्यारे तेने (सम्यग्दर्शन थवाथी) बे ज्ञान होय छे. माटे कह्युं छे के—बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे. अजघन्यअनुत्कृष्ट-मध्यमस्थितिवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्रमां ते स्थितिवडे चतुःस्थान पतित होय छे, कारण के मध्यमस्थितिवाळो तिर्यंच पंचेन्द्रिय संख्याता वरसना आयुषवाळो होय छे अने असंख्याता वरसना आयुषवाळो समय न्यून त्रण पल्योपण सुधीनी स्थितिवाळो पण होय छे, तेथी ते चतुःस्थान पतित होय छे. जघन्यआभिनिबोधिक तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्रमां तेओ स्थिति वडे चतुःस्थानपतित होय छे. कारण के असंख्यात वरसना आयुषवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियने पोतानी भूमिकाने अनुसारे जघन्य आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान होय छे, तेथी संख्याता वरसना आयुषवाळा अने असंख्यात वरसना आयुषवाळाने जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान अने श्रुत ज्ञाननो संभव होवाथी तेओ स्थिति वडे चतुःस्थानपतित होय छे. उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान सूत्रमां स्थिति वडे त्रिस्थानपतित कहेवा, कारण के जेने उत्कृष्ट आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान होय छे ते अवश्य संख्याता वरसना आयुषवाळो होय छे अने संख्याता वरसना आयुषवाळो त्रिस्थानपतित ज होय छे, ए पूर्वे कह्युं छे.अवधिसूत्र अने विभङ्गसूत्रमां तेओ स्थिति वडे त्रिस्थानपतित छे. कारण के असंख्यात वरसना आयुषवाळाने अवधि अने

उक्कोसठिइएवि, नवरं दो नाणा अब्भहिया' ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा सबंधे पण कहेवु, परन्तु बे ज्ञान अधिक कहेवा" एम अजघन्यअनुत्कृष्ट-मध्यम स्थितिसूत्र पण जाणवु वर्णादिभावप्रतिपादक सूत्रो पाठमांथी सिद्ध छे ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा परन्तु चउरिन्द्रियने चक्षुदर्शन अधिक कहेवु, नहि तो चउरिन्द्रियपणु न घटी शके माटे तेओने चक्षुदर्शन विषे पण सूत्र कहेवु जघन्यअवगाहनावाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियना सूत्रमां 'ठिईए तिट्ठाणवडिए' 'स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे' अहीं सख्याता वरसना आयुषवाळो ज तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्यशरीरवाळो होय छे, पण असंख्यात वरसना आयुषवाळो होतो नथी, कारण के असंख्यात वरसना आयुषवाळा महाशरीरवाळा अने कंकपक्षीनी जठरना जेवी पाचन शक्तिवाळा होवाथी पुष्टआहारवाळा तथा प्रबळ धातुना उपचयवाळा होय छे, अने तेथी तेओने पुष्कळ वीर्यपात थाय छे, अने वीर्यपातने अनुसारे तिर्यंच अने मनुष्यने उत्पत्तिसमये शरीर होय छे माटे तेओने जघन्य शरीर होतु नथी, पण सख्याता वरसना आयुषवाळाने होय छे, अने सख्याता वरसना आयुषवाळा स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे, एम पूर्वे विचार करेलो छे माटे कह्यु छे के 'तेओ स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे' तथा 'दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं' बे ज्ञान अने बे अज्ञान वडे छ स्थानपतित होय छे जघन्यशरीरवाळो तिर्यंच पंचेन्द्रिय सख्याता वरसना आयुषवाळो अपर्याप्त होय छे, ते पण अल्पशरीरवाळा तिर्यंचमां उत्पन्न थाय छे, तेथी तेने अवधि अने विभंग ज्ञाननो असंभव छे, माटे बे ज्ञान अने बे अज्ञान कह्या छे जे विभंगज्ञानसहित नरकथी नीकळीने सख्याता वरसना आयुषवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियमां उत्पन्न थाय छे तेओ स्वभावथीज मोटा शरीरवाळा तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय छे, पण अल्पशरीरवाळा तिर्यंचोमां उत्पन्न थता नथी जो एम नहि मानवामां आवे तो आ सूत्रनी साथे विरोधनो प्रसंग प्राप्त थशे जो अल्पशरीरवाळा तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय तो अपर्याप्तावस्थामां अवधि ज्ञान के विभंग ज्ञाननो संभव होवाथी त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान वडे छ स्थान पतित थाय, अने सूत्रमां जघन्य अवगाहनावाळाने बे ज्ञान अने बे अज्ञान वडे छ स्थानको कह्या छे, माटे प्रस्तुत सूत्रनी साथे विरोधनो प्रसंग प्राप्त थशे उत्कृष्टशरीरवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंच सूत्रमां "तेओ त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञानवडे छस्थानपतित होय छे" एम कह्यु छे तेमां त्रण अज्ञान होवानु

ज्यां अज्ञान छे त्यां ज्ञान नथी. ज्यां दर्शन छे त्यां ज्ञान पण छे अने अज्ञान पण छे एम कहेवुं.

छे. एनो पूर्वे सामान्य पृथिवीकायिकना सूत्रमां विचार कर्यो छे. पर्यायना विचारमां तेओने मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानरूप अज्ञान कहेवां,
पण ज्ञान न कहेवां, कारण के तेओमां सम्यक्त्वनो के सम्यक्त्वसहित जीवनी उत्पत्तिनो असंभव छे. कारण के-'उभयाभावो पुढवाइएसु'
पृथिव्यादिमां बन्ने प्रकारे ज्ञाननो अभाव छे' एवुं शास्त्रवचन छे. माटे आ सूत्रमां कह्युं छे के "बे अज्ञान वडे छस्थानपतितपणुं
होय छे." जघन्यअवगाहनावाळा बेइन्द्रियना सूत्रमां 'दोहिं नाणेहिं' 'दोहिं अन्नाणेहिं' बे ज्ञान अने बे अज्ञान वडे छ स्थान पतितपणुं
कह्युं छे, कारण के कोइ उपशम सम्यक्त्व वमतो बेइन्द्रियमां उत्पन्न थाय त्यारे बेइन्द्रियने अपर्याप्तावस्थामां सास्वादन सम्यक्त्व होय छे
अने सिद्धान्तकार 'सासणभावे नाणं' सास्वादनभावमां ज्ञान माने छे. तेथी सास्वादनसम्यग्दृष्टिने ज्ञान होय छे. माटे तेओने मतिज्ञान
अने श्रुतज्ञान ए बे ज्ञान होय छे अने बाकीनाने अज्ञान होय छे. माटे कह्युं छे के तेओ बे ज्ञान अने बे अज्ञान वडे षट्स्थानने प्राप्त
थाय छे. उत्कृष्ट अवगाहनामां अपर्याप्तावस्थानो अभाव होवाथी सास्वादन सम्यक्त्व होतुं नथी, माटे त्यां ज्ञान न कहेवां, ते माटे
कह्युं छे के—"एवं उक्कोसितोगाहणाए वि, नवरं नाणा नत्थि" ए प्रमाणे उत्कृष्ट अवगाहना संबंधे कहेवुं, परन्तु त्यां ज्ञान नथी.
अजघन्यअनुत्कृष्ट-मध्यम अवगाहना प्रथम समय बाद होय छे एटले अपर्याप्तावस्थामां पण मध्यम अवगाहनानो संभव छे, माटे
सास्वादन सम्यग्दृष्टिने ज्ञान होय छे अने अन्यने अज्ञान होय छे. तेथी ज्ञान अज्ञान बन्ने कहेवां. ए माटे कह्युं छे 'अहन्नमणुक्कोसो-
गाहणए जहा जहन्नोगाहणए' मध्यमअवगाहनावाळो जघन्यअवगाहनावाळानी पेठे जाणवो. जघन्यस्थितिसूत्रमां बे अज्ञान ज क-
हेवां, पण ज्ञान न कहेवां, कारण के सौथी जघन्यस्थितिवाळो लब्धिअपर्याप्त होय छे, अने लब्धिअपर्याप्तामां सास्वादन सम्यग्दृष्टि
उत्पन्न थतो नथी, कारण के लब्धिअपर्याप्त सौथी संक्लिष्ट परिणामवाळो होय छे अने सास्वादन सम्यग्दृष्टि कंइक शुभपरिणामवाळो
होय छे. तेथी तेनी लब्धि अपर्याप्तामां उत्पत्ति नहि थती होवाथी तेने अज्ञान ज होय छे पण ज्ञान होतुं नथी. उत्कृष्टस्थितिवाळामां
तो सास्वादन सम्यक्त्व सहित पण उत्पन्न थाय छे, माटे उत्कृष्ट स्थिति सूत्रमां ज्ञान अने अज्ञान बन्ने कहेवां, ते माटे कह्युं छे के 'एवं

सट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए तिट्टाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं आभिणिबोहिय-नाणसुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले। अन्नाणा नत्थि। चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खु-दंसणपज्जवेहिं य ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसोहिनाणीवि। अजहन्नोक्कोसोहिनाणीवि एव चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहा आभिणिबोहियनाणी तहा मइअन्नाणी सुयअन्नाणी य, जहा ओहिना-णी तहा विभंगनाणीवि, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी य जहा आभिणिबोहियनाणी, ओहिदंसणी जहा ओहि-नाणी, जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि, जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि, जत्थ दंसणा तत्थ णाणावि अन्ना-णावि अत्थित्ति भाणियव्वं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहना वडे चतुःस्थान प्राप्त, स्थिति वडे त्रिस्थान प्राप्त, वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श वडे तथा आभिनिबोधिकज्ञान अने श्रुतज्ञान पर्याय वडे षट्स्थान प्राप्त छे. अवधिज्ञान पर्याय वडे तुल्य छे. अज्ञान नथी, तथा चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन पर्याय वडे षट्स्थान प्राप्त छे ए प्रमाणे उत्कृष्ट अवधिज्ञानी सबंधे जाणवुं. मध्यमअवधिज्ञानी सबंधे एमज जाणवुं, परन्तु स्वस्थान–अवधिज्ञानने आश्रयी षट्स्थान प्राप्त छे. जेम आभिनिबोधिकज्ञानी सबन्धे कह्युं तेम मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानीने कहेवु. जेम अवधिज्ञानिने कह्युं तेम विभंगज्ञानी सबन्धे पण कहेवु. चक्षुदर्शनी अने अचक्षुदर्शनी आभिनिबोधिकज्ञानी पेठे जाणवा. अवधिदर्शनी अवधिज्ञानी पेठे समजवा, परन्तु ज्यां ज्ञान छे त्यां अज्ञान नथी,

---

१७-१९. जघन्यअवगाहनादिवाळा पृथिव्यादिना सूक्ष्म सख्याता वरसनु आयुष होवाथी तेओने स्थिति वडे त्रण स्थान प्राप्त थाय

तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि, णवरं ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिन्नि नाणा तिन्नि दंसणा, सट्ठाणे तुल्ले, सेसेसु छट्ठाणवडिए। अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणी, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं सुयनाणीवि। जहन्नोहिनाणीणं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नोहिनाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नोहिनाणिस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पए-

---

गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे षट्स्थान प्राप्त छे. आभिनिबोधिकज्ञानपर्याय वडे तुल्य छे. श्रुतज्ञानपर्याय वडे चक्षुदर्शनपर्याय वडे अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे षट्स्थान पतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टआभिनिबोधिकज्ञानी संबंधे जाणवुं. परन्तु ते स्थिति वडे त्रिस्थानपतित होय छे. तेने त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन होय छे. स्वस्थाननी अपेक्षाए तुल्य छे. बाकीना (ज्ञान अने दर्शन) पर्यायनी अपेक्षाए षट्स्थान पतित छे. मध्यमआभिनिबोधिकज्ञानी उत्कृष्टआभिनिबोधिक ज्ञानीनी पेठे समजवा. परन्तु स्थितिनी अपेक्षाए चतुःस्थान प्राप्त छे, अने स्वस्थान-आभिनिबोधिक ज्ञाननी अपेक्षाए पण षट्स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी संबंधे पण जाणवुं. जघन्यअवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहो छो के 'जघन्यअवधिज्ञाननीने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! जघन्यअवधिज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्यअवधिज्ञानी

भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नगुणकालगस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वन्ना दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा । जहन्नाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियणाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नाभिणिबोहियणाणिस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए

अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहनावडे अने स्थितिवडे चतुःस्थान पतित छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे अने बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान, अने त्रण दर्शनवडे षट्स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळावर्णवाळा संबंधे जाणवुं. मध्यमकाळावर्णवाळा संबंधे पण एमज जाणवु. परन्तु स्वस्थानने (काळा वर्णने) आश्रयी ते षट्स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श संबंधे जाणवुं. जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने केटला पर्यायो कह्या छे. हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के-'जघन्यआभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्यआभिनिबोधिक पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, पण अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थानने प्राप्त छे. वर्ण,

अणता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'जहन्नठिइयाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नठिइए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नठिइयस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसठिइएवि एवं चेव, णवरं दो नाणा दो अन्नाणा दो दंसणा। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। तिन्नि णाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दंसणा। जहन्नगुणकालगाणं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं

शा हेतुथी एम कहो छो के–'जघन्यस्थितिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्यस्थितिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अपेक्षाए द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहनारूपे चतुःस्थान प्राप्त छे. स्थितिवडे तुल्य छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा बे अज्ञान अने बे दर्शन वडे षट्स्थान प्राप्त छे. उत्कृष्टस्थितिवाळो पण एमज जाणवो. परन्तु तेने बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन होय छे. मध्यमस्थितिवाळा संबंधे पण एमज समजवुं. परन्तु ते स्थितिवडे चतुःस्थान प्राप्त छे. अने तेने त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन होय छे. जघन्यकाळावर्णवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंच संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यकाळागुणवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने अनन्ता पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यकाळावर्णवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्य काळावर्णवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी

पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'जहन्नोगाहणगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जया पन्नत्ता'? गोयमा! जहन्नोगाहणए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नोगाहणयस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, णवरं तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि, णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिइयाणं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जया पन्नत्ता? गोयमा!

---

१९. हे भगवन्! जघन्यअवगाहनावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने केटला पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यअवगाहनावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! जघन्यअवगाहनावाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्यअवगाहनावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे, प्रदेशस्वरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे, परन्तु स्थितिवडे त्रिस्थानपतित छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्यायवडे तथा बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शनवडे छ स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबंधे जाणवु परन्तु ते त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छ स्थान प्राप्त होय छे. जेम उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबंधे कह्युं तेम मध्यमअवगाहनावाळा संबंधे कहेवुं. परन्तु अवगाहना अने स्थितिवडे चतुःस्थान प्राप्त होय छे. जघन्यस्थितिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने केटला पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्!

---

१६ ए प्रमाणे असुरकुमारादि सूत्रोनो पण विचार करवो कारण के आय' पछे सरखो पाठ छे

'जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा! जहन्नाभिणिबोहियणाणी बेइंदिए जहन्नाभिणिबोहियणाणिस्स बेइंदियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि। अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं सुयनाणीवि सुयअन्नाणीवि अचक्खुदंसणीवि, णवरं जत्थ णाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि, जत्थ अन्नाणा तत्थ णाणा नत्थि, जत्थ दंसणं तत्थ णाणावि अन्नाणावि। एवं तेइंदियाणवि। चउरिंदियाणवि एवं चेव, णवरं चक्खुदंसणं अब्भहियं।

१९. जहन्नोगाहणगाणं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा

चतुःस्थान प्राप्त छे अने स्थिति वडे त्रिस्थान प्राप्त छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्यायवडे छ स्थान प्राप्त छे. आभिनिबोधिकज्ञान पर्यायवडे तुल्य छे. श्रुतज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टआभिनिबोधिकज्ञानवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमआभिनिबोधिकज्ञानवाळा संबन्धे एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थान–आभिनिबोधिकनी अपेक्षाए छ स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने अचक्षुदर्शनी बेइन्द्रियो जाणवा. परन्तु ज्यां ज्ञान छे त्यां अज्ञान नथी. ज्यां अज्ञान छे त्यां ज्ञान नथी. ज्यां दर्शन छे त्यां ज्ञान अने अज्ञान पण होय छे. एम तेइन्द्रियो संबन्धे पण जाणवुं. चउरिन्द्रियने पण एमज समजवुं. परन्तु त्यां चक्षुदर्शन अधिक कहेवुं.

केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ–'जहन्नगुणकालगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए बेइंदिए जहन्नगुणकालगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव । णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं पंच वन्ना दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते! बेइंदियाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेण भंते ! एवं वुचइ–

छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यकाळागुणवाळा बेइन्द्रियोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यकाळागुणवाळो बेइन्द्रिय जघन्यकाळागुणवाळा बेइन्द्रियनी अपेक्षाए द्रव्यसरूपे अने प्रदेशसरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहनारूपे छ स्थान प्राप्त छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे, अने बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्यायवडे तथा बे ज्ञान, बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळागुणवाळा संबन्धे जाणवुं. मध्यमकाळागुणवाळा संबन्धे एमज जाणवुं. परन्तु स्वस्थानने (काळा वर्णने) आश्रयी छ स्थान प्राप्त होय छे. एम पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श संबन्धे कहेवुं. हे भगवन्! जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा बेइन्द्रियोने केटला पर्यायो होय छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो होय छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा बेइन्द्रियोने अनन्त पर्यायो होय छे' ? हे गौतम ! जघन्यआभिनिबोधिक ज्ञानवाळो बेइन्द्रिय जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा बेइन्द्रियनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे. अवगाहना वडे

बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'जहन्नठिइयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नठिइए बेइंदिए जहन्नठिइयस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठितीए तुल्ले, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि, नवरं दो णाणा अब्भहिया। अजहन्नमणुक्कोसठिइए जहा उक्कोसठिइए, णवरं ठिईए तिट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालगाणं बेइंदियाणंपुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से

वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा बे ज्ञान बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन वडे छ स्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवगाहनावाळा संबंधे जाणवुं. परन्तु अहीं ज्ञानो होता नथी. मध्यमअवगाहनावाळाने जघन्यअवगाहनावाळानी पेठे जाणवुं. परन्तु स्वस्थान-अवगाहनाने आश्रयी चतुःस्थान प्राप्त होय छे. जघन्यस्थितिवाळा बेइन्द्रियसंबंधी पृच्छा. हे गौतम ! तेओने अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के-'जघन्यस्थितिवाळा बेइन्द्रियोने अनन्ता पर्यायो छे' ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो बेइन्द्रिय जघन्यस्थितिवाळा बेइन्द्रियनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे, प्रदेशस्वरूपे अने स्थितिस्वरूपे तुल्य छे, पण अवगाहनारूपे चतुःस्थानक प्राप्त छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळा संबन्धे जाणवुं. परन्तु अहीं बे ज्ञान अधिक होय छे. मध्यमस्थितिवाळाने उत्कृष्टस्थितिवाळानी पेठे कहेवुं. परन्तु अहीं स्थितिनी अपेक्षाए त्रिस्थानपतित होय छे. जघन्यकाळागुणवाळा बेइन्द्रिय संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेने अनन्त पर्यायो कह्या नथी. बाकी बधुं पाठसिद्ध छे.

सुयअन्नाणीवि अचक्खुदंसणीवि एवं चेव जाव वणप्फइकाइया।

१८. जहन्नोगाहणगाणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-'जहन्नोगाहणगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा! जहन्नोगाहणए बेइंदिए जहन्नोगाहणस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसोगाहणएवि, णवरं णाणा णत्थि। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए जहा जहन्नोगाहणए, णवरं सट्ठाणे ओगाहणाए चउट्ठाणवडिए। जहन्नट्ठियाणं भंते!

जघन्यमतिअज्ञानी पृथिवीकायिक जघन्य मतिअज्ञानी पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चार स्थानकने प्राप्त थयेल छे अने स्थितिवडे त्रिस्थानने प्राप्त थाय छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे छ स्थानने प्राप्त थाय छे. मतिअज्ञानपर्याय वडे तुल्य छे. श्रुतअज्ञानपर्याय अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थानने प्राप्त थाय छे. एम श्रुतअज्ञानी अने अचक्षुदर्शनी जाणवा. ए प्रमाणे यावत्—वनस्पतिकायिको सुधी जाणवु.

१८. 'जघन्यअवगाहना(शरीर)वाळा बेइन्द्रियो संबंधे पृच्छा. हे गौतम! तेने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहो छो के-'जघन्यअवगाहनावाळा बेइन्द्रियोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! जघन्यअवगाहनावाळो बेइन्द्रिय जघन्यअवगाहनावाळा बेइन्द्रियनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे, प्रदेशस्वरूपे अने अवगाहनास्वरूपे तुल्य छे, स्थितिवडे त्रिस्थान प्राप्त छे,

नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा न सम्भवंति' जेम ज्ञानो कह्या तेम अज्ञानो पण कहेवा परंतु जेने अज्ञानो होय छे तेने ज्ञानो होता

चक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वन्ना दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा । जहन्नमतिअन्नाणीणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'जहन्नमतिअन्नाणीणं पुढवीकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नमतिअन्नाणी पुढविकाइए जहन्नमतिअन्नाणिस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए मइअन्नाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसमइअन्नाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसमइअन्नाणीवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं

पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थ अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, परन्तु अवगाहनावडे चार स्थानने प्राप्त थयेल छे, अने स्थितिवडे त्रिस्थान प्राप्त छे. काळावर्णपर्याय वडे तुल्य छे. बाकीनां वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्यायो वडे छ स्थानने प्राप्त थयेल छे. बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थान प्राप्त छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टकाळागुणवाळा पृथिवीकायिक संबंधे जाणवुं. अजघन्यअनुत्कृष्ट—(मध्यम) काळागुणवाळा माटे पण एमज समजवुं. परन्तु स्वस्थाननी (काळावर्णनी) अपेक्षाए छ स्थानने प्राप्त थयेल छे. एम पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श संबंधे जाणवुं. जघन्यमतिअज्ञानवाळा पृथिवीकायिको संबन्धी पृच्छा. हे गौतम ! तेओने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के-'जघन्यमतिअज्ञानी पृथिवीकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम !

अज्ञाननो अभाव होय छे. एम अज्ञान होय त्यारे ज्ञाननो अभाव होय छे. तेथी कह्युं छे के—'जहा नाणा तहा अन्नाणा वि भाणियव्वा,

णट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिइएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नगुणकालयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पुढविकाइए जहन्नगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, दोहिं अन्नाणेहिं अ-

---

पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यस्थितिवाळा पृथिवीकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यस्थितिवाळो पृथिवीकायिक जघन्यस्थितिवाळा पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने स्थितिरूपे तुल्य छे, अने अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थानने प्राप्त थयेल छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळो पण पृथिवीकायिक जाणवो. अजघन्यअनुत्कृष्ट–(मध्यम) स्थितिवाळा संबन्धे पण एमज समजवु. परन्तु स्थितिवडे त्रिस्थान प्राप्त छे. हे भगवन् ! जघन्यकाळागुणवाळा पृथिवीकायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यकाळागुणवाळा पृथिवीकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्य काळागुणवाळो पृथिवीकायिक जघन्यकाळागुणवाळा

तो मिथ्यादृष्टिपणाना नाशथी थाय छे, मिथ्यादृष्टिपणु पण सम्यग्दृष्टिपणाना नाशथी थाय छे माटे ज्यारे ज्ञान होय छे त्यारे

१७. जहन्नोगाहणाणं भंते ! पुढविकाइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नोगाहणाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए पुढविकाइए जहन्नोगाहणस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । जहन्नठिइयाणं पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नठिइयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नठिइए पुढविकाइए जहन्नठिइयस्स पुढवीकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाह-

---

१७. जघन्यअवगाहनावाळा पृथिवीकायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के 'जघन्यअवगाहनावाळा पृथिवीकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो पृथिवीकायिक जघन्यअवगाहनावाळा पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे. परन्तु स्थिति वडे त्रिस्थानपतित छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श वडे तथा बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्यायो वडे छस्थान पतित छे. एम उत्कृष्टअवगाहनावाळा पृथिवीकायिक जाणवा. मध्यमअवगाहनावाळा पृथिवीकायिको संबन्धे पण एमज जाणवुं, परन्तु स्वस्थान–अवगाहनाने अपेक्षी चतुःस्थान पतित जाणवा. जघन्यस्थितिवाळा पृथिवीकायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त-

---

छे, परंतु जेने ज्ञान होय छे तेने अज्ञाननो संभव नथी. कारण के सम्यग्दृष्टिने ज्ञान अने मिथ्यादृष्टिने अज्ञान होय छे. सम्यग्दृष्टिपणुं

१६. जहन्नोगाहणाणं भंते ! असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नोगाहणाणं असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए असुरकुमारे जहन्नोगाहणस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नाईहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि, नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । एवं जाव थणियकुमारा ।

---

१६. हे भगवन् ! जघन्यअवगाहनावाळा असुरकुमारोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्यअवगाहनावाळा असुरकुमारोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्य अवगाहनावाळो असुरकुमार जघन्यअवगाहनावाळा असुरकुमारनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. वर्णादि वडे छस्थान पतित छे. आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञानना पर्यायो वडे तथा त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छ स्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टअवगाहनावाळा (असुरकुमार) संबन्धे जाणवु. अजघन्य-अनुत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहनावाळा संबन्धे पण एमज जाणवु. परन्तु स्वस्थाननी–अवगाहनानी अपेक्षाए चतुःस्थानपतित जाणवा. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी जाणवु.

१७-१८ 'जहन्नगुणकालगाणं भंते' हे भगवन् ! जघन्यगुण काळा नैरयिकोने केटला पर्यायो होय छे ?—इत्यादि सूत्रो सुप्रसिद्ध

जहन्नचक्खुदंसणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा ! जहन्नचक्खुदंसणी णं नेरइए जहन्नचक्खुदंसणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसणपज्जवेहिं तुल्ले, अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि । अजहन्नमणुक्कोसचक्खुदंसणीवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं अचक्खुदंसणीवि, ओहिदंसणीवि ।

हे भगवन् ! जघन्यचक्षुदर्शनवाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनंता पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'जघन्यचक्षुदर्शनवाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्य चक्षुदर्शनवाळो नैरयिक जघन्यचक्षुदर्शनवाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित छे. स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे. वर्ण, गन्ध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञानवडे छस्थानपतित छे. चक्षुदर्शनपर्याय वडे तुल्य छे. अचक्षुदर्शन पर्याय अने अवधिदर्शन पर्याय वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टचक्षुदर्शनवाळा नैरयिको पण जाणवा. अजघन्यअनुत्कृष्टचक्षुदर्शनवाळा पण एमज जाणवा. परन्तु स्वस्थाननी अपेक्षाए छ स्थानपतित होय छे. एम अचक्षुदर्शनी अने अवधिदर्शनी पण समजवा.

णीण नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-'जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा! जहन्नाभिणिबोहियनाणी नेरइए जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि। अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवं चेव, णवर आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एव सुयनाणी ओहिनाणीवि, नवरं जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थि। जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा, नवर जस्स अन्नाणा तस्स नाणा न भवंति।

एम शा हेतुथी कहो छो के 'जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळो नैरयिक जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे अने प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, अवगाहनार्थरूपे चतुःस्थानपतित छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श पर्यायोवडे छ स्थानपतित छे. आभिनिबोधिकज्ञानपर्याय वडे तुल्य छे. श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान पर्यायो अने त्रण दर्शन वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टआभिनिबोधिकज्ञानवाळा नैरयिकोने जाणवु. अजघन्यअनुत्कृष्टआभिनिबोधिकज्ञानवाळा नैरयिकोने पण एमज जाणवु. परन्तु स्वस्थाननी अपेक्षाए आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यायो वडे छस्थानपतित होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी नैरयिको सबधे जाणवु परन्तु जे नैरयिकोने ज्ञान होय छे तेने अज्ञान होतुं नथी. जेम ज्ञान सबधे कह्यु तेम अज्ञान सबंधे पण कहेवुं. परन्तु जेने अज्ञान होय छे तेने ज्ञान होतु नथी.

ट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा ! जहन्नगुणकालए नेरइए जहन्नगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवड़िए, कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'जहन्नगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'। एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव, नवरं कालवन्नपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं अवसेसा चत्तारि वन्ना दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा ।

१५. जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियना-

---

हेतुथी कहो छो के 'जघन्यकाळावर्णवाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यकाळावर्णवाळो नैरयिक जघन्यकाळावर्णवाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे अने प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, अवगाहना अने स्थितिवडे चतुःस्थानपतित छे. काळा वर्णपर्याय वडे तुल्य छे. बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श पर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छ स्थानपतित होय छे, ए हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'जघन्यकाळावर्णवाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'. एम उत्कृष्ट काळावर्णवाळा नैरयिकोने जाणवुं. अजघन्यअनुत्कृष्टकाळावर्णवाळा नैरयिकोने पण एमज जाणवुं. परन्तु काळावर्ण पर्याय वडे छस्थान पतित होय छे. ए प्रमाणे बाकीना वर्णो, बे गंधो, पांच रसो अने आठ स्पर्शोने आश्रयी जाणवुं.

१५. जघन्यआभिनिबोधिकज्ञानवाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् !

१४ जहन्नगुणकालगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केण-

१४. जघन्य काळा वर्णवाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा

अथवा त्रण अज्ञान अवश्य जाणवा, परन्तु विकल्पे न समजवा कारण के विकल्पना कारणभूत संमूर्छिम असंज्ञी पंचेन्द्रियनी उत्पत्तिनो तेओमा असंभव छे अजघन्यअनुत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहनावाळा नैरयिकना सूत्रमा अवगाहनाने आश्रयी चार स्थानको आ प्रमाणे छे—अजघन्यअनुत्कृष्ट-मध्यमअवगाहनावाळो नैरयिक सौथी जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागथी काइक मोटा अंगुलना असंख्यातमा भागथी मांडी अंगुलना असंख्यातमा भाग न्यून पांचसो धनुष सुधीनी अवगाहनावाळो होय छे, तेथी सामान्य नैरयिक सूत्रनी पेठे अहीं पण अवगाहनाने आश्रयी चार स्थानो घटी शके छे, अने स्थितिनी अपेक्षाए चार स्थानको तो सुप्रसिद्ध छे कारण के (समयाधिक) दसहजार वर्षथी मांडी (समयन्यून) तेत्रीश सागरोपम प्रमाण स्थितिमा ते घटी शके छे जघन्यस्थितिसूत्रमा अवगाहनानी अपेक्षाए चार स्थानको होय छे, कारण के जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागथी मांडी उत्कर्षथी सात धनुषनी (पोणा आठ धनुष अने छ आंगलनी) अवगाहना होय छे अहीं पण त्रण अज्ञान कोइकने कदाचित् होय छे, कोइकने कदाचित् नथी होता कारण के संमूर्छिम असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमांथी आवी उत्पन्न थयेला नैरयिकोने अपर्याप्तावस्थामा विभंग ज्ञान होतुं नथी, ते सिवाय बीजाने होय छे उत्कृष्ट स्थितिना विचारमा अवगाहनानी अपेक्षाए चार स्थानको होय छे, कारण के उत्कृष्टस्थितिवाळानी अवगाहना जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागथी मांडी पांचसो धनुष सुधी होय छे 'अजहन्नमणुक्कोसठिइए वि एवं चेव' इत्यादि अजघन्य-अनुत्कृष्टस्थितिवाळानी अपेक्षाए एमज जाणवुं अजघन्यअनुत्कृष्ट स्थितिमा पण जेम जघन्य स्थितिसूत्रमां अने उत्कृष्ट स्थितिसूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं परन्तु एटली विशेषता छे के जघन्यस्थितिसूत्रमा अने उत्कृष्ट स्थितिसूत्रमा स्थिति वडे तुल्यपणुं कहेलुं छे, अने अहीं स्वस्थानने आश्रयी एटले स्थितिने आश्रयी, चार स्थानको कहेवा, कारण के समयाधिक दसहजार वरसथी मांडी उत्कर्षथी समय न्यून तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति होय छे

ठिइयस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिइएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिइएवि एवं चेव, नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए।

कहो छो के-'जघन्यस्थितिवाळा नैरयिकोने अनन्तपर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम! जघन्यस्थितिवाळो नैरयिक जघन्य स्थितिवाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे. अवगाहनारूपे चउस्थान पतित होय छे अने स्थिति वडे तुल्य छे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शनो वडे छस्थानपतित छे. ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थितिवाळाने जाणवुं अने अजघन्यअनुत्कृष्ट स्थितिवाळा नैरयिकोने तेमज जाणवुं. परन्तु तेओ स्वस्थाननी अपेक्षाए चतुःस्थानपतित होय छे.

त्याग करे छे. अने तेज समये सम्यग्दृष्टिने त्रण ज्ञान अने मिथ्यादृष्टिने त्रण अज्ञान उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी विग्रहगतिथी के अविग्रहगतिथी उत्पत्तिस्थाने जइने वैक्रिय शरीरनो संघात करे छे—वैक्रियशरीरने योग्य पुद्गलो ग्रहण करे छे. जे संमूर्छिम असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच नरकमां उत्पन्न थाय, त्यारे तेने ते समये विभंग ज्ञान होतुं नथी, माटे जघन्य अवगाहनावाळाने बे के त्रण अज्ञानो विकल्पे जाणवा. उत्कृष्टअवगाहनावाळा सूत्रमां उत्कृष्टअवगाहनावाळा नैरयिकने स्थिति वडे हानि अने वृद्धिना बब्बे स्थानो होय छे. ते आ प्रमाणे—१ असंख्यातभागहानि अने २ संख्यातभाग हानि, तथा १ असंख्यातभागवृद्धि अने २ संख्यातभागवृद्धि, परन्तु संख्यातगुण अने असंख्यातगुण वृद्धि हानि होती नथी. कारण के उत्कृष्टअवगाहनावाळा नारको पांचसो धनुष प्रमाणवाळा होय छे, अने ते सातमी नरकपृथिवीमां छे. त्यां जघन्य स्थिति बावीश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी छे. माटे असंख्यात अने संख्यात भाग ज हानिवृद्धि घटे छे, असंख्यातगुण अने संख्यातगुण हानिवृद्धि घटती नथी. तेओने त्रण ज्ञान

ब्भहिए वा । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, से एएणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ–'अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ।

१२ जहन्नठिइयाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जहन्नठिइयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! जहन्नठिइए नेरइए जहन्न-

---

सख्यातगुण हीन होय अने असख्यातगुण हीन होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असख्यातगुण अधिक होय. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शपर्याय वडे तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छस्थानपतित होय. हे गौतम ! ए कारणथी एम कहुं छुं के अजघन्यअनुत्कृष्टअवगाहनावाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे.

१२. जघन्यस्थितिवाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी

---

११ ए प्रमाणे सामान्यथी नैरयिकादि प्रत्येकना अनन्त पर्यायो कह्या, हवे जघन्यादि अवगाहना (शरीरनी उंचाई) वगेरेने आश्रयी ते प्रत्येकना पर्यायोनी संख्या बतावे छे–'जहन्नोगाहणाणं भंते' ! इत्यादि हे भगवन् ! जघन्यअवगाहनावाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे–इत्यादि पाठ सुगम छे, परन्तु स्थिति वडे चतुःस्थान पतित छे जेमके दस हजार वरसनी स्थितिवाळो जघन्यअवगाहनावाळो नैरयिक प्रथम रत्नप्रभामां होय छे, अने उत्कृष्ट स्थितिवाळो सातमी नरकपृथिवीमां होय छे तेथी तेओने स्थिति वडे चार स्थानको घटे छे त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे तेओ षट्स्थानपतित छे अहीं

पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए नेरइए अजहन्नमणुक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जभागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहीए असंखिज्जभागअब्भहीए वा संखिज्जभागअब्भहीए वा संखिज्जगुणअब्भहीए वा असंखिज्जगुणअब्भहीए वा। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहीए। जइ हीणे असंखिज्जभागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहीए असंखिज्जभागअब्भहीए वा संखिज्जभागअब्भहीए वा संखिज्जगुणअब्भहीए वा असंखिज्जगुणअ-

---

कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'अजघन्यअनुत्कृष्टअवगाहनावाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! अजघन्यअनुत्कृष्टअवगाहनावाळो नैरयिक तेवाज प्रकारनी अवगाहनावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे अने अवगाहनारूपे कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय, अने कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो कदाच असंख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातगुण हीन होय के असंख्यातगुण हीन होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय. स्थिति वडे कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो असंख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातमो भाग हीन होय,

---

कोडी पल्योपमनो एक सागरोपम थाय छे. माटे तेओने पण असंख्यातगुण वृद्धि हानिनो असंभव होवाथी तेओ स्थितिनी अपेक्षाए त्रिस्थानपतित छे. बाकीना सूत्रनो विचार सुगम होवाथी स्वतः जाणी लेवो.

गोयमा ! उक्कोसोगाहणए नेरइए उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जभागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा, अह अब्भहिए असंखिज्जभागअब्भहिए वा संखिज्जभागअब्भहिए वा। वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाणं नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाणं अणंता

एम शा हेतुथी कहो छो के 'उत्कृष्टअवगाहनावाळा नैरयिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! उत्कृष्टअवगाहनावाळो नैरयिक उत्कृष्ट अवगाहनावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे,प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्य छे,स्थितिवडे कदाच न्यून होय,कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय,संख्यातमो भाग न्यून होय,जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय अने संख्यातमो भाग अधिक होय. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श पर्याय वडे, तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे छस्थानपतित होय. अजघन्यअनुत्कृष्ट(मध्यम)अवगाहनावाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो

तेओनी स्थिति उत्कर्षथी त्रण पल्योपम छे, अने पल्योपम असंख्याता वर्ष प्रमाण होवाथी असंख्यातगुण वृद्धि अने हानिनो संभव होवाने लीधे चार स्थानको घटी शके छे एम व्यन्तरोने पण जाणवु कारण के तेनी जघन्यथी दस हजार वरसनी अने उत्कर्षथी पल्योपमनी स्थिति छे ज्योतिषिक अने वैमानिकोने स्थितिने आश्रयी त्रण स्थानको जाणवा कारण के ज्योतिषिकोनुं जघन्य आयुष पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट लाख वरस अधिक एक पल्योपम छे वैमानिकोनु आयुष जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम छे दस कोडा-

णियावि एवं चेव, नवरं ठिईए तिट्ठाणवडिया।

१२. जहन्नोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए नेरइए जहन्नोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'उक्कोसोगाहणयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'?

स्थानपतित छे, अने केवळ दर्शनपर्याय वडे तुल्य छे. व्यन्तरो अवगाहनारूपे अने स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे. वर्णादि वडे छ स्थानपतित छे. ज्योतिषिको अने वैमानिको पण ए ज प्रकारे छे. परंतु स्थिति वडे त्रिस्थानपतित छे.

१२. जघन्यअवगाहनावाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–'जघन्य अवगाहनावाळाने अनंतपर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! जघन्यअवगाहनावाळो नैरयिक जघन्यअवगाहनावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहनारूपे तुल्यछे, स्थितिवडे चतुःस्थानपतितछे. वर्ण, गध, रस, अने स्पर्शपर्याय तथा त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शनवडे छस्थानपतित छे. उत्कृष्टअवगाहनावाळा नैरयिकोने केटला पर्यायो कह्याछे? हे गौतम ! अनन्तपर्यायो कह्याछे. हे भगवन् !

पुरा बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळो संख्यातगुण अधिक छे. ए प्रमाणे अप्कायिकथी आरंभी चउरिन्द्रिय पर्यन्ता सुधी पोतपोतानी उत्कृष्ट स्थितिने अनुसारे स्थितिवडे त्रण स्थानकोनो विचार करवो. तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने चार स्थानको जाणवां. कारण के

चक्खुदंसणं अचक्खुदंसणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जवा जहा नेरइयाणं तहा भाणियव्वा ।

११ मणुस्साणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'मणुस्साणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! मणूसे मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणमणपज्जवनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । वाणमंतरा ओगाहणट्ठयाए ठिईए चउट्ठाणवडिया, वण्णाईहिं छट्ठाणवडिया । जोइसिया वेमा-

वडे छस्थानपतित होय. एम तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा. परन्तु चउरिन्द्रियोने चक्षु अने अचक्षु ए बे दर्शन होय छे. जेम नैरयिकोने कह्या तेम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोने पर्यायो कहेवा.

११. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् !, एम शा हेतुथी कहो छो के 'मनुष्योने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! कोइपण एक मनुष्य कोइ बीजा मनुष्यनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे अने प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थानपतित छे, स्थितिरूपे चतुःस्थानपतित छे, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान वडे छस्थानपतित छे, केवलज्ञान पर्याय वडे तुल्य छे, त्रण अज्ञान अने त्रण दर्शन वडे, छ

जानी स्थिति अन्तर्मुहूर्त, मास, वरस, बे हजार वरस छे, अन्तर्मुहूर्तादिने अमुक परिमाणवाळी संख्याथी गुणता बावीश हजार वर्ष थाय छे. तेथी अन्तर्मुहूर्तादिप्रमाण स्थितिवाळो संपूर्ण बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळानी अपेक्षाए संख्यातगुण न्यून छे, अने तेनी अपेक्षाए

१०. बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता'? गोयमा! बेइंदिए बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइगुणहीणे वा असंखिज्जइगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जभागअब्भहिए वा संखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जइगुणमब्भहिए वा। ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुयनाणमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। एवं तेइंदियावि। एवं चउरिंदियावि, नवरं दो दंसणा,

१०. बेइन्द्रियोने केटला पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! बेइन्द्रियोने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'बेइन्द्रियोने अनन्त पर्यायो कह्या छे'? हे गौतम! कोइ एक बेइन्द्रिय कोइ बीजा बेइन्द्रियनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, अवगाहनारूपे कदाचित् न्यून होय, कदाचित् तुल्य होय, के कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातगुण न्यून के असंख्यातगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय. स्थितिने आश्रयी त्रिस्थानपतित होय. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्याय

र्तादि न्यून बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळो पूर्ण बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळानी अपेक्षाए संख्यातमा भाग वडे न्यून छे, अने तेनी अपेक्षाए संपूर्ण बावीश हजार वर्षनी स्थितिवाळो संख्यातमो भाग अधिक छे. एकनी स्थिति बावीश हजार वर्षनी छे अने बी-

वेहिं छट्ठाणवडिए ॥

९ वणस्सइयाण पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! वणस्सइकाइए वणस्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए. से एएणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ–'वणस्सइकाइयाण अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ॥

अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थानपतित छे अने स्थितिरूपे त्रिस्थानपतित छे. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्याय वडे छस्थानपतित छे.

९. वनस्पतिकायिकोने केटला पर्यायो छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'वनस्पतिकायिकोने अनन्त पर्यायो छे' ? हे गौतम ! कोइ एक वनस्पतिकायिक कोइ बीजा वनस्पतिकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित अने स्थितिरूपे त्रिस्थानपतित छे. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शनपर्याय वडे छ स्थानपतित होय छे. ए कारणथी एम कहुं छुं के वनस्पतिकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे.

बावीश हजार वरसनी स्थिति छे तेथी समय न्यून बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळो परिपूर्ण बावीश हजार वरसनी स्थितिवाळानी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग न्यून छे अने बीजो असंख्यातमो भाग अधिक छे एक पृथिवीकायिकनी पूरा बावीश हजार वर्षनी स्थिति छे अने बीजानी अन्तमुहूर्तादि न्यून तेटलीज स्थिति छे अने बावीश हजार वरसनो अन्तमुहूर्तादि संख्यातमो भाग थाय छे माटे अन्तर्मुहू

७. तेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ॥

८. वाउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्ज-

---

७. तेजस्कायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'तेजस्कायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! एक तेजस्कायिक बीजा कोइ एक तेजस्कायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे तुल्य छे, प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थान पतित होय छे अने स्थितिरूपे त्रिस्थानपतित होय छे. वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्यायवडे छ स्थानपतित होय छे.

८. वायुकायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! वायुकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'वायुकायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! कोइ एक वायुकायिक बीजा कोइ एक वायुकायिकनी

उत्कर्षथी पण संख्याता वरस प्रमाण छे, माटे असंख्यातगुणवृद्धि अने हानिनो संभव नथी. बाकीनी त्रण वृद्धि अने हानिनो विचार आ प्रमाणे छे–एक पृथिवीकायिक जीवनी स्थिति संपूर्ण बावीश हजार वरसनी छे, अने बीजानी समय न्यून बावीश हजार वरसनी

६. आउकाइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'आउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुअअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥

सख्यातमो भाग अधिक होय के सख्यातगुण अधिक होय. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मतिअज्ञान पर्याय, श्रुतअज्ञान पर्याय अने अचक्षुदर्शन पर्याय वडे छस्थानपतित होय.

६. हे भगवन् ! अप्कायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'अप्कायिकोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! एक अप्कायिक बीजा अप्कायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे तुल्य छे, प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चार स्थान पतित होय छे अने स्थितिरूपे त्रिस्थानपतित होय छे. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने अचक्षुदर्शन पर्यायनी अपेक्षाए छस्थानपतित होय छे.

असख्यातगुणवृद्धि अने हानिनो सभव नथी शा कारणथी असभव छे ? तेनो उत्तर ए छे के अहीं पृथिवीकायिकादिनु सौथी जघन्य आयुष क्षुल्लक (क्षुद्र)भवग्रहण छे, अने क्षुल्लक भवनु परिमाण बसो छप्पन आवलिका छे बे घडी प्रमाण एक मुहूर्तमां क्षुल्लक भवोनी सर्व सख्या पासठ हजार, पाचसो अने छत्रीश थाय छे कह्यु छे के-"आवलिकाना प्रमाण वडे बसो छप्पन आवलिका क्षुल्लक भवनु प्रमाण जाणवु, अने ते क्षुल्लक भवो मुहूर्तमां पासठ हजार पाचसो अने छत्रीश जाणवा " पृथिवीकायिकनी स्थिति

एवं वुच्चइ-'पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइगुणहीणे वा असंखिज्जइगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए वा असंखिगुणअब्भहिए वा। ठिईए तिट्ठाणवडिए, सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जभागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जइभागअब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए वा। वन्नेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए।

कहो छो के 'पृथिवीकायिकोने अनंत पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! एक पृथिविकायिक बीजा पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे अने अवगाहनारूपे कदाचित् हीन होय, कदाचित् तुल्य होय अने कदाचित् अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातगुण न्यून होय अने असंख्यातगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय. स्थितिनी अपेक्षाए त्रिस्थानपतित होय-कदाच न्यून होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो न्यून होय तो असंख्यातमो भाग न्यून होय, संख्यातमो भाग न्यून होय के संख्यातगुण न्यून होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय,

---

संख्याता भेदो थाय छे. तेनी स्थितिने आश्रयी हीनपणा अने अधिकपणामां त्रण स्थानको छे, पण चार स्थानको नथी. कारण के तेमां

वेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीयफासपज्जवेहिं उसिणफासपज्जवेहिं निद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभंगनाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता। एवं जहा नेरइया, जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारावि जाव थणियकुमारा।

५. पुढविकाइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते !

प वडे, कर्कश स्पर्श, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षस्पर्श पर्यायवडे, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान पर्याय वडे, तथा चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन पर्याय वडे छ स्थानकने प्राप्त थयेल छे. हे गौतम ! ए कारणथी एम कहुं छुं के–असुरकुमारने अनन्ता पर्यायो कह्या छे. बाकी बधु नैरयिकोनी पेठे जाणवु. जेम असुरकुमार संबंधे कह्युं तेम नागकुमार संबंधे यावत्–स्तनितकुमार सुधी जाणवु.

५. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी

असुरकुमारोना केटला पर्यायो कह्या छे ? इत्यादि उपर कहेलो अर्थ प्राय बधा असुरकुमारादिमा जाणवो अने बधां चोवीश दंडकना सूत्रोनो पण पूर्वनी पेठे विचार करवो परन्तु जे विशेषता छे ते अहीं बतावीए छीए–तेमा जे पृथिवीकायिकादि जीवोनी अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे, तो पण तेमा चार स्थानको जाणवा कारण के अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणना अ

४. असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! असुरकुमारे असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं नीलवन्नपज्जवेहिं लोहियवन्नपज्जवेहिं हालिद्दवन्नपज्जवेहिं सुक्किल्लवन्नपज्जवेहिं, सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं, तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं, कक्खडफासपज्ज-

---

४. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनन्त पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'असुरकुमारोने अनन्त पर्यायो कह्या छे' ? हे गौतम ! एक असुरकुमार बीजा असुरकुमार करतां द्रव्यार्थपणे–द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे, प्रदेशार्थप –प्रदेशसंख्या वडे तुल्य छे, अवगाहनारूपे चतुःस्थानकपतित–चार स्थानकने प्राप्त थयेल छे, स्थिति वडे चार स्थानकने प्राप्त थयेल छे, काळावर्णपर्याय वडे छ स्थानकने प्राप्त थयेल छे, एम नीलवर्णपर्याय वडे, रक्तवर्ण पर्याय वडे, पीतवर्ण पर्याय वडे अने शुक्लवर्ण पर्याय वडे, सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्ध पर्याय वडे, तिक्त, कटुक, कषाय, अम्ल, अने मधुर रस पर्या-

---

आत्मा केवळ कृष्णादिपर्यायो वडे ज पर्यायवाळो नथी, परन्तु ते ते क्षेत्रमां संकोच अने विकास थवाना स्वभाव वडे तथा ते ते अध्यवसाय स्थानो वडे पण पर्यायवाळो होय छे–एम जणाववा माटे क्षेत्र अने काळनी अपेक्षाए चतुःस्थानननी प्राप्ति कही. प्रसंगथी एटलुं कहेवुं बस छे. एम नैरयिकोना अनन्त पर्यायो कह्या.

४.–१२. हवे असुरकुमारोना पर्यायोनी संख्या संबन्धे प्रश्न करे छे–'असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता' ? हे भगवन् !

अधिक छे जेम कृष्णवर्ण पर्यायने आश्रयी हानि अने वृद्धिना छ स्थानको कह्या, तेम बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शोने आश्रयी प्रत्येकना छ स्थानको जाणवा ए प्रमाणे पुद्गलविपाकी नामकर्मना उदयथी उत्पन्न थयेल जीवना औदयिक भावनी अपेक्षाए छ स्थानकोनु स्वरूप बताव्यु, हवे जीवविपाकी ज्ञानावरणीयादि कर्मोना क्षयोपशमभावने अपेक्षी छ स्थानको बतावे छे-'आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं' इत्यादि अहीं पूर्वनी पेठे प्रत्येक आभिनिबोधिकादि ज्ञानमा छ स्थानकोनो विचार करवो अहीं द्रव्यथी तुल्यपणु बतावता सूत्रकारे 'जेम भेद अने प्रभेदनु बीज तिरोहित छे अने मयूरना इंडाना रसनी पेठे जेमा देश अने काळनो क्रम अव्यक्त छे पछु तथा विशेष भेदना परिणामने योग्य द्रव्य छे' एटले अभेदरूप, देश अने काळना क्रम रहित तथा विशेष अने भेदना परिणामने योग्य द्रव्य छे-एम जणाव्यु अवगाहना वडे चार स्थानक बतावता सूत्रकारे 'जेथी आत्मा संकोच अने विस्तार पामवाना स्वभाववाळो छे, पण द्रव्यना प्रदेशनी संख्यानो संकोच अने विस्तार थतो नथी' अर्थात् द्रव्यना प्रदेशनी संख्यामा हानि के वृद्धि थती नथी एम बताव्यु छे आ बाबत अन्य स्थळे पण कह्यु छे-"ते माटे आत्माना विकास अने संकोच थवामां द्रव्यना प्रदेशनी संख्यानी वृद्धि के ह्रास थतो नथी, पण क्षेत्रने आश्रयी वृद्धि अने ह्रास थाय छे" स्थिति वडे चतु स्थानने जणावता सूत्रकारे आयुषकर्मनी स्थितिबंधना कारणभूत अध्यवसायस्थानोनो उत्कर्ष अने अपकर्ष बताव्यो छे जो एम न होय तो स्थितिमा चार स्थानको न घटी शके अहीं आयुषकर्म उपलक्षण-सूचक छे तेथी सर्व कर्मोनो स्थितिबंधना हेतुभूत अध्यवसायोनो उत्कर्ष अने अपकर्ष जाणवो कृष्णादिवर्ण पर्यायो वडे छ स्थान प्रदर्शित करता आचार्ये 'एक नारकना पण अनन्त पर्यायो छे, तो बधा नारकोना होय तेमा शु कहेवु' एम बताव्यु

(प्र०)—नारकोना पर्यायो संबन्धे गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो एटले भगवाने 'अनन्त पर्यायो छे' एम कहेवु जोईए, बीजु न कहेवु जोईए, तो शा माटे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावनु कथन कर्यु ? (उ०)—अभिप्रायना नहि जाणवाथी उपरनी शंका थयेली छे ते अयुक्त छे अहीं बधा जीवोना बधा स्वपर्यायोनी संख्या सरखी होती नथी, पण तेमा छ स्थानो होय छे ए हमणाज बताव्यु ते छ स्थाननी प्राप्ति परिणामी पणा सिवाय होती नथी अने ते परिणामीपणु उक्त लक्षणवाळा द्रव्यनुज छे, माटे द्रव्यथी तुल्यपणु कह्यु छे

पर्याय छे. तेने शत संख्यारूप सर्वजीवोना अनन्त वडे भागाकार करवाथी 'सो' ए अनन्तमो भाग थाय छे. माटे जेना सो न्यून दस हजार कृष्णवर्ण पर्यायो छे ते नारक परिपूर्ण दस हजार कृष्णवर्णना पर्यायवाळा नारकनी अपेक्षाए अनन्तभाग हीन छे. अने तेनी अपेक्षाए पूर्ण कृष्णवर्णपर्यायवाळो बीजो नारक अनन्त भाग अधिक छे. कृष्णवर्णना पर्यायनुं परिमाण दस हजार छे तेने असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण कल्पित पचास वडे भाग आपीए तो बसो आवे, ते असंख्यातमो भाग छे. तेमां एक नारकना कृष्णवर्ण पर्यायो बसो ओछा दस हजार (९८००) छे, अने बीजाना पूरा दस हजार छे. तेमां बसो ओछा दस हजार कृष्णवर्णपर्यायवाळो नारक छे ते संपूर्ण कृष्णवर्णपर्यायवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातभागहीन अने परिपूर्ण कृष्णवर्णपर्यायवाळो तेनी अपेक्षाए असंख्यातभाग अधिक छे. दस हजार कृष्णवर्ण पर्यायना राशिने उत्कृष्ट संख्याता रूप कल्पित दस वडे भागीए एटले हजार संख्या आवे ते संख्यातमो भाग छे. तेमां एक नारकनुं कृष्णवर्णना पर्यायनुं परिमाण नव हजार छे अने बीजानुं दस हजार छे. नव हजार ए दश हजारथी एक हजार ओछा छे, अने तेनो हजार संख्यातमो भाग छे, माटे नव हजार कृष्णवर्ण पर्यायवाळो नारक पूर्ण कृष्णवर्ण पर्यायवाळा नारकना करतां संख्यातभाग हीन छे, तेनी अपेक्षाए बीजो संख्यातभाग अधिक छे. एक नारकनुं कृष्णवर्णना पर्यायनुं परिमाण हजार छे अने बीजानुं दस हजार छे. तेमां हजारने उत्कृष्ट संख्याता जेवा दस वडे गुणतां दस हजार थाय छे. माटे हजार कृष्णवर्ण पर्यायवाळो नारक दस हजार कृष्णवर्णपर्यायवाळा नारकनी अपेक्षाए संख्यातगुण हीन छे. अने तेनी अपेक्षाए परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायवाळो नारक संख्यातगुण अधिक छे. एक नारकना कृष्णवर्णपर्याय बसो छे, अने बीजाना पूरा दश हजार पर्यायो छे. बसोने असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण कल्पित पचास वडे गुणवाथी दस हजार थाय छे. तेथी बसो कृष्णवर्णपर्यायवाळो नारक संपूर्ण कृष्णवर्णपर्यायवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातगुण हीन छे. तेनी अपेक्षाए बीजो असंख्यातगुण अधिक छे. एक नारकना सो कृष्णवर्णपर्याय छे. अने बीजाना दस हजार छे सोने सर्व जीवना अनन्त परिमाणरूप कल्पित सो वडे गुणतां दस हजार थाय छे, माटे सो कृष्णवर्णपर्यायवाळो नारक पूर्ण कृष्णवर्णपर्यायवाळा नारकनी अपेक्षाए अनन्तगुण हीन छे, अने बीजो तेनी अपेक्षाए अनन्तगुण

अनन्त संख्या वडे भागवाथी जे प्राप्त थाय ते अनन्तमा भागवडे हीन होय छे. जे जेनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग हीन होय छे तेने असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण राशिवडे भाग आपवाथी जे प्राप्त थाय तेटला भाग वडे न्यून होय छे जे जेनी अपेक्षाए संख्यातभाग हीन होय तेने उत्कृष्ट संख्यातावडे भागवाथी जे प्राप्त थाय तेटला वडे ते हीन होय छे गुणयानी संख्यामा जे जेनाथी संख्यातगुण होय तेने उत्कृष्ट संख्यातावडे गुणवाथी जेटली संख्या थाय तेटलु संख्यातगुणानु प्रमाण जाणवु जे जेनाथी असंख्यात-गुण होय तेने असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण राशि वडे गुणवाथी जेटली संख्या थाय तेटलु असंख्यातगुण समजवु जे जेनाथी अनन्त गुण होय तेने सर्व जीवनी अनन्त संख्यावडे गुणता जेटलु आवे तेटलु अनन्तगुणानु प्रमाण जाणवु आम प्रमाणे कर्मप्रकृति संग्रहणीमा षट्स्थानकनी प्ररूपणाना अवसरे भागाकार अने गुणाकारनु स्वरूप कहेलु छे—

सव्वजियाणमसंखेज्जलोग संखेज्जगस्स जेट्ठस्स। भागो तिसु गुणणा तिसु छट्ठाणमसंखिया लोगा ॥३७॥ (कर्मप्रकृतिबंधनकरण)

"अनन्तभाग, असंख्यातभाग अने संख्यातभाग ए प्रथमनी त्रण वृद्धिमा सर्व जीवोनी, असंख्यात लोकाकाश प्रदेशोनी, अने उत्कृष्ट संख्यातानी संख्या वडे भाग करवो अने पछीनी संख्यातगुण, असंख्यातगुण अने अनन्तगुण-ए त्रण वृद्धिमां गुणाकार पण ते वडेज करवो-एटले अनन्तभाग वृद्धिमा सर्वजीवप्रमाण अनन्त वडे भागता, जे आवे तेटली वृद्धि करवी, असंख्यातभाग वृद्धिमा असंख्याता लोकाकाशप्रदेशप्रमाण असंख्यात संख्या वडे भागता जे आवे तेटली वृद्धि करवी अने संख्यातभाग वृद्धिमां उत्कृष्ट संख्याता वडे भागता जे आवे तेटलानी वृद्धि करवी एवी रीते संख्यातगुण, असंख्यातगुण अने अनन्तगुण वृद्धिमा पण उपर कहेल उत्कृष्ट संख्याता असंख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाण असंख्याता अने सर्वजीवप्रमाण अनन्त संख्यावडे गुणतां जे आवे तेटली समजवी

हवे प्रस्तुत सूत्रमा कहेला षट् स्थानकनो विचार कराय छे-तेमां कृष्ण वर्णना पर्यायनु परिमाण वास्तविक रीते अनन्त छे, तो पण असत्कल्पनाथी दस हजार गणवु तेने सर्वजीवना अनन्त राशिरूप कल्पित सो संख्यावडे भागया, एटले सो संख्या आवे, तेमां एक नारकना कृष्णवर्णना पर्यायनु परिमाण १०००० दस हजार छे, अने बीजाना सो पर्यायो ओछा होवाथी ९९०० नव हजार नवसो

ख्यातमो भाग अधिक छे. तथा एक नारक तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो छे अने बीजो केटलाक पल्योपम न्यून स्थितिवाळो छे, दश कोटाकोटि पल्योपम वडे एक सागरोपम थाय छे, तो केटलाक पल्योपम न्यून स्थितिवाळो पूर्ण स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए संख्यातमो भाग हीन छे, अने परिपूर्ण स्थितिवाळो संख्यातमो भाग अधिक छे. तथा एक नारकनी एक सागरोपमनी स्थिति छे. अने बीजानी तेत्रीस सागरोपम स्थिति छे. तेमां एक सागरोपम स्थितिवाळो नारक परिपूर्ण स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए संख्यात गुण हीन छे, कारण के एक सागरोपमने तेत्रीशथी गुणतां पूर्ण स्थिति थाय छे अने पूर्ण स्थितिवाळो नारक तेनी अपेक्षाए संख्यातगुण अधिक छे, तथा एक नारकनी दश हजार वर्षनी स्थिति छे अने बीजानी तेत्रीश सागरोपम छे. हवे दश हजार वर्षने असंख्याताथी गुणतां तेत्रीश सागरोपम थाय छे, तेथी दश हजार वर्षनी स्थितिवाळो तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातगुण हीन छे अने तेनी अपेक्षाए तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो असंख्यातगुण अधिक छे. ए प्रमाणे एक नारकने बीजा नारकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे अने प्रदेशार्थपणे तुल्यपणुं होवा छतां पण क्षेत्रने आश्रयी अवगाहनानुं हीनाधिकपणुं होवाथी अने कालने आश्रयी पण स्थितिनुं हीनाधिकपणुं होवाथी चतुःस्थाननी प्राप्ति कही छे. हवे भावने आश्रयी हीनाधिकपणुं कहे छे-सर्व जीव द्रव्यो अने अजीव द्रव्योनो परस्पर द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव वडे विभाग थाय छे. जेमके घट. द्रव्य थकी एक घट माटीनो, बीजो सुवर्ण के रुपा वगेरेनो होय छे, क्षेत्रथी एक घट अहिं बनेलो अने बीजो पाटलीपुत्रनो बनेलो होय छे, काळथी एक आजनो अने बीजो आ वरसनो के पोरनो होय छे अने भावथी एक काळो अने बीजो रक्तादि वर्णनो होय छे. एम बीजा द्रव्य संबंधे पण जाणवुं. तेमां प्रथम पुद्गलविपाकी नामकर्मना उदय निमित्ते जीवना औदयिक भावने आश्रयी हीनाधिकपणुं कहे छे-'कालवन्नपज्जवेहिं सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए' एक नारक बीजा नारकनी अपेक्षाए काळावर्णपर्याय वडे कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. तेमां हीनपणुं अने अधिकपणुं जे प्रकारे छे ते प्रकारे प्रतिपादन करे छे-'जइ हीणे' इत्यादि. अहीं भावनी अपेक्षाए हीनपणा अने अधिकपणाना विचारमां हानि अने वृद्धि प्रत्येकना छ छ स्थानक प्राप्त थाय छे. अने ते छ स्थानकमां जे जेनी अपेक्षाए अनन्तभाग हीन होय तेने सर्व जीवप्रमाण

आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभंगनाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'नेरइयाणं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ।

पर्याय, मतिअज्ञान पर्याय, श्रुतअज्ञान पर्याय अने विभंगज्ञान पर्याय वडे तथा चक्षुदर्शन पर्याय अचक्षुदर्शन पर्याय अने अवधिदर्शन पर्याय वडे छ स्थान प्राप्त होय. ते कारणथी हे गौतम ! हु एम कहु छुं के नारकोना संख्याता नहीं, असंख्याता नहीं, पण अनंता पर्याय कह्या छे.

अधिक छे 'ठिइए सिय हीणे' इत्यादि जेम अवगाहना वडे हानि अने वृद्धिना चार स्थानको कह्या तेम स्थितिवडे पण चार स्थानको कहेवा. पण सूत्रकार कहे छे-'जइ हीणे' इत्यादि ते आ प्रमाणे-तेमां एक नारकनी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति छे अने बीजानी समयादिन्यून तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति छे तेमां जे समयादिन्यून तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो छे ते पूरा तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग हीन छे अने पूरा तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो तेनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग अधिक छे कारण के सागरोपमनी अपेक्षाए समयादि असंख्यातमो भाग थाय छे ते आ प्रमाणे—असंख्याता समयोवडे एक आवलिका, संख्याती आवलिका वडे एक उच्छ्वासनिःश्वास, सात उच्छ्वासनिःश्वास वडे एक स्तोक, सात स्तोक वडे एक लव, सत्योतेर लवनो एक मुहूर्त, पंदर मुहूर्तवडे एक अहोरात्र, पंदर अहोरात्र वडे एक पक्ष, बे पक्ष वडे एक मास, बार मासवडे एक वर्ष, असंख्याता वर्षो वडे एक पल्योपम अने एक सागरोपम थाय छे समय, आवलिका, उच्छ्वास, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्र, पक्ष, मास, संवत्सर, अने युगवडे हीन स्थितिवाळो नारक परिपूर्ण स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग हीन छे अने तेनी अपेक्षाए बीजो अस-

गंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए । तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीयफासपज्जवेहिं उसिणफासपज्जवेहिं निद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ।

छस्थानपतित होय. तिक्तरस पर्याय, कटुकरस पर्याय, कपायरस पर्याय, अम्लरस पर्याय अने मधुररस पर्यायनी अपेक्षाए पण छस्थानपतित होय. कर्कशस्पर्श पर्याय, मृदुस्पर्श पर्याय, गुरुस्पर्श पर्याय, लघुस्पर्श पर्याय, शीतस्पर्श पर्याय, उष्णस्पर्श पर्याय, स्निग्धस्पर्श पर्याय अने रुक्षस्पर्श पर्याय वडे छस्थानप्राप्त होय. आभिनिबोधिक ज्ञान पर्याय, श्रुतज्ञान पर्याय, अवधिज्ञान

रकनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग हीन छे, अने बीजो तेनी अपेक्षाए असंख्यातमो भाग अधिक छे. तथा एक नारक पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो छे अने बीजो बे त्रण धनुष ओछी उंचाइवाळो छे, तो ते बे त्रण धनुष पांचसो धनुषनो संख्यातमो भाग थाय छे, तेथी ते नारक पूरा पांचसो धनुषनी उंचाइवाळा नारकनी अपेक्षाए संख्यातमो भाग हीन छे अने पूरा पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो नारक तेनी अपेक्षाए उंचाइमां संख्यातमो भाग अधिक छे. तथा एक नारक सवासो धनुषनी उंचाइ वाळो छे अने बीजो पांचसो धनुषनी उंचाइ वाळो छे, सवासो ने चारे गुणतां पांचसो थाय छे, तेथी सवासो धनुषनी उंचाइवाळो नारक बीजा पांचसो धनुषनी उंचाइवाळा नारकनी अपेक्षाए उंचाइमां संख्यातगुण हीन छे. अने तेनी अपेक्षाए पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो बीजो नारक उंचाइमां संख्यातगुण अधिक छे. एक नारक अपर्याप्तावस्थामां अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलो छे अने बीजो उंचाइमां पांचसो धनुष छे. अंगुलना असंख्यातमा भागने असंख्याताथी गुणतां पांचसो धनुष थाय छे, तो अपर्याप्तावस्थामां अंगुलना असंख्यातमा भागनी अवगाहनावाळो नारक पांचसो धनुषनी उंचाइवाळा नारकनी अपेक्षाए असंख्यातगुण हीन छे, अने पांचसो धनुषप्रमाणवाळो नारक तेनी अपेक्षाए असंख्यात गुण

वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा। नीलवन्नपज्जवेहिं लोहियवन्नपज्जवेहिं हालिद्दवन्नपज्जवेहिं सुक्किल्लवन्नपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। सुब्भि-

---

अधिक होय तो अनंतमो भाग अधिक होय, असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय, असंख्यातगुण अधिक होय के अनंतगुण अधिक होय. नीलवर्ण पर्यायनी अपेक्षाए, रक्तवर्ण पर्यायनी अपेक्षाए, हारिद्रवर्ण पर्यायनी अपेक्षाए अने शुक्लवर्ण पर्यायनी अपेक्षाए छस्थानपतित जाणवो. सुरभिगंधपर्याय अने दुरभिगंधपर्यायनी अपेक्षाए

प्रभावि अर्थमां छे अहीं अनेकान्तद्योतक 'स्यात्' शब्दनुं ग्रहण छे एटले अनेकान्तपणे कदाचित् हीन होय, कदाचित् तुल्य होय अने कदाचित् अधिक होय कारण के रत्नप्रभा पृथ्वीना नारकोना भवधारणीय (स्वाभाविक) वैक्रिय शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग छे अने उत्कर्षथी सात धनुष, त्रण हाथ अने छ अंगुल छे अने उत्तरोत्तर पृथिवीमा बमणी बमणी करतां सातमी नरक पृथ्वीना नारकोनी जघन्य थकी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी पांचसो धनुष होय छे तेमां जो एक नारकनी अपेक्षाए बीजा नारकोना शरीरनी अवगाहना हीन होय तो असंख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातगुण हीन होय, के असंख्यातगुण हीन होय जो अधिक होय तो कदाच असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय, कारण के एक नारक उंचाइमां पांचसो धनुष छे अने बीजानी उंचाइ अंगुलना असंख्यातमा भाग हीन पांचसो धनुष छे अंगुलनो असंख्यातमो भाग पांचसो धनुषना असंख्यातमा भागप्रमाण छे अंगुलना असंख्यातमा भाग हीन पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो नारक बीजा परिपूर्ण पांचसो धनुषनी उंचाइवाळा ना

संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जभागमब्भहिए वा संखिज्जभागमब्भहिए वा संखिज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा। कालवण्णपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे

संख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातगुण हीन होय के असंख्यातगुण हीन होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक स्थितिवाळो होय. काळावर्ण पर्यायनी अपेक्षाए कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो अनंतमो भाग हीन होय, असंख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातगुण हीन होय, असंख्यातगुण हीन होय के अनंतगुण हीन होय. जो

व्यस्वरूपे तुल्यपणुं कह्युं. हवे प्रदेशार्थपणे-प्रदेशनी अपेक्षाए तुल्यपणुं कहे छे-'पएसट्ठयाए तुल्ले' प्रदेशार्थपणे तुल्य छे-एटले नारक जीव द्रव्यना प्रदेशो लोकाकाशना प्रदेशो जेटला छे, माटे प्रदेशार्थपणे एक नैरयिक बीजा नैरयिकनी अपेक्षाए तुल्य छे. प्रदेशार्थपणे तुल्य कहेवानुं कारण एटलुंज के द्रव्यो प्रदेशवाळां अने अप्रदेशवाळां ए बे प्रकारनां छे एम जणाववा माटे छे. तेमां परमाणु अप्रदेश-जेने कोइ प्रदेश नथी एवुं द्रव्य छे, अने द्विप्रदेश, त्रिप्रदेश आदि द्रव्यो प्रदेशवाळां छे. आ बे प्रकारनां द्रव्यो पुद्गलास्तिकायने विषेज होय छे. बाकीना धर्मास्तिकायादिक द्रव्यो अवश्य प्रदेशवाळां छे. तथा 'ओगाहणट्ठाए सिय हीणे' इत्यादि. अवगाहनानी अपेक्षाए स्यात्-कदाचित् हीन होय-एटले अपेक्षाए असंख्यात प्रदेशवाळो नैरयिक बीजा तुल्यप्रदेशवाळा नरयिकथी अवगाहना-शरीरनी उंचाइनी अपेक्षाए 'स्यात्'-कदाचित् हीन होय. अहीं स्यात्शब्द प्रशंसा, अस्तित्व, विवाद, विचारणा, अनेकांत, संशय, अने

हणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जइभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखिज्जइभागमब्भहिए वा संखिज्जइभागमब्भहिए वा संखिज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे अ-

अवगाहना (शरीरनी उंचाइ)थी स्यात्–कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो असंख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातमो भाग हीन होय, संख्यातगुण हीन होय अने असंख्यातगुण हीन होय. जो अधिक होय तो असंख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातमो भाग अधिक होय, संख्यातगुण अधिक होय के असंख्यातगुण अधिक होय. स्थितिनी अपेक्षाए कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय के कदाच अधिक होय. जो हीनस्थितिवाळो होय तो असंख्यातमो भाग हीन होय

एतु ज्या पर्यायवाळा जीवो अनंता नथी त्यां पर्यायोनु अनंतपणु शी रीते घटी शके ? ए अभिप्रायथी गौतमे प्रश्न कर्यो छे त्यां पण भगवान् एज उत्तर आपे छे के "नारकोने अनंत पर्यायो छे" हवे अहीं संशय थवाथी गौतम स्वामी पूछे छे के–'से केणट्ठेणं भंते'! इत्यादि हे भगवन् ! या हेतुथी एम कहो छो के नारकोने ए प्रमाणे अनंत पर्यायो छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! एक नैरयिक बीजा नैरयिकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे–द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे इत्यादि (प्र०)–हवे अनन्त पर्यायो शी रीते घटे ? ए प्रश्नना उत्तरमा भगवन्ते अनन्त पर्यायो जे रीते युक्तिथी सिद्ध थाय ते रीते कहेवु जोईए अर्थात् पर्यायोनु अनन्तपणु शा हेतुथी घटी शके ? ए कहेवु जोइए तो कया अभिप्रायथी भगवान् एक नारक जीव बीजा नारक जीवनी अपेक्षाए द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे' एम उत्तर आपे छे ? (उ०)–'कोईपण एक द्रव्य अनन्त पर्यायवाळुं छे' ए न्यायने बताववा माटे एम कहेवामा आव्यु छे तेमा आ नारक जीव पण द्रव्य छे, तेथी एक नारक जीव द्रव्य बीजा नारक जीवनी अपेक्षाए 'द्रव्यार्थतया' द्रव्यार्थपणे–द्रव्यस्वरूपे तुल्य छे–एम द्र

असंखिज्जा वाउकाइया, अणंता वणप्फइकाइया, असंखेज्जा बेइंदिया, असंखेज्जा तेइंदिया, असंखेज्जा चउरिंदिया, असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, असंखेज्जा मणुस्सा, असंखेज्जा वाणमंतरा, असंखेज्जा जोइसिया, असंखेज्जा वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ते णं नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता।

२. नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता' ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगा-

---

संख्याता पृथिवीकायिको, असंख्याता अप्कायिको, असंख्याता तेजस्कायिको, असंख्याता वायुकायिको, अनंता वनस्पतिकायिको, असंख्याता बेइन्द्रियो, असंख्याता तेइन्द्रियो, असंख्याता चउरिन्द्रियो, असंख्याता पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको, असंख्याता मनुष्यो, असंख्याता व्यन्तरो, असंख्याता ज्योतिषिको, असंख्याता वैमानिको अने अनंता सिद्धो छे. ए कारणथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंता जीवपर्यायो छे.

२. हे भगवन् ! नारकोना केटला पर्यायो कह्या छे ? हे गौतम ! अनंता पर्यायो कह्या छे. हे भगवन् ! शा हेतुथी कहो छो के, 'नारकोना अनंता पर्यायो छे' ? हे गौतम ! एक नारक बीजा नारकनी अपेक्षाए द्रव्यार्थपणे तुल्य छे, प्रदेशार्थपणे तुल्य छे, पण

---

२. ए प्रमाणे गौतमे सामान्यतः जीव पर्यायो पूछ्या अने भगवाने पण सामान्य रीते उत्तर आप्यो, हवे गौतम विशेषपणे प्रश्न करे छे—'नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! नारकोने केटला पर्यायो कह्या छे ? आ प्रश्न गौतमे कया अभिप्रायथी कर्यो छे ? तेनो उत्तर ए छे के पहेलां सामान्य जीवना प्रश्नमां पर्यायवाळा जीवो अनंत होवाथी अनंता पर्यायो कह्या, प-

२. जीवपज्जवा णं भंते ! किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–जीवपज्जवा नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! असंखिज्जा नेरइया, असंखिज्जा असुरकुमारा, असंखिज्जा नागकुमारा, असंखिज्जा सुवण्णकुमारा, असंखिज्जा विज्जुकुमारा, असंखिज्जा अगणिकुमारा, असंखिज्जा दीवकुमारा, असंखिज्जा उदहिकुमारा, असंखिज्जा दिसीकुमारा, असंखिज्जा वाउकुमारा, असंखिज्जा थणियकुमारा, असंखिज्जा पुढविकाइया, असंखिज्जा आउकाइया, असंखिज्जा तेउकाइया,

---

२. हे भगवन् ! जीवपर्यायो शुं संख्याता, असंख्याता के अनंता छे ? हे गौतम ! संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंता छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जीवपर्यायो संख्याता नथी, असंख्याता नथी पण अनंता छे ? हे गौतम ! असंख्याता नारको, असंख्याता असुरकुमारो, असंख्याता नागकुमारो, असंख्याता सुवर्णकुमारो, असंख्याता विद्युत्कुमारो, असंख्याता अग्निकुमारो, असंख्याता द्वीपकुमारो, असंख्याता उदधिकुमारो, असंख्याता दिक्कुमारो, असंख्याता वायुकुमारो, असंख्याता स्तनितकुमारो, अ-

---

थाका अयुक्त छे कारण के औदयिकभाव पुद्गलने विषे पण होय छे, तेथी जीव अने अजीवना भेद वडे औदयिकभाव बे प्रकारनो होवाथी सघळुं कथन अने उत्तर सूत्रनो परस्पर विरोध नथी

२. हवे पर्यायनुं परिमाण जाणवाने माटे पूछे छे–'जीवपज्जवा णं भंते ! संखेज्जा' हे भगवन् ! जीवपर्यायो शुं संख्याता छे–इत्यादि अहीं वनस्पति अने सिद्ध सिवाय बधा नारकादिक जीव प्रत्येक असंख्याता छे मनुष्यने विषे असंख्यातपणुं संमूर्च्छिम मनुष्यनी अपेक्षाए छे वनस्पति अने सिद्धो प्रत्येक अनंता छे, तेथी पर्यायवाळा जीवो अनंता होवाथी अनंता जीवपर्यायो थाय छे

पंचमं विसेसपयं ।

१. कइविहा णं भंते! पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पज्जवा पन्नत्ता। तंजहा–जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य।

पांचमुं विशेष अथवा पर्याय पद.

१. हे भगवन्! केटला प्रकारना पर्यायो कह्या छे? हे गौतम! पर्यायो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–जीवपर्यायो अने अजीवपर्यायो.

१. ए प्रमाणे चोथा पदनी व्याख्या करी, हवे पांचमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो संबंध आ प्रमाणे छे–चोथा पदमां नारकादि पर्यायरूपे जीवोनी स्थिति कही अने अहीं तेओना औदयिक, क्षायोपशमिक अने क्षायिकभावने आश्रयी पर्यायोनी संख्या बतावे छे. तेमां आ प्रथम सूत्र छे–'कइविहा णं भंते! पज्जवा पन्नत्ता'? हे भगवन्! केटला प्रकारना पर्यायो कह्या छे? अहीं गौतम स्वामीए भगवंतने कया अभिप्रायथी ए प्रमाणे पूछ्युं? तेनो उत्तर ए छे के पहेला पदना प्रारंभमां प्रज्ञापनाना बे प्रकार कह्या छे—जेमके जीवप्रज्ञापना अने अजीवप्रज्ञापना. तेमां जीव अने अजीव द्रव्यो छे, कारण के 'गुणपर्यायवद् द्रव्यम्' (तत्त्वार्थ अ. ५. सू. ३१) गुण अने पर्यायवाळुं द्रव्य कहेवाय छे. एवुं द्रव्यनुं लक्षण छे. माटे जीव अने अजीव पर्यायना भेदो जाणवा माटे ए प्रमाणे प्रश्न कर्यो छे, अने भगवान् पण तेवाज प्रकारे उत्तर आपे छे–हे गौतम! बे प्रकारना पर्यायो छे, ते आ प्रमाणे–जीवपर्यायो अने अजीवपर्यायो. तेमां पर्याय, गुण, विशेष अने धर्म ए पर्यायवाची शब्दो छे. (प्र०)—संबंध बतावता एम कह्युं हतु के अहीं औदयिकादि भावोने आश्रयी पर्यायनी संख्या बताववानी छे, औदयिकादि भावो तो जीवाश्रित छे अने तेथी जीव पर्यायोनोज बोध थाय छे अने प्रश्नना उत्तरमां तो जीव अने अजीव बन्नेना पर्यायो कह्या छे. माटे आ संबंधनुं प्रतिपादन बरोबर नथी. (उ०)–अभिप्राय नहीं जाणवाथी थयेली आ

सेणवि अन्तोमुहुत्तं । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं पज्जत्तयाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! अजहन्नमणुक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ठिई पण्णत्ता ॥

पन्नवणाए भगवईए चउत्थं ठिइपदं समत्तं ॥

पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त सर्वार्थसिद्धविमानवासी देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्य अने उत्कर्ष रहित अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे.

प्रज्ञापना भगवतीमा चोथु स्थितिपद समाप्त

२८. विजयवेजयंतजयंतअपराजितेसु णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्को-

---

न्तर्मुहूर्त न्यून एकत्रीश सागरोपम.

२८. हे भगवन् ! विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित विमानोमां देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एकत्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी तेत्रीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एकत्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम. हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्धविमानवासी देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अने उत्कर्ष रहित तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. अपर्याप्ता सर्वार्थसिद्धविमानवासी देवो संबंधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी

सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं इगूणतीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं,उक्कोसेणं तीस सागरोवमाइ । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण तीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं तीस सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

सागरोपम. उपरनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयक देवो सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी ओगणत्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी त्रीश सागरोपम. अपर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून ओगणत्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रीश सागरोपम. उपरनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयक देवो सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी त्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी एकत्रीश सागरोपम. अपर्याप्ता देवो सबधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता देवो सबधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अ-

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । मज्झिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं छव्वीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । मज्झिमउवरिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं. उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं

सत्यावीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून छव्वीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्यावीश सागरोपम. मध्यम त्रिकना उपरना ग्रैवेयक देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी सत्यावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अठयावीश सागरोपम. अपर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्यावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अठयावीश सागरोपम. उपरनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयक देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अठयावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी ओगणत्रीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अठयावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून ओगणत्रीश

गदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि

पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रेवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून चोवीश सागरोपम. नीचेनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयक देवो संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी चोवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी पचीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून चोवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचीश सागरोपम. मध्यम त्रिकना नीचेना ग्रैवेयक देवो संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पचीश सागरोपम अने उत्कर्षथी छवीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून छवीश सागरोपम. मध्यम त्रिकना मध्यम ग्रैवेयक देवो संबंधी प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी छवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी

गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं वीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एगवीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । अच्चुए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा जहन्नेणं इक्कवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

२७. हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पजत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हेट्ठिममज्झिमगेवेज्ज-

---

थी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एकवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश सागरोपम.

२७. नीचेनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयक देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी बावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी त्रेवीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेवीश सागरोपम. नीचेनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयक देवो संबंधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी त्रेवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी चोवीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी

सेण अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आणए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइ, उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइ । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेणं एगूणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइं । पाणए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं वीस सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेणं वीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आरणे कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं वीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेण एकवीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा।

पर्याप्ता सबधे प्रश्न हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अढार सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून ओगणीश सागरोपम. प्राणत कल्पमा देवो सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी ओगणीश सागरोपम अने उत्कर्षथी वीश सागरोपम. अपर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून ओगणीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून वीश सागरोपम. आरण कल्पमा देवो सबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी वीश सागरोपम अने उत्कर्षथी एकवीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून वीश सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एकवीश सागरोपम. अच्युत कल्पमा देवो सबंधी प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी एकवीश सागरोपम अने उत्कर्षथी बावीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्ष-

चउद्दस सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। महासुक्के कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तर सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तर सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सहस्सारे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्को-

---

संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून चौद सागरोपम. महाशुक्र कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी चौद सागरोपम अने उत्कर्षथी सत्तर सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून चौद सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्तर सागरोपम. सहस्रार कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी सत्तर सागरोपम अने उत्कर्षथी अढार सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्तर सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अढार सागरोपम. आनत कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अढार सागरोपम अने उत्कर्षथी ओगणीश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त.

दो सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। माहिंदे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दो सागरोवमाइं साइरेगाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं साइरेगाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। बम्भलोए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। लंतए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं

गरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सात सागरोपम. माहेन्द्र कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी कांइक अधिक बे सागरोपम अने उत्कर्षथी कांइक अधिक सात सागरोपम. अपर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांइक अधिक बे सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांइक अधिक सात सागरोपम. ब्रह्मलोक कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी सात सागरोपम अने उत्कर्षथी दश सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सात सागरोपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस सागरोपम. लांतक कल्पमां देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी दस सागरोपम अने उत्कर्षथी चौद सागरोपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता

साणे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं । अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपन्नाइं पलिओवमाइं । अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

२६. सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं

र्त न्यून नव पल्योपम. अपरिगृहीता देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी कांइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी पंचावन पल्योपम. अपर्याप्त परिगृहीता देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त अपरिगृहीता देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पंचावन पल्योपम.

२६. सनत्कुमार देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी बे सागरोपम अने उत्कर्षथी सात सागरोपम. अपर्याप्त देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बे सा-

२५. ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं । अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं । ईसाणे कप्पे देवीणं अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । ई-

---

२५. ईशानकल्पमा देवो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी कंइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी कंइक अधिक बे सागरोपम. अपर्याप्त देवो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक, अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक अधिक बे सागरोपम. ईशान कल्पमां देवीओ सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी कांइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी पचावन पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचावन पल्योपम. परिगृहीता देवीओ सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी कंइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी नव पल्योपम. अपर्याप्त परिगृहीता देवीओ सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त परिगृहीता देवीओ सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक अधिक एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहू-

पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । (ग्रन्थाग्रं २५००) पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं । अपज्जत्तियपरिग्गहियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं । अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

र्यास परिगृहीता देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त परिगृहीता देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सात पल्योपम. अपरिगृहीता देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी एक पल्योपम अने उत्कर्षथी पचास पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास पल्योपम.

देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥

२४. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सोहम्मे कप्पे देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं देवीण

पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पंचावन पल्योपम.

२४. हे भगवन् ! सौधर्म कल्पमां देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपम अने उत्कर्षथी बे सागरोपम. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बे सागरोपम. सौधर्म कल्पना देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी एक पल्योपम अने उत्कर्षथी पचास पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास पल्योपम. सौधर्म कल्पमां परिगृहीता देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी एक पल्योपम अने उत्कर्षथी सात पल्योपम. अप-

सेणं चउभागपलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं। ताराविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागं, उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं। ताराविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं साइरेगं पलिओवमट्ठभागं अंतोमुहुत्तूणं।

२३. वेमाणियाणं देवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। वेमाणियाणं भंते!

देवी संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांईक अधिक पल्योपमनो आठमो भाग.

२३. हे भगवन्! वैमानिक देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी एक पल्योपम अने उत्कर्षथी तेत्रीश सागरोपम. अपर्याप्त संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम. हे भगवन्! वैमानिक देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी एक पल्योपम अने उत्कर्षथी पंचावन पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक

पलिओवमं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । नक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगं चउभागपलिओवमं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं साइरेगं चउभागपलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं। ताराविमाणे देवाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्को-

---

अर्ध पल्योपम. नक्षत्र विमानमां रहेली देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी कांइक अधिक पल्योपमनो चोथो भाग. अपर्याप्त देवी संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवी संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कांइक अधिक पल्योपमनो चोथो भाग. तारा विमानमां रहेला देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी पल्योपमनो चोथो भाग. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग. तारा विमानमां रहेली देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी कांईक अधिक पल्योपमनो आठमो भाग. अपर्याप्ता

चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं। गहवि-
माणे णं भंते ? देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं। अपज्जत्तयाणं
पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलि-
ओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं। गहविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउ-
भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतो-
मुहुत्तं। पज्जत्तियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओ-
वमं अन्तोमुहुत्तूणं। नक्खत्तविमाणे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्ध-

---

रहेला देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी एक पल्योपम. अपर्याप्ता संबंधी प्रश्न.. हे गौतम!
जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी
अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम. ग्रह विमानमां रहेली देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अर्ध
पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघ-
न्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अर्ध पल्योपम. नक्षत्र विमानमां रहेला देवो संबंधे प्रश्न. हे
गौतम! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अर्ध पल्योपम. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्त-
र्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चतुर्थ भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून

जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पन्नासवाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं। सूरविमाणे णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । सूरविमाणे णं भंते! देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिमब्भहियं । अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं

पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास हजार वरस अधिक अर्ध पल्योपम. हे भगवन् ! सूर्यना विमानमां रहेला देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी हजार वरस अधिक एक पल्योपम. अपर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून हजार वरस अधिक एक पल्योपम. हे भगवन् ! सूर्यविमानमां रहेली देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी पांचसो वरस अधिक अर्ध पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पांचसो वरस अधिक अर्ध पल्योपम. ग्रहविमानमां

वाससहस्समब्भहियं ।अपज्जत्तजोइसियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयजोइसियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणे णं भंते ! देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । अपज्जत्तयाणं चंददेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणे णं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पन्नासवाससहस्समब्भहियं । अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा !

देवी संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त ज्योतिषिक देवी संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पचास हजार वरस अधिक अर्ध पल्योपम. हे भगवन् ! चंद्र विमानमां रहेला देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी लाख वरस अधिक एक पल्योपम. अपर्याप्त चंद्र देवो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून लाख वरस अधिक एक पल्योपम. चन्द्रविमानमां रहेली देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कर्षथी पचास हजार वरस अधिक अर्ध पल्योपम. अपर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त देवीओ संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून

मंतरीणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं। अपज्जत्तियाण देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं वाणमंतरीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं।

२२. जोइसियाणं देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमट्ठभागो, उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहियं। अपज्जत्तजोइसियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं। जोइसिणीण देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण पलिओवमट्ठभागो, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णास-

---

जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अर्ध पल्योपम. अपर्याप्त देवी संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त व्यंतर देवी संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून अर्ध पल्योपम.

२२. ज्योतिषिक देवो संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम. अपर्याप्त ज्योतिषिक संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त। पर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून लाख वरस अधिक एक पल्योपम. ज्योतिषिक देवी संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कर्षथी पचास हजार वरस अधिक अर्ध पल्योपम. अपर्याप्त ज्योतिषिक

गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । संमुच्छिममणुस्साणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

२१. वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं,उक्कोसेणं पलिओवमं । अपज्जत्तयवाणमंतराणं देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं। वाण-

---

न्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम. संमूर्च्छिम मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. गर्भज मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम.

२१. हे भगवन् ! व्यंतर देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम! जघन्यथी दश हजार वर्ष अने उत्कर्षथी एक पल्योपम. अपर्याप्ता व्यंतर देवो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक पल्योपम. व्यंतर देवी संबन्धे प्रश्न. हे गौतम!

गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा । जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावत्तरी वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागं अंतोमुहुत्तूण ।

२०. मणुस्साणं भंते ! केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तमणुस्साणं पुच्छा ।

न्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बहोंतेर हजार वर्ष. अपर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बहोंतेर हजार वर्ष. गर्भज खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंचो सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पल्योपमनो असख्यातमो भाग. अपर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो असंख्यातमो भाग.

२०. हे भगवन् ! मनुष्योनी केटला काळपयत स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम. अपर्याप्ता मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघ-

अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

१९. खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तूणं । संमुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावत्तरी वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ।

अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बेंतालीस हजार वर्ष. गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व वर्ष.

१९. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. संमूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघ-

जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

१८. भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बायालीस वाससहस्साइं

न्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रेपन हजार वर्ष. गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व वर्ष.

१८. भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व वर्ष. संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बेंतालीस हजार वर्ष. अपर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण

यथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

१७. उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । संमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा !

उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम.

१७. उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व. संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रेपन हजार वर्ष. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघ-

जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा।

१६. चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ। अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाई अंतोमुहुत्तूणाइं। समुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण चउरासीवाससहस्साइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउरासीवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइ। गब्भवक्कंतियचउप्प-

---

न्यून पूर्व कोटि वर्ष.

१६. चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचो योनिक संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम. अपर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम. समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचो सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी चोराशी हजार वर्ष. अपर्याप्ता सबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून चोराशी हजार वर्ष. गर्भज चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिको सबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम. अपर्याप्ता संबधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने

१५. जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा । संमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा!

१५. हे भगवन् ! जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी केटला काळनी स्थिति कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व वर्ष. संमूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक क्रोड पूर्व वर्ष. गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त

सेणं तिन्नि पलिओवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। अपज्जत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अन्तोमुहुत्तूणा। गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्त, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्त, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइ अन्तोमुहुत्तूणाइं।

सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम. संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी एक क्रोड पूर्व वर्ष. अपर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पूर्वकोटि, वर्ष. गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम., अपर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता सबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम.

राइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगुणवन्नं राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगुणवन्नं राइंदियाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । चउरिंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा !जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा।गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा अन्तोमुहुत्तूणा।

१४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को-

---

र्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त तेइन्द्रिय संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून ओगणपचास रात्रि-दिवस. हे भगवन् ! चउरिन्द्रियोनी केटला काळ पर्यन्त स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी छ मास. अपर्याप्त चउरिन्द्रिय संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त चउन्द्रिय संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून छ मास.

१४. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण पल्योपम. अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथकी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता पंचेन्द्रिय तिर्यंचो

वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं,उक्कोसेण दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवणप्फइकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताण य पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । बायरवणप्फइकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण दस वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्त उक्कोसेण दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

१२ बेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छ-

---

जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी दस हजार वर्ष. अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष.

१२. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोनी केटला काळ पर्यन्त स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बार वर्ष. अपर्याप्त बेइन्द्रिय संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त बेइन्द्रिय संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बार वर्ष. हे भगवन् ! तेइन्द्रियोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी ओगणपचास रात्रि-दिवस. अपर्याप्त तेइन्द्रिय संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्क-

गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। सुहुमवाउकाइयाणं पुच्छा ! गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। बायरवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं। अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं।

१२. वणप्फइकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस

प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. बादर वायुकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण हजार वर्ष. अपर्याप्त वायुकायिकोनी स्थिति जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त अने पर्याप्त वायुकायिकोनी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण हजार वर्ष.

१२. हे भगवन् ! वनस्पतिकायिकोनी केटला काळपर्यंत स्थिति रही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी दस हजार वर्ष. अपर्याप्त वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष. सामान्य, अपर्याप्त अने पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. बादर वनस्पतिकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम !

गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाण य पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । सुहुमतेउकाइयाण ओहियाणं अपज्जत्ताण य पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । बायरतेउकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अन्तोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं । अपज्जत्तयबायरतेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । पज्जत्ताणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अन्तोमुहुत्त उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

११. वाउकाइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्त,उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ।

मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण रात्रि-दिवस. सामान्य, अपर्याप्ता अने पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. बादर तेजस्कायिको सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण रात्रि-दिवस. अपर्याप्त बादर तेजस्कायिको सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण रात्रि-दिवस.

११. हे भगवन् ! वायुकायिकोनी केटला काळ पर्यंत स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण हजार वर्ष. अपर्याप्त वायुकायिको सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता वायुकायिको सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण हजार वर्ष. सूक्ष्म वायुकायिको, अपर्याप्ता अने पर्याप्ता सबन्धे

सहस्साइं। अपज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। सुहुमआउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्तयाण य जहा सुहुमपुढविकाइयाणं तहा भाणियव्वं। बायरआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं। अपज्जत्तयबायरआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाण य पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं।

१०. तेउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं। अपजत्तयाणं पुच्छा।

अपर्याप्त अप्कायिक संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त अप्कायिक संबंधे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सात हजार वर्ष. जेम सूक्ष्म पृथिवीकायिकनी स्थिति कही तेम सामान्य, अपर्याप्ता अने पर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिकोनी स्थिति जाणवी. वादर अप्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सात हजार वर्ष. अपर्याप्ता वादर अप्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्ता वादर अप्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सात हजार वर्ष.

१०. तेस्जकायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी त्रण रात्रि–दिवस. अपर्याप्त तेजस्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त तेजस्कायिको संबन्धे प्रश्न. हे गौतम! जघन्यथी अन्त-

अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमपुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त । अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । बायरपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयबायरपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त । पज्जत्तयबायरपुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण बावीसं वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

९. आउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण सत्त वास-

---

अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त पृथिवीकायिक सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश हजार वर्ष. सूक्ष्म पृथिवीकायिक संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. बादर पृथिवीकायिक सबधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बावीश हजार वर्ष. अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त बादर पृथिवीकायिक संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश हजार वर्ष.

९. हे भगवन् ! अप्कायिकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सात हजार वर्ष.

देसूणं पलिओवमं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं । एवं एएणं अभिलावेणं ओहियअपज्जत्तयपज्जत्तयसुत्तत्तयं देवाण य देवीण य नेयव्वं जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं ।

८. पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं

सुवर्णकुमारी देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी दसहजार वर्ष अने उत्कर्षथी कंइक न्यून एक पल्योपम. अपर्याप्त सुवर्णकुमारी देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त सुवर्णकुमारी देवीओ संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दसहजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक ऊणुं एक पल्योपम. ए प्रमाणे ए पाठ वडे देवो अने देवीओ संबन्धे सामान्य, अपर्याप्त अने पर्याप्तना त्रण त्रण सूत्रो स्तनितकुमार देवो पर्यन्त नागकुमारनी पेठे जाणवां.

८. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी केटला काळनी स्थिति कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी बावीश हजार वर्ष. हे भगवन् ! अपर्याप्त पृथिवीकायिकनी केटला काळनी स्थिति कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण

पलिओवम । अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमारीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं भंते ! नागकुमारीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेण देसूणं पलिओवमं अन्तोमुहुत्तूणं ।

७. सुवण्णकुमाराणं भंते ! देवाण केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । सुवण्णकुमारीण देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं

स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी कंइक न्यून पल्योपम. हे भगवन् ! अपर्याप्त नागकुमारी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त नागकुमारी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक ऊणुं पल्योपम.

७, हे भगवन् ! सुवर्णकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी दसहजार वर्ष अने उत्कर्षथी कंइक ऊणां बे पल्योपम. अपर्याप्त सुवर्णकुमार देवो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. पर्याप्त सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दसहजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक ऊणां बे पल्योपम.

पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं।

६. नागकुमाराणं देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं। अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणं

केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त असुरकुमारी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून साडाचार पल्योपम.

६. हे भगवन् ! नागकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी कंइक न्यून बे पल्योपम. हे भगवन् ! अपर्याप्त नागकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त नागकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून कंइक ऊणां बे पल्योपम. हे भगवन् ! नागकुमारी देवीओनी केटला काळनी

पलिओवमाइं। अपज्जत्तयभवणवासिणीणं देवीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं भंते! भवणवासिणीणं देवीणं केवइय कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं।

५. असुरकुमाराण भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं साइरेग सागरोवमं। अपज्जत्तयअसुरकुमाराण भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्त। पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते! देवाणं केवइय कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अन्तोमुहुत्तूणं। असुरकुमारीणं भंते! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं

काळनी स्थिति कही छे? गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून साडाचार पल्योपम.

५. हे भगवन्! असुरकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी कइंक अधिक सागरोपम. हे भगवन्! अपर्याप्त असुरकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन्! पर्याप्त असुरकुमार देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष, अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून साधिक सागरोपम. हे भगवन्! असुरकुमारी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी साडाचार पल्योपम. हे भगवन्! अपर्याप्त असुरकुमारी देवीओनी

जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयदेवीणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं।

४. भवणवासीणं देवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं। अपज्जत्तयभवणवासीणं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयभवणवासीणं देवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं। भवणवासिणीणं भंते! देवीणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं

जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून पंचावन पल्योपम.

४. हे भगवन्! भवनवासी देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी कंइक अधिक सागरोपम. हे भगवन् अपर्याप्त भवनवासी देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् पर्याप्त भवनवासी देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून साधिक सागरोपम. हे भगवन्! भवनवासिनी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी साडाचार पल्योपम. हे भगवन्! अपर्याप्त भवनवासिनी देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन्! पर्याप्त भवनवासिनी देवीओनी केटला

पुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

३. देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं । देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं । अपज्जत्तयदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा !

हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश सागरोपम अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम छे.

३. हे भगवन् ! देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. हे भगवन् ! अपर्याप्त देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त देवोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम. हे भगवन् ! देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी पंचावन पल्योपम. हे भगवन् ! अपर्याप्त देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त देवीओनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम !

सेणं सत्तरस सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। तमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते! केवइयं काल ठिई पन्नता? गोयमा! जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तगतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। अहेसत्तमापुढविनेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं। अपज्जत्तगअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते! केवइय कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तगअहेसत्तम-

---

नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्य सत्तर सागरोपम अने उत्कृष्ट बावीश सागरोपम छे. हे भगवन्! अपर्याप्त तमःप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन्! पर्याप्त तमःप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्तर सागरोपम अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीश सागरोपम छे. हे भगवन्! नीचेनी सातमी तमःतमःप्रभा नरक पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्य बावीश सागरोपम अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम छे. हे भगवन्! अपर्याप्त नीचेनी सातमी नरक पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन्! पर्याप्त नीचेनी सातमी नरक पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे?

कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण सत्त सागरोवमाइ, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं। अपज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं। धूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते। केवइय कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा ! जहन्नेणं दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं। अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अन्तोमुहुत्तं। पज्जत्तगधूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस सागरोवमाइ अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्को-

---

सागरोपम अने उत्कृष्ट दस सागरोपम. हे भगवन् ! अपर्याप्त पंकप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळ सुधीनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति कही छे. हे भगवन् ! पर्याप्त पंकप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सात सागरोपम अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस सागरोपम. हे भगवन् ! धूमप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी दस सागरोपम अने उत्कृष्टथी सत्तर सागरोपम. हे भगवन् ! अपर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दस सागरोपम अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त न्यून सत्तर सागरोपम छे. हे भगवन् ! तमःप्रभा पृथिवीना

इयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं तिन्नि सागरोवमाइं, उक्कोसेसं सत्त सागरोवमाइं । अपज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं तिन्नि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । पंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं

स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य त्रण सागरोपम अने उत्कृष्ट सात सागरोपम. हे भगवन् ! अपर्याप्ता वालुकाप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! पर्याप्ता वालुकाप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण सागरोपम अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून सात सागरोपम. हे भगवन् ! पंकप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम जघन्य सात

अने अपर्याप्ता विकल्पे जाणवा एवुं जिनवचन छे." अपर्याप्ताओ जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त पर्यंत होय छे, माटे एम कह्युं छे के-जघन्यथी अने उत्कर्षथी अपर्याप्तानी स्थिति अन्तर्मुहूर्त छे. अपर्याप्तानो काळ पूरो थया पछी बाकीनो पर्याप्तानो काळ छे. माटे पर्याप्त सूत्रमां कह्युं छे-"गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं." हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति छे. ए सामान्य नरक पृथिवीने आश्रयी विचार कर्यो, हवे पृथिवीना विभागवडे विचार करे छे-'रयणप्पभा पुढविनेरइयाणं भंते' इत्यादि सुगम छे. बाकीनुं बधुं आ पदनी समाप्ति सुधी सुगम छे.

भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं सागरोवमं, उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं । अपज्जत्तयसक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केव-

शर्कराप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य एक सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रण सागरोपमनी छे. हे भगवन् अपर्याप्ता शर्कराप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट-थी पण अन्तर्मुहूर्तनी छे हे भगवन् ! पर्याप्ता शर्कराप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सागरोपम अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण सागरोपम. हे भगवन् वालुकाप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी

इत्यादि अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्तना विभाग सिवाय सामान्यपणे उत्तर आपेलो छे ज्यारे पर्याप्त अने अपर्याप्तना विभागवडे स्थितिनो विचार थाय त्यारे 'अपज्जत्तनेरइयाणं भंते' इत्यादि सूत्र जाणवु अहीं अपर्याप्ता लब्धि वडे अने करण वडे एम बे प्रकारना छे तेमां नारको, देवो तथा असंख्यात वरसना आयुष्यवाळा तिर्यंच अने मनुष्यो करणोवडे ज अपर्याप्ता छे, पण लब्धिथी अपर्याप्ता होता नथी कारण के लब्धिअपर्याप्तानी तेओमां उत्पत्ति थती नथी, माटे तेओ उत्पत्तिकाळे ज करणो हवे केटलाक काळ सुधी अपर्याप्ता होय छे एटले अन्तर्मुहूर्त सुधी अपर्याप्ता होय छे, बाकीना तिर्यंच अने मनुष्यो उत्पत्ति समये अने लब्धिवडे अपर्याप्ता होय छे एटले करण अपर्याप्ता अने लब्धि अपर्याप्ता बन्ने प्रकारना होय छे कह्यु छे के-"नारको, देवो अने असंख्य वर्षना आयुष्यवाळा गर्भज, तिर्यंच अने मनुष्यो उत्पत्तिकाळे अपर्याप्ता जाणवा बाकीना तिर्यंच अने मनुष्यो लब्धिने आश्रयी अने उत्पत्ति काळे बन्ने प्रकारना पर्याप्ता

२. रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं । अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं

२. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक सागरोपमनी स्थिति कही छे. हे भगवन् अपर्याप्त रत्नप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति कही छे. हे भगवन् पर्याप्त रत्नप्रभा पृथिवीना नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त न्यून एक सागरोपम छे. हे भगवन् !

कर्मनो अनुभव, जीवन ए पर्याय शब्दो छे. जो के अहीं जीवे मिथ्यात्वादि हेतुवडे ग्रहण करेलां ज्ञानावरणीयादिरूपे परिणत थयेलां कर्म पुद्गलोनुं जे रहेवुं ते 'स्थिति' तरीके प्रसिद्ध छे, तोपण नारकादि व्यवहारनो हेतु जे आयुष्कर्मनो अनुभव ते पण स्थिति कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—जो के नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति वगेरे नामकर्मना उदयने आश्रित नारकत्वरूप पर्याय छे, तोपण नारकायुषना उदयने प्रथमसमये नारकपणाना कारणरूप नरकक्षेत्रने नहि प्राप्त थवा छतां पण नारकपणानो व्यवहार थाय छे, ए प्रमाणे भगवती सूत्रमां कहेलुं छे के-"हे भगवन् नारक जीव नारकने विषे उत्पन्न थाय के अनारक-नारकथी भिन्न जीव नारकने विषे उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नारक नारकने विषे उत्पन्न थाय, पण नारकथी भिन्न जीव नारकने विषे न उत्पन्न थाय.' माटे अहीं नारकपणाना व्यवहारनुं कारण आयुष कर्मना अनुभवने उक्त व्युत्पत्तिथी स्थिति कही छे. भगवान् उत्तर आपे छे-'हे गौतम'

चउत्थ ठिइपयं ।

१. नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ? जहन्नेणं दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं । अपज्जत्तनेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगनेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइ अंतोमुहु त्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाइं ।

चोथुं स्थितिपद.

१. हे भगवन् ! नारकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. हे भगवन् ! अपर्याप्त नैरयिकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति कही छे. हे भगवन् ! पर्याप्त नैरयिकोनी केटला काळनी स्थिति कही छे ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपमनी छे.

---

१ हवे चोथा स्थितिपदनो प्रारंभ थाय छे तेनो सबन्ध आ प्रमाणे छे–पूर्वना पदमां दिशानी अपेक्षा वगेरे द्वारा अल्पबहुत्वनी सख्यानो निर्णय कर्यो अने आ पदमां ते अल्पबहुत्वनी सख्यावडे नीर्णीत करायेला जीवोनी जन्मथी माडी मरण सुधीना नारकादि पर्यायरूपे निरंतर स्थितिनो विचार कराय छे आ सबन्धवडे प्राप्त थयेल स्थितिपदनुं आ सूत्र छे–'नेरइयाण भंते केवइयं काल ठिई पन्नत्ता' इति हेभगवन् ! नैरयिकोनी केटला काळ सुधी स्थिति कही छे ? तेमा 'स्थीयते अनया'–जेना वडे रहेवाय ते स्थिति-आयुष

अपर्याप्ता विशेषणरहित सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे. कारण के अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवी, अप, तेज, वायु, अने वनस्पतिकायिकनो पण तेमां समावेश थाय छे. (८७) तेथी भवसिद्धिक जीवो विशेषाधिक छे. भव-संसारमां जेओनी सिद्धि छे ते भवसिद्धिक-भव्य कहेवाय छे. कारण के जघन्ययुक्त अनन्त प्रमाण अभव्यने छोडी बाकीना बधा जीवो भव्य छे. (८८) तेथी सामान्य निगोद जीवो विशेषाधिक छे, कारण के अहीं भव्यो अने अभव्यो घणी संख्यामां सूक्ष्म अने बादर निगोद जीवराशिमां ज प्राप्त थाय छे. बीजे स्थळे प्राप्त थता नथी. कारण के बीजा बधा जीवो मळीने असंख्यात लोकाकाशना प्रदेशराशिप्रमाण छे अने अभव्यो युक्त अनंत संख्याना परिमाणरूप छे, माटे भव्योनी अपेक्षाए ते किंचित् मात्र छे. भव्योनो तो पूर्वे अभव्योने छोडीने विचार कर्यो हतो, परन्तु अत्यारे बादर सूक्ष्म निगोदना विचारमां तेनो पण प्रक्षेप कराय छे तेथी विशेषाधिक छे. (८९) तेथी सामान्य वनस्पति जीवो विशेषाधिक छे. कारण के प्रत्येक शरीरवाळा वनस्पति जीवोनो तेमां समावेश थाय छे. (९०) तेथी सामान्य एकेन्द्रिय जीवो विशेषाधिक छे, कारण के बादर अने सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९१) तेथी सामान्य तिर्यंचो विशेषाधिक छे. कारण के पर्याप्त अने अपर्याप्त बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने तिर्यंच पंचेन्द्रियानो पण तेमां समावेश थाय छे. (९२) तेथी चारगतिमां रहेला मिथ्यादृष्टि जीवो विशेषाधिक छे. कारण के अहीं केटला एक अविरति सम्यग्दृष्ट्यादि संज्ञी जीवो सिवाय बाकीना बधाय तिर्यंचो मिथ्यादृष्टि छे. अने चार गतिना मिथ्यादृष्टिना विचारमां असंख्याता नारकादि तेमां नांखवा, तेथी तिर्यंच जीवराशिनी अपेक्षाए विचार करतां चार गतिना मिथ्यादृष्टि जीवो विशेषाधिक छे. (९३) तेथी विरतिरहित जीवो विशेषाधिक छे. कारण के अविरति सम्यग्दृष्टि जीवोनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९४) तेथी सकषायी जीवो विशेषाधिक छे, कारण के देशविरतादि सकषायी होवाथी तेनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९५) तेथी छद्मस्थ जीवो विशेषाधिक छे, कारण के उपशान्त मोहादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९६) तेथी सयोगी जीवो विशेषाधिक छे. कारण के सयोगी केवलीनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९७) तेथी संसारमां रहेला जीवो विशेषाधिक छे, कारण के अयोगी केवलीनो पण तेमां समावेश थाय छे. (९८) तेथी सर्व जीवो विशेषाधिक छे, कारण के सिद्धोनो पण तेमां समावेश थाय छे.

आचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना वृत्तिना अनुवादमां त्रीजुं अल्पबहुत्व पद समाप्त.

विशेषाधिक छे (६६) तेथी सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक छे (६८) तेथी सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्ता संख्यातगुणा छे कारण के अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवोथी पर्याप्ता सूक्ष्म जीवो स्वभावथी ज घणा छे आ प्रज्ञापना सूत्रना संग्रहणीकार कहे छे के-"सामान्यत: बादर जीवोमां अपर्याप्ता घणा छे अने सूक्ष्म जीवोमां पर्याप्ता घणा छे एम केवलज्ञानी कहे छे " (६९) तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक छे (७०) तेथी सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्ता विशेषाधिक छे (७१) तेथी सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक छे (७२) तेथी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे (७३) तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे जो के अपर्याप्त तेजस्कायिकथी आरंभी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोद सुधीना जीवो सामान्यपणे अन्य ग्रन्थमां असंख्यात लोकना आकाश प्रदेशना राशिप्रमाण कह्या छे, तोपण लोकना असंख्यातपणाना असंख्यात भेदो होवाथी आ प्रमाणे कहेलुं अल्पबहुत्व युक्तिसंगत छे (७४) तेथी अभवसिद्धिक जीवो अनन्तगुणा छे कारण के तेओ जघन्य युक्त अनन्त प्रमाण छे (७५) तेथी सम्यग्दर्शनथी पतित थयेला अनन्तगुणा छे (७६) तेथी सिद्धो अनन्तगुणा छे (७७) तेथी पण बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्ता अनन्तगुणा छे (७८) तेथी सामान्य बादर पर्याप्ता विशेषाधिक छे कारण के बादर पर्याप्त पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे (७९) तेथी बादर अपर्याप्त वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे कारण के एक एक पर्याप्त बादर निगोद जीवने आश्रयी असंख्यातगुणा बादर अपर्याप्त निगोद जीवो उपजे छे (८०) तेथी सामान्य बादर अपर्याप्ता जीवो विशेषाधिक छे कारण के बादर अपर्याप्त पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे (८१) तेथी सामान्य बादर जीवो विशेषाधिक छे, कारण के पर्याप्ता अने अपर्याप्तानो तेमां समावेश थाय छे (८२) तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे (८३) तेथी सामान्य सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के सूक्ष्म अपर्याप्ता पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. (८४) तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्ता संख्यातगुणा छे कारण के सूक्ष्म अपर्याप्ताओथी सूक्ष्म पर्याप्ताओ हमेशां स्वभावथी ज संख्यातगुणा होय छे अने ते प्रकारे केवलज्ञानीए जाणेलुं छे (८५) तेथी सामान्य सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक छे कारण के पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. (८६) तेथी पर्याप्ता

होय तेटला छे. (५०) तेथी अपर्याप्ता चउरिन्द्रियो विशेषाधिक छे. (५१) तेथी पण अपर्याप्ता तेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. (५२) तेथी पण अपर्याप्त बेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. यद्यपि अपर्याप्त चउरिन्द्रियथी मांडी अपर्याप्त बेइन्द्रिय सुधीना जीवो प्रत्येक एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण सूचिरूप खंडो जेटला होय तेटला बीजे स्थळे सामान्यपणे कह्या छे तो पण अंगुलना असंख्यातमा भागना अनेक भेदो होवाथी आ प्रमाणे विशेषाधिकपणानुं कथन विरुद्ध नथी. (५३) ते बेइन्द्रिय अपर्याप्ताथी पण प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. यद्यपि अपर्याप्त बेइन्द्रियादिनी पेठे पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको पण अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण सूचिरूप खंडो एक प्रतरमां जेटला होय तेटला अन्य स्थळे कह्या छे, तो पण अंगुलना असंख्यातमा भागना असंख्यात भेदो होवाथी बादर पर्याप्त प्रत्येक वनस्पतिना परिमाणना विचारमां अंगुलनो असंख्यातमो भाग असंख्यातगुणो ओछो लेवो, तेथी कंइ पण विरोध नथी. (५४) तेथी पर्याप्ता अनन्तकायिक जीवना शरीररूप बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे. (५५) तेथी बादर पृथवीकायिक पर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (५६) तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे. यद्यपि पर्याप्त बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक, पृथिवीकायिक अने अप्कायिक प्रत्येक अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण सूचिरूप खंडो एक प्रतरमां जेटला थाय तेटला सामान्यपणे अन्य ग्रन्थोमां कहेला छे, तो पण अंगुलना असंख्यातमा भागना असंख्याता भेदो होवाथी आ प्रमाणे असंख्यातगुणा कहेवामां कोइ पण दोष नथी. (५७) बादर पर्याप्ता अप्कायिकथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ घनीकृत लोकना असंख्यातमा भागमां रहेला असंख्याता प्रतरना आकाशप्रदेश प्रमाण छे. (५८) तेथी बादर तेजस्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ असंख्याता लोकना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. (५९) तेथी प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (६०) तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे. (६१) तेथी बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (६२) तेथी बादर अप्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (६३) तेथी बादर वायुकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (६४) तेथी सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. (६५) तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. (६६) तेथी सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्ता

'असंखेज्जगुणा' एवो पाठ छे, परन्तु ते योग्य नथी कारण के ए पछी आगळ पर्याप्ता चउरिन्द्रियो कहेवामां आवशे ते पण ज्योतिष्क देवोथी संख्यातगुणा ज घटे छे, ते नहि घटी शके ते आ प्रमाणे-एक प्रतरमां बसो छप्पन अंगुलप्रमाण सूचिरूप खंडो जेटला होय तेटला ज्योतिष्को छे कह्यु छे के—"बसो छप्पन्न अंगुल प्रमाण सूचिश्रेणिना प्रदेशो वडे प्रतरने भागता जेटली संख्या आवे तेटली ज्योतिष्क देवोथी अपहराय छे" एक प्रतरमां अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण सूचिरूप खंड जेटला थाय तेटला चउरिन्द्रिय जीवो छे कह्यु छे के—"पर्याप्त अने अपर्याप्त बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने असंज्ञी पचेन्द्रियो प्रत्येक अंगुलना संख्यातमा अने असंख्यातमा भागना प्रदेश वडे भागता प्रतरनो अपहार करे छे" एटले अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण सूचि प्रदेश वडे प्रतरने भागता जेटला आकाश प्रदेशो आवे तेटला पर्याप्ता चउरिन्द्रियादि छे, अने असंख्यातमा भाग प्रमाण सूचिना प्रदेशोवडे भागता जेटला आकाश प्रदेशो आवे तेटला अपर्याप्ता चउरिन्द्रियादि छे, माटे अंगुलना संख्यातमा भागनी अपेक्षाए बसो छप्पन्न अंगुल संख्यातगुणा छे, तेथी ज्योतिष्क देवोनी अपेक्षाए विचार करता पर्याप्त चउरिन्द्रियो पण संख्यातगुणा घटे छे तो पर्याप्त चउरिन्द्रियथी संख्यातमा भाग प्रमाण खेचर पचेन्द्रिय नपुंसको संख्यातगुणा होय तेमां शुं कहेवु? (४३) तेथी स्थलचर पचेन्द्रिय नपुंसको संख्यातगुणा छे (४४) तेथी जलचर पचेन्द्रिय नपुंसको संख्यातगुणा छे (४५) तेथी पर्याप्त चउरिन्द्रियो संख्यातगुणा छे (४६) तेथी पर्याप्ता संज्ञी अने असंज्ञी पचेन्द्रियो विशेषाधिक छे (४७) तेथी पर्याप्ता बेइन्द्रियो विशेषाधिक छे (४८) तेथी पर्याप्ता तेइन्द्रियो विशेषाधिक छे यद्यपि पर्याप्ता चउरिन्द्रियथी मांडी पर्याप्त तेइन्द्रिय सुधीना प्रत्येक एक प्रतरमां अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण सूचिश्रेणिना जेटला खंडो थाय तेटला सामान्य रीते बीजा स्थळे कहेला छे, तो पण अंगुलना संख्यातमा भागना संख्याता भेदो होवाथी उत्तरोत्तर विशेषाधिकपणानुं कथन विरुद्ध नथी बीजा स्थळे पण आ प्रमाणे अल्पबहुत्व कह्यु छे—"तेथी नपुंसक खेचर, नपुंसक स्थलचर, नपुंसक जलचर अने पर्याप्ता चउरिन्द्रिय संख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता पचेन्द्रिय, बेइन्द्रिय अने तेइन्द्रिय क्रमशः अधिक छे' (४९) पर्याप्त तेइन्द्रियोथी अपर्याप्त पचेन्द्रियो असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण सूचिरूप खंडो एक प्रतरमां जेटला

यजीवा विसेसाहिया ८८, वणस्सइजीवा विसेसाहिआ ८९, एगिंदिया विसेसाहिया ९०, तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया ९१, मिच्छदिट्ठी विसेसाहिआ ९२, अविरया विसेसाहिया ९३, सकसाई विसेसाहिया ९४, छउमत्था विसेसाहिआ ९५, सजोगी विसेसाहिआ ९६, संसारत्था विसेसाहिआ ९७, सव्वज्जीवा विसेसाहिआ ९८।

बहुवत्तव्वयपयं समत्तं

|| पन्नवणाए भगवईए तइयं अप्पबहुयं पयं समत्तं ||

विशेपाधिक छे. ९२ तेथी मिथ्यादृष्टिओ विशेपाधिक छे. ९३ तेथी विरतिरहित जीवो विशेपाधिक छे. ९४ तेथी सकपायी जीवो विशेपाधिक छे. ९५ तेथी छद्मस्थ जीवो विशेपाधिक छे. ९६ तेथी सयोगी जीवो विशेपाधिक छे. ९७ तेथी संसारी जीवो विशेपाधिक छे. ९८ अने तेथी सर्वजीवो विशेपाधिक छे. बहुवक्तव्यता पद समाप्त.

प्रज्ञापना भगवतीमां त्रीजुं अल्पबहुत्व पद समाप्त.

ख्यातगुणा छे, कारण तेओ एक प्रतरमां संख्याता कोटाकोटीयोजनप्रमाण सूचिश्रेणिना जेटला खंडो थाय तेटला सामान्य व्यन्तरो छे. परंतु अहीं केवळ पुरुपोनी विवक्षा छे, तेथी वधा समुदायनी अपेक्षाए कंईक न्यून वत्रीशमा भाग जेटला जाणवा, तेथी जलचर स्त्री करतां संख्यातगुणा घटे छे. (३९) तेथी व्यन्तरीओ वत्रीशगुणी होवाथी संख्यात गुणी छे. (४०) तेथी ज्योतिप्कदेवो संख्यातगुणा छे. कारण के तेओ एक प्रतरमां वसो छप्पन अंगुलप्रमाण सूचिश्रेणिना जेटला खंडो थाय तेटला छे, परंतु अहीं पुरुपोनी विवक्षा होवाथी वधा समुदायनी अपेक्षाए कंईक न्यून वत्रीशमा भाग जेटला छे, माटे व्यन्तरदेवी करतां संख्यातगुणा छे. (४१) तेथी ज्योतिप्क देवीओ संख्यातगुणी छे, कारण के तेओ वत्रीशगुणी छे. (४२) तेथी खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसको संख्यातगुणा छे. क्वचित्

वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा ७७, बायरपज्जत्ता विसेसाहिया ७८, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७९, बायरअपज्जत्तगा विसेसाहिया ८०, बायरा विसेसाहिया ८१, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ८२, सुहुमअपज्जत्तया विसेसाहिया ८३, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा ८४, सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ८५, सुहुमा विसेसाहिया ८६, भवसिद्धिया विसेसाहिया ८७, निगो-

असंख्यातगुणा छे. ८० तेथी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. ८१ तेथी बादरजीवो विशेषाधिक छे. ८२ तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे. ८३ तेथी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. ८४ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको संख्यातगुणा छे. ८५ तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक छे. ८६ तेथी सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे. ८७ तेथी भवसिद्धिको विशेषाधिक छे. ८८ तेथी निगोदजीवो विशेषाधिक छे. ८९. तेथी वनस्पतिजीवो विशेषाधिक छे. ९० तेथी एकेन्द्रियो विशेषाधिक छे. ९१ तेथी तिर्यंचो

तेटला छे (२२) तेथी खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक पुरुषो असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ प्रतरना असंख्यातमा भागमां रहेली असंख्याती श्रेणिना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे (२३) तेथी खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ संख्यातगुणी छे कारण के ते त्रणगुणी छे कारण के "तिर्यंचनी स्त्री त्रणगुणी अने त्रण अधिक जाणवी-एवु शास्त्रनु कथन छे" (२४) तेथी स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक पुरुषो संख्यातगुणा छे, कारण के ते प्रतरना अतिशय मोटा असंख्यातमा भागवी असंख्यात श्रेणिना आकाशप्रदेशना राशि जेटला छे (२५) तेथी स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, कारण के ते त्रणगुणी छे (२६) तेथी जलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक पुरुषो संख्यातगुणा छे कारण के प्रतरना अत्यंत घणा मोटा असंख्यातमा भागमां रहेली असंख्याती श्रेणिना जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला छे (२७) तेथी जलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, कारण के ते त्रणगुणी छे (२८) तेथी व्यन्तर देवो [पुरुषो] सं

साहिया ६६, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया ६७, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा ६८, सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तया विसेसाहिआ ६९, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया ७०, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया ७१, सुहुमनिगोया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ७२, सुहुमनिगोया पज्जत्तया संखिज्जगुणा ७३, अभवसिद्धिआ अणंतगुणा ७४, परिवडियसम्मदिट्ठी अणंतगुणा ७५, सिद्धा अणंतगुणा ७६, बायर-

---

पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे. ७० तेथी पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे. ७१ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे. ७२ तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे. ७३ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे. ७४ तेथी अभव्यो अनंतगुणा छे. ७५ तेथी पतित पडेला सम्यग्दृष्टि अनंतगुणा छे. ७६ तेथी सिद्धो अनंतगुणा छे. ७७ तेथी पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे. ७८ तेथी बादर पर्याप्त विशेषाधिक छे. ७९ तेथी अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको

ख्यातगुणा सौधर्म देवलोकमां अने तेथी असंख्यातगुणा भवनवासी छे." (२८) तेथी तेज सौधर्म कल्पमां देवीओ संख्यातगुणी छे. कारण के ते देवोथी बत्रीश गुणी छे. (२९) ते देवीओथी असंख्यातगुणा भवनवासी देवो छे, केवी रीते छे? आ प्रमाणे छे–अंगुल प्रमाण क्षेत्रना आकाश प्रदेशराशिना प्रथम वर्गमूलने त्रीजा वर्गमूल वडे गुणवाथी जेटलो प्रदेशराशि थाय तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला भवनपति देव अने देवीओनो समुदाय छे. तेनाथी कंईक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला भवनपति देवो छे. माटे सौधर्म देवीओथी तेओ असंख्यातगुणा छे (३०) तेथी भवनवासिनी देवीओ संख्यातगुणी छे कारण के ते बत्रीशगुणी छे. (३१) तेथी पण आ रत्नप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. कारण के अंगुल प्रमाण क्षेत्रना प्रदेशोना प्रथम वर्गमूळने बीजा वर्गमूळ वडे गुणतां जेटला प्रदेशो थाय तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिमां जेटला आकाशप्रदेशो होय

रतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ५८, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ५९, बायरनिगोया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ६०, बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ६१, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ६२, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ६३, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ६४, सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया ६५, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसे-

तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे. ६१ तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे. ६२ तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे. ६३ तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे ६४ तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे ६५ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे. ६६ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे. ६७ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे ६८ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको संख्यातगुणा छे. ६९ तेथी

मनुष्यो करता असंख्यातगुणा छे (२६) तेथी ईशान कल्पमा देवीओ संख्यातगुणी छे कारण के ते बत्रीशगुणी छे 'बत्रीसगणी अने बत्रीस अधिक देवीओ छे' एवु आगमवचन छे (२७) तेथी सौधर्म कल्पमा देवो संख्यातगुणा छे, कारण के त्यां घणा विमानो छे ते आ प्रमाणे–बत्रीश लाख विमानो सौधर्म कल्पमा अने अठ्यावीश लाख विमानो ईशान कल्पमा छे, वळी दक्षिण दिशामा सौधर्म कल्प अने उत्तर दिशामां ईशान कल्प छे दक्षिण दिशामा घणा कृष्णपाक्षिक जीवो उपजे छे तेथी ईशान देवीथी सौधर्म देवो संख्यातगुणा छे (प्र०)–आ युक्ति माहेन्द्र अने सनत्कुमार कल्पने विषे पण कही छे, परन्तु त्यां माहेन्द्र कल्पनी अपेक्षाए सनत्कुमार कल्पना देवो असंख्यातगुणा कह्या छे अने अहीं सौधर्म कल्पमा संख्यातगुणा कह्या तेनु शु कारण ? (उ०)–शास्त्रना प्रामाण्यथी आ वात मानवी जोइए अहीं पाठनी भ्रान्ति नथी, कारण के अन्य स्थळे पण कह्यु छे के–"ईशान कल्पमा बधे पण बत्रीशगुणी देवीओ छे, तेथी स-

पज्जत्तया विसेसाहिया ४८, पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा ४९, चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया ५०, तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया ५१, बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया ५२, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५३, बायरनिगोया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५४, बायरपुढवीकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ५५, बायरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५६, बायरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ५७, वाय-

पर्याप्त तेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. ५२ तेथी अपर्याप्ता बेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. ५३ तेथी पर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे. ५४ तेथी पर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे. ५५ तेथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे. ५६ तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे. ५७ तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे. ५८ तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे. ५९ तेथी अपर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे. ६०

बीजी शर्कराप्रभा नरकपृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. अहीं सातमी नरकपृथिवीना नारकोथी आरंभी बीजी नरकपृथिवीना नारको सुधी प्रत्येकनो स्वस्थाननी अपेक्षाए विचार करतां बधा घनीकृत लोकनी श्रेणिना असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण जाणवा, मात्र श्रेणिनो असंख्यातमो भाग असंख्यात प्रकारनो होय छे, माटे आ प्रमाणे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणपणे कहेवाता अल्पबहुत्वमां विरोध आवतो नथी. (२४) ते बीजी नरकपृथिवीना नारकोथी संमूर्छिम मनुष्यो असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ अंगुल प्रमाण क्षेत्रना प्रदेशराशिना बीजा वर्गमूळने त्रीजा वर्गमूळनी साथे गुणता जेटला प्रदेशो थाय तेटला जाणवा. (२५) तेथी ईशान कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के तेओ घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला प्रमाणवाळा. ईशान देवलोकमां देवो-अने देवीओनो समुदाय छे. तेनाथी कंइक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला ईशान देवो छे, माटे देवो संमूर्छिम

संखिज्जगुणा ३८, वाणमंतरीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ ३९, जोइसिया देवा संखिज्जगुणा ४०, जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ ४१, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआ नपुंसगा संखिज्जगुणा ४२, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआ नपुंसगा संखिज्जगुणा ४३, जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआ नपुंसगा संखिज्जगुणा ४४, चउरिंदिया पज्जत्तया संखिज्जगुणा ४५, पंचिंदिया पज्जत्तया विसेसाहिया ४६, बेइंदिया पज्जत्तया विसेसाहिया ४७, तेइंदिया

षिक देवीओ सख्यातगुणी छे. ४२ तेथी खेचर पंचेन्द्रिय नपुंसक तिर्यंचो सख्यातगुणा छे ४३ तेथी स्थलचर पंचेन्द्रिय नपुंसक तिर्यंचो संख्यातगुणा छे. ४४ तेथी जलचर पंचेन्द्रिय नपुंसक तिर्यंचो सख्यातगुणा छे. ४५ तेथी पर्याप्ता चउरिन्द्रियो सख्यातगुणा छे. ४६ तेथी पर्याप्ता पंचेन्द्रियो विशेषाधिक छे. ४७ तेथी पर्याप्ता बेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. ४८ तेथी पर्याप्ता तेइन्द्रियो विशेषाधिक छे. ४९ तेथी अपर्याप्ता पंचेन्द्रियो असंख्यातगुणा छे. ५० तेथी अपर्याप्ता चउरिन्द्रियो विशेषाधिक छे. ५१ तेथी अ-

विमानमा रहेनारा घणा, वधारे घणा देवो छे अने थोडा, वधारे थोडा उपर उपरना विमानमां देवो छे, माटे सहस्रार देवोथी महाशुक्र कल्पना देवो असंख्यातगुणा छे (१६) तेथी पण पांचमी धूमप्रभा नामे नरकपृथिवीमा नारको असंख्यातगुणा छे कारण के ते श्रेणिना अत्यन्त मोटा असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे (१७) तेथी पण लांतक कल्पना देवो असंख्यातगुणा छे कारण के तेओ श्रेणिना अतिशय वधारे मोटा असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशराशिप्रमाण छे (१८) तेथी चोथी पंकप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे अहीं युक्ति पूर्वनी पेठे जाणवी (१९) तेथी ब्रह्मलोक कल्पमा देवो असंख्यातगुणा छे, कारण पूर्वनी पेठे जाणवु (२०) तेथी त्रीजी वालुकाप्रभाना नारको असंख्यातगुणा जाणवा (२१) तेथी माहेन्द्र कल्पमा देवो असंख्यातगुणा छे (२२) तेथी सनत्कुमार कल्पमा देवो असंख्यातगुणा छे अहीं बधे पूर्वे कहेली युक्तिओनु अनुसरण करवु (२३) तेथी

गुणाओ ३०, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइआ असंखिज्जगुणा ३१, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखिज्जगुणा ३२, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ ३३, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआ पुरिसा संखिज्जगुणा ३४, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ ३५, जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआ पुरिसा संखिज्जगुणा ३६, जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ ३७, वाणमंतरा देवा

संख्यातगुणा छे. ३२ तेथी खेचर पंचेन्द्रिय पुरुष तिर्यंचो असंख्यातगुणा छे. ३३ तेथी खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे. ३४ तेथी स्थलचर पंचेन्द्रिय पुरुष तिर्यंचो संख्यातगुणा छे. ३५ तेथी स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे. ३६ तेथी जलचर पंचेन्द्रिय पुरुष तिर्यंचो संख्यातगुणा छे. ३७ तेथी जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे. ३८ तेथी व्यन्तर देवो संख्यातगुणा छे. ३९ तेथी व्यन्तर देवीओ संख्यातगुणी छे. ४० तेथी ज्योतिषिक देवो संख्यातगुणा छे. ४१ तेथी ज्योति-

कल्पना देवोनी अपेक्षाए आरणकल्पना देवो संख्यातगुणा छे. (१०) तेथी पण प्राणत कल्पना देवो संख्यातगुणा छे. (११) तेथी आनतकल्पना देवो संख्यातगुणा छे. तेनो विचार आरणकल्पनी पेठे करवो. (१२) तेथी नीचेनी सातमी नरकपृथिवीना नारको असंख्यातगुणा छे. कारण के ते श्रेणिना असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. (१३) तेथी छट्ठी पृथिवीना नारको असंख्यातगुणा छे. अने पूर्व दिशानो अपेक्षाए नैरयिकोना अल्पबहुत्वनो विचार करतां एनो विचार कर्यो छे. (१४) तेथी सहस्रार कल्पना देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के छट्ठी पृथिवीना नैरयिकोना प्रमाणना कारणभूत श्रेणिना असंख्यातमा भागनी अपेक्षाए सहस्रारकल्पना देवोना परिमाणनुं कारणभूत श्रेणिनो असंख्यातमो भाग असंख्यातगुण छे. (१५) तेथी महाशुक्र कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के अहीं घणा विमानो छे. छ हजार विमानो सहस्रार कल्पमां अने चाळीश हजार विमानो महाशुक्र कल्पमां छे. वळी नीचे नीचेना

पुढवीए नेरइआ असंखिज्जगुणा २०, माहिंदे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा २१, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा २२, दोचाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा २३, संमुच्छिमा मणुस्सा असंखिज्जगुणा २४, ईसाणे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा २५, ईसाणे कप्पे देवीओ संखिज्जगुणाओ २६, सोहम्मे कप्पे देवा संखिज्जगुणा २७, सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ २८, भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा २९, भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्ज-

ख्यातगुणा छे. २२ तेथी सनत्कुमार कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. २३ तेथी बीजी शर्कराप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. २४ तेथी संमूर्छिम मनुष्यो असंख्यातगुणा छे. २५ तेथी ईशान कल्पमा देवो असंख्यातगुणा छे. २६ तेथी ईशान कल्पमां देवीओ संख्यातगुणी छे. २७ तेथी सौधर्म कल्पमा देवो संख्यातगुणा छे. २८ तेथी सौधर्म कल्पमां देवीओ संख्यातगुणी छे. २९ तेथी भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे. ३० तेथी भवनवासिनी देवीओ संख्यातगुणी छे. ३१ तेथी आ रत्नप्रभा पृथिवीना नारको अ-

आ प्रमाणे-अनुत्तर देवोना पांच विमानो छे अने उपरना त्रण ग्रैवेयकना सो विमानो छे दरेक विमाने असंख्याता देवो छे जेम जेम नीचे नीचेना विमानो छे तेम तेम देवो पण घणा छे, तेथी एम अनुमान छे के अनुत्तरोपपातिक देवोथी क्षेत्रपल्योपना अत्यन्त मोटा असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण उपरना त्रण ग्रैवेयकना देवो छे एम पछीना देवो सबन्धे पण आनत कल्प सुधी विचार करवो (६) उपरना त्रण ग्रैवेयकना देवोथी मध्यम त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा छे (७) तेथी नीचेना त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा छे (८) तेथी अच्युत कल्पना देवो संख्यातगुणा छे (९) तेथी आरण कल्पना देवो संख्यातगुणा छे जो के आरण अने अच्युत कल्प एके समश्रेणीमा अने तेमां विमानोनी संख्या सरखी छे, तोपण कृष्णपाक्षिक जीवो तथास्वभावथी दक्षिण दिशामा घणा उत्पन्न थाय छे, उत्तरदिशामा घणा थता नथी अने कृष्णपाक्षिको घणा होय छे, शुक्ल पाक्षिको थोडा छे तेथी अच्युत

गुणा १०, आणए कप्पे देवा संखिज्जगुणा ११, अहे सत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा १२, छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा १३, सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा १४, महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा १५, पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइआ असंखिज्जगुणा १६, लंतए कप्पए देवा असंखिज्जगुणा १७, चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइआ असंखिज्जगुणा १८, बंभलोए कप्पे देवा असंखिज्जगुणा १९, तच्चाए वालुयप्पभाए

संख्यात गुणा छे. १३ तेथी छट्ठी तमा नरक पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. १४ तेथी सहस्रार कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे, १५ तेथी महाशुक्र कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. १६ तेथी पांचमी धूमप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. १७ तेथी लांतक कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. १८ तेथी चोथी पंकप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. १९ तेथी ब्रह्मलोक कल्पमां देवो असंख्यातगुणा छे. २० तेथी त्रीजी वालुकाप्रभा पृथिवीमां नारको असंख्यातगुणा छे. २१ तेथी माहेन्द्र कल्पमां देवो असं-

(स्त्रीओ) सत्यावीशगुणी अने सत्यावीश अधिक छे." (३) तेथी पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे. कारण के ते केटलाक वर्गन्यून आवलिकाना समयोनो [1]घन करतां जेटला समयो थाय तेटला छे. (४) तेथी अनुत्तरोपपाती देवो असंख्यातगुणा छे. कारण के क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भागमां जेटला आकाशप्रदेशनो राशि होय तेटला छे. (५) तेथी उपरना त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यातगुणा छे, कारण के ते पल्योपमना मोटा असंख्यातमा भागना आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे. तेनुं कारण ए छे के त्यां विमानो घणां छे. ते

१. आवलिकाना असंख्याता समयो थाय छे, तेने तेटली ज संख्याथी गुणता वर्ग थाय, पुनः तेटली संख्याए गुणवाथी घन थाय छे. जेमके असत्कल्पनाथी आवलिकाना सो समयो छे तेने सोए गुणतां हजार थाय अने पुनः तेने सोए गुणतां एक लाख थाय तेने घन कहेवाय.

संखिज्जगुणाओ २, बायरतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ३, अणुत्तरोववाइया देवा असंखिज्जगुणा ४, उवरिमगेविज्जगा देवा संखिज्जगुणा ५, मज्झिमगेविज्जगा देवा संखिज्जगुणा ६, हिट्ठिमगेविज्जगा देवा संखिज्जगुणा ७, अच्चुए कप्पे देवा संखिज्जगुणा ८, आरणे कप्पे देवा संखिज्जगुणा ९, पाणए कप्पे देवा संखिज्ज-

स्त्रीओ संख्यातगुणी छे. ३ तेथी पर्याप्त बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे. ४ तेथी अनुत्तरौपपातिक देवो असंख्यातगुणा छे. ५ तेथी उपरना ग्रैवेयक देवो संख्यातगुणा छे. ६ तेथी मध्यम ग्रैवेयक देवो संख्यातगुणा छे. ७ तेथी नीचेना ग्रैवेयक देवो संख्यातगुणा छे. ८ तेथी अच्युत कल्पमां देवो संख्यातगुणा छे ९ तेथी आरण कल्पमां संख्यातगुणा देवो छे. १० तेथी प्राणत कल्पमां देवो संख्यातगुणा छे. ११ तेथी आनत कल्पमां देवो संख्यातगुणा छे. १२ तेथी अधः सप्तम नरक पृथिवीमां नारको अ-

तात्पर्य छे आ कथनथी एम जणावे छे के-'तीर्थंकरनी अनुज्ञासापेक्ष ज पूज्य गणधर सूत्रनी रचना करे छे, परतु श्रुताभ्यास सापेक्ष सूत्ररचना करता नथी अथवा एम जणावे छे के विनेये-शिष्ये कुशल-कल्याणकारक कार्यमां पण गुरुनी अनुज्ञा सिवाय प्रवृत्ति न करवी, परतु तेनी आज्ञापूर्वक प्रवृत्ति करवी अन्यथा विनेयपणु-शिष्यपणु न घटी शके' शिष्यनु आ लक्षण शास्त्रमा कहेलु छे-"जेणे पोतानो आत्मा गुरुने निवेदित कर्यो छे अने जे गुरुनी चित्तवृत्तिने अनुसरे छे तेमज जे मुक्तिने माटे हमेशा प्रयत्न करे छे ते विनेय-शिष्य कह्यो छे" जे गुरुनी अनुज्ञा मागवी ते गुरु आवा प्रकारनो होवो जोईए—"धर्मज्ञ, धर्मकर्ता अने हमेशा धर्मप्रवर्तक होय, तथा प्राणीओने धर्मशास्त्रना अर्थनो उपदेश करनारो होय ते गुरु कहेवाय छे' हवे शास्त्रकारे 'महादण्डकनु वर्णन करीश' एम प्रतिज्ञा करी हती, ते प्रतिज्ञानो निर्वाह करे छे-एटले महादण्डकनु वर्णन करे छे (१) सौथी थोडा गर्भज मनुष्यो छे, कारण के ते संख्याता कोटाकोटी प्रमाण छे (२) तेथी मनुष्य स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, कारण के ते सत्तावीशगुणी छे कह्यु छे के-"मनुष्यने

लाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा पुग्गला तहा भाणियव्वा, एवं संखिज्जगुणकालगाण वि। एवं सेसावि वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा। फासाणं कक्खडमउयगुरुयलहुयाणं जहा एगपएसोगाढाणं भणियं तहा भाणियव्वं। अवसेसा फासा जहा वन्ना तहा भाणियव्वा ॥ २६ दारं ॥

८१. अह भंते! सव्वजीवप्पबहुं महादण्डयं वन्नइस्सामि–सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिया मणुस्सा १, मणुस्सीओ

प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम सामान्य पुद्गलो संबंधे कह्युं तेम अहीं कहेवुं. एम संख्यातगुण काळा संबंधे पण कहेवुं. ए रीते बाकीना वर्ण, गंध अने रस संबंधे कहेवुं. स्पर्शमां कर्कश, मृदु, गुरु अने लघ स्पर्श संबंधे जेम एक प्रदेशावगाढने कह्युं छे तेम कहेवुं. बाकीना स्पर्शो जेम वर्णो कह्या छे तेम कहेवा.

२७ महादंडकद्वार.

८१. हे भगवन् ! सर्व जीवोना अल्पबहुत्वरूप महादंडकनुं वर्णन करीश–१ सौथी थोडा गर्भज मनुष्यो छे. २ तेथी मनुष्य

असंख्यातगुण कर्कशस्पर्शवाळा अने अनन्तगुणकर्कशस्पर्शवाळा पुद्गलो जाणवा. ए प्रमाणे मृदु, गुरु अने लघु स्पर्श संबन्धे जाणवुं. बाकीना चार शीतादि स्पर्शो जेम वर्णादि कह्या तेम कहेवा. त्यां सूत्रपाठ उपर कहेलाने अनुसारे स्वयं विचारवो.

८१. पुद्गलद्वार समाप्त थयुं, हवे महादंडक कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार गुरुनी आज्ञा मागे छे, तेमने निवेदन करे छे–हे भगवन् ! सर्व जीवोना अल्पबहुत्वनी वक्तव्यतारूप महादंडकनुं वर्णन करीश–एटले महादंडक प्रतिपादक सूत्रनी रचना करीश ए

संखिज्जसमयठिइया पुग्गला पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखिज्जसमयठिइया पुग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए–सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए, संखिज्जसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा। असंखिज्जसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा।

८०. एएसि णं भंते एगगुणकालगाणं संखिज्जगुणकालगाणं असंखिज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाण य पुग्गा-

वाळा पुद्गलो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडा एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे छे, तेथी संख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे, अने प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, अने प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे.

८०. हे भगवन् ! ए एकगुण काळा, संख्यातगुण काळा, असंख्यातगुण काळा अने अनन्तगुण काळा पुद्गलोमां द्रव्यार्थपणे,

काळा अने अनन्तगुण काळा पुद्गलो संबन्धे जाणवु एम बाकीना वर्ण, गंध अने रस संबन्धे पण कहेवु. कर्कश, मृदु गुरु अने लघु स्पर्श संबन्धे जेम एकप्रदेशावगाढ पुद्गलो कह्या तेम कहेवा ते आ प्रमाणे–एकप्रदेशावगाढ एकगुणकर्कश स्पर्शवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे सौथी थोडा छे तेथी संख्यातप्रदेशावगाढ एकगुणकर्कशस्पर्शवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे तेथी असंख्यात प्रदेशावगाढ एकगुणकर्कश स्पर्शवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे'–इत्यादि एम संख्यातगुणकर्कशस्पर्शवाळा,

७९. एएसि णं भन्ते! एगसमयठिइयाणं संखिज्जसमयठिइयाणं असंखिज्जसमयठिइयाणं पुग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठयाए, संखिज्जसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा, असंखिज्जसमयठिइया पुग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा। पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला पएसट्ठयाए,

---

७९. हे भगवन्! एक समयनी स्थितिवाळा, संख्याता समयनी स्थितिवाळा अने असंख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गलोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे? हे गौतम! एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे सौथी थोडा छे, तेथी संख्याता समयनी स्थितिवाळा द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्याता समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो प्रदेशार्थपणे छे, तेथी संख्याता समयनी स्थिति-

---

छोडतां संख्यातगुणा सांयोगिक विकल्प थवाथी द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे तेथी असंख्याता प्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. कारण के असंख्याताना असंख्याता भेदो थाय छे. प्रदेशार्थतासूत्र अने द्रव्यप्रदेशार्थतासूत्र सुगम होवाथी तेनो स्वयं विचार करवो. काल अने भावसूत्रो पण सुगम होवाथी स्वयं विचारवां. 'नवरं जहा पोग्गला तहा भाणियव्वा' परन्तु जेम पूर्वे सामान्य रीते पुद्गलो कह्या तेम एकगुण काळा वगेरे पुद्गलो कहेवा. ते आ प्रमाणे-"सौथी थोडा एकगुण काळा अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो छे, तेथी एकगुण काळा परमाणु पुद्गलो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे, तेथी एकगुण काळा संख्यातप्रदेशिक स्कंधो संख्यातगुणा छे, तेथी एकगुणा काळा असंख्यात प्रदेशिक स्कन्धो असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा एकगुण काळा अनन्तप्रदेशिक स्कंधो छे. तेथी एकगुण काळा परमाणुपुद्गलो अनन्तगुणा छे इत्यादि. एम संख्यातगुणकाळा, असंख्यातगुण,

ज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा, असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए–सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए, संखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा, असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा।

पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडा एकप्रदेशावगाढ पुद्गलो प्रदेशार्थपणे छे, तेथी संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडा एकप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थपणे छे, तेथी संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे अने ते प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे, अने ते प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे.

सर्वलोकना प्रदेशो वास्तविक रीते असंख्याता छे तो पण तेना बदले असत्कल्पनाथी दसनी कल्पना करीए, अने ते प्रत्येकनो विचार करता दस ज आकाशप्रदेशो छे माटे एक प्रदेशावगाढ पुद्गलद्रव्यो दस ज थाय छे हवे तेज दस प्रदेशोमां अन्य प्रदेशने ग्रहण करता अने अन्यने छोडता घणा द्विकसंयोग थाय छे, माटे एक प्रदेशावगाढ पुद्गलोथी द्विप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यो संख्यातगुणा थाय छे एम तेथी पण त्रिप्रदेशावगाढ संख्यातगुणा थाय छे एम उत्तरोत्तर यावत् उत्कृष्ट संख्यात प्रदेशावगाढ द्रव्यो संख्यातगुणा थाय छे, तेथी ए निश्चित थाय छे के एक प्रदेशावगाढ पुद्गलोथी संख्याता प्रदेशावगाढ पुद्गलद्रव्यो अन्यने ग्रहण करता अने अन्यने

७८. एएसिणं भंते ! एगपएसोगाढाणं संखेज्जपएसोगाढाणं असंखेज्जपएसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, पएसट्ठयाए–सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए, संखि-

छे, अने ते प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे.

७८. हे भगवन् ! ए एक प्रदेशावगाढ, संख्यातप्रदेशावगाढ अने असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ–प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा एकप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे छे, तेथी संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे संख्यातप्रदेशावगाढ छे, तेथी असंख्यातप्रदेशावगाढ

७८–८०. हवे क्षेत्रनी मुख्यताथी परमाणु आदि पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व कहे छे–अहीं क्षेत्रना अधिकारथी क्षेत्रनी मुख्यता होवाने लीधे परमाणुथी आरंभी अनन्तप्रदेशिक स्कंधो पण एक प्रदेशाश्रित होय तो आधार अने आधेयना अभेदोपचारथी घणां होवा छतां पण एक द्रव्य तरीके गणाय छे. कारण के तेनुं आधारभूत क्षेत्र एक आकाश प्रदेश छे. आवा प्रकारना एक प्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यो सौथी थोडा छे, एटले लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे. एवो कोइ पण आकाशप्रदेश नथी के जे एक प्रदेशना अवगाह परिणामथी परिणत थयेला परमाणु आदिने अवकाश आपवाना परिणाम वडे न परिणत थयेलो होय. तेथी संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे. ते आ प्रमाणे–अहीं पण क्षेत्रनुं प्राधान्य होवाथी बे आकाशप्रदेशमां रहेला द्विप्रदेश स्कंधथी मांडी अनन्तप्रदेशिक स्कंधो एक द्रव्य तरीके गणाय छे. अने तेवा प्रकारना ते पुद्गलस्कंधो पूर्वे कहेलाथी संख्यातगुणां छे. ते आ प्रमाणे–

गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठअपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा।

शिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे छे, तेथी परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थपणे अनन्तगुणा छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थपणे—अनन्तप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा छे, तेथी परमाणुपुद्गलो अप्रदेशार्थपणे-द्रव्यार्थपणे अनन्तगुणा छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा अनन्त प्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे छे, ते प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे, तेथी परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे, अने ते प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा

कारण तरीके समजवु

७७. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जपएसियाणं असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

७७. हे भगवन् ! परमाणुपुद्गलो, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अनन्त प्रदे-

क्षाए विचार करतां सामान्यतः सौथी थोडा द्रव्यो अधो दिशामां छे, अधोदिशानुं स्वरूप (सू० ७६नी) टीकामां प्रमणां ज बताव्युं छे. तेथी ऊर्ध्व दिशामां अनन्तगुणां छे, तेनुं कारण ए छे के-ऊर्ध्व लोकमां मेरुनो पांचसो योजननो स्फटिकमय कांड छे, तेमां चन्द्र-सूर्यना प्रकाशनो प्रवेश थवाथी द्रव्योना क्षणादि काळनो विभाग थाय छे, अने काळ परमाणु आदि एक एक द्रव्य दीठ अनन्त छे, माटे तेथी अनन्तगुणां छे. तेथी उत्तरपूर्व-ईशान कोणमां अने दक्षिणपश्चिममां-नैऋतकोणमां असंख्यातगुणां द्रव्यो छे, अने स्वस्थानमां समानक्षेत्र होवाथी बन्ने द्रव्यो परस्पर सरखां छे. तेथी दक्षिणपूर्व-अग्निकोणमां अने उत्तरपश्चिम-वायव्य कोणमां विशेषाधिक छे. कारण के त्यां विद्युत्प्रभ अने माल्यवंत पर्वतना शिखरने आश्रयी रहेला धूमस, झाकळ वगेरे सूक्ष्म पुद्गलो घणां छे. तेथी पूर्वदिशामां असंख्यातगुणा छे. कारण के तेनुं असंख्यातगुण क्षेत्र छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषाधिक छे. कारण के अधोलौकिक ग्रामोमां खाली जग्या होवाथी घणां पुद्गल द्रव्योनो संभव छे. तेथी दक्षिण दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के त्यां भवनोनो घणो खाली भाग होय छे. तेथी उत्तर दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के ते दिशामां रहेला मानस सरोवरमां घणा जीवद्रव्यो अने तेने आश्रयी रहेला घणा तैजस कार्मण पुद्गल स्कन्ध द्रव्योनो सद्भाव छे.

७७. हवे परमाणुपुद्गल, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कंधोनुं परस्पर अल्पबहुत्व कहे छे-अहीं परमाणवादिनुं अल्पबहुत्व सूत्रमां कहेला पाठ प्रमाणे जाणवुं, परन्तु अल्पबहुत्वना विचारमां बधे स्थळे तेवा प्रकारनो स्वभाव एज

उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपचत्थिमेण य दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपचत्थिमेण य दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइं, पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणाइं, पचत्थिमेणं विसेसाहियाइं, दाहिणेण विसेसाहियाइ, उत्तरेणं विसेसाहियाइ ।

दक्षिणपश्चिम–नैऋत्य कोणमां असख्यातगुणा अने बन्ने स्थळे परस्पर सरखा छे, तेथी दक्षिणपूर्व–अग्निकोणमां अने उत्तरपश्चिम वायव्य कोणमां बन्ने स्थळे परस्पर सरखा अने विशेषाधिक छे, तेथी पूर्वमा असख्यातगुणा छे, तेथी पश्चिममां विशेषाधिक छे, तेथी दक्षिणमां विशेषाधिक छे, अने तेथी उत्तरमां विशेषाधिक छे.

कहे छे—क्षत्रनी अपेक्षाए विचार करता सौथी थोडा द्रव्यो त्रिलोकव्यापी–त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे, कारण के धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय द्रव्य, पुद्गलास्तिकायना महास्कधो अने जीवास्तिकायमा मारणान्तिक समुद्घात वडे समुद्घातने प्राप्त थयेला जीवो त्रिलोकव्यापी छे अने तेओ अल्प छे माटे सौथी थोडा छे तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक नामे पूर्वे कहेला ये प्रतरमा अनन्तगुणा द्रव्यो छे, कारण के अनन्त पुद्गल द्रव्यो अने अनन्त जीव द्रव्यो तेनो स्पर्श करे छे तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा विशेषाधिक छे, कारण के ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकथी अधोलोक–तिर्यग्लोक क्षेत्र विशेषाधिक छे तेथी ऊर्ध्व लोकमा असख्यातगुणा छे, कारण के क्षेत्र असख्यातगुण छे तेथी अधोलोकमा अनन्तगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमां काळ छे, अने ते काळ ते ते परमाणुना सख्याता, असख्याता, अने अनन्त प्रादेशिक द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव पर्यायना सबधथी प्रति परमाणुआदि द्रव्यने आश्रयी अनन्त छे, माटे अधोलोकमा अनन्तगुण द्रव्यो छे तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामो जेटला वडो काळ द्रव्यना आधारभूत मनुष्य लोकमा सख्यातगुणा छे हवे दिशाने अनुसरी सामान्यपणे द्रव्योनु अल्पबहुत्व कहे छे—दिशानी अपे

विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइं, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाइं, अहोलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेज्जगुणाइं। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहोदिसाए, उड्ढदिसाए अणंतगुणाइं,

अपेक्षाए सौथी थोडा द्रव्यो त्रणलोकमां (त्रिलोकवर्ती) छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां अनन्तगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां अनन्तगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडां द्रव्यो अधो दिशामां छे, तेथी ऊर्ध्व दिशामां अनन्तगुणां छे, तेथी उत्तरपूर्व-ईशान कोणमां अने

सुधी गयेली छे. तेथी क्षेत्र असंख्यातगुण होवाथी तेमां रहेला पुद्गलो पण असंख्यातगुणा छे, अने स्वस्थाननुं क्षेत्र सरखुं होवाथी पुद्गलो पण स्वस्थानमां सरखा छे. तेथी दक्षिणपूर्व-अग्निकोणमां अने उत्तरपश्चिम-वायव्य कोणमां प्रत्येकने आश्रयी विशेषाधिक छे, अने स्वस्थानमां परस्पर सरखा छे. विशेषाधिक होवानुं कारण आ प्रमाणे छे-अहीं सौमनस अने गंधमादन पर्वतोमां सात सात शिखरो तथा विद्युत्प्रभ अने माल्यवंतमां नव नव शिखरो छे. ते शिखरोमां धूमस अने झाकळ वगेरेना सूक्ष्म पुद्गलो घणा छे, माटे विशेषाधिक छे, अने स्वस्थानमां क्षेत्र अने पर्वतादिनुं समानपणुं होवाथी तुल्य छे. तेथी पूर्व दिशामां असंख्यातगुणा छे, कारण के क्षेत्र असंख्यातगुण छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमां खाली जग्या होवाथी त्यां घणा पुद्गलो होय छे. तेथी उत्तर दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के उत्तर दिशामां लंबाइ अने पहोळपणे संख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण मानस सरोवर छे. तेमां जे जलचरो अने पनक सेवालादि जीवो छे ते घणा छे अने तेओने जे तैजस कार्मण पुद्गलो लागेला छे ते अधिक प्राप्त थाय छे माटे पूर्वथी विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे पुद्गल संबंधे अल्पबहुत्व कह्युं. हवे क्षेत्रने अनुसरी सामान्य द्रव्योनुं अल्पबहुत्व

तथोवा पुग्गला उड्ढदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण उ दोवि तुल्ला असंखिज्जगुणा, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दोवि विसेसाहिया, पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं

अधोदिशामां विशेषाधिक छे, तेथी उत्तर–पूर्वमां (ईशान कोणमां) अने दक्षिण–पश्चिममां (नैर्ऋत कोणमां) असंख्यातगुणा अने बन्ने विदिशामां परस्पर सरखा छे. तेथी दक्षिण–पूर्वमां (अग्निकोणमां) अने उत्तर–पश्चिममां (वायव्य कोणमां) बन्ने स्थळे सरखा अने विशेषाधिक छे, तेथी पूर्वमां असंख्यातगुणा छे, तेथी पश्चिममां विशेषाधिक छे, अने तेथी उत्तरमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी

प्रतरोने ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक कहेवाय छे तेने अनन्त संख्यातप्रदेशवाळा, अनन्त असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्त अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो स्पर्श करे छे, माटे द्रव्यरूपे अनन्तगुणा छे तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोक नामे पूर्वे कहेला बे प्रतरमां विशेषाधिक छे, कारण के लंबाई अने पहोळाईमां क्षेत्र कांइक अधिक छे तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, कारण के क्षेत्र असंख्यातगुण छे तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, कारण के तिर्यग्लोकना करतां ऊर्ध्वलोकनुं क्षेत्र असंख्यातगुण छे तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे, कारण के ऊर्ध्वलोक करतां अधोलोक विशेषाधिक छे कांइक न्यून सात रज्जु प्रमाण ऊर्ध्वलोक छे, अने कांइक अधिक सात रज्जु प्रमाण अधोलोक छे हवे दिशाने अनुसरी अल्पबहुत्व कहे छे—दिशानी अपेक्षाए विचार करतां सौथी थोडा पुद्गलो ऊर्ध्व दिशामां छे अहीं रत्नप्रभाना समभूमितळवाळा मेरुना मध्यभागमां चार उपर अने चार नीचे एम आठ प्रदेशनो रुचक छे, तेथी चार प्रदेशनी लोकान्त पर्यन्त ऊर्ध्व दिशा नीकळी छे तेमां सौथी थोडा पुद्गलो छे, तेथी अधो दिशामां विशेषाधिक छे अधो दिशा पण ते रुचकथी चार प्रदेशनी नीचे लोकान्त पर्यन्त नीकळे छे अने ते अधोदिशा ऊर्ध्व दिशाथी विशेषाधिक होवाथी त्यां पुद्गलो विशेषाधिक छे तेथी उत्तरपूर्व–ईशान कोण अने दक्षिणपश्चिम–नैर्ऋतकोण प्रत्येकमां असंख्यातगुणा छे अने स्वस्थाननी अपेक्षाए परस्पर सरखा छे कारण के ते बन्ने विदिशाओ पण रुचकथी नीकळी मोतीनी माळाना आकारे तिर्यग्लोक, अधोलोक अने ऊर्ध्वलोकना अन्त

७६. खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुग्गला तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्व-

२६. पुद्गलद्वार.

७६. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पुद्गलो (पुद्गल द्रव्यो) त्रण लोकमां (त्रण लोकनो स्पर्श करनारा) छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां अनन्तगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा पुद्गलो ऊर्ध्वदिशामां छे, तेथी

कादि संबन्धी संख्या बाद करीने जे जे बाकी रहे ते ते आयुषना अबन्धकादिनुं परिमाण जाणवुं. ते आ प्रमाणे-आयुषना अबंधकादि पदने विषे बसो पंचावन, अने बाकीना पदोमां अनुक्रमे बसो चोपन, बसो बावन, बसो अडताळीश, बसो चाळीश, बसो चोवीश अने एकसो बाणुं अनुक्रमे मूकवां, एम छतां उपरनी पंक्तिमां रहेलां 'अनाकारोपयोगवाळा' सुधीना पदो संख्यातगुणां छे, कारण के बमणां बमणा अधिक छे. त्यार पछी साकार उपयोगवाळुं पद पण त्रण गणुं होवाथी संख्यातगुण छे. बाकीना नोइन्द्रियोपयुक्त वगेरे पदो पाछळना क्रमथी विशेषाधिक जाणवा. कारण के कोइ स्थळे बमणी संख्या पण थती नथी. बन्धद्वार समाप्त थयुं.

७६. हवे पुद्गल द्वार कहे छे. आ पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व द्रव्यार्थपणाने आश्रयी समजवुं. कारण के तेवा प्रकारनो संप्रदाय-परंपरा छे. तेमां क्षेत्रने अनुसारे विचार करता त्रण लोकनो स्पर्श करनारा पुद्गल द्रव्यो सौथी थोडां छे, एटले त्रण लोकव्यापी पुद्गल स्कन्धो सौथी थोडा छे. कारण के अचित्त महास्कन्धो ज त्रण लोक व्यापी छे अने ते थोडा छे. तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां अनन्तगुणा छे, कारण के तिर्यग्लोकनुं जे सौथी उपरनुं एक प्रदेशवाळुं प्रतर अने ऊर्ध्वलोकनुं सौथी नीचेनुं एक प्रदेशवाळुं प्रतर ए बन्ने

तेथी जागृत थयेला विशेषाधिक छे, कारण के समुद्घातने प्राप्त थयेलामा पण केटलाक जागृत होय छे (१४) तेथी पर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के सुतेलामा पण केटलाक पर्याप्ता छे सुतेला पर्याप्ता पण होय छे अने जागृत थयेला पर्याप्ता ज होय छे ए नियम छे (१५) ते पर्याप्ताथी आयुषकर्मना बन्धक विशेषाधिक छे, कारण के अपर्याप्ता पण आयुषकर्मना बन्धक होय छे आ ज अल्पबहुत्व शिष्योना अनुग्रह माटे स्थापनाराशि वडे बतावाय छे–उपर अने नीचे एम बे पंक्तिओ स्थापवी तेमा उपरनी पंक्तिमा १ आयुषकर्मना बन्धक, २ अपर्याप्ता, ३ सुप्त, ४ समवहत, ५ सातावेदक, ६ इन्द्रियना उपयोगवाळा, ७ साकारउपयोगवाळा अने ८ अनाकारउपयोगवाळा अनुक्रमे स्थापवा अने तेनी नीचेनी पंक्तिमा ते ज पदोनी नीचे अनुक्रमे आयुषना अबन्धक, पर्याप्ता, जागृत, असमवहत, असातावेदक, नोइन्द्रियोपयुक्त अने साकारोपयुक्त पद स्थापवा तेनी स्थापना आ प्रमाणे छे–

आयुषबन्धक	अपर्याप्ता	सुतेला	समवहत	सातावेदक	इन्द्रियना उपयोगवाळा	अनाकारोपयोगवाळा
१	२	४	८	१६	३२	६४
आयुषअबन्धक	पर्याप्ता	जागृत	असमवहत	असातावेदक	नोइन्द्रियना उपयोगवाळा	साकारोपयोगवाळा
२५५	२५४	२५२	२४८	२४०	२२४	१९२

अहीं उपरनी पंक्तिमा बधा पदो सख्यातगुणा छे, अने आयुष पद बधामा प्रथम छे माटे तेना परिमाणनी संख्यामा एक मूकवो, अने बाकीना पदो जघन्य संख्या वडे सख्यातगुण होवाथी तेमा बमणा बमणा आकडा मूकवा ते आ प्रमाणे–२–४–८–१६–३२–६४ सर्व जीवराशि अनन्तानन्त स्वरूप छे तो पण असत्कल्पना वडे तेनु परिमाण बसो छप्पन कल्पीए पछी आ राशिथी आयुषबंध

११, जागरा विसेसाहिया १२, पज्जत्तया विसेसाहिया १३, आउयस्स कम्मस्स अबंधया विसेसाहिया १४।

११ तेथी असमवहत-समुद्घातने नहि प्राप्त थयेला जीवो विशेपाधिक छे, १२ तेथी जागृत जीवो विशेपाधिक छे, १३ तेथी पर्याप्ता विशेपाधिक छे, १४ अने तेथी आयुप कर्मना अबन्धक विशेपाधिक छे.

तगुणा छे. (४) तेथी समवहत-समुद्घातने प्राप्त थयेला संख्यातगुणा छे, कारण के पर्याप्ता अने अपर्याप्ताओमां हमेशां घणा मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेला होय छे. (५) तेथी साताने वेदनारा संख्यातगुणा छे, कारण के आयुपना बन्धक, अपर्याप्त अने सूतेलामां साताने वेदनारा होय छे. (६) तेथी इन्द्रियना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के असाताने वेदनाराओमां पण इन्द्रियनो उपयोग होय छे. (७) तेथी अनाकार उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के इन्द्रियना उपयोगमां अने नोइन्द्रियना उपयोगमां अनाकार उपयोग होय छे. (८) तेथी साकार उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के इन्द्रिय अने नोइन्द्रियना उपयोगमां साकार उपयोगनो घणो काळ छे. (९) तेथी नोइन्द्रियना उपयोगवाळा विशेपाधिक छे. कारण के तेमां नोइन्द्रियना अनाकार उपयोगवाळानो पण समावेश थाय छे. अहीं शिष्योना उपर अनुग्रह करवा माटे असद्भाव स्थापना वडे दृष्टांत बतावे छे-अहीं साकार उपयोगवाळा एकसो बाणुं छे. ते बे प्रकारना छे-इन्द्रिय साकार उपयोगवाळा अने नोइन्द्रिय साकार उपयोगवाळा. तेमां इन्द्रिय साकार उपयोगवाळा अत्यन्त थोडा छे माटे तेनी वीश संख्या कल्पवी, बाकीना एकसो बहोंतेर नोइन्द्रिय साकार उपयोगवाळा छे. नोइन्द्रिय अनाकारोपयोगवाळा बावन जेटला छे, तेथी सामान्य रीते साकार उपयोगवाळाथी वीश जेटला इन्द्रिय साकारोपयोगवाळा बाद करीए अने तेमां बावन जेटला अनाकार उपयोगवाळा नांखीए एटले बसो चोवीश थाय छे, माटे साकार उपयोगवाळाथी नोइन्द्रियना उपयोगवाळा विशेपाधिक छे. (११) तेथी असाताना वेदनारा विशेपाधिक छे, कारण के इन्द्रियना उपयोगवाळा पण असाताना वेदनारा होय छे. (१२) तेथी असमवहत-समुद्घातने नहि प्राप्त थयेला विशेपाधिक छे, कारण के साताना वेदनाराओ पण समुद्घातने प्राप्त थयेला होता नथी. (१३)

सलेज्जगुणा ८, नोइंदिओवउत्ता विसेसाहिया ९, असायावेयगा विसेसाहिया १०, असमोहया विसेसाहिया

जीवो सख्यातगुणा छे, ७ तेथी अनाकार उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, ८ तेथी साकार उपयोगवाळा सख्यातगुणा छे, ९ तेथी नोइन्द्रिय(मन)ना उपयोगवाळा विशेषाधिक छे, १० तेथी असातावेदनीय कर्मनो अनुभव करनारा विशेषाधिक छे,

साधारणशरीरवाळा घणा असातावेदनीयना उदयवाळा होय छे अने थोडा सातावेदनीयना उदयवाळा होय छे अने प्रत्येक शरीरवाळा घणा साता वेदनारा होय छे अने थोडा असाता वेदनारा होय छे, माटे थोडा सातावेदक छे, तेथी असाता वेदनारा सख्यातगुणा छे सौथी थोडा इन्द्रियना उपयोगवाळा होय छे, अने तेथी नोइन्द्रियना उपयोगवाळा सख्यातगुणा छे कारण के इन्द्रियनो उपयोग वर्तमानकाळविषयक होय छे माटे तेनो उपयोगकाळ थोडो होवाथी प्रथमसमये इन्द्रियना उपयोगवाळा थोडा होय छे त्यारे तेज अर्थने इन्द्रियवडे जाणीने ओघ संज्ञावडे पण विचारे छे त्यारे ते नोइन्द्रियना उपयोगवाळा कहेवाय छे माटे नोइन्द्रियनो उपयोग अतीत अने अनागत काळ विषयक होवाथी घणो काळ होवाने लीधे नोइन्द्रियना उपयोगवाळा सख्यातगुणा छे सौथी थोडा अनाकार (दर्शन) उपयोगवाळा होय छे, कारण के दर्शनना उपयोगनो काळ थोडो छे, तेथी साकार (ज्ञान) उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के अनाकार उपयोगना काळथी साकार उपयोगनो काळ सख्यातगुण छे

हवे सूत्रमा कहेला सामुदायिक अल्पबहुत्वनो विचार करे छे (१) सौथी थोडा जीवो आयुष कर्मना बन्धक छे, कारण के आयुषना बन्धनो काळ प्रतिनियत–अमुक त्रीजा वगेरे भागे छे (२) तेथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे, कारण के अपर्याप्ता अनुभवाता वर्तमान भवना आयुषनो त्रीजो भाग वगेरे बाकी रहे त्यारे परभवनु आयुष बांधे छे, तेथी बे मुहूर्त्तप्रमाण अबन्धकाळ अने एक मुहूर्त्तप्रमाण बन्धकाळ छे माटे बन्धकाळथी अबन्धकाळ सख्यातगुण छे तेथी आयुषना बन्धकथी अपर्याप्ता सख्यातगुणा छे (३) ते अपर्याप्ताथी सूतेला सख्यातगुणा छे कारण के अपर्याप्ता अने पर्याप्ता बन्नेमा सूतेला होय छे अने पर्याप्ता अपर्याप्ताथी सख्यातगुणा छे माटे अपर्याप्ताथी सूतेला सख्या

सायावेयगा संखेज्जगुणा ५, इंदिओवउत्ता संखेज्जगुणा ६, अणागारोवउत्ता संखेज्जगुणा ७, सागारोवउत्ता

कर्मना बन्धक छे, २ तेथी अपर्याप्ता जीवो संख्यातगुणा छे, ३ तेथी सूतेला जीवो संख्यातगुणा छे, ४ तेथी समवहत-समुद्घातने प्राप्त थयेला जीवो संख्यातगुणा छे, ५ तेथी सातावेदनीयनो अनुभव करनारा जीवो संख्यातगुणा छे. ६ तेथी इन्द्रियना उपयोगवाळा

तेनो पण त्रीजो भाग इत्यादि बाकी होय त्यारे जीवो परभवनुं आयुष बांधे छे, माटे बे तृतीयांश अबन्धकाळ छे अने एक तृतीयांश बन्धकाळ छे. माटे आयुषना बन्ध करनाराथी अबन्धक जीवो संख्यातगुणा छे. सौथी थोडा अपर्याप्ता छे अने तेथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. आ सूक्ष्म जीवोने आश्रयी जाणवुं. कारण के सूक्ष्म जीवोमां बाह्य व्याघात-उपक्रम होतो नथी. माटे घणा सूक्ष्म जीवोनी उत्पत्ति थाय छे अने थोडानी ज अनुत्पत्ति-मरण थाय छे. सौथी थोडा सूतेला छे, अने तेथी जागृत जीवो संख्यातगुणा छे. आ पण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोनी अपेक्षाए जाणवुं. कारण के अपर्याप्ता सूतेला होय छे, पर्याप्ता जागृत पण होय छे. मूल टीकामां कह्युं छे के--

"जम्हा अपज्जत्ता सुत्ता लब्भंति, केइ अपज्जत्तगा जेसिं संखिज्जा समया अतीता ते य थोवा, इयरे वि य सेसा थोवगा चेव, सेसा जागरा पज्जत्ता, ते संखिज्जगुणा" इति।

कारण के अपर्याप्ता सूता होय छे, अने तेमां केटलाक अपर्याप्ता के जेओने संख्याता समयो व्यतीत थया छे ते थोडा छे, बीजा पण थोडा छे. बाकीना जागृत ए पर्याप्ता छे अने ते संख्यातगुणा छे." माटे जागृत पर्याप्ता होय छे अने तेथी संख्यातगुणा छे. समवहत-समुद्घातने प्राप्त थयेला सौथी थोडा छे, कारण के अहीं समवहत-मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेला ग्रहण करवा अने मरणसमुद्घात तो मरणकाळे होय छे पण बाकीना समये होती नथी, तेमां पण बधा जीवोने मरणसमुद्घात होती नथी माटे ते सौथी थोडा छे. तेथी असमवहत-समुद्घातने नहि प्राप्त थयेला असंख्यातगुणा छे, कारण के जीवनकाळ घणो छे. सौथी थोडा जीवो सातावेदनीयना उदयवाळा होय छे, कारण के अहीं घणा जीवो साधारण शरीरवाळा होय छे अने थोडा प्रत्येकशरीरवाळा होय छे.

लोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा।

७५. एएसि णं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सायावेयगाणं असायावेयगाणं इंदिओवउत्ताणं नोइंदिओवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स बंधगा १, अपज्जत्तया संखेज्जगुणा २, सुत्ता संखेज्जगुणा ३, समोहया संखेज्जगुणा ४,

त्रसकायिक सबन्धे यथार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो.]

२५ बन्धद्वार

७५. हे भगवन् ! ए आयुष कर्मना बन्धक, अबन्धक, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुतेला, जागृत, समवहत–समुद्घातवाळा, असमवहत–समुद्घात रहित, साताने वेदता, असाताने वेदता, इन्द्रियना उपयोगवाळा, नोइन्द्रियना उपयोगवाळा, साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळा जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! १ सौथी थोडा जीवो आयुष

७५. हवे बन्धद्वार कहे छे–अहीं आयुष कर्मना बन्धक, अबन्धक, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुतेला, जागृत, समवहत–समुद्घातने प्राप्त थयेला, असमवहत–समुद्घातने नहि प्राप्त थयेला, सातावेदक, असातावेदक, इन्द्रियना उपयोगवाळा, नोइन्द्रियना उपयोगवाळा, साकार–ज्ञानोपयोगवाळा अने अनाकार–दर्शन उपयोगवाळा एमनुं सामुदायिक अल्पबहुत्व कहेवानुं छे. तेमां प्रथम प्रत्येकनुं अल्पबहुत्व कहीए छीए, जेथी समुदायनुं अल्पबहुत्व अनायासथी समजी शकाय. तेमां सौथी थोडा आयुष कर्मना बन्धक छे, तेथी अबन्धक संख्यातगुणा छे, कारण के वर्तमान भवना अनुभवाता आयुषनो त्रीजो भाग, त्रीजा भागनो त्रीजो भाग,

त्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ।

७४. खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहो-

---

अधोलोकमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्ता वनस्पतिकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे. [इत्यादि अपर्याप्ता अने पर्याप्ता वनस्पतिकायिक संबंधे पूर्ववत् सूत्रार्थ जाणवो.]

७४. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा त्रसकायिको त्रणलोकने विषे छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकने विषे असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकने विषे संख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे अने तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त त्रसकायिको त्रण लोकमां छे. [इत्यादि अपर्याप्त अने पर्याप्त

छे–आ पंदरे सूत्रो पूर्वे कहेला एकेन्द्रियसूत्रनी पेठे विचारवा.

७४. आ सूत्रोनो पंचेन्द्रिय सूत्रनी पेठे विचार करवो. क्षेत्रद्वार समाप्त.

सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया-॥

७१ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खि-

---

तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनीअपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त वायुकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमा छे. * * * [इत्यादि अपर्याप्त अने पर्याप्त वायुकायिकनो पूर्ववत् सूत्रार्थ जाणवो.]

७२. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा वनस्पतिकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमा छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी

६९-७३ हवे पृथिवीकायिकादि पांचे एकेन्द्रियोना प्रत्येकना सामान्य, पर्याप्त अने अपर्याप्तओ संबंधे त्रण त्रण अल्पबहुत्व कहे

लोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥

७२. खेत्ताणुवाएण सव्वथोवा वाँउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए, अहेलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएणं

तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे, क्षेत्रने अनुसारे सौथी थोडा अपर्याप्त तेजस्कायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. तेथी त्रणलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त तेजस्कायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे.

७२. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा वायुकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधालोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे,

असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥

७१ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरिय-

---

७०. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अप्कायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त अप्कायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमा छे. तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमा असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त अप्कायिको ऊर्ध्वलाक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकने विशे विशेषाधिक छे. तेथी तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमा असंख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे.

७१. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा तेजस्कायिको ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा विशेषाधिक छे, तेथी

६९. खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥

७० खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए

---

६९. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पृथिवीकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्य लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्व लोकमां असंख्यातगुणा छे.अने तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त पृथिवीकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यागुणा छे अने तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त पृथिवीकायिको ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेपाधिक छे.

ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकनामे बे प्रतरमा असंख्यातगुणा छे, कारण के घणा जीवोना उपजवा घडे तथा समुद्घात घडे उपर कहेला बे प्रतरना स्पर्शनो संभव छे तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमा संख्यातगुणा छे, कारण के तेने अत्यंत घणा जीवोना उपपात अने समुद्घात घडे अधोलोक-तिर्यग्लोकनामना बे प्रतरनो स्पर्श थाय छे तेथी उर्ध्वलोकमां संख्यातगुणा छे, कारण के त्या वैमानिक देवोनु अवस्थान छे तेथी अधोलोकमा संख्यातगुणा छे, कारण के वैमानिक देवो करता संख्यातगुणा नारको त्या रहे छे तेथी तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, कारण के संमूर्छिम जलचर-खेचरादि, व्यन्तर, ज्योतिष्को अने संमूर्छिम मनुष्यो त्या होय छे ए प्रमाणे अपर्याप्त पचेन्द्रिय सूत्रनो पण विचार करवो पर्याप्त पचेन्द्रिय संबन्धी अल्पबहुत्व-क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करता पर्याप्ता पचेन्द्रिय जीवो सौथी थोडा ऊर्ध्वलोकमा छे, कारण के प्रायः वैमानिक देवोज त्या होय छे तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकनामे बे प्रतरमा असंख्यातगुणा छे, कारण के आ बे प्रतरनी नजीक रहेला ज्योतिष्क देवोने तथा ज्योतिष्काश्रित क्षेत्रमा रहेला व्यन्तरो अने तिर्यंच पचेन्द्रियोने, तथा वैमानिक, व्यन्तर, ज्योतिष्क, विद्याधर, चारण मुनि, अने तिर्यंच पचेन्द्रियोने ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग्लोकमा गमनागमन करता उपर कहेला बे प्रतरनो स्पर्श थाय छे तेथी पण लोकनो स्पर्श करनारा संख्यातगुणा छे ते आ प्रमाणे-जे अधोलोकमा रहेला भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, वैमानिको अने विद्याधरो वैक्रिय समुद्घात करता तथाविध प्रयत्नविशेषथी ऊर्ध्वलोकमा आत्मप्रदेशो दण्डरूपे विस्तारे छे तेओ पण लोकनो स्पर्श करे छे, माटे संख्यातगुणा छे तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा संख्यातगुणा छे कारण के घणा व्यन्तरो पोतानु स्थान नजीक होवाथी, तीरछा लोकमा भवनपतिओ, ऊर्ध्वलोकमा व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो अधोलौकिक ग्रामोमा समवसरणादि निमित्त तथा अधोलोकमा क्रीडादि निमित्ते गमनागमन करवाथी, तथा समुद्रोमां केटलाक तिर्यंच पञ्चेन्द्रियो पोतानु स्थळ नजीक होवाथी बीजा केटलाक ते बे प्रतराश्रित क्षेत्रमा रहेला होवाथी पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, माटे संख्यातगुणा छे तेथी अधोलोकमा संख्यातगुणा छे, कारण के नैरयिको अने भवनपति त्यां रहे छे ; तेथी तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, कारण के तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर अने ज्योतिष्को त्यां रहे छे एम पचेन्द्रियनु अल्पबहुत्व कह्यु

ज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के संखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा।

अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे अने तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त पंचेन्द्रियो त्रण लोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त पंचेन्द्रियो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे.

करतां ईलिकागतिथी उत्पन्न थाय छे अने जे पंचेन्द्रियो ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमां अने अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां पंचेन्द्रिय सिवाय बाकीनी कायपणे के पंचेन्द्रियपणे उत्पन्न थवानी इच्छावाळा मरणसमुद्घात करी अने समुद्घात वडे उत्पत्तिस्थान सुधी आत्मप्रदेशो दंडरूपे विस्तारी त्यांसुधी पंचेन्द्रियायुषनो अनुभव करे छे ते त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे, ते थोडा छे माटे सौथी थोडा कह्या छे. तेथी

लोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा ।

९८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलुक्के, उड्ढलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखे-

---

कमा असख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त चउरिन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असंख्यातगुणा छे,तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां सख्यातगुणा छे.

९८. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पचेन्द्रिय जीवो त्रण लोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी

छे, तेओ घणा छे माटे पूर्वे कहेला जीवोथी असख्यातगुणा छे तेथी अधोलोकमां सख्यातगुणा छे, कारण के त्या तेना उपजवाना स्थानो घणा छे तेथी पण तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के त्या तेना योनिस्थानो-उपजवाना स्थानो अतिशय घणा छे जेम आ सामान्य बेइन्द्रिय सबन्धी सूत्रनो विचार कर्यो तेम पर्याप्त अने अपर्याप्त बेइन्द्रिय सूत्र जाणवु तेज प्रमाणे सामान्य तेइन्द्रिय, पर्याप्त अने अपर्याप्त तेइन्द्रिय, सामान्य चउन्द्रिय, पर्याप्त अने अपर्याप्त चउरिन्द्रिय सूत्रनो विचार करवो

९८ हवे पचेन्द्रिय सबन्धी अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करता सौथी थोडा पचेन्द्रियो त्रण लोकमा-त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे, कारण के जेओ अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमा अने ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमा मारणांतिक समुद्घात करे छे अने पचेन्द्रियायुषनो अनुभव

खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरिलोए असंखेज्जगुणा, अहो-

---

असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे.

क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा चउरिन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्ता चउरिन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लो-

---

ख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकरूप बे प्रतरमां असंख्यातगुणा छे, कारण के जे अधोलोकथी तिर्यग्लोकमां अने तिर्यग्लोकथी अधोलोकमां बेइन्द्रियपणे उपजवानी इच्छावाळा अने तेनुं आयुष अनुभवता ईलिकागतिथी उत्पन्न थाय छे, तथा जे बेइन्द्रिय जीवो तिर्यग्लोकथी अधोलोकमां बेइन्द्रियपणे के शेषकायपणे उपजवानी इच्छावाळा छे, अने प्रथम मारणांतिक समुद्घात करता अने बे-इन्द्रियना आयुषनो अनुभव करता समुद्घातवडे उत्पत्तिस्थान सुधी आत्मप्रदेशो दंडरूपे विस्तारे छे तेओ उक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे

उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोगतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा।

तेइन्द्रियो ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा असङ्ख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां असङ्ख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक तिर्यग्लोकमा असङ्ख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा सङ्ख्यातगुणा छे अने तेथी तिर्यग्लोकमां सङ्ख्यातगुणा छे.

क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त तेइन्द्रियो ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा तेइन्द्रिय पर्याप्त ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा

गुणा छे तेथी त्रण लोकमा असख्यातगुणा छे, कारण के बेइन्द्रियोना घणा उत्पत्तिस्थानो अधोलोकमा छे, अने तेथी घणा तिर्यग्लोकमा छे, तेमा जे बेइन्द्रियो अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमा बेइन्द्रियपणे के अन्यपणे उपजवाना छे अने प्रथम मरण समुद्घात करी समुद्घातवडे उत्पत्ति देश सुधी आत्मप्रदेशरूप दडनो विस्तार करता बेइन्द्रियायुष वेदे छे, अने जेओ ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमा बेइन्द्रियो के अन्यकायना जीवो यावत् बेइन्द्रियपणे उत्पन्न थता बेइन्द्रियायुषनो अनुभव करे छे ते त्रण लोकनो स्पर्श करे छे, ते घणा होवाथी पूर्वे कहेलाथी अस-

अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्ता

त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए अपर्याप्ता बेइन्द्रिय जीवो सौथी थोडा ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्ता बेइन्द्रियो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा तेइन्द्रियो उर्ध्वलोकमां छे, तेथी उर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तियग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्ता

बेइन्द्रियो ज छे अने तिर्यग्लोकथी ऊर्ध्वलोकमां अने ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमां बेइन्द्रियपणे के अन्यपणे उत्पन्न थवाना छे तेओ प्रथम मरणसमुद्घात करता अने तेथी बेइन्द्रियनुं आयुष अनुभवता समुद्घात वडे अत्यंत दूर सुधी पोताना आत्मप्रदेशो दंडरूपे विस्तारे छे, तथा जेओ पूर्वोक्त बे प्रतररूप क्षेत्रमां रहेला छे तेओ बधा ते बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, अने ते घणा छे, माटे पूर्वोक्तथी असंख्यात

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया।

६७. खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बिइंदिया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा,

---

अधोलोकमा विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमा असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा पर्याप्त एकेन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमा छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमा असख्यातगुणा छे, अने तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे.

६७. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा बेइन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी

---

६७ हवे बेइन्द्रियो सबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—क्षेत्रने अनुसारे विचार करता सौथी थोडा बेइन्द्रियो ऊर्ध्वलोकमा छे, कारण के ऊर्ध्व लोकना एक भागमा तेओनो सभव छे तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा असख्यातगुणा छे, कारण के जेओ ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमा के तिर्यग्लोकथी ऊर्ध्वलोकमा बेइन्द्रियपणे उपजवाना छे अने तेनु आयुष अनुभवता ईलिकागतिथी उत्पन्न थाय छे, तथा जेओ

६६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलोक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं

६६. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा एकेन्द्रिय जीवो ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, अने तेथी

घणा वैमानिको समवसरणोमां अने घणा क्रीडा स्थानोमां रहे छे. तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, कारण के ऊर्ध्वलोक वैमानिकोनुं स्वस्थान छे, अने त्यां घणाज वैमानिक हमेशां रहे छे. एम वैमानिक देवी संबन्धी सूत्रनो पण विचार करवो.

६६. हवे एकेन्द्रिय संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करतां एकेन्द्रिय जीवो सौथी थोडा ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरने विषे छे, कारण के जेओ त्यां रहेला छे, अने जे केटलाक ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमां के तिर्यग्लोकथी ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थवाना छे तेओ मरण समुद्घात करी उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, तेओ थोडा छे माटे सौथी थोडा कह्या छे. तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां विशेषाधिक छे, कारण के जेओ अधोलोकथी तिर्यग्लोकमां अने तिर्यग्लोकथी अधोलोकमां ईलिकागतिथी उत्पन्न थाय छे तेओ तथा त्यां रहेला उपर कहेला बे प्रतरनो स्पर्श करे छे. अने ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमां एकेन्द्रियो विशेषाधिक छे, तेथी घणा अधोलोकथी तिर्यग्लोकमां उत्पन्न थाय छे, माटे विशेषाधिक कह्या छे. तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुण छे, कारण के उपर कहेला बे प्रतरना क्षेत्रथी तिर्यग्लोकनुं क्षेत्र असंख्यातगुण छे. तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे. कारण के घणा ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमां के अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थाय छे. तेमां घणा एकेन्द्रिय जीवो मरणसमुद्घात वडे आत्मप्रदेशोने दंडरूपे विस्तारी त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे, तेथी असंख्यातगुणा छे. तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओने उपजवानुं क्षेत्र घणुं मोटुं छे. तेथी अधोलोकमां विशेषाधिक छे, कारण के ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकनुं क्षेत्र विशेषाधिक छे. एम अपर्याप्ता अने पर्याप्ता संबन्धे सूत्र विचारवुं.

स्वभावथी पण अतिशय घणा छे माटे पूर्वोक्तथी सख्यातगुणा छे तेथी अधोलोक तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा वर्तता असख्यातगुणा छे कारण के घणा ज्योतिष्को अधोलौकिक ग्रामोमा समवसरणादि निमित्ते अने अधोलोकमा क्रीडानिमित्ते गमनागमन करवाथी तथा घणा अधोलोकथी ज्योतिष्कोमा उत्पन्न थता पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, ते माटे पूर्वोक्तथी असख्यातगुणा छे तेथी सख्यातगुणा अधोलोकमा छे, कारण के घणा ज्योतिष्को अधोलोकमा क्रीडा निमित्ते अने अधोलौकिक ग्रामोमा समवसरणादिने विषे लाबा काल सुधी रहे छे तेथी असख्यातगुणा तिर्यग्लोकमा छे, कारण के तिर्यग्लोक तेओनु पोतानु स्थान छे ए प्रमाणे ज्योतिष्कदेवी सबधी सूत्रनो स्वयमेव विचार करी लेवो

हवे वैमानिक देव संबन्धी अल्पबहुत्व कहे छे—क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करता वैमानिक देवो सौथी थोडा ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा छे, कारण के अधोलोकमा के तिर्यग्लोकमा रहेला जे जीवो वैमानिकोमा उत्पन्न थाय छे, जे वैमानिको तिर्यग्लोकमा गमनागमन करे छे, तेओए विवक्षित बे प्रतरमा रहेला क्रीडास्थाननो आश्रय करेलो छे अने तेओ तिर्यग्लोकमा रहीने ज वैक्रियसमुद्घात के मरणसमुद्घात करता तथाविध प्रयत्न विशेषथी ऊर्ध्वलोकमा आत्मप्रदेशोने विस्तारे छे, ते उपर कहेला बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, ते थोडा छे माटे सौथी थोडा कह्या छे तेथी ऊर्ध्व लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमा समवसरणादि निमित्ते के अधोलोकमा क्रीडा निमित्ते गयेला जे वैमानिको वैक्रिय समुद्घात के मारणातिक समुद्घात करता तथाविध प्रयत्नविशेषथी अत्यत दूर ऊर्ध्व आत्मप्रदेशरूप दडनो विस्तार करे छे अने जे वैमानिक भवथी ईलिकागतिथी च्यवी अधोलौकिक ग्रामोमा उत्पन्न थाय छे ते त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे अने ते पूर्वे कहेलाथी घणा छे माटे सख्यातगुणा छे तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा सख्यातगुणा छे कारण के अधोलौकिक ग्रामोमा समवसरणादि निमित्ते गमनागमन करवाथी अने उपर कहेला बे प्रतरमा रहेला समवसरणादिमा रहेवाथी घणा वैमानिकोने उपर कहेला बे प्रतरनो स्पर्श थाय छे तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोने विषे घणा वैमानिक देवो समवसरणादिने विषे रहे छे तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे कारण के

तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाओ ।

तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडी वैमानिक देवीओ ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे, अने तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणी छे.

वैक्रिय समुद्घात करवा वडे आत्मप्रदेशोथी त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे. ते माटे पूर्वे कहेलाथी अत्यंत घणा थाय छे, तेथी संख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां असंख्यातगुणा छे, कारण के ते घणा व्यन्तरोनुं स्वस्थान छे माटे तेनो स्पर्श करनारा घणा होय छे तेथी असंख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमां तेओनुं स्वस्थान छे अने घणा व्यन्तरोनुं अधोलोकमां क्रीडा माटे गमन थाय छे. तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. कारण के तेओनुं स्थान तिर्यग्लोक छे. एम व्यन्तर देवी संबन्धे पण अल्पबहुत्व जाणवुं.

हवे ज्योतिष्क संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे–क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करतां सौथी थोडा ज्योतिष्को ऊर्ध्वलोकमां छे, कारण के केटलाएकना तीर्थंकरना जन्ममहोत्सव निमित्ते मेरु उपर,अंजन अने दधिमुख पर्वतने विषे अष्टाह्निका निमित्ते अने क्रीडा निमित्ते बीजा केटलाकना मेरुपर्वतादिने विषे गमननो संभव छे. तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां असंख्यातगुणा छे. कारण के केटलाक ज्योतिष्को पोताना स्थानमां रहेला छतां नजीक होवाथी ते बे प्रतरनो स्पर्श करे छे. बीजा केटलाएक वैक्रिय समुद्घात वडे अने बीजा केटलाक ऊर्ध्वलोकमां जवा आववाथी आ बे प्रतरनो स्पर्श करे छे. माटे पूर्वोक्तथी असंख्यातगुणा छे. तेथी त्रण लोकनो स्पर्श करनारा संख्यातगुणा छे. कारण के जे ज्योतिष्को तेवा प्रकारना तीव्र प्रयत्नरूप वैक्रिय समुद्घात वडे त्रणे लोकनो स्वप्रदेशो वडे स्पर्श करे छे ते

ज्जगुणाओ, तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा [ग्रन्थाग्रं० २०००] उड्ढलोयतिरियलो , तेलोक्के सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए असखिज्जगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वेमाणिणीओ देवीओ उड्ढलोयतिरियलोए,

---

तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, तेथी तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडी ज्योतिषिक देवीओ ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणी छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणी छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणी छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा वैमानिक देवो ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा छे, तेथी त्रणलोकमा संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमा संख्यातगुणा छे,

---

क्रोधादि समुद्घातने प्राप्त थवाथी घणा भवनपति देवोने पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श थाय छे तेथी तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे, कारण के समवसरणादिमे विषे वन्दननिमित्ते अने रमणीय द्वीपोमा क्रीडानिमित्ते आववानो सभव छे अने आवीने पण तेओ लांबा काळ सुधी रहे छे तेथी अधोलोकमा असख्यातगुणा छे कारण के अधोलोक भवनवासीओनु पोतानु स्थान छे एम भवनवासी देवीओनु पण अल्पबहुत्व जाणवु हवे व्यन्तर सबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करता सौथी थोडा व्यन्तरो ऊर्ध्वलोकमा छे, कारण के केटलाक व्यन्तरो मेरुपर्वतना पंडकवनादिमा होय छे तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा असख्यातगुणा छे कारण के केटलाकने ते बे प्रतरो पोताना स्थाननी अंदर आवी जता होवाथी, केटलाकने पोताना स्थाननी नजीक होवाथी अने बीजा घणा व्यन्तरोनु मदरादि पर्वतोमा गमनागमन होवाथी तेओने पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श थाय छे माटे विचार करता ते बधा अतिशय घणा थाय छे तेथी त्रण लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के त्रणे लोकमा रहेनारा व्यन्तरो तथाविध प्रयत्नविशेषथी

खेज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ जोइसिणीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, अहोलोए संखे-

तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडी वानमंतर देवीओ ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणी छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोकमां असंख्यातगुणी छे अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा ज्योतिपिक देवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे,

पोताना भवनुं आयुप वेदता होवाथी भवनवासीज कहेवाय छे. आवा प्रकारना जे भवनवासीओ उत्पत्ति स्थान सुधी आत्मप्रदेशरूप दंडनो विस्तार करे छे तेओ, तथा ऊर्ध्वलोकमां जवा आववाथी अने ते बे प्रतरनी पासे तेओनुं क्रीडास्थान होवाथी उपर कहेला वधा ते बे प्रतरनो स्पर्श करे छे माटे पूर्वे कहेलाथी असंख्यातगुणा छे. तेथी त्रण लोकनो स्पर्श करनारा संख्यातगुणा छे, कारण के जे ऊर्ध्वलोकमां रहेला तिर्यंच पंचेन्द्रियो भवनपतिपणे उपजवाना छे अने जेओ स्वस्थाने वैक्रिय समुद्घात वडे के प्रथम मरण समुद्घात वडे तेवा प्रकारना तीव्र प्रयत्नविशेपथी समवहत थयेला छे तेओ त्रण लोकनो स्पर्श करे छे माटे तेओ संख्यातगुणा छे. कारण के परस्थानमां समुद्घात करनाराथी स्वस्थानमां समुद्घात करनारा संख्यातगुणा होय छे. तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां वर्तमान भवनपति देवो असंख्यातगुणा छे. स्वस्थानने नजीक होवाथी अने तिर्यग्लोकमां जवा आववाथी तथा स्वस्थानमां रहेला

अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ अहोलोए असंखेज्जगुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वाणमंतरीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए अस-

सौथी थोडी भवनवासिनी देवीओ ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणी छे, तेथी त्रणलोकमां सख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणी छे, तेथी तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणी छे, अने तेथी अधोलोकमां असख्यातगुणी छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा वानमतर देवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमा असख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, अने तेथी

र्यग्लोकमा रहेला भवनवासी देवो वैक्रिय समुद्घात करी ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग्लोकनो स्पर्श करे छे, तथा तिर्यग्लोकमा रहेला भवनवासी मरणसमुद्घात वडे ऊर्ध्वलोकमा सौधर्मादि देवलोकने विषे बादर पर्याप्त पृथिवीकायिकपणे, बादर पर्याप्त अप्कायिकपणे अने बादर पर्याप्त प्रत्येक वनस्पतिकायिकपणे अनेक प्रकारना मणि वगेरे शुभ स्थानकोमा उपजवाना छे अने हजी पण जेओ स्वभवनु आयुष अनुभवे छे, परन्तु पृथिवीकायिकादि परभवनु आयुष अनुभवता नथी, मारणान्तिक समुद्घात वडे समवहत थयेला बे प्रकारना छे, केटलाक परभवनु आयुष वेदे छे अने केटलाक वेदता नथी, भगवती सूत्रमां कह्यु छे के-"हे भगवन्! मारणान्तिक समुद्घात करीने जे मेरुपर्वतनी पूर्व दिशामा बादर पृथिवीकायपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन्! त्या जइने उत्पन्न थाय के त्याथी पाछो फरीने उत्पन्न थाय? हे गौतम! कदाच त्या जइने उत्पन्न थाय अने कदाचित् त्याथी पाछो फरीने बीजी वार मारणान्तिक समुद्घात करीने त्यार पछी त्यां उत्पन्न थाय" तेओ हजी

अहोलोए सखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ।

६५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्क संखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ भवणवासिणीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्क संखेज्जगुणाओ,

---

ख्यातगुणी छे, तेथी त्रणलोकमां (त्रण लोकनो स्पर्श करनारी) संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे.

६५. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा भवनवासी देवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी अधोतिर्यग्लोक, तिर्यग्लोक, अने तेथी अधोलोकमां उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए

अतिशय घणा छे तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे. कारण के ते भवनपतिनुं स्वस्थान छे. तेथी तीरछा लोकमां संख्यातगुणा छे. कारण के ते ज्योतिष्को अने व्यन्तरोनुं स्वस्थान छे. हवे देवीओ आश्रयी अल्पबहुत्व कहे छे-आ सूत्र देवसूत्रनी जेम सामान्य रीते विचारवुं.

६५. ए प्रमाणे देव संबन्धे सामान्य अल्पबहुत्व कह्युं,हवे भवनपत्यादि देव विशेषनुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम भवनपति संबंधे कहे छे-क्षेत्रनी अपेक्षाए विचार करतां भवनवासी देवो सौथी थोडा ऊर्ध्वलोकमां छे, ते आ प्रमाणे-केटलाक भवनवासी देवोनुं सौधर्मादि देवलोकमां पूर्वनी मित्रताने लीधे गमन थाय छे, केटलाकनुं तीर्थंकरना जन्ममहिमा निमित्ते मेरुपर्वतमां, अने अंजन-दधिमुख प्रमुख पर्वतोने विषे अष्टाह्निकानिमित्ते अने बीजा केटलाकनुं मेरुपर्वत वगेरे स्थळे क्रीडानिमित्ते गमन थाय छे, ए बधा मळीने पण थोडा होय छे माटे सौथी थोडा ऊर्ध्वलोकमां कह्या छे. तेथी ऊर्ध्वलोक, तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां असंख्यातगुणा छे. ते आ प्रमाणे-ति-

होलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ,

(त्रण लोकनो स्पर्श करनारा) संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमा संख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणा छे अने तेथी तिर्यग्लोकमा संख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडी देवीओ ऊर्ध्वलोकमा छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां अस-

६४ हवे देवगतिने आश्रयी अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रने अनुसारे विचार करता सौथी थोडा देवो ऊर्ध्वलोकमा छे, कारण के त्या वैमानिक देवो छे अने तेओ थोडा छे अने भवनपति वगेरे जेओ जिनजन्म महोत्सवादिने विषे मेरुपर्वतादिनी उपर जाय छे तेओ पण थोडाज छे माटे सौथी थोडा कह्या छे तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा असंख्यातगुणा छे, कारण के ते ज्योतिष्कोने नजीक छे माटे स्वस्थान छे तथा भवनपति, व्यन्तर अने ज्योतिष्को मेरुपर्वतादि उपर तथा सौधर्मादि कल्पमा गयेला स्वस्थान विषे गमनागमन करता अने जेओ सौधर्मादिकल्पमा देवपणे उत्पन्न थवानी योग्यतावाळा छे अने देवायुष वेदता उत्पत्तिस्थान पर्यन्त जाय छे, तेओ पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे तेथी उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करनारा बधानो विचार करता अतिशय घणा छे माटे पूर्वे कहेलाथी असंख्यातगुणा छे तेथी त्रण लोकनो स्पर्श करनारा संख्यातगुणा छे, कारण के भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो तथाविध प्रयत्नना वशथी वैक्रियसमुद्घात वडे त्रण लोकनो स्पर्श करे छे ए प्रमाणे जेणे समुद्घात करेली छे एवा पूर्वे कहेला बे प्रतरना स्पर्श करनाराथी संख्यातगुणा केवलज्ञानीए जाणेला छे माटे संख्यातगुणा छे तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा वर्तता संख्यातगुणा छे, कारण के ते बे प्रतर भवनपति अने व्यन्तर देवोने नजीक होवाथी स्वस्थान छे, तथा घणा भवनपतिओ पोताना भवनमां रहेता तीरछा लोकमा जवा आववा वडे तथा मरण पामता, वैक्रियसमुद्घात वडे समवहत थयेला तथा तीरछा लोकमा रहेनारा तिर्यक्पचेन्द्रिय मनुष्यो भवनपतिपणे उत्पन्न थता अने भवनपतिनु आयुष अनुभवता पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे अने ते

ज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ॥

६४. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अ-

छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे, अने तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे.

६४. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो ऊर्ध्वलोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. तेथी त्रणलोकमां

रण के ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमां उत्पन्न थवावाळी अने मारणान्तिक समुद्घात वडे जेना आत्मप्रदेशो अत्यंत दूर सुधी फेलायेला छे एवी, अथवा वैक्रिय समुद्घातने प्राप्त थयेली अथवा केवलिसमुद्घातने प्राप्त थयेली मनुष्य स्त्रीओ त्रण लोकनो स्पर्श करे छे अने ते घणी थोडी छे माटे सौथी थोडी कही छे. तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां वर्तती मनुष्य स्त्रीओ संख्यातगुणी छे. कारण के वैमानिक देवो अने वावीनी कायवाळा जीवो ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमां मनुष्यस्त्री तरीके उत्पन्न थवाना होय तेने तथा तिर्यग्लोकमां रहेली अने ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थवावाळी अने मरण समुद्घातवडे उपर अत्यंत दूर सुधी जेणे आत्मप्रदेशो विस्तारेला छे छतां हजी सुधी जेणे काळ नथी कर्यो एवी मनुष्य स्त्रीओने उपरना बे प्रतरना स्पर्शनो संभव छे. कारण के ते बन्ने प्रकारनी पण स्त्रीओ अत्यंत घणी छे. तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां संख्यातगुणी छे. कारण के तिर्यग्लोकथी मनुष्य स्त्रीओथी के शेष कायथी आवी अधोलौकिक ग्रामोमां उत्पन्न थाय, अथवा अधोलौकिक ग्रामरूप शेषथी तिर्यग्लोकमां मनुष्य स्त्रीपणे उपजवानी होय तेने, अने केटली एकने अधोलौकिक ग्रामने विषे रहेवाथी पण पूर्वे कहेला बे प्रतरना स्पर्शनो संभव छे. अने तेओ पूर्वे कहेली स्त्रीओ करतां अतिशय घणी छे. तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणी छे, कारण के क्रीडाने माटे के चैत्यवंदन निमित्ते सौमनसादिमां घणी विद्याधरी स्त्रीओनो संभव छे. तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे. कारण के त्यां पण स्वस्थान होवाथी घणी स्त्रीओ छे. तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे, कारण के क्षेत्र संख्यातगुण छे अने स्वस्थान छे. एम मनुष्यगति संबन्धे अल्पबहुत्व कह्युं.

मणुस्सीओ तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ, उड्ढलोए संखे-

गुणा छे, तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडी मनुष्यस्त्रीओ त्रण लोकमा (त्रण लोकनो स्पर्श करनारी) छे, तेथी ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमा संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां सख्यातगुणी छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणी

ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरनो स्पर्श करनारा असख्यातगुणा छे, कारण के वैमानिक देवो अने बीजी कायना जीवो यथा संभव ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमा मनुष्यपणे उत्पन्न थता उपर कहेला बे प्रतरोने स्पर्श करे छे, विद्याधरोनु पण मेरुपर्यंत वगेरे स्थले गमन थाय छे, अने तेओना वीर्य अने रुधिरादि पुद्गलोमा सम्मूर्छिम मनुष्योनी उत्पत्ति थाय छे, तेथी ते विद्याधरो ज्यारे रुधिरादि पुद्गलोसहित जाय छे त्यारे सम्मूर्छिम मनुष्यो पण उपर कहेला बे प्रतरना स्पर्श करनारा थाय छे, ते अतिशय घणा छे माटे असंख्यातगुणा कह्या छे तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमा सख्यातगुणा छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमा स्व भावथीज घणा मनुष्यो छे,तेथी जेओ तिर्यग्लोकथी मनुष्यो अथवा शेषकायोथी आवी अधोलौकिक ग्रामोमा गर्भज मनुष्य तरीके के सम्मूर्छिम मनुष्य तरीके उत्पन्न थवाना छे, अने जेओ अधोलोकथी के अधोलौकिक ग्रामरूप होय अधोलोकथी, मनुष्योथी के शेषकायथी आवी तिर्यग्लोकमा गर्भज मनुष्य तरीके के सम्मूर्छिम मनुष्य तरीके उपजवाना छे तेओ पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, अने तेओ घणा छे, तेमज स्वस्थानथी पण केटलाक अधोलौकिक ग्रामोमा उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करनारा होय छे, माटे तेओ पूर्वे कहेलाथी सख्यातगुणा छे तेथी ऊर्ध्व लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के सौमनस वनादिने विषे क्रीडा करवा माटे अने चैत्यवंदन माटे घणा विद्याधरो अने चारण मुनि ओना गमनागमननो संभव छे, अने तेओना रुधिरादि पुद्गलोना सम्बन्धथी सम्मूर्छिम मनुष्योनो संभव छे तेथी अधोलोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के पोतानु स्थान होवाथी घणा छे तेथी तिर्यग्लोकमा सख्यातगुणा छे, कारण के क्षेत्र सख्यातगणु छे अने पोतानु स्थान छे हवे मनुष्य स्त्री सबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे–क्षेत्रने अनुसरी विचार करता सौथी थोडी मनुष्य स्त्रीओ त्रण लोकनो स्पर्श करनारी छे, का

६३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलोक्के, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

६३. क्षेत्रनी अपेक्षाए सौथी थोडा मनुष्यो त्रणलोकमां (त्रणलोकनो स्पर्श करनारा) छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां संख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोकमां संख्यात-

अधोलौकिक ग्रामोमां पण उत्पन्न थाय छे अने तेवी रीते उत्पन्न थतां उक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे अने तेओ तिर्यंचयोनिक स्त्रीनुं आयुष वेदवाथी तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ पण कहेवाय छे. तथा अधोलौकिक ग्रामो क्रमशः वधतां वधतां छेवटना भागमां हजार योजन उंडा छे अने तेनी पहेलाना कोइक प्रदेशमां नवसो योजन उंडाइवाळा पण छे,त्यां कोइक तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ पोताना रहेवा वडे पण उपर कहेला बे प्रतरनो आश्रय करे छे माटे पूर्वे कहेली तिर्यंचयोनिक स्त्रीओथी संख्यातगुणी छे. तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे. कारण के अधोलौकिक ग्रामो अने बधा समुद्रो हजार योजन उंडा छे ते माटे नवसो योजननी नीचे जे माछली प्रमुख तिर्यच् स्त्रीओ रहे छे अने तेओ पोतानुं स्थान होवाथी घणी छे, माटे संख्यातगुणी कही छे, कारण के तेओनुं क्षेत्र संख्यातगुण छे. तेथी तिर्यंचलोकमां संख्यातगुणी छे, एम तिर्यंचगतिने आश्रयी अल्पबहुत्व कह्युं.

६३. हवे मनुष्यगति संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रने अनुसारे विचार करतां त्रण लोकमां एटले त्रण लोकनो स्पर्श करनारा मनुष्यो सौथी थोडा छे, कारण के जेओ ऊर्ध्वलोकथी अधोलौकिक ग्रामोमां उपजवानी योग्यतावाळा मारणान्तिक समुद्‌घात करे छे तेओ केटलाएक समुद्‌घात वडे बहार काढेला पोताना आत्मप्रदेशो वडे त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे, ते सिवाय बीजा जेओ वैक्रिय समुद्‌घात के आहारक समुद्‌घातने प्राप्त थयेला तथाविध प्रयत्नथी अत्यंत दूर ऊर्ध्व अने अधोलोकमां आत्मप्रदेशोनो विस्तार करे छे अने जेओ केवलिसमुद्‌घातने प्राप्त थयेला छे तेओ बधाय त्रण लोकनो स्पर्श करे छे, अने तेओ थोडा छे माटे 'सौथी थोडा होय छे' एम कह्युं छे. तेथी

एण सव्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ॥

थोडी तिर्यंचणीओ ऊर्ध्व लोकमां छे, तेथी ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणी छे. तेथी त्रणलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी अधोलोकमां संख्यातगुणी छे, तेथी तिर्यग्लोकमां संख्यातगुणी छे

तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ सौथी थोडी ऊर्ध्वलोकमां छे, कारण के त्यां मंदरपर्वतनी वाव वगेरे स्थळे पण तिर्यंच स्त्रीओ होय छे, अने ते अल्प मात्र होवाथी ते सौथी थोडी छे तेथी ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां असंख्यातगुणी छे. कारण के सहस्रार देवलोक सुधीना देवो पण गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे, तो बीजा जीवना उत्पन्न थाय तेमां शुं कहेवुं? तेओ उपर छतां पण ज्यां जवानो संभव होय त्यां उत्पन्न छे, तेथी सहस्रार सुधीना देवो अने बीजा जीवो पण ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमां तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्त्रीपणे आयुष बांधता उत्पन्न थाय छे ज तीरछा लोकमां रहेनारी तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्त्रीओ ऊर्ध्वलोकमां देव वगेरे अथवा बीजी कायपणे उत्पन्न थतां मरणसमुद्घात करे उत्पत्तिस्थाने पोतपोताना आत्मप्रदेश रूपी दंडने विस्तारे छे ते पूर्वोक्त बे प्रतरनो स्पर्श करे छे ते तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ तेथी असंख्यातगुणी छे, कारण के क्षेत्र असंख्यातगुणु छे तेथी त्रण लोकमां संख्यातगणी छे, कारण के जे भवनपति, व्यन्तर अने नारको तथा चारेना कायवाळा जीवो पण अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां पण तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्त्रीपणे उत्पन्न थाय, अने ऊर्ध्वलोकथी देव वगेरे पण अधोलोकमां उत्पन्न थाय तेओ मरण समुद्घात करी पोतपोताना आत्मप्रदेशरूप दंड वडे त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे, अने तेओ घणी छे तथा तिर्यंच स्त्रीनुं आयुष वेदनारी तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ कहेवाय छे तेथी तेओ संख्यातगुणी छे तेथी अधोलोक अने तिर्यग्लोक नामे बे प्रतरमां रहेली संख्यातगुणी छे, कारण के घणा नारकादि जीवो समुद्घात सिवाय पण तीरछा लोकमां तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्त्री तरीके उत्पन्न थाय छे. अने तीरछा लोकमां रहेला जीवो तिर्यंचयोनिक स्त्रीपणे

६२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवा-

६२. क्षेत्रने अनुसरी सौथी थोडा तिर्यंचो ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्व लोकमां असंख्यातगुणा छे. क्षेत्रनी अपेक्षाए

पंचेन्द्रियपणे उत्पन्न थता अने मरण समुद्घात वडे पोताना अत्मप्रदेश रूपी दंडनो उत्पत्तिस्थान पर्यन्त जेणे विस्तार कर्यो छे एवा नारको ज ग्रहण करवा अने तेओ तो नारकायुपनो अनुभव करता होवाथी निर्विवादपणे नारकोज छे अने त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे. कारण के ऊर्ध्वलोकमां रहेली पूर्वोक्त वावो सुधी तेणे आत्मप्रदेश रूपी दंडनो विस्तार कर्यो छे. तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोक संज्ञावाळा पूर्वे कहेला बे प्रतरनो स्पर्श करनारा असंख्यातगुणा छे, कारण के असंख्याता द्वीपसमुद्रोमां घणा तिर्यंच पंचेन्द्रियो नरकने विषे उत्पन्न थता उपर कहेला बे प्रतरोनो स्पर्श करे छे, तेथी पूर्वोक्त त्रण लोकनो स्पर्श करनारा नैरयिको करतां असंख्यातगुणा छे. कारण के क्षेत्र असंख्यातगुण छे. मेरुपर्वतादिना क्षेत्रथी असंख्याता द्वीप-समुद्ररूप क्षेत्र असंख्यातगुण छे माटे असंख्यातगुणा थाय छे. बीजा आचार्यो आ सूत्रनी आ प्रमाणे व्याख्या करे छे-असंख्याता द्वीपसमुद्रमां तिर्यंच पंचेन्द्रियपणे उत्पन्न थता अने मरण समुद्घात वडे उत्पत्तिस्थान सुधी जेओए पोताना आत्मप्रदेशोनो दंड विस्तार्यो छे ते नारको ज अहीं लेवा. नारकायुपने वेदता होवाथी ते नारको मरण पामता पण असंख्यातगुणा छे. तेथी अधोलोकमां असंख्यातगुणा छे, कारण के ते तेनुं पोतानुं स्थान छे. एम नरकगतिने आश्रयी क्षेत्रने अनुसरी अल्पबहुत्व कह्युं.

६२. हवे तिर्यंच गतिने आश्रयी अल्पबहुत्व कहे छे-आ अल्पबहुत्वनो विचार सामान्य जीवसूत्रनी पेठे करवो, कारण के सामान्य जीवोनुं अल्पबहुत्व तिर्यंचो-सूक्ष्म निगोदोने आश्रयी विचारेलुं छे. हवे तिर्यंचस्त्री संबंधे अल्पबहुत्व कहे छे-क्षेत्रने अनुसरी विचार करतां

६१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोक्के, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए असंखेज्जगुणा ॥

६१. क्षेत्रने अनुसारे सौथी थोडा नैरयिको त्रण लोकमां छे, तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकमां असंख्यातगुणा होय छे अने तेथी अधोलोकमां असंख्यातगुणा होय छे.

ए शी रीते जाणी शकाय ? (उ०)-युक्तिथी जाणी शकाय छे ते आ प्रमाणे-पूर्वे आ स्थानपदमां पर्याप्त द्वारमां आ सूत्र कह्यु छे -"सौथी थोडा नोपर्याप्ता-नोअपर्याप्ता जीवो छे, तेथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा छे, तेथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे" ए प्रमाणे अपर्याप्ता घणा छे, कारण के तेनाथी पर्याप्ता संख्यातगुणा ज छे, पण असंख्यातगुणा के अनन्तगुणा नथी घणा अपर्याप्ताओ तो अन्तरालगति-मा वर्तता होय छे तेथी त्रण लोकनो स्पर्श करनारा जीवो करता ऊर्ध्व लोकमां रहेला जीवो असंख्यातगुणा होय छे, कारण के उप जवानु क्षेत्र अतिशय मोटु छे अने तेमा असंख्याता भागोनी उद्वर्तना थाय छे तेथी अधोलोकमा रहेला जीवो विशेषाधिक छे, का रण के ऊर्ध्वलोकना क्षेत्रथी अधोलोकनु क्षेत्र विशेषाधिक छे ए प्रमाणे जीवोनु क्षेत्रने अनुसारी अल्पबहुत्व कह्यु

६१ हवे चार गतिना दण्डकना क्रमथी अल्पबहुत्वने कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम नैरयिकोनु अल्पबहुत्व कहे छे-'क्षेत्रानु-पातेन' क्षेत्रने अनुसारे विचार करता सौथी थोडा नैरयिको त्रण लोकमा छे-त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे नैरयिको केवी रीते त्रण लोकनो स्पर्श करनारा छे अने ते सौथी थोडा केम छे? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे-अहीं मेरुपर्वतना शिखर उपर के अञ्जन-द-धिमुख पर्वतना शिखरादि उपर रहेली वावोमा रहेला जे मत्स्यादि पंचेन्द्रिय तिर्यंचो नरकमा उपजवाना होय त्यारे मरण समये ई-लिका गति वडे आत्मप्रदेशोने उत्पत्तिस्थान सुधी विस्तारे छे अने तेओ त्रण लोकनो स्पर्श करे छे, तेओ मरीने तत्काळ नरकमा उत्पन्न थता होवाथी अने नरकायुषनो अनुभव करता होवाथी नारको कहेवाय छे आवा प्रकारना केटला एक होय छे माटे त्रण लोकनो स्पर्श करनारा नैरयिको सौथी थोडा छे बीजा आचार्यो आ प्रमाणे व्याख्या करे छे-जे पूर्वोक्त वावोमा तिर्यंच

आकाशप्रदेशप्रतर अने तिर्यग्लोकनी नीचेनुं एक प्रदेशवाळुं आकाशप्रदेशप्रतर ते बन्ने अधोलोक-तिर्यग्लोक कहेवाय छे. कारण के तेवा प्रकारे तेनी प्रवचनमां प्रसिद्धि छे, तेमां जेओ विग्रहगतिथी अथवा त्यां रहेवा वडे ते बन्ने प्रतरोमां वर्ते छे तेओ विशेषाधिक छे. केवी रीते छे ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे-जेओ अधोलोकथी तिर्यग्लोकमां अने तिर्यग्लोकथी अधोलोकमां ईलिका गतिथी उत्पन्न थाय छे तेओ उपरना बन्ने प्रतरनो स्पर्श करे छे, अने जे केटलाएक त्यां रहेलाज ते विवक्षित बे प्रतरनो आश्रय करे छे तेओ उपरना बन्ने प्रतरमां रहेनारा कहेवाय छे, परन्तु जेओ अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थता ते बन्ने प्रतरनो स्पर्श करे छे ते न ग्रहण करवा, कारण के तेओ बीजा सूत्रनो विषय थाय छे. केवळ ऊर्ध्वलोकथी अधोलोकमां विशेषाधिक जीवो छे माटे अधोलोकथी तिर्यग्लोकमां उत्पन्न थता जीवो ऊर्ध्वलोकनी अपेक्षाए विशेषाधिक प्राप्त थाय छे माटे विशेषाधिक छे. तेथी तिर्यग्लोकमां रहेला जीवो असंख्यातगुणा छे, कारण के उपरना बन्ने क्षेत्र करतां तिर्यग्लोकनुं क्षेत्र असंख्यातगुण छे. तेथी त्रण लोकनो स्पर्श करनारा जीवो असंख्यातगुणा छे. अहीं जेओ केवळ ऊर्ध्वलोकमां, अधोलोकमां के तिर्यग्लोकमां रहे छे, जेओ वक्रगतिथी ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग्लोकनो स्पर्श करे छे तेनी गणना न करवी, परन्तु जेओ विग्रहगतिने प्राप्त थयेला त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे ते ग्रहण करवा, कारण के आ सूत्र विशेषार्थनो विषय छे. माटे तिर्यग्लोकवर्ती जीवोथी असंख्यातगुणा ज छे. ते आ प्रमाणे-अहीं घणा सूक्ष्म निगोदो प्रतिसमय ऊर्ध्वलोकमां अने अधोलोकमां मरण पामे छे, पण जे सूक्ष्म निगोदो तिर्यग्लोकमां मरण पामे छे, अने मरण पामी अधोलोकमां, ऊर्ध्वलोकमां के केटलाक तेज तिर्यग्लोकमां उत्पन्न थाय छे तेओ त्रण लोकनो स्पर्श करता नथी माटे तेओ आ सूत्रनो विषय नथी. तेमां ऊर्ध्वलोक के अधोलोकमां रहेला सूक्ष्म निगोदो मरण पामी केटलाक स्वस्थाने एटले ऊर्ध्वलोकमां मरण पामी ऊर्ध्वलोकमां अने अधोलोकमां मरण पामी अधोलोकमां अने केटलाक तिर्यग्लोकमां उत्पन्न थाय छे, तेथी असंख्यातगुणा अधोलोकमां रहेला ऊर्ध्वलोकमां अने ऊर्ध्वलोकमां रहेला अधोलोकमां उत्पन्न थाय छे, अने तेओ ते प्रकारे उत्पन्न थता त्रणे लोकनो स्पर्श करे छे माटे असंख्यातगुणा छे. (प्र०)-घणा जीवो आटला मोटा प्रमाणमां हमेशां विग्रहगतिने प्राप्त थयेला होय छे.

असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया।

तिर्यग्लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी त्रण लोकमा असंख्यातगुणा छे, तेथी ऊर्ध्वलोकमां असंख्यातगुणा छे, तेथी अधोलोकमा विशेषाधिक छे.

छे अने मध्यभागमा अढारसो योजननी उंचाइवाळो तिर्यग्लोक छे तेमां रुचकनी समभूतल पृथिवीना भागथी नवसो योजन जइने जे ज्योतिष्कना उपर तिर्यग्लोकनुं एक प्रदेशात्मक आकाशप्रतर छे ते तिर्यग्लोकप्रतर अने तेना उपरनुं एक प्रदेशात्मक आकाशप्रतर ते ऊर्ध्वलोक प्रतर अने ते बन्ने प्रतरने ऊर्ध्वलोक-तिर्यग्लोक कहेवाय छे तेवी रीते अनादि प्रवचननी परिभाषा-संकेत छे तेमा-ते बन्ने प्रतरमा रहेता जीवो सौथी थोडा छे केवी रीते छे? तेनो उत्तर आपे छे-जेओ ऊर्ध्वलोकथी तिर्यग्लोकमा अने तिर्यग्लोकथी ऊर्ध्वलोकमा आवी उत्पन्न थाय छे ते उपरना बन्ने प्रतरनो स्पर्श करे छे, अने ते सिवाय बीजा केटलाक जीवो जेओ त्यांज रहीने बे प्रतरनो आश्रय करे छे तेओज आ बे प्रतरमा रहेनारा छे, बीजा रहेता नथी पण जेओ ऊर्ध्वलोकमाथी अधोलोकमा उत्पन्न थता ते बे प्रतरनो स्पर्श करे छे तेनी अहीं गणना करवानी नथी कारण के तेओ बीजा सूत्रनो विषय थाय छे पहले ते जीवो अधोलोक-तिर्यग्लोकनो विषय थाय छे माटे उपरना बे प्रतरमा वर्तता जीवो सौथी थोडा छे (प्र०)-ऊर्ध्वलोकमा रहेला सर्व जीवोनो असंख्यातमो भाग निरंतर मरणने प्राप्त थयेलो होय छे अने तेओ तिर्यग्लोकमा उत्पन्न थता उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करे छे, तो उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करनारा जीवो थोडा केम होय? (उ०)-आ शंका अयुक्त छे, कारण के ते वस्तुतत्त्वना अपरिज्ञानथी थयेली छे ते आ प्रमाणे-यद्यपि ऊर्ध्वलोकमा रहेला सर्व जीवोनो असंख्यातमो भाग निरंतर मरणने प्राप्त होय छे, तो पण ते बधा तिर्यग्लोकमा उत्पन्न थता नथी तेमाना घणा खरा तो अधोलोकमा अने ऊर्ध्वलोकमा उत्पन्न थाय छे माटे ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग्लोक संबन्धी उपरना बे प्रतरनो स्पर्श करनारा जीवो सौथी थोडाज छे तेथी अधोलोक-तिर्यग्लोकने विषे जीवो विशेषाधिक छे अहीं अधोलोकना उपरनुं एक प्रदेशवाळुं

कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा, पोग्गला अणंतगुणा, अद्धासमया अणंतगुणा, सव्वदव्वा विसेसाहिया, सव्वपएसा अणंतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा । २३ दारं ।

६०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए

तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो छे, तेथी पुद्गलो अनन्तगुणा छे, तेथी अद्धासमयो अनन्तगुण छे, तेथी सर्वद्रव्यो विशेपाधिक छे, तेथी तेथी सर्व प्रदेशो अनन्तगुणा छे अने तेथी सर्व पर्यायो अनन्तगुणा छे.

२४ क्षेत्रद्वार.

६०. क्षेत्रने अनुसारे सौथी थोडा जीवो ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे, तेथी अधोलोक–तिर्यग्लोकमां विशेपाधिक छे, तेथी

स्तिकाय अने आकाशास्तिकाय द्रव्य नांखवा, ते बधा एकठां करीए तो पण अद्धासमयोना अनन्तमा भाग जेटला थाय छे एटले ते द्रव्यो नांखवाथी कंइक अधिक थाय छे तेथी अद्धासमयोथी सर्व द्रव्यो विशेपाधिक छे. तेथी सर्वप्रदेशो अनन्तगुणा छे. कारण के आकाश अनन्त छे. तेथी सर्व पर्यायो अनन्तगुण छे कारण के एक आकाश प्रदेशमां अनन्त अगुरुलघु पर्यायो होय छे. जीवद्वार समाप्त.

६०. हवे क्षेत्रद्वार कहे छे–क्षेत्रने अनुसारे विचार करतां सौथी थोडा जीवो ऊर्ध्वलोक–तिर्यग्लोकमां छे. अहीं उर्ध्व लोकनुं सौथी नीचेनुं आकाशप्रतर अने तिर्यग्लोकनुं सौथी उपरनुं आकाशप्रतर ए उर्ध्वलोक–तिर्यग्लोक कहेवाय छे, कारण के तेवा प्रकारे सिद्धान्तमां प्रसिद्ध छे. अहीं आ तात्पर्य छे–चौद रज्जुप्रमाण सर्वलोकना त्रण विभाग थाय छे–ऊर्ध्वलोक, तिर्यग्लोक अने अधोलोक. अने ते विभाग रुचक प्रदेशोथी थाय छे. ते आ प्रमाणे–रुचक प्रदेशथी नीचे नवसो योजन अने उपर नवसो योजन तिर्यग्लोक छे, ते तिर्यग्लोकनी नीचे अधोलोक अने तेनी उपर ऊर्ध्वलोक छे, कंइक न्यून सात रज्जुप्रमाण ऊर्ध्वलोक छे, कंइक अधिक सात रज्जुप्रमाण अधोलोक

५८. एएसि णं भंते ! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थो जीवा अचरिमा, चरिमा अणतगुणा । २२ दार ।

५९ एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं सव्वपज्जवाण य कयरे

२२ चरमद्वार

५८. हे भगवन् ! ए चरम अने अचरम जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अचरम जीवो छे, अने तेथी चरमजीवो अनन्तगुणा छे.

२३ जीवद्वार.

५९. हे भगवन् ! ए जीवो, पुद्‌गलो, अद्धासमयो, सर्वद्रव्यो, सर्वप्रदेशो, अने सर्व पर्यायोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु,

५८ जेने योग्यता वडे चरम–छेल्लो भवनो समय छे ते चरम एटले भव्य अने तेथी इतर अचरम–अभव्य अने सिद्ध कहेवाय छे कारण के ते बन्नेने चरम भव नथी तेमां अचरम जीवो थोडा छे, कारण के अभव्य अने सिद्धो बन्ने मळीने पण अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) युक्त अनत परिमाणवाळा छे तेथी अनन्तगुणा चरम–भव्य जीवो छे, कारण के अजघन्योत्कृष्ट अनतानन्त परिमाणवाळा छे चरम द्वार समाप्त

५९. हवे जीवद्वार कहे छे—सौथी थोडा जीवो छे, तेथी पुद्‌गलो अनतगुणा छे, तेथी अद्धासमयो अनन्तगुणा छे तेनो विचार पूर्वे करेलो छे ते अद्धासमयोथी सर्वद्रव्यो विशेषाधिक छे, कारण के अहीं हमणा ज अद्धासमयो पुद्‌गलोथी अनन्तगुणा कह्या छे, अने ते प्रत्येक द्रव्य छे, माटे द्रव्यना विचारमा ते पण ग्रहण करया, अने तेमा सर्व जीवद्रव्य, सर्व पुद्‌गल द्रव्य, धर्मास्तिकाय, अधर्मा

दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्नि वि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा, ४ धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए य एएसि णं दोन्नि वि तुल्ला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, अद्धासमए दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणे, आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ॥ २१ दारं ॥

३ अल्पबहुत्वपद.

२२ अस्तिकायद्वार

अने प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे द्रव्यार्थरूपे परस्पर तुल्य छे अने सौथी थोडा छे. अने तेथी धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बन्ने प्रदेशरूपे तुल्य छे अने असंख्यातगुण छे. तेथी जीवास्तिकाय द्रव्यरूपे अनन्तगुण छे अने तेथी प्रदेशरूपे ते असंख्यातगुण छे, तेथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यरूपे अनन्तगुणा छे अने तेथी ते प्रदेशरूपे असंख्यातगुणा छे. तेथी अद्धासमय द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे, अने तेथी आकाशास्तिकाय प्रदेशरूपे अनन्तगुण छे.

अनन्तगुणा छे, केमके अनन्त जीव द्रव्यो छे. ते ज जीवास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे, केमके दरेक जीवने असंख्याता प्रदेशो होय छे. प्रदेशार्थरूपे जीवास्तिकायथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे अनन्तगुणा छे. कारण के जीवना एक एक प्रदेशे अनन्ता ज्ञानावरणीयादि कर्म पुद्गलस्कन्धो लागेला छे. तेथी पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. तेनो विचार पूर्वनी पेठे करवो. प्रदेशार्थरूपे ते पुद्गलास्तिकायथी अद्धासमयो द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे. अहीं पण पूर्वनी पेठे विचार करवो. तेथी आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्त गुण छे केमके तेनो सर्व दिशाओमां अन्त नथी. अने अद्धासमय मात्र मनुष्यक्षेत्रमां होय छे. एम अस्तिकायद्वार समाप्त थयुं.

ट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवे पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे। अद्धासमये न पुच्छिज्जइ, पएसाभावा ॥

५७ एएसि णं भंते! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाणं

बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा पुद्गलास्तिकाय, द्रव्यरूपे छे अने ते प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे. अद्धासमय संबंधे प्रश्न थतो नथी, कारण के तेने प्रदेशो नथी.

५७. हे भगवन्! ए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयोमा द्रव्यार्थ

(प्र०)—काळ द्रव्यरूपे होवामा शो नियम छे? जो ते द्रव्य छे तो तेना प्रदेशो पण होवा जोइए. जेम अनन्त परमाणुओनो समुदाय स्कंध कहेवाय छे अने ते द्रव्य छे अने तेना अवयवो ए प्रदेशो छे तेम अहीं पण सकळ काळ द्रव्य छे अने तेना अवयवरूप समयो प्रदेश छे" (उ०)-आ शंका अयुक्त छे, कारण के दृष्टान्त अने दार्ष्टान्तिक-(साध्य)नु समानपणु नथी परमाणुओनो समुदाय त्यारे ज स्कंध कही शकाय के ज्यारे तेओ परस्पर सापेक्षरूपे परिणमे; परस्पर निरपेक्ष केवळ परमाणुओनो समूह स्कन्ध न कहेवाय, अने अद्धा समयो तो परस्पर निरपेक्ष ज छे, कारण के वर्तमान समय विद्यमान होय छे त्यारे अतीत अने अनागत समयो नथी होता, तेथी तेओनो स्कन्धरूप परिणाम थतो नथी. स्कन्धना अभावथी अद्धासमयोना प्रदेशो नथी, पण जुदा जुदा द्रव्यो छे

५७ हवे धर्मास्तिकायादि बधा द्रव्योनु एक साथे द्रव्यार्थ अने प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व कहे छे—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे द्रव्यरूपे तुल्य छे अने सौथी थोडा छे कारण के प्रत्येक एक एक द्रव्य छे तेथी धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बन्ने प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, अने स्वस्थानमी अपेक्षाए परस्पर तुल्य छे तेथी जीवास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे

गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे । एयस्स णं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणे । एयस्स णं भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे । एयस्स णं भंते ! पोग्गलत्थिकायस्स दव्वट्ठपएस-

---

असंख्यातगुण छे. हे भगवन् ! ए आकाशास्तिकायमां द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! द्रव्यरूपे आकाशास्तिकाय एक छे अने सौथी अल्प छे, अने ते प्रदेशरूपे अनन्तगुण छे. हे भगवन् ! ए जीवास्तिकायमां द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवास्तिकाय द्रव्यरूपे छे अने ते प्रदेशरूपे असंख्यातगुण छे. हे भगवन् ! ए पुद्‌गलास्तिकायमां द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प,

---

छे माटे अयुक्त छे. कारण के अनन्तप्रदेशिक स्कंधो थोडा छे अने परमाणु वगेरे अतिशय घणा छे. आ संबंधे सूत्र कहेवामां आवशे के–"सौथी थोडा अनन्तप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यरूपे छे, तेथी परमाणुपुद्‌गल द्रव्यरूपे अनन्तगुणा छे, तेथी संख्यात प्रदेशिक स्कंधो द्रव्यरूपे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो द्रव्यरूपे असंख्यातगुणा छे." माटे ज्यारे सर्व पुद्‌गलास्तिकायनो प्रदेशरूपे विचार करीए त्यारे अनन्त प्रदेशिक स्कंधो घणा थोडा होवाथी, परमाणुओ अति घणा होवाथी अने तेओ जुदा जुदा द्रव्यरूप होवाथी तथा असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो परमाणुनी अपेक्षाए असंख्यातगुणा होवाथी असंख्यातगुणा ज घटे छे, अनन्तगुणा घटता नथी. अद्धासमय संबंधे द्रव्यार्थ अने प्रदेशार्थरूपे प्रश्न थतो नथी, कारण के तेने प्रदेशो नथी.

सट्ठयाए अणंतगुणे, अद्धासमए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ॥

५६ एयस्स णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे धम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे । एयस्स णं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

तेथी अद्धासमयो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे अने तेथी आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे.

५६. हे भगवन् ! ए धर्मास्तिकायमां द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम! सौथी थोडो धर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे एक छे अने ते प्रदेशरूपे असख्यातगुण छे. हे भगवन् ! ए अधर्मास्तिकायमा द्रव्यरूपे अने प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडो अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे एक छे, अने प्रदेशरूपे

---

५६ एम प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व कह्यु, हवे ए प्रत्येक द्रव्योनु द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी अल्प धर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे छे कारण के ते एक छे, अने प्रदेशार्थरूपे असख्यातगुण छे, कारण के तेना प्रदेशो लोकाकाशना प्रदेशो जेटला छे एम अधर्मास्तिकाय सूत्र पण जाणवु आकाशास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे सौथी अल्प छे, कारण के ते एक छे, अने प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे कारण के ते अपरिमित छे जीवास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे सौथी अल्प छे, अने प्रदेशार्थरूपे असख्यातगुण छे कारण के दरेक जीवना प्रदेशो लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण छे पुद्गलास्तिकाय द्रव्यरूपे सौथी अल्प छे, कारण के पुद्गलद्रव्यो घणे य थोडा छे, अने ते पुद्गलास्तिकाय से ते द्रव्य करता प्रदेशार्थरूपे विचारता असंख्यातगुणा छे

(प्र०)—अगतमा अनन्तप्रदेशिक स्कधो घणा छे तो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण केम न संभवे ? (उ०)-आ शका वस्तु तत्त्वना अज्ञानथी

५५. एएसि णं भंते! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाणं पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एए णं दोवि तुल्ला पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा, जीवत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, पोग्गलत्थिकाए पए-

---

५५. हे भगवन्! ए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयोमां प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बन्ने प्रदेशार्थरूपे सरखा छे अने सौथी थोडा छे. तेथी जीवास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनंतगुण छे, तेथी पुद्गलास्तिकाय प्रदेशरूपे अनन्तगुणा छे,

---

५५. हवे तेओनुं प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व कहे छे—धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बन्ने परस्पर प्रदेशार्थरूपे तुल्य छे, कारण के बन्नेना प्रदेशो लोकाकाशना प्रदेशो जेटला छे. माटे बाकीना अस्तिकाय अने अद्धासमयनी अपेक्षाए सौथी थोडा छे. तेथी जीवास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे. कारण के जीवास्तिकायने विशे जीवो अनन्त छे, अने एक एक जीवना प्रदेशो लोकाकाशना प्रदेश परिमाण छे. तेथी पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे. केवी रीते छे? ते कहे छे–अहिं कर्मस्कन्धना प्रदेशो पण सर्व जीवप्रदेशोथी अनन्तगुणा छे. केमके एक एक जीवप्रदेश अनन्तानन्त कर्मपरमाणुओ वडे वींटायेलो छे, तो सकल पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो माटे शुं कहेवुं. माटे जीवास्तिकाय करतां पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे. तेथी पण अद्धासमयो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे, कारण के एक एक पुद्गलास्तिकायना प्रदेशना पूर्वोक्त क्रमथी ते ते द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावविशेषना संबन्धथी अनन्त अतीत समयो अने अनन्त अनागत समयो थाय छे. तेथी आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे, कारण के अलोक चारे तरफ अनन्त छे.

पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, अद्धासमए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे ॥

अनन्तगुणा छे, तेथी अद्धासमय द्रव्यार्थरूपे अनन्तगुण छे.

स्थितियाळो, बे समयनी स्थितियाळो, एम एक परमाणुना एक आकाशप्रदेशमा असंख्याता भावी संयोगो थवाना छे, तेम सर्व आकाशप्रदेशमा पण प्रत्येकना असंख्याता भावी संयोगो, तथा वारंवार ते आकाशप्रदेशोमा परमाणुनी परावृत्ति थवाथी अने काळ अनन्त होवाथी काळथी अनन्त भावी संयोगो थवाना छे, जेम एक परमाणुना थवाना छे तेम सर्व परमाणुओना तथा बधा द्विप्रदेशिकादि स्कन्धोना अनन्त भावी संयोगो थवाना छे तथा भावथी पण आ परमाणु आ काळे एकगुण काळो होय छे, एम एक परमाणुना जुदा जुदा काळे अनन्त संयोगो थवाना छे जेम एक परमाणुना तेम बधा परमाणुओना अने बधा द्विप्रदेशिकादि स्कन्धोना भावथी जुदा जुदा अनन्त भावी संयोगो थवाना छे एम एक परमाणुना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव विशेषना संबंधथी अनन्त भावी समयो केवळज्ञानीए जाणेला छे, जेम एक परमाणुना तेम बधा परमाणुओना तथा बधा द्विप्रदेशिकादि स्कन्धोना जाणवा परन्तु आ बधु परिणामी काळ पदार्थ सिवाय अने परिणामी पुद्गलास्तिकायादि सिवाय घटी शके नहि, माटे आ बधु तात्त्विक समजवु कह्यु छे के-

" संयोगपुरस्कारश्च नाम भाविनि हि युज्यते काले। नहि संयोगपुरस्कारो ह्यसतां केषांचिदुपपन्न " ॥

, भविष्यमा थनारा संयोग भावी काळ होय तोज घटी शके छे परन्तु कोइने मते पण (पुद्गलादि अने काळ) अविद्यमान होय तो भावी संयोग घटी शके नहि " जेम बधा परमाणुओना अने बधा द्विप्रदेशिकादि स्कन्धोना प्रत्येकना द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव विशेषना संबंधथी अनन्त भावी अद्धासमयो थाय छे तेम अतीत समयो पण सिद्ध थाय छे माटे द्रव्यरूपे पुद्गलास्तिकायथी अनन्तगुण अद्धासमय-काळ छे एम द्रव्यार्थरूपे अल्पबहुत्व कह्यु

काए आगासत्थिकाए एए णं तिन्निऽवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा, जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे,

त्रणे द्रव्यार्थरूपे तुल्य छे अने सौथी थोडा छे, तेथी जीवास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे अनंतगुण छे, तेथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे छे-अहीं परमाणु अने द्विप्रदेशिकादि स्कन्धो जुदा जुदा द्रव्य छे, ते सामान्यरूपे त्रण प्रकारे छे-प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत, अने विश्रसापरिणत. तेमां प्रयोगपरिणत (आत्माना प्रयोग-व्यापार वडे ज्ञानावरणादि कर्मरूपे तथा औदारिकादि शरीररूपे परिणमता पुद्गलो) पण जीवोथी अनन्तगुणा छे, कारण के एक एक जीव ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीयादि प्रत्येक कर्मना अनन्त पुद्गलस्कन्धो वडे व्याप्त छे, तो पछी बीजा पुद्गलो संबंधे शुं कहेवुं? ते प्रयोगपरिणत पुद्गलोथी मिश्रपरिणत (प्रयोग अने विस्रसा-स्वभावथी परिणमेला) पुद्गलद्रव्यो अनन्तगुणा छे, तेथी विस्रसापरिणत-स्वभावथी परिणमेला पुद्गलद्रव्यो अनन्तगुणा छे. भगवतीसूत्रमां कह्युं छे के "सौथी थोडा पुद्गलो प्रयोगपरिणत छे, तेथी मिश्रपरिणत अनन्तगुणा छे अने तेथी विस्रसापरिणत अनन्तगुणा छे." माटे जीवास्तिकायथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यस्वरूपे अनन्तगुणा छे. तेथी अद्धासमय-काल पण द्रव्यार्थपणे अनन्तगुण छे. केवी रीते छे ते बतावे छे-अहीं एकज परमाणु भविष्य कालमां द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावत् दसप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कंधोनी अंदर परिणत थवाने लीधे तेना जुदा जुदा काळे थवाना अनन्त भावी संयोगो केवलज्ञानीए जाणेला छे, जेम एक परमाणुना तेम बधा परमाणुओना तथा प्रत्येक द्विप्रदेशिकादि स्कंधोना भिन्न भिन्न काळे थवाना भावी अनन्त संयोगो जाणेला छे. ते बधायनो परिणाम [1]मनुष्यक्षेत्रमां (?) (आ लोकमां) संभवे छे. तथा क्षेत्रथी पण आ परमाणु आ आकाशप्रदेशमां एक समयनी

१ टीकाकारे मनुष्यक्षेत्रना अन्तवर्ती आ सांयोगिक परिणामो संभवे छे एम कह्युं छे ते शा आशयथी कह्युं छे तेनो ख्याल आवी शकतो नथी, पण आ बधा पौद्गलिक परिणामो तो चौद रज्जुप्रमाण लोकमा थाय छे एम स्पष्ट जणाय छे. कदाच सूर्यादिना गमन वडे उपलब्ध व्यावहारिक काळ मनुष्यलोकमां होय छे, ते आशयथी कह्युं होय एम मानीए तो पण वर्तनारूप काल तो चौद रज्जुप्रमाण लोकमा छे.

कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया, णोभवसिद्धियाणोअभवसिद्धिया अणंतगुणा, भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ २१ दार ॥

५४. एएसि णं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थि-

के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो अभवसिद्धिक छे, तेथी नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक जीवो अनंतगुणा छे, तेथी भवसिद्धिक जीवो अनंतगुणा छे.

२२ अस्तिकायद्वार.

५४. हे भगवन् ! ए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयोमां द्रव्यार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए

सिद्धिक जीवो तेटला छे" तेथी नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक अनंतगुणा छे कारण के बन्नेना प्रतिषेधवाळा सिद्धो छे अने तेओ अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) युक्तानंतपरिमाणवाळा छे माटे अनंतगुणा छे तेथी पण भवसिद्धिको अनन्तगुणा छे, कारण के भव्य एक निगोदना अनन्तमा भाग जेटला सिद्धो छे, अने भव्य जीवराशिनी निगोदो असंख्याती छे भवसिद्धिकद्वार समाप्त थयुं

५४ हवे अस्तिकायद्वार कहे छे-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे 'द्रव्यार्थतया'-द्रव्यस्वरूपे तुल्य-समान छे, कारण के दरेक एक एक द्रव्यरूप छे, माटे सौथी थोडा छे तेथी जीवास्तिकाय द्रव्यरूपे अनन्तगुणा छे कारण के प्रत्येक जीवो द्रव्य छे, अने तेओ जीवास्तिकायने विषे अनंता छे तेथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यरूपे अनंतगुणा छे केवी रीते छे ? ए प्रश्ननो उत्तर आ प्रमाणे

५२. एएसि णं भंते ! जीवाणं सन्नीणं असन्नीणं नोसन्नीनोअसन्नीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सन्नी, नोसन्नीनोअसन्नी अणंतगुणा, असन्नी अणंतगुणा ॥ २० दारं ॥

५३. एएसि णं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धियानोअभवसिद्धियाण य कयरे

२० संज्ञीद्वार.

५२. हे भगवन् ! ए संज्ञी जीवो, असंज्ञी जीवो अने नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा संज्ञी जीवो छे, तेथी नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी जीवो अनंतगुणा छे अने तेथी असंज्ञी जीवो अनंतगुणा छे.

२१ भवसिद्धिकद्वार.

५३. हे भगवन् ! ए भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक अने नोभवसिद्धिक–नोअभवसिद्धिक जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य

असंख्यातगुणा छे.

५२. सूक्ष्मद्वार कह्युं. हवे संज्ञीद्वार कहे छे–सौथी थोडा संज्ञी जीवो छे, कारण के मनवाळा जीवो ज संज्ञी होय छे, तेथी नोसंज्ञी–नोअसंज्ञी जीवो अनन्तगुणा छे, कारण के बन्ने प्रकारना प्रतिषेधवाळा सिद्धो छे अने ते संज्ञीथी अनन्तगुणा छे. तेथी असंज्ञी अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिक जीवो सिद्धोथी अनन्तगुणा छे.

५३. संज्ञीद्वार कह्युं, हवे भवसिद्धिक द्वार कहे छे—सौथी थोडा अभवसिद्धिक—अभव्यो छे, कारण के तेओ जघन्य युक्तानंत परिमाणवाळा छे. अनुयोगद्वारमां कह्युं छे के—"उत्कृष्ट परीत्तानंतमां एक रूप नांखीए एटले जघन्य युक्त अनंत थाय छे. अने अभव-

बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तानोअपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा अणतगुणा, पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। १८ दार॥

५१ एएसि णं भंते! जीवाणं सुहुमाण बायराणं नोसुहुमनोबायराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमानोबायरा, बायरा अणंतगुणा, सुहुमा असंखेज्जगुणा। १९ दार॥

हे गौतम! सौथी थोडा जीवो नोपर्याप्ता-नोअपर्याप्ता छे, तेथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा छे अने तेथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे.

१९ सूक्ष्मद्वार.

५१. हे भगवन्! ए सूक्ष्म, बादर अने नोसूक्ष्म-नोबादर जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा जीवो नोसूक्ष्म-नोबादर छे, तेथी बादर अनंतगुणा छे, तेथी सूक्ष्मो असंख्यातगुणा छे.

ते अपर्याप्ताथी थाव थोडा छे, तेथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा छे, कारण के साधारण वनस्पतिकायिक सिद्धोथी अनन्तगुणा छे अने ते सर्वदा अपर्याप्तपणे प्राप्त थाय छे तेथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे, अहीं सौथी घणा जीवो सूक्ष्म छे अने सूक्ष्म जीवो हमेशां अपर्याप्ताथी पर्याप्ता संख्यातगुणा होय छे माटे संख्यातगुणा कहेला छे

५१ पर्याप्तद्वार समाप्त थयु, हवे सूक्ष्मद्वार कहे छे—सौथी थोडा जीवो नोसूक्ष्म-नोबादर एटले सिद्धो छे, कारण के तेओ सूक्ष्म जीवराशि अने बादर जीवराशिना अनन्तमा भागे छे तेथी बादर जीवो अनन्तगुणा छे, कारण के बादर निगोदना जीवो सिद्धोथी पण अनन्तगुणा छे तेथी सूक्ष्म जीवो असंख्यातगुणा छे, कारण के बादर निगोदो करतां सूक्ष्म निगोदो

बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परीत्ता, नोपरीत्तानोअपरीत्ता अणंतगुणा, अपरीत्ता अणंतगुणा । १७ दारं ॥ ४९ ॥

५०. एएसि णं भंते ! जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्तानोअपज्जत्ताण य क़यरे कयरेहिंतो अप्पा वा

हे गौतम ! सौथी थोडा परीत्त जीवो छे. नोपरीत्त–नोअपरीत्त जीवो अनंतगुणा छे अने तेथी अपरीत्त जीवो अनन्तगुणा छे.

१८ पर्याप्तद्वार.

५० हे भगवन् ! ए पर्याप्ता, अपर्याप्ता अने नोपर्याप्ता–नोअपर्याप्ता जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ?

४९. भाषकद्वार समाप्त थयुं, हवे परित्तद्वार कहे छे–अहीं परीत्त बे प्रकारना छे–[1]भवपरीत्त अने कायपरीत्त. जेओने कंइक न्यून अर्धं पुद्गलपरावर्त संसार बाकी छे ते भवपरीत्त–शुक्लपाक्षिक अने कायपरीत्त–प्रत्येक शरीरी. तेमां बन्ने प्रकारना परीत्त जीवो सौथी थोडा छे, केमके शुक्लपाक्षिक अने प्रत्येकशरीरी जीवो बाकीना जीवोनी अपेक्षाए घणाज थोडा छे. तेथी नोपरीत्त–नोअपरीत्त जीवो अनन्तगुणा छे, कारणके बन्ने प्रकारना निषेधवाळा सिद्धो छे अने ते अनन्त छे. तेथी अपरीत्त जीवो अनन्तगुणा छे. कारणके कृष्णपाक्षिक अने साधारण वनस्पतिकायिको सिद्धोथी अनन्तगुणा छे.

५०. हवे पर्याप्तद्वार कहे छे—सौथी थोडा नोपर्याप्त–नोअपर्याप्त जीवो छे, कारण के बन्ने प्रकारना निषेधवाळा सिद्धो छे अने

१ अहीं परीत्तशब्द अल्पार्थक छे, तेथी भवपरीत्त–जेओने अल्प–कंइक न्यून अर्धं पुद्गलपरावर्तरूप भव–संसार बाकी छे ते शुक्लपाक्षिको अने जेने अल्प काय–शरीर छे एटले एक शरीर छे ते कायपरीत्त–प्रत्येकशरीरी जाणवा.

विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा, आहारगा असंखेज्जगुणा । १५ दार ॥ ४७ ॥

४८ एएसि णं भंते ! जीवाणं भासगाणं अभासगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा, अभासगा अणंतगुणा । १६ दारं ॥ ४८ ॥

४९. एएसि णं भंते ! जीवाणं परीत्ताणं अपरीत्ताणं नोपरीत्तनोअपरीत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा

थोडा जीवो अनाहारक छे, अने तेथी आहारक असंख्यातगुणा छे.

१६ भाषकद्वार.

४८. हे भगवन् ! ए भाषक जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा भाषक जीवो छे अने अभाषक जीवो अने अनतगुणा छे.

१७ परीत्तद्वार

४९. हे भगवन् ! ए परीत्त, अपरीत्त अने नोपरीत्त-नोअपरीत्त जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ?

भाग जेटला छे तेथी आहारक जीवो असंख्यातगुणा छे, पण अनन्तगुणा नथी

४८ आहारकद्वार समाप्त थयु, हवे भाषकद्वार कहे छे-सौथी थोडा भाषक-भाषालब्धिसपन्न छे, कारण के बेइन्द्रियादि जीवो भाषक-बोलवानी शक्तिवाळा छे

तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा। १४ दारं॥

४७. एएसि णं भंते! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा

हे गौतम! सौथी थोडा जीवो अनाकारोपयोगवाळा छे, तेथी साकारोपयोगवाळा संख्यातगुणा छे.

१५ आहारकद्वार.

४७. हे भगवन्! ए आहारक अने अनाहारक जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी

---

४६. संयत द्वार समाप्त थयुं, हवे उपयोगद्वार कहे छे—अहीं अनाकार-दर्शनोपयोग काळ सौथी थोडो छे, अने तेथी साकारोपयोग-ज्ञानोपयोगकाळ संख्यातगुण छे माटे जीवो पण अनाकारोपयोगवाळा सौथी थोडा छे, कारण के प्रश्न समये समये थोडा ज होय छे, तेथी साकारोपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के साकारोपयोगनो काल लांबो होवाथी तेओ प्रश्नसमये घणा होय छे.

४७. उपयोगद्वार कायुं, हवे आहारकद्वार कहे छे-सौथी थोडा अनाहारक जीवो छे, कारण के विग्रहगतिने प्राप्त थयेला वगेरे जीवोज अनाहारक होय छे. कह्युं छे के-" विग्गहगइमावन्ना केवलिणो समुहया अजोगी य। सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारगा जीवा"॥ " विग्रह गतिने प्राप्त थयेला समुद्घात प्राप्त केवलज्ञानी, अयोगी केवली अने सिद्धो अनाहारक होय छे अने बाकी बधा आहारक होय छे" तेथी आहारक जीवो असंख्यातगुणा छे,

(प्र०)-वनस्पतिकायिको सिद्धोथी अनन्तगुणा छे अने तेओ आहारक छे तो (अनाहारकथी) अनन्तगुणा केम न होय? (उ०)-आ शंका वस्तुतत्वना अज्ञानथी थयेली होवाथी अयुक्त छे. अहीं सूक्ष्म निगोदो बधा मळीने पण असंख्याता छे, अने तेमां अन्तमुहूर्तना समय प्रमाण सूक्ष्म निगोदो हमेशां विग्रहगतिमां होय छे, माटे अनाहारक पण घणा छे अने ते सर्वे जीवराशिना असंख्यातमा

४५. एएसि णं भंते ! जीवाणं संजताणं असंजताणं संजयासंजयाणं नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संजया, संजया-संजता असंखेज्जगुणा, नोसंयता-नोअसंजया-नोसंयतासंयता अणंतगुणा, असंजया अणंतगुणा ॥ १३ दारं ॥

४६. एएसि णं भंते ! जीवाणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा

१३ संयतद्वार

४५. हे भगवन् ! ए संयत, असंयत, संयतासंयत, अने नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो संयत छे, तेथी संयतासंयत असंख्यातगुणा छे, तेथी नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत अनंतगुणा छे अने तेथी असंयत अनन्तगुणा छे.

१४. उपयोगद्वार

४६. हे भगवन् ! ए साकारोपयोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळा जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ?

४५. दर्शनद्वार कह्युं, हवे संयतद्वार कहे छे-सौथी थोडा संयत-सर्वविरतिवाळा जीवो छे, कारण के तेओ उत्कृष्ट पदमां हजार कोटि पृथक्त्व प्रमाण होय छे, जेमके "कोडिसहस्सपुहुत्तं मणुयलोए संजयाणं" मनुष्य लोकमां संयतो कोटिसहस्र पृथक्त्वप्रमाण होय छे-एम [illegible] छे. तेथी संयतासंयत-देशविरतिवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के असंख्याता तिर्यंच पंचेन्द्रियोने देशविरतिनो संभव छे. तेथी नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत अनन्तगुणा छे, कारण के प्रथमना प्रतिषेधयुक्त सिद्धो छे अने ते अनन्त छे. तेथी असंयत-विरति रहित जीवो अनन्ता छे, कारण के वनस्पतिकायिक जीवो पण अनन्ता छे

अणंतगुणा ॥ ११ दारं ॥

४४. एएसि णं भंते ! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी, चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा, अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥ १२ दारं ॥

नी असंख्यातगुणा छे, तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा छे, तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अनंतगुणा छे अने परस्पर तुल्य छे.

१२ दर्शनद्वार.

४४. हे भगवन् ! ए चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी अने केवलदर्शनी जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो अवधिदर्शनी छे, तेथी चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा छे, तेथी केवलदर्शनी अनंतगुणा छे, तेथी अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा छे.

अने तेओ मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी छे. तथा स्वस्थाने बन्ने परस्पर तुल्य छे.

४४. ज्ञानद्वार समाप्त थयुं, हवे दर्शनद्वार कहे छे-सौथी थोडा अवधिदर्शनी छे, कारण के देवो, नारको, तथा केटलाक संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योने अवधिदर्शन होय छे. तेथी चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा छे, कारण के बधा देव, नारक, गर्भज मनुष्य, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने चउरिन्द्रियने चक्षुदर्शन होय छे. तेथी केवलदर्शनी अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्ता छे. तेथी अचक्षुदर्शनी अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकाय सिद्धथी पण अनन्तगुण छे.

४३.एएसि णं भंते! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयनाणीणं ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगणाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वथोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगनाणी असंखेज्जगुणा, केवलनाणी अनंतगुणा, मइअन्नाणी सुयअन्नाणी य दोवि तुल्ला

सौथी थोडा जीवो विभंगज्ञानी छे, तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अनन्तगुणा छे अने परस्पर तुल्य छे.

४३. हे भगवन्! ए आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानीमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा छे, तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे अने बन्ने परस्पर तुल्य छे, तेथी विभंगज्ञा-

कारण के वनस्पतिने पण मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान होय छे, अने तेओ अनन्त छे तथा स्वस्थाननी अपेक्षाए परस्पर तुल्य छे. कारण के "ज्यां मतिअज्ञान छे त्यां श्रुतअज्ञान छे, अने ज्यां श्रुतअज्ञान छे त्यां मतिअज्ञान छे," एवुं शास्त्रनुं वचन छे

४३ हवे बन्ने ज्ञानी अने अज्ञानीनुं सामुदायिक अल्पबहुत्व कहे छे-सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी असंख्यातगुणा अवधिज्ञानी छे, तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक अने परस्पर तुल्य छे अहीं पूर्वे कह्या प्रमाणे युक्तिनो विचार करवो तेथी असंख्यातगुणा विभंगज्ञानी छे, कारण के देवगति अने नारकगतिमां सम्यग्दृष्टि करतां मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणा कह्या छे अने देव अने नारको सम्यग्दृष्टि अवधिज्ञानी अने मिथ्यादृष्टि विभंगज्ञानी होय छे, माटे असंख्यातगुणा छे तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्त छे तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिको सिद्धोथी पण अनन्तगुण छे

णाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणंतगुणा ।

४२. एएसि णं भंते ! जीवाणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगणाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी, मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणा ।

बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा छे, तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे अने बन्ने परस्पर तुल्य छे, तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा छे.

४२. हे भगवन् ! ए मतिज्ञानी श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानीमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम !

वधिज्ञाननो संभव छे. तेथी अभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे, कारण के संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो जे अवधिज्ञान रहित छे तेओमां पण केटलाकने आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान होय छे, अने स्वस्थाननी अपेक्षाए बन्ने परस्पर तुल्य छे. कारण के "ज्यां मतिज्ञान छे त्यां श्रुतज्ञान छे अने ज्यां श्रुतज्ञान छे त्यां मतिज्ञान छे" एवुं शास्त्रनुं वचन छे. तेथी केवळज्ञानी अनन्तगुणा छे, केमके सिद्धो अनन्त छे.

४२. ज्ञानीओनुं अल्पबहुत्व कह्युं, हवे ज्ञानीना प्रतिपक्षरूप अज्ञानीओनुं अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी थोडा विभंगज्ञानी छे, कारण के केटला एक नारक, देव, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योने विभंग ज्ञान होय छे. तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अनन्तगुणा छे,

४० एएसि णं भंते ! जीवाणं सम्मद्दिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं सम्मामिच्छादिट्ठीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छादिट्ठी, सम्मदिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ ९ दार ॥

४१ एएसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणीणं ओहिणाणीणं मणपज्जवणाणीणं केवल-

---

९ सम्यक्त्वद्वार.

४० हे भगवन् ! सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि–मिश्रदृष्टि ए जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो मिश्रदृष्टिवाळा छे, तेथी सम्यग्दृष्टि अनन्तगुणा छे अने तेथी मिथ्यादृष्टि जीवो अनन्तगुणा छे.

१० ज्ञानद्वार.

४१. हे भगवन् ! ए आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी अने केवळज्ञानीमां कोण कोनाथी अल्प,

---

४० लेश्याद्वार समाप्त थयु, हवे सम्यक्त्वद्वार कहे छे—सौथी थोडा मिश्रदृष्टि छे, कारण के मिश्रदृष्टिना परिणामनो काळ अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होवाथी घणो थोडो छे, तेथी तेओना प्रश्नसमये थोडा ज जीवो होय छे तेथी सम्यग्दृष्टि अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्त छे तेथी पण मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिको सिद्धोथी पण अनन्तगुणा छे अने तेओ मिथ्यादृष्टि छे

४१ सम्यक्त्व द्वार कह्यु, हवे ज्ञानद्वार कहे छे—सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी छे, कारण के आमर्षौषध्यादि ऋद्धि प्राप्त संयतोने ज मनःपर्यवज्ञाननो संभव छे तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा छे, कारण के नारक, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य अने देवोने पण अ

तगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, सलेस्सा विसेसाहिया ॥ ८ दारं ॥

कापोतलेश्यावाळा अनंतगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेपाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेपाधिक छे अने तेथी सामान्य
लेश्यावाळा विशेपाधिक छे.

गुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा गर्भज तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यंच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे.' अने महादंडकमां तिर्यंच
स्त्रीथी व्यन्तर अने ज्योतिषिको संख्यातगुणा कहेशे, तेथी जोके भवनवासी करतां पण ज्योतिषिको असंख्यातगुणा छे तो पण पद्मलेश्यावाळाथी
तो तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा ज होय छे. अहीं आ तात्पर्य छे—जो केवळ पद्मलेश्यावाळा देवोनोज अपेक्षाए तेजोलेश्यावाळा देवोनो ज
विचार करवामां आवे तो असंख्यातगुणा थाय, परन्तु अहीं पद्मलेश्यावाळामां तिर्यंचो मिश्रित होवाथी पद्मलेश्यावाळा करतां तिर्यंच
मिश्रित तेजोलेश्यावाळानो विचार कराय छे अने पद्मलेश्यावाळा पण तिर्यंचो घणा छे, तेथी संख्यातगुणा ज थाय छे, पण असंख्यात-
गुणा थता नथी.

तेथी लेश्यारहित जीवो अनन्तगुणा छे. कारण के सिद्धो अनन्त छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे, कारण
के वनस्पतिकायिकने पण कापोतलेश्यानो संभव छे, अने वनस्पतिकायिको सिद्धोथी पण अनन्तगुणा छे. तेथी नीललेश्यावाळा विशे-
पाधिक छे, केमके कापोतलेश्यावाळा करतां घणा जीवोने नीललेश्यानो संभव छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेपाधिक छे, कारण के नील-
लेश्यावाळा करतां पण घणा जीवोने कृष्ण लेश्या होय छे. तेथी सामान्य लेश्यासहित जीवो विशेपाधिक छे, कारण के नीललेश्यावाळा
वगेरेनो पण तेमां समावेश थाय छे.

सुक्कलेस्साणं अलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेस्सा अणं-

लेश्यावाळा, अने लेश्यारहित ए जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो शुक्ललेश्यावाळा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी लेश्यारहित अनंतगुणा छे, तेथी

वैमानिक देवोमा अने केटलाएक गर्भज कर्मभूमिना संख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्योमा तथा संख्याता वर्षना आयुषवाळा केटलाक तिर्यंच स्त्रीपुरुषोमां शुक्ललेश्यानो संभव छे तेथी पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, केमके पद्मलेश्या सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पवासी देवोमा तथा पुष्कळ गर्भज कर्मभूमिना संख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्य स्त्री-पुरुषोमा तेमज संख्याता वर्षना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच स्त्री-पुरुषोमा होय छे सनत्कुमारादि देवो वगेरे बधा मळीने लान्तकादि देवो वगेरेथी संख्यातगुणा होय छे, माटे शुक्ललेश्यावाळाथी पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा जाणवा तेथी तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा होय छे, कारण के सौधर्म, ईशान, ज्योतिषिक देवो केटलाएक भवनपति, व्यन्तर, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य अने बादरपर्याप्त एकेन्द्रियोने तेजोलेश्या होय छे

(प्र०)—पद्मलेश्यावाळा करता तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा केम न होय ? कारण के ज्योतिष्को भवनवासीथी पण असंख्यातगुणा छे, तो पछी सनत्कुमारादि देवोथी होय तेमा शु कहेवु ? अने ज्योतिष्को बधा तेजोलेश्यावाळा छे, तेमज सौधर्म अने ईशान कल्पना देवो पण तेजोलेश्यावाळा छे ते माटे असंख्यातगुणा थाय, पण संख्यातगुणा न थाय (उ०)—वस्तुतत्त्वना अज्ञानथी तमारी शंका थयेली छे तेथी अयुक्त छे, कारण के लेश्यापदमा गर्भज तिर्यंचो अने संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचोना कृष्णलेश्यादि संबंधी अल्पबहुत्वमा सूत्र कहेवामा आवशे के—"सौथी थोडा गर्भज तिर्यंचो शुक्ललेश्यावाळा छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळी तिर्यंच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा गर्भज तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यात

अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोहकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया । ७ दारं ॥

३९. एएसि णं भंते ! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेस्साणं तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं

विशेपाधिक छे, तेथी मायाकपायी विशेपाधिक छे, तेथी लोभकपायी विशेपाधिक छे, अने तेथी सकपायी विशेपाधिक छे.

८ लेश्याद्वार.

३९. हे भगवन् ! लेश्यावाळा, कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा, तेजोलेश्यावाळा, पद्मलेश्यावाळा, शुक्ल-

---

होय छे. तेथी क्रोधकपायना परिणामवाळा विशेपाधिक छे, तेथी मायाकपायना परिणामवाळा विशेपाधिक छे, तेथी लोभकपायना परिणामवाळा विशेपाधिक छे. कारण के मानकपायना परिणाम काळनी अपेक्षाए क्रोधादि कपायना परिणामनो काळ उत्तरोत्तर विशेपाधिक होवाथी क्रोधादि कपायवाळा उत्तरोत्तर विशेपाधिक होय छे. लोभकपायवाळाथी सामान्य सकपायी–कपायना परिणामवाळा विशेपाधिक छे. कारण के मानादि कपायोनो पण तेमां समावेश थाय छे. 'सकपायिणः' सकपायी शब्दनी अहीं आ व्युत्पत्ति छे–कपायशब्दथी कपायोदय ग्रहण करवो, केमके लोकमां तेवो व्यवहार थाय छे–' आ सकपाय—कपायना उदयवाळो छे.' 'सह कपायेण' कपायोदय सहित होय ते सकपायोदय कहेवाय. एटले विपाकावस्थाने प्राप्त थयेला अने पोतानो उदयने प्रदर्शित करता कर्मपरमाणुओ जाणवा. कारण के तेवा प्रकारना कर्मपरमाणुओ होय त्यारे जीवने अवश्य कपायोदयनो संभव छे, 'सकपाया विद्यन्ते येषां ते सकपायिणः' कपायोदयवाळा कर्मपरमाणुओ जेओने छे ते सकपायी कहेवाय छे.

३९. कपायद्वार समाप्त थयुं, हवे लेश्याद्वार कहे छे–सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा छे, कारण के लांतकथी मांडी अनुत्तर सुधीना

यगा संखेज्जगुणा, अवेयगा अणंतगुणा, नपुंसकवेयगा अणंतगुणा, सवेयगा विसेसाहिया ॥ ६ दारं ॥

२८. एएसि णं भंते ! सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोहकसाईणं अकसाईण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई, माणकसाई

छे, तेथी अनतगुणा नपुंसकवेदी छे, अने तेथी सवेदी जीवो विशेषाधिक छे.

७ कषायद्वार

२८. हे भगवन् ! सकषायी, क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी अने अकषायीमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो अकषायी छे, तेथी मानकषायी अनन्तगुणा छे, तेथी क्रोधकषायी

पंचयोनिक स्त्रीओ त्रण गणी अने त्रण अधिक छे, मनुष्योथी मानुषी स्त्रीओ सत्यावीशगणी अने सत्यावीश अधिक छे अने देवोथी देवीओ बत्रीश गणी अने बत्रीश अधिक[1] छे " तेमज वृद्धाचार्योए पण कह्यु छे–तिर्यंच स्त्रीओ त्रण गणी अने त्रण अधिक, मनुष्य स्त्रीओ सत्यावीश अधिक सत्यावीशगणी तथा देवोमा देवीओ बत्रीश अधिक बत्रीश गणी रागद्वेषने जितनार जिनोए कहेली छे " तेथी अवेदक–वेदरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्त छे तेथी नपुंसकवेदवाळा अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धोथी वनस्पतिकायिक अनन्तगुणा छे तेथी सामान्य वेदसहित विशेषाधिक छे, कारण के तेमा स्त्रीवेदवाळा अने पुरुषवेदवाळानो समावेश थाय छे

२८ वेदद्वार समाप्त थयु, हवे कषायद्वार कहे छे–सौथी थोडा अकषायी–कषायरहित छे, कारण के सिद्धो अने केटलाक मनुष्यो अकषायी होय छे तेथी मानकषायी–मानकषायना परिणामवाळा अनन्तगुणा छे, कारण के छ य जीवनिकायमा मानकषायनो परिणाम

१ जुओ जीवाभिगम सूत्र आ स प० ८७ सू. ६४

अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणयोगी, वययोगी असंखेज्जगुणा, अयोगी अणंतगुणा, काययोगी अणंतगुणा, सयोगी विसेसाहिया । ५ दारं ॥

३७. एएसिणं भन्ते ! जीवाणं सवेयगाणं इत्थीवेयगाणं पुरिसवेयगाणं नपुंसकवेयगाणं अवेयगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेयगा, इत्थीवे-

---

धिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो मनोयोगी छे, तेथी वचनयोगी असंख्यातगुणा छे, तेथी अयोगी अनंतगुणा छे, तेथी काययोगी अनंतगुणा छे अने तेथी सयोगी विशेषाधिक छे.

६ वेदद्वार.

३७. हे भगवन् ! ए सवेदी–वेदसहित, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी अने अवेदी–वेदरहित जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पुरुषवेदी छे, तेथी संख्यातगुणा स्त्रीवेदी छे, तेथी अनन्तगुणा अवेदी

गुणा छे. तेथी अयोगी अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनंता छे. तेथी काययोगी अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिक जीवो अनन्त छे. जो के अनन्त निगोद जीवोनुं एक शरीर छे तो पण ते एक शरीर वडे बधाय पण आहारादि ग्रहण करे छे माटे बधा जीवो पण काययोगी होवाथी तेना अनन्तगुणत्वमां अडचण नथी. तेथी सामान्य सयोगी विशेषाधिक छे, कारण के वचनयोगवाळा अने काययोगवाळा बेइन्द्रियादिनो तेमां समावेश थाय छे.

३७. योगद्वार समाप्त थयुं, हवे वेदद्वार कहे छे—सौथी थोडा पुरुषवेदवाळा छे, कारण के संज्ञी जीवोमांज तिर्यंच, मनुष्य अने देवोने पुरुषवेद होय छे. तेथी स्त्रीवेदवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे के—"तिर्यंचयोनिक पुरुषोथी ति-

तगुणा, बायरपज्जत्तया विसेसाहिया, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरअपज्जत्तया विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमअपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया॥४दारं॥

३६. एएसि णं भन्ते ! जीवाणं सयोगीणं मणजोगीणं वइजोगीणं कायजोगीणं अयोगीण य कयरे कयरेहिंतो

तेथी बादर पर्याप्त विशेषाधिक छे, २७ तेथी अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, २८ तेथी बादर अपर्याप्त विशेषाधिक छे, २९ तेथी बादर जीवो विशेषाधिक छे, ३० तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, ३१ तेथी सूक्ष्म अपर्याप्त विशेषाधिक छे, ३२ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको संख्यातगुणा छे, ३३ तेथी सूक्ष्म पर्याप्त विशेषाधिक छे, ३४ अने तेथी सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे.

५ योगद्वार.

३६. हे भगवन् ! ए सयोगी, मनोयोगी, वचनयोगी, काययोगी अने अयोगीमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषा-

---

समावेश थाय छे तेथी पर्याप्त के अपर्याप्त विशेषण रहीत सामान्य सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे, कारण के तेओमा अपर्याप्ताओनो पण समावेश थाय छे एम सूक्ष्म बादरनु सामुदायिक पांचमु अल्पबहुत्व कह्यु अने तेम कहेवाथी पहेर सूत्रोनु पण समर्थन कर्यु

३६ कायद्वार कह्यु, हवे योगद्वार कहे छे—सौथी थोडा मनोयोगी छे, कारण के संज्ञी पर्याप्ता ज मनोयोगवाळा होय छे अने ते सौथी थोडा छे तेथी वचनयोगी असंख्यातगुणा छे, कारण के बेइन्द्रियादिक जीवो वचनयोगवाळा छे अने ते संज्ञीथी असंख्यात

खेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणं-

---

विशेपाधिक छे, १७ तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिको विशेपाधिक छे, १८ तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको विशेपाधिक छे, १९ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, २० तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेपाधिक छे, २१ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेपाधिक छे, २२ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेपाधिक छे, २३ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, २४ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे, २५ तेथी पर्याप्ता वादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, २६

उत्पत्ति थाय छे. तेथी सामान्य रीते वादर अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, कारण के अपर्याप्ता वादर तेजस्कायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. तेथी सामान्य वादर जीवो विशेपाधिक छे. कारण के तेमां पर्याप्ताओनो पण समावेश थाय छे. तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे. कारण के वादर निगोद करतां अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे. तेथी सामान्यतः सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, कारण के तेमां अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिनो पण समावेश थाय छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको संख्यातगुणा छे. कारण के अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिकथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको संख्यातगुणा छे, केम के सूक्ष्म जीवोमां सामान्य रीते अपर्याप्ताथी पर्याप्ता संख्यातगुणा होय छे तेथी तेओ सूक्ष्म अपर्याप्ताथी संख्यातगुणा छे. कारण के सूक्ष्म अपर्याप्तानुं विशेपाधिकपणुं संख्यातगुणानो वाध करतुं नथी. तेथी सामान्य सूक्ष्म पर्याप्ता विशेपाधिक छे, कारण के पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिनो पण तेमां

त्तया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असं-

---

गुणा छे, ६ तेथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, ७ तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, ८ तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, ९ तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, १० तेथी अपर्याप्त प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, ११ तेथी अपर्याप्त बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, १२ तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, १३ तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, १४ तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, १५ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, १६ तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको

सूक्ष्मना अपर्याप्ता करता पर्याप्ताओ सामान्यरीते हमेशा संख्यातगुणा होय छे जो के आ बधा बादर पर्याप्ता तेजस्कायिकथी आरंभी पर्याप्त सूक्ष्म निगोद सुधीना सोळ पदार्थो अन्य स्थळे सामान्य रीते असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण कह्या छे तो पण असंख्याताना असंख्याता भेदो होवाथी अहीं आ प्रमाणे असंख्यातगणु, विशेषाधिकपणु के संख्यातगणु कहेलु छे ते विरुद्ध न समजवु पर्याप्त सूक्ष्म निगोदोथी पर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे कारण के बादर एक एक निगोदमा अनन्त जीवो होय छे तेथी सामान्य रीते बादर पर्याप्ताओ विशेषाधिक छे, कारण के तेओमा बादर पर्याप्ता तेजस्कायिकादिनो पण समावेश थाय छे तेथी अपर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के एक एक पर्याप्त बादर निगोदने आश्रयी असंख्याता अपर्याप्ता बादर निगोदोनी

काइयाणं बायरवाउकाइयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं बायरनिगोयाणं बायतसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरतसकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरपुढवीकाइया पज्ज-

अप्कायिको, ११ बादर तेजस्कायिको, १२ बादर वायुकायिको, १३ बादर वनस्पतिकायिको, १४ प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको, १५ बादर निगोदो अने १६ बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! १ सौथी थोडा बादर तेजस्कायिक पर्याप्ता छे, २ तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, ३ तेथी अपर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी पर्याप्ता प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, ५ तेथी पर्याप्ता बादरं निगोदो असंख्यात-

उत्तरोत्तर असंख्यातगुणानुं कथन परस्पर विरुद्ध नथी. तेथी बादर तेजस्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे. तेथी अपर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिक, बादर निगोद, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक अने बादर वायुकायिक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. अपर्याप्ता बादर वायुकायिकथी अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिक असंख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक अने सूक्ष्म वायुकायिक उत्तरोत्तर विशेषाधिक छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिक संख्यातगुणा छे. कारण के सूक्ष्म जीवोमां अपर्याप्ताओ करतां पर्याप्ता सामान्य रीते संख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक अने सूक्ष्म वायुकायिक उत्तरोत्तर विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ घणी मोटी संख्या वडे सर्व लोकमां छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे, कारण के

सुहुमनिगोयाणं बायरनिगोयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरनिगोया पज्जत्तया, बायरनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोया पज्जत्तया सखेज्जगुणा ॥

३५ एएसि णं भंते ? सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सकाइयाणं सुहुमनिगोयाणं बायराण बायरपुढविकाइयाणं बायरआउकाइयाण बायरतेउ-

र्याप्ता असख्यातगुणा अने तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता संख्यातगुणा जाणवा.]

३५. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता १ सूक्ष्म जीवो, २ सूक्ष्म पृथिवीकायिको, ३ सूक्ष्म अप्कायिको, ४ सूक्ष्म तेजस्कायिको, ५ सूक्ष्म वायुकायिको, ६ सूक्ष्म वनस्पतिकायिको, ७ सूक्ष्म निगोदो, ८ बादर जीवो, ९ बादर पृथिवीकायिको, १० बादर

१५. हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकादि, बादर अने बादर पृथिवीकायिकादिनु सामुदायिक पायनु अल्पबहुत्व कहे छे–सौथी थोडा पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे कारण के तेओ आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने केटलाक समय न्यून आवलिकाना समयो घडे गुणता जेटला समयो थाय तेटला छे तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असख्यातगुणा छे, कारण के तेओ एक प्रतरना अगुलना असख्यातमा भागप्रमाण जेटला खडो थाय तेटला छे तेथी पर्याप्ता प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिक, बादर निगोद, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक अने बादर वायुकायिक उत्तरोत्तर असख्यातगुणा छे जो के पणो प्रत्येक प्रतरना अंगुलना असख्यातमा भागप्रमाण जेटला खड थाय तेटला छे तोपण अगुलना असख्यातमा भागना असख्याता भेदो थता होवाथी

अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं बायरतेउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तया, बायरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते सुहुमवाउकाइयाणं बायरवाउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरवाउकाइया पज्जत्तया, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमा तेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ ४ एएसि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं बायरवणस्सइकाइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते !

सूक्ष्म पृथिवीकाय संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २ सूक्ष्म अप्काय, बादर अप्काय, ३ सूक्ष्म तेजस्काय, बादर तेजस्काय, ४ सूक्ष्म वायुकाय बादर वायुकाय, ५ सूक्ष्म वनस्पतिकाय, बादर वनस्पतिकाय, ६ सूक्ष्म निगोद, अने बादर निगोद संबन्धे भिन्न भिन्न सूत्रो जाणी लेवा. बधा स्थळे बादर पर्याप्त पृथिवीकायादिथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा, तेथी सूक्ष्म अप-

---

सर्वलोक व्यापी होवाथी तेओनुं क्षेत्र असंख्यातगुण छे. तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता संख्यातगुण छे, तेओ अपर्याप्ताथी लांबा काळ सुधी रहेता होवाने लीधे हमेशां संख्यातगुणा प्राप्त थाय छे. एम चतुर्थ अल्पबहुत्व कह्युं

२४. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं बायराण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरा पज्जत्तया, बायरअपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमअपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं बायरपुढविकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपुढविकाइया पज्जत्तया, बायरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते! सुहुमआउकाइयाण बायरआउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरेकयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरआउकाइया पज्जत्तया, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया

२४. हे भगवन् ! ए पर्याप्त अने अपर्याप्ता सूक्ष्म अने बादर जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता बादर जीवो छे अने तेथी अपर्याप्ता बादर जीवो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवो असंख्यातगुणा छे अने तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. * * * [एम १ पर्याप्ता बादर पृथिवीकाय सौथी थोडा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकाय असंख्यातगुणा छे, तेथी सूक्ष्म पृथिवीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे अने तेथी पर्याप्ता

२४ हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म बादरादि प्रत्येकनु पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व कहे छे-'एएसि णं भंते ! सुहुमाणं बायराण य पज्जत्तपज्जत्ताणं' इत्यादि सौथी थोडा बादर पर्याप्ता छे, कारण के तेओ परिमित क्षेत्रमां रहे छे तेथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, कारण के एक बादर पर्याप्ताने आश्रयी असंख्याता बादर अपर्याप्ताओ उपजे छे तेथी सूक्ष्म अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, कारण के

गुणा, बायरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बायरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ।

असंख्यातगुणा छे, ९ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, १० तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, ११ तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, १२ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, १३ तेथी पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, १४ तेथी पर्याप्त बादर जीवो विशेषाधिक छे, १५ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, १६ अने तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे. कारण के ते एक एक गोळामां घणा होय छे, तेथी पर्याप्ता बादर वनस्पतिकायो अनन्तगुणा छे. कारण के एक एक बादर निगोदमां अनन्ता जीवो होय छे. तेथी सामान्य बादर पर्याप्ता विशेषाधिक छे, केमके पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के बादर निगोद पर्याप्ताथी सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. तेथी सामान्य सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. एम पर्याप्ताने आश्रयी त्रीजुं अल्पबहुत्व कह्युं.

याणं बायरपज्जत्तयाणं बायरपुढवीकाइयापज्जत्तयाणं बायरआउकाइयापज्जत्तयाणं बायरतेउकाइयापज्जत्तयाणं बायरवाउकाइयापज्जत्तयाणं बायरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाणं बायरनिगोयापज्जत्तयाणं बायरतसकाइयपज्जत्तयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तया, बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्ज-

---

११, बादर तेजस्कायिको, १२ बादर वायुकायिको, १३ बादर वनस्पतिकायिको, १४ प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, १५ बादर निगोदो अने १६ बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! १ सौथी थोडा पर्याप्त बादर तेजस्कायिको छे, २ तेथी पर्याप्त बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, ३ तेथी पर्याप्त प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी पर्याप्त बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, ५ तेथी पर्याप्त बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, ६ तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, ७ तेथी पर्याप्त बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, ८ तेथी पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको

वायुकायिक पर्याप्ता उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे अहिं बादरना पांच सूत्रोमां जे त्रीजुं पर्याप्तसूत्र छे तेनी पेठे विचार करवो पर्याप्त बादर वायुकायिकथी पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे कारण के बादर वायुकायिको असंख्याता प्रतरना प्रदेश राशिप्रमाण छे अने सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्ता असंख्याता लोकाकाशप्रदेशप्रमाण छे, तेथी असंख्यातगुणा छे तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक अने सूक्ष्म वायुकायिक अनुक्रमे उत्तरोत्तर विशेषाधिक छे पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकथी पर्याप्ता

पुढवीकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया अणंतगुणा, बायरा अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया।

३३. एएसि णं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमआउकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयापज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयापज्जत्त-

असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे.

३३. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता १ सूक्ष्म जीवो, २ सूक्ष्म पृथिवीकायिको, ३ सूक्ष्म अप्कायिको, ४ सूक्ष्म तेजस्कायिको, ५ सूक्ष्म वायुकायिको, ६ सूक्ष्म वनस्पतिकायिको, ७ सूक्ष्म निगोदो, ८ बादर जीवो, ९ बादर पृथिवीकायिको, १० बादर अप्कायिको,

नस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे. अपर्याप्त बादर निगोदोथी अपर्याप्त सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे. तेथी सामान्य सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के सूक्ष्म तेजःकायिकादि अपर्याप्ताओनो पण तेमां समावेश थाय छे. एम अपर्याप्ताने आश्रयी बीजुं अल्पबहुत्व कह्युं.

३३. हवे सूक्ष्मादि पर्याप्ताओनुं त्रीजुं अल्पबहुत्व कहे छे-'एएसिणं भंते ! सुहुमपज्जत्तयाणं' इत्यादि. सौथी थोडा बादर तेजस्कायिक पर्याप्ता छे, तेथी बादर त्रसकायिक, बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक, बादर निगोद, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक अने बादर

त्तयाण पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बायरनिगोयाणं अपज्जत्तयाणं बायरतसकाइयाणं अपज्जत्तयाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया अपज्जत्तया, बायरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा. पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुम-

तगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे,तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको

असंख्याता लोकाकाशप्रदेश प्रमाण छे तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक अने सूक्ष्म निगोदो उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे अहीं अल्पबहुत्वनो विचार सूक्ष्मसंबन्धी पांच सूत्रमां जे बीजुं सूत्र छे तेनी पेठे करवो अपर्याप्त सूक्ष्म निगोदोथी अपर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिक जीवो अनन्तगुण छे, कारण के बादर एक एक निगोदमां अनन्त जीवो होय छे तेथी सामान्य बादर अपर्याप्ताओ विशेषाधिक छे, कारण के अपर्याप्ता बादर त्रसकायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे तेथी सूक्ष्म प-

काइया अणंतगुणा, बायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ।

३२. एएसि णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तयाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमआउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयाणं अपज्जत्तयाणं बायरअपज्जत्तयाणं बायरपुढवीकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बायरवाउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं अपज्ज-

---

असंख्यातगुणा छे, तेथी सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे.

३२. हे भगवन् ! ए अपर्याप्ता, सूक्ष्म सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म वनस्पतिकायिको, सूक्ष्म निगोदो, बादरो, बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको बादर वनस्पतिकायिको, प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो अने बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता बादर त्रसकायिको छे, तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्या-

---

३२. हवे सूक्ष्मादि अपर्याप्तानुं वीजुं अल्पबहुत्व कहे छे–'एएसि णं भंते' इत्यादि. सौथी थोडा अपर्याप्ता बादर त्रसकायिको छे, तेथो अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिक, बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक, बादर निगोद, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक अने बादर वायुकायिक अनुक्रमे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे, अहीं अल्पबहुत्वनो विचार बादर संबन्धी पांचे सूत्रोमां जे वीजुं अपर्याप्त सूत्र छे तेनी पेठे करवो. ते अपर्याप्त बादर वायुकायिकथी अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ अति घणा मोटा

कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया, बायरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया असंखेज्जगुणा, बायरपुढवीकाइया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइ-

---

बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो, अने बादरत्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य, के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा बादर त्रसकायिको छे, तेथी बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी सूक्ष्म तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी बादर जीवो विशेषाधिक छे, तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिको

सुधी जाणवु त्यार पछी बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, कारण के एक एक बादर निगोदमा अनन्त जीवो होय छे तेथी बादर जीवो विशेषाधिक छे, कारण के बादर तेजस्कायादिनो पण तेमा समावेश थाय छे तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के बादर निगोदोथी सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे तेथी सामान्य सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे, कारण के सूक्ष्म तेजस्कायादिनो पण तेमा समावेश थाय छे एम प्रथम अल्पबहुत्व समाप्त थयु

अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरअपज्जत्तया विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया ।

३१. एएसि णं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोयाणं बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायरआउकाइयाणं बायरतेउकाइयाणं बायरवाउकाइयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं बायरनिगोयाणं तसकाइयाण य कयरे

पर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे अने तेथी बादर जीवो विशेषाधिक छे.

३१. ए सूक्ष्म जीवो, सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म निगोदो, बादर जीवो, बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, प्रत्येकशरीर

असंख्याता अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक निगोद जीवोनी उत्पत्ति थाय छे. तेथी सामान्य बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. तेथी पर्याप्ता अपर्याप्ता विशेषण रहित बादर जीवो विशेषाधिक छे. कारण के बादर पर्याप्त तेजस्कायादिनो पण तेमां समावेश थाय छे.

३१. बादर संबंधे पांच सूत्रो कह्या, हवे सूक्ष्म अने बादर संबंधे पांच सूत्रो कहेवानी इच्छावाळा प्रथम सामान्य सूक्ष्म-बादर सूत्र कहे छे—'एएसि णं भंते' इत्यादि. अहीं बादर संबन्धी अल्पबहुत्वनो विचार बादरना पांच सूत्रमांना प्रथम सूत्रनी पेठे बादर वायुकाय पद सुधी जाणवो. त्यार पछी सूक्ष्म संबंधे अल्पबहुत्व पण सूक्ष्मना पांच सूत्रोमां जे पहेलुं सूत्र छे तेनी पेठे सूक्ष्मनिगोद

असंखेज्जगुणा,बायरनिगोया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बादरपुढवीकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बायरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बायरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बायरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा,पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बायरनिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा,बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइया

पर्याप्ता बादर पृथीवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी

तेजस्कायिको असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे, माटे असंख्यातगुणा छे तेथी अपर्याप्ता प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे—एम उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा कह्या जो के ए बधामांना प्रत्येक असंख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे, तोपण असंख्याताना असंख्याता भेदो होवाथी उत्तरोत्तर असंख्यातगुणपणु विरुद्ध नथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिकथी पर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, कारण के बादर एक एक निगोदमां अनन्त जीवो होय छे तेथी सामान्य बादर पर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकादिनो तेमां समावेश थाय छे तेथी अपर्याप्ता बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के एक एक पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक निगोदने आश्रयी

३०. एएसि णं भंते ! बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायरआउकाइयाणं बायरतेउकाइयाणं बायरवाउकाइयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं बायरनिगोयाणं बायरतसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पजत्तया, बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरतसकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया

३०. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बादर जीवो, बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो अने बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे, तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी

त्रसकायिक सूत्र पूर्वे कहेली युक्तिथी जाणवुं. एम चतुर्थ अल्पबहुत्व कह्युं.

३०. हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बादरादि जीवोनुं सामुदायिक पांचमुं अल्पबहुत्व कहे छे-'एएसिणं भंते ! बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं' इत्यादि. सौथी थोडा पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे, तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर त्रसकायिक असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे. आ पदोमां पूर्वे कहेली युक्तिनुं अनुसरण करवुं. तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यात प्रतरोमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला छे अने अपर्याप्ता बादर

त्तया, बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरवाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरनिगोयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरनिगोया पज्जत्ता, बायरनिगोया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरतसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया पज्जत्ता, बायरतसकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।

यिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो अने बादर त्रसकायिको संबन्धे अल्पबहुत्व कहेवु. सर्व स्थळे बादर पर्याप्ताथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा जाणवा.]

बादर अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे कारण के "पर्याप्तानी निश्राए असंख्याता अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे ज्या एक पर्याप्त छे त्या अवश्य असंख्याता अपर्याप्ता छे" एवु शास्त्रनु वचन छे माटे बादर जीवोनी अपेक्षाए सर्व स्थळे पर्याप्ताथी अपर्याप्ता असंख्यातगुणा कहेया

ज्जगुणा, बायरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बायरपज्जत्तया विसेसाहिया ।

२९. एएसि णं भंते ! बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपज्जत्तया, बायरअपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपुढवीकाइया पज्जत्तया, बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरआउकाइया पज्जत्तया, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्ज-

---

स्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी बादर पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

२९. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बादर जीवोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा बादर पर्याप्ता छे तेथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, * * * [एम पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्का-

---

न्तगुणा छे, कारण के बादर एक एक निगोदमां अनन्त जीवो होय छे. तेथी सामान्य बादर पर्याप्ता विशेषाधिक छे, कारण के पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकादिनो पण तेमां समावेश थाय छे. एम त्रीजुं अल्पबहुत्व कह्युं.

२९. हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बादरादि प्रत्येक जीवोनुं अल्पबहुत्व कहे छे—अहीं एक एक बादर पर्याप्ताने आश्रयी असंख्याता

बायरतसकाइयपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तया, बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढवीकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया पज्जत्तया असंखे-

थोडा पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे, तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता बादर वन-

"आवलिकाना वर्गने कइक न्यून आवलिकाना समय वडे गुणता जेटला थाय तेटला पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे तेथी पर्याप्ता बादर त्रसकायिको असंख्यातगुणा छे कारण के एक प्रतरमा अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाण जेटला खंडो थाय तेटला छे तेथी पर्याप्ता प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे केमके तेओ एक प्रतरमा अंगुलना असंख्यातमा भाग जेवडा जेटला खंडो थाय तेटला छे कह्यु छे के-"प्रत्येक पर्याप्ता वनस्पतिकायिक अंगुलना असंख्यातमा भागवडे भागता घनीकृत लोकनु प्रतर अपहरे छे तात्पर्य ए छे के-एक एक अंगुलना असंख्यातमा भागमा एक एक पर्याप्ता प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव स्थापीए तो घनीकृत लोकनु समग्र प्रतर अपहराय," तेथी पर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे कारण के तेओ सूक्ष्म अवगाहनावाळा छे अने बधा जळाशयोमा सर्वत्र होय छे तेथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के एक प्रतरना अति बहुतरसंख्यावाळा अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जेटला खंडो थाय तेटला छे तेथी पर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के तेओ घनीकृत लोकना संख्यातमा भागमा रहेला असंख्याता प्रतरोने विषे जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला छे तेथी बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्ता अन

त्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया ।

२८. एएसि णं भंते ! बायरपज्जत्तयाणं बादरपुढवीकाइयपज्जत्तयाणं बायरआउकाइयपज्जत्तयाणं बायरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बायरवाउकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बायरनिगोदपज्जत्तयाणं

बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, तेथी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

२८. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता बादर जीवो, बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो, अने बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे? हे गौतम ! सौथी

क्रमथी आ अल्पबहुत्व पण जाणवुं. एम बीजुं अल्पबहुत्व कह्युं.

२८. हवे पर्याप्ता बादरादि जीवोनुं त्रीजुं अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी थोडा पर्याप्ता बादर तेजस्कायिको छे, कारण के तेओ आवलिकाना समयोनो वर्ग करी तेने कंइक न्यून आवलिकाना समयो वडे गुणवाथी जेटला समयो थाय तेटला छे. कह्युं छे के—

काइया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा, बादरा विसेसाहिया।

२७. एएसि णं भंते! बादरपुढविकाइयअपज्जत्तगाणं बादरआउकाइयअपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइयअपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तगाणं बादरनिगोदअपज्जत्तगाणं बादरतसकाइयअपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्व-

---

असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, तेथी बादर जीवो विशेषाधिक छे.

२७. हे भगवन्! अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो अने बादर त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे? हे गौतम! सौथी थोडा अपर्याप्ता बादर त्रसकायिको छे, तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता प्रत्येक शरीर

वद्य होय छे अने तेओ बादर अनन्तकायिको छे तेथी पण बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे कारण के ते आठ पृथिवीओमा, भवन बधा विमान अने पर्वतादिमां होय छे तेथी असंख्यातगुणा बादर अप्कायिको छे, कारण के समुद्रोमा पुष्कळ पाणी होय छे तेथी बादर वायुकायिको असंख्यातगुणा छे, कारण के खाली अवकाशमा बधे वायुनो संभव छे तेथी बादर वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, कारण के दरेक बादर निगोदमा अनन्त जीवो होय छे तेथी सामान्य बादर जीवो विशेषाधिक छे, कारण के बादर त्रसकायिकोनो पण तेमा समावेश थाय छे एम सामान्य बादर जीवोनु प्रथम अल्पबहुत्व कह्यु

२७ हवे बादरादि अपर्याप्तानु बीजु अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी थोडा अपर्याप्ता बादर त्रसकायिको छे, अहीं युक्ति पूर्वे कही छे तेथी अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे कारण के तेओ असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे एम पूर्वे कहेला

हिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया, बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा असंखेज्जगुणा, बादरपुढवीकाइया असंखेज्जगुणा, बादरआउ-

छे, तेथी बादर तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर पृथिवीकायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर अप्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी बादर वायुकायिको

असंख्यातगुणा छे, केमके तेओनुं स्थान असंख्यातगणुं छे. अने बादर तेजस्कायिको तो मनुष्यक्षेत्रमां ज होय छे. आ संबंधे बीजा स्थान पदमां कह्युं छे-"हे भगवन्! पर्याप्त बादर तेजस्कायिकोना क्यां स्थानो कहेलां छे ? हे गौतम ! स्वस्थान वडे मनुष्यक्षेत्रनी अंदर अढी द्वीप अने समुद्रोमां, व्याघात-प्रतिबंधना अभावमां पंदर कर्मभूमिमां अने व्याघात-प्रतिबंध होय त्यारे पांच महाविदेहमां पर्याप्त बादर तेजस्कायिकोना स्थानो कहेलां छे, ज्यां पर्याप्त बादर तेजस्कायिकोना स्थानो छे त्यांज अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकोना स्थानो छे." अने बादर वनस्पतिकायिको तो त्रणे लोकमां भवनादिने विषे होय छे. ते बाबत बीजा स्थान पदमां कह्युं छे के—"हे भगवन्! बादर वनस्पतिकायिकोना क्यां स्थानो छे ? हे गौतम ! स्वस्थानने आश्रयी सात घनोदधिमां, सात घनोदधिवलयोमां, अधोलोकमां पातालकलशोमां, भवनोमां, भवनप्रस्तटोमां, ऊर्ध्व लोकमां विमानोमां, विमानावलिकाओमां, विमानप्रस्तटोमां, तिर्यग्लोकमां कुवाओ, तळाव, नदी, द्रह वाव, पुष्करिणी, दीर्घिका-सीधी नानी नदीओ, गुंजालिका-वांकी नानी नदीओ, सरोवरो, पंक्तिबद्ध सरोवरो, सरःसरःपंक्तिओ, बिलो, बिलपंक्तिओ, उज्झरो (झरणाओ) निर्झरो (हमेशां वहेता झराओ) चिल्ललो—छिल्लरो, पल्वलो-खाबोचीयां, वप्राओ, द्वीपो, समुद्रो अने बधा जलाशयो अने जळना स्थानोमां पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना स्थानो कहेलां छे." माटे क्षेत्र असंख्यातगुणुं होवाथी बादर तेजस्कायिकोथी असंख्यातगुणा प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायिको छे. तेथी बादर निगोदो असंख्यातगुणा छे, केमके बादर निगोदोनी अत्यंत सूक्ष्म अवगाहना छे. ते बादर निगोदो पाणीमां सर्वत्र होय छे, कारण के ते पनक, सेवाल वगेरे पाणीमां अव-

१. जुओ द्वितीय स्थानपद सू० ५ पृ० २२५.

स्सइकाइया अपज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमअपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ।

२६ एएसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण कयरे कयरे-

---

छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको सख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म विशेषाधिक छे अने तेथी सूक्ष्म विशेषाधिक छे.

२६. हे भगवन् ! ए बादर जीवो, बादर पृथिवीकायिको, बादर अप्कायिको, बादर तेजस्कायिको, बादर वायुकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, बादर निगोदो अने बादर त्रसकायिकोमा कोण कोनाथी अल्प०४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा बादर त्रसकायिको

विशेषाधिक छे कारण के तेमां सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिनो प्रक्षेप थाय छे तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको सख्यातगुणा छे कारण के सूक्ष्म जीवोमा अपर्याप्ताथी पर्याप्ता सख्यातगुणा छे जे सख्ये अपर्याप्ताओनु विशेषाधिकपणु कह्यु छे ते थोडु होवाथी सख्यातगुणामा अडचण नथी तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक छे, केमके सूक्ष्म पर्याप्ताओमा सूक्ष्म पृथिवीकायिकादि पर्याप्ताओनो समावेश थाय छे तेथी सूक्ष्म जीवो विशेषाधिक छे, कारण के तेमा अपर्याप्ताओनो पण समावेश थाय छे

२६ पत्र सूक्ष्मने आश्रयी पाच सूत्रो कह्या, हवे बादरने आश्रयी पाच सूत्रो उपर कहेला क्रमने अनुसरीने कहे छे–सौथी थोडा बादर त्रसकायिको छे, केमके बेइन्द्रियादि जीवो ज बादर त्रस छे अने तेओ बाकीना पृथिवीकायादिथी थोडा छे, तेथी बादर तेजस्कायिको असख्यातगुणा छे, कारण के तेओ असख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण छे तेथी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिको

विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमवण-

---

तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनंतगुणा

सौथी थोडा अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको छे, तेनुं कारण पूर्वे कहेलुं छे. तेथी अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको, अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको अने अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको उत्तरोत्तर विशेषाधिक छे, आ संबंधे कारण पूर्वे कह्युं छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको संख्यातगुणा छे, कारण के अपर्याप्ताथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे, एनो हमणांज विचार करेलो छे. तेमां सौथी थोडा अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको कह्या छे, अने बीजा सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवीकायिकादि उत्तरोत्तर विशेषाधिक कह्या छे. विशेषाधिक एटले कंईक अधिक, बमणाथी ओछा, पण बमणा के त्रणगणा नहिं. तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिक करतां पर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको संख्यातगुणा छतां सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्ताथी पण संख्यातगुणा छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिक विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिक विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, कारण के ते घणा छे. तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो संख्यातगुणा छे, कारण के सूक्ष्म जीवोमां सामान्य रीते अपर्याप्ताथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, कारण के दरेक निगोदमां सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनन्ता छे. तेथी सामान्यतः सूक्ष्म अपर्याप्ता

एएसि णं भंते! सुहुमनिगोयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोया अपज्जत्तगा, सुहुमनिगोया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

२५ एएसि णं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया

पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने सूक्ष्म निगोदो संबन्धे भिन्न भिन्न सूत्रो जाणवा. बधा स्थळे अपर्याप्ताथी पर्याप्ता संख्यातगुणा छे.]

२५. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवो, सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने सूक्ष्मनिगोदोमा कोण कोनाथी अल्प०४ छे? हे गौतम! सौथी थोडा अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिको छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे,

अवश्य असंख्याता छे" सूक्ष्मजीवोने विषे आ क्रम नथी त्या पर्याप्ता अपर्याप्ताथी दीर्घ काळनी स्थितिवाळा होय छे माटे हमेशा ते घणा होय छे, माटे एम कह्यु छे के सौथी थोडा सूक्ष्म अपर्याप्ता छे तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता संख्यातगुणा छे ए प्रमाणे पृथिवीकायिकादि प्रत्येक जीवोने विषे जाणवु एम चतुर्थ अल्पबहुत्व कह्यु

२५. हवे सूक्ष्मादि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता उभयनु अल्पबहुत्व कहे छे-'एएसि ण भंते! सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण' इत्यादि

सुहुमअपज्जत्तगा, सुहुमपज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा।

छे, तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प०४ छे? हे गौतम! सौथी थोडा अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको छे, अने तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको संख्यातगुणा छे. [एम

---

२४. हवे सूक्ष्मादि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता प्रत्येकनुं अल्पबहुत्व कहे छे-बादर जीवोमां पर्याप्त जीवोथी अपर्याप्त जीवो असंख्यातगुणा छे, कारण के एक एक पर्याप्ताने आश्रयी असंख्याता अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. प्रथम प्रज्ञापना पदमां कह्युं छे के "पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा" "पर्याप्ताने आश्रयी अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे, ज्यां एक छे त्यां

२३. एएसि णं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमनिगोदपज्जत्तगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

२४ एएसि णं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वथोवा

गुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म विशेषाधिक छे.

२३. हे भगवन् ! पर्याप्ता सूक्ष्मो, सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने सूक्ष्म निगोदोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता तेजस्कायिको छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिविकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सूक्ष्म विशेषाधिक छे.

२४. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवोमां कोण कोनाथी अल्प०४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा सूक्ष्म अपर्याप्ता

२३ हवे पर्याप्ताओनुं तृतीय अल्पबहुत्व कहे छे-आ पण पूर्वनी पेठे जाणवुं

विसेसाहिया ॥

२२. एसेसि णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयअपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयअपज्जत्ताणं सुहुमवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोदअपज्जत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया ॥

छे, तेथी सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे अने तेथी सूक्ष्मो विशेषाधिक छे.

२२. हे भगवन् ! ए अपर्याप्ता सूक्ष्म जीवो, सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने सूक्ष्म निगोदोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिको छे. तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनन्त-

पृथिवीकायिकोनो पण तेमां प्रक्षेप थाय छे.

२२. सामान्य सूक्ष्म जीवोनुं अल्पबहुत्व कयुं, हवे अपर्याप्ता सूक्ष्मजीवोनुं द्वितीय अल्पबहुत्व कहे छे-आ बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

२१ एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइआणं सुहुमतेउकाइआणं सुहुमवाउकाइआणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिओयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइआ विसेसाहिया, सुहुमआउकाइआ विसेसाहिआ, सुहुमवाउकाइआ विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा

२१. हे भगवन् ! ए सूक्ष्म जीवो, सूक्ष्म पृथिवीकायिको, सूक्ष्म अप्कायिको, सूक्ष्म तेजस्कायिको, सूक्ष्म वायुकायिको, सूक्ष्म वनस्पतिकायिको, अने सूक्ष्म निगोदोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा सूक्ष्म तेजस्कायिको छे, तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे,तेथी सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक

२१ एम कायद्वारमां पांच सूत्रोनुं प्रतिपादन कर्युं हवे आज द्वारमां सूक्ष्म अने बादरादिना भेदथी पवर सूत्रो कहे छे-सौथी थोडा सूक्ष्म तेजस्कायिको छे कारण के तेओ असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशो जेटला छे तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, कारण के तेओ घणा असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण छे, तेथी सूक्ष्म अप्कायिको विशेषाधिक छे, कारण के तेओ अति घणा असंख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे, तेथी सूक्ष्म वायुकायिको विशेषाधिक छे, कारण के तेथी पण घणा मोटा असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे, तेथी सूक्ष्म निगोदो असंख्यातगुण छे, अहीं सूक्ष्मनुं ग्रहण बादरनो निषेध करवा माटे छे निगोदो (साधारण वनस्पतिकायिक शरीरो) बे प्रकारना छे तेमां सूरणकन्द वगेरे बादर निगोदो छे अने सूक्ष्म निगोदो सर्वलोकमां व्याप्त छे ते सूक्ष्म निगोदो दरेक गोळामां असंख्याता छे, तेथी तेओ सूक्ष्म वायुकायिकोथी असंख्यातगुणा छे तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अनन्तगुण छे, कारण के दरेक निगोदमां अनन्ता जीवो होय छे तेथी सामान्य सूक्ष्मजीवो विशेषाधिक छे, कारण के सूक्ष्म

गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइआ पज्जत्तगा, तसकाइआ अपज्जत्तगा संखेज्जगुणा, तेउकाइआ अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइआ अपज्जत्ता विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिआ, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइआ पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढविकाइआ पज्जत्तगा विसेसाहिआ, आउकाइआ पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिआ, वणस्सइकाइआ अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सकाइआ अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइआ पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिआ, सकाइया विसेसाहिया ॥

अपर्याप्ता त्रसकायिको संख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे. तेथी अपर्याप्ता पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे. तेथी अपर्याप्ता अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता तेजस्कायिको संख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अपर्याप्ता वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी अपर्याप्ता सकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्ता वनस्पतिकायिको संख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्ता सकायिको विशेषाधिक छे अने तेथी सकायिको विशेषाधिक छे.

ख्यातगुणा छे, कारण के तेओ असंख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे, तेथी अपर्याप्त पृथिवी, अप् अने वायुओ अनुक्रमे विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त तेजस्कायिको संख्यातगुणा छे, कारण के सूक्ष्म अपर्याप्ता संख्यातगुणा छे.

बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

२०. एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइआणं आउकाइआणं तेउकाइआणं वाउकाइआणं वणस्सइकाइआणं तसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा ?

गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता वनस्पतिकायिको छे, तेथी पर्याप्ता वनस्पतिकायिको सख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता त्रसकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता त्रसकायिको छे, तेथी अपर्याप्ता त्रसकायिको असख्यातगुणा छे.

२०. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सकायिक, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक अने त्रसकायिकमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता त्रसकायिको छे, तेथी

२० पर्याप्ता अपर्याप्ता एवा सकायिकादि समुदायनु अल्पबहुत्व कहे छे-सौथी थोडा पर्याप्त त्रसकायिको छे, तेथी अपर्याप्त त्रसकायिको असख्यातगुणा छे, केमके पर्याप्त बेइन्द्रियादिथी अपर्याप्त बेइन्द्रियो असख्यगुणा छे तेथी अपर्याप्त तेजस्कायिको अस

भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढवीकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा

कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता पृथिवीकायिको छे, अने तेथी पर्याप्ता पृथिवीकायिको संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता अप्कायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता अप्कायिको छे अने तेथी पर्याप्ता अप्कायिको संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेजस्कायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता तेजस्कायिको छे, अने तेथी पर्याप्ता तेजस्कायिको संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वायुकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्ता वायुकायिको छे, तेथी पर्याप्ता वायुकायिको संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वनस्पतिकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे

---

१९. हवे सकायिकादि पर्याप्ता प्रत्येकनुं अल्पबहुत्व कहे छे-सुगम छे.

१८. एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

१९ एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसि णं

---

१८. हे भगवन् ! ए पर्याप्त सकायिक, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक अने त्रसकायिकमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्त त्रसकायिको छे, तेथी पर्याप्त तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी पर्याप्त पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी पर्याप्त वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, तेथी पर्याप्त सकायिको विशेषाधिक छे.

१९. हे भगवन् ! ए पर्याप्त अने अपर्याप्त सकायिक जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा सकायिक अपर्याप्त छे, तेथी सकायिक पर्याप्त संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! ए पर्याप्त अने अपर्याप्त पृथिवीकायिकोमां

---

१८ हवे सकायिकादि पर्याप्तानुं त्रीजुं अल्पबहुत्व कहे छे—सुगम छे

या विसेसाहिया, अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहिया ॥

१७. एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

यिको (सिद्धो) अनंतगुण छे, तेथी वनस्पतिकायिको अनंतगुण छे, अने तेथी सकायिको विशेपाधिक छे.

१७. हे भगवन् ! अपर्याप्त सकायिक, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक अने त्रसकायिक मां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा अपर्याप्त त्रसकायिको छे, तेथी अपर्याप्त तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, तेथी अपर्याप्त पृथिवीकायिको विशेपाधिक छे, तेथी अपर्याप्त अप्कायिको विशेपाधिक छे, तेथी अपर्याप्त वायुकायिको विशेपाधिक छे, तेथी अपर्याप्त वनस्पतिकायिको अनंतगुणा छे, तेथी अपर्याप्त सकायिको विशेपाधिक छे.

के तेओ अनन्त लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे. तेथी सकायिको विशेपाधिक छे, केमके तेमां पृथिवीकायिकादिनो प्रक्षेप थाय छे.

१७. सामान्य सकायिकादि जीवोनुं अल्पबहुत्व कह्युं, हवे अपर्याप्त सकायिकादिनुं बीजुं अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते सकाइयाणं' इत्यादि सुगम छे.

साहिआ, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिआ पज्जत्तगा विसेसाहिआ, सइंदिया विसेसाहिआ। ३ दारं।

१६ एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं अकाइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइ-

---

सख्यातगुणा छे, तेथी सइन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे, तेथी सइन्द्रियो विशेषाधिक छे.

४ कायद्वार

१६. हे भगवन् ! सकायिक, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक अने अकायिकमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा त्रसकायिको छे, तेथी तेजस्कायिको असख्यातगुणा छे, तेथी पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अप्कायिको विशेषाधिक छे, तेथी वायुकायिको विशेषाधिक छे, तेथी अका-

---

१६ इन्द्रियद्वार कह्यु, हवे कायद्वारने आश्रयी कहे छे-सौथी थोडा त्रसकायिको छे, कारण के बेइन्द्रियादि जीवोज त्रसकायिक छे, अने तेओ बाकीनी कायनी अपेक्षाए अल्प छे तेथी तेजस्कायिको असंख्यातगुणा छे, केमके तेओ असख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे तेथी पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे, कारण के घणा असख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे तेथी अप्कायिक विशेषाधिक छे, केमके अतिघणा असख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे तेथी वायुकायिक विशेषाधिक छे, कारण के तेओ अत्यत घणा असख्य लोकाकाश प्रदेशप्रमाण छे तेथी अकायिक—कायरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनंत छे तेथी वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे, कारण

हिआ वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया पज्जत्तगा, पंचेंदिया अपज्जत्तगा असंखज्जगुणा ॥

१५. एएसि णं भंते सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिआ, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिआ, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिआ, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिआ, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिआ, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिआ, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिआ अपज्जत्तगा वि-

---

असंख्यातगुणा छे.

१५. हे भगवन् ! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सइन्द्रियो, एकेन्द्रियो, बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो, चउरिन्द्रियो अने पंचेन्द्रियोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेपाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा चउरिन्द्रिय पर्याप्ता छे, तेथी पंचेन्द्रिय पर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी बेइन्द्रिय पर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी तेइन्द्रिय पर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, तेथी चउरिन्द्रिय अपर्याप्ता विशेपाधिक छे. तेथी तेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी बेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी एकेन्द्रिय अपर्याप्ता अनन्तगुणा छे, तेथी सइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, तेथी एकेन्द्रिय पर्याप्ता

---

१५. हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बन्ने प्रकारना सेन्द्रियादि जीवोनुं अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते' इत्यादि. आ पूर्वे कहेला बीजा अने त्रीजा अल्पबहुत्वनी भावनाने अनुसारे स्वयं विचार करवो, केमके तात्त्विक रीते तो तेनो विचार पूर्वे कर्यो छे.

त्थोवा एगिंदिया अपज्जत्तगा, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा॥ एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा, बेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा॥ एएसि णं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिआ वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा, तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिता वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा॥ एएसि णं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसा-

छे. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बेइन्द्रियोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! सौथी थोडा पर्याप्ता बेइन्द्रियो छे, तेथी अपर्याप्ता बेइन्द्रियो असख्यातगुणा छे. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेइन्द्रियोमां क्या जीवो क्या जीवोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! सौथी थोडा तेइन्द्रिय पर्याप्ता छे, तेथी तेइन्द्रिय अपर्याप्ता असख्यातगुणा छे. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता चउरिन्द्रिय जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा चउरिन्द्रिय पर्याप्ता छे, तेथी चउरिन्द्रिय अपर्याप्ता असख्यातगुणा छे. हे भगवन्! ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पंचेन्द्रियोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा पंचेन्द्रिय पर्याप्ता छे, तेथी पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता

१४ छ जीवोनु अल्पबहुत्वात्मक चोथु अल्पबहुत्व कहुं

दिया विसेसाहिया, ते 'दिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, अणिंदिया अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा, सइंदिया विसेसाहिया ॥

१२. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्त-

---

धिक छे, तेथी तेइन्द्रियो विशेपाधिक छे, तेथी बेइन्द्रियो विशेपाधिक छे, तेथी अनिन्द्रियो (सिद्धो) अनन्तगुण छे, तेथी एकेन्द्रियो अनन्तगुण छे, तेथी सइन्द्रियो विशेपाधिक छे.

१२. हे भगवन् ! अपर्याप्ता एवा सइन्द्रियो, एकेन्द्रियो, बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो, चउरिन्द्रियो अने पंचेन्द्रियोमां कया जीवो कया जीवोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेपाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता छे, तेथी चउरिन्द्रिय अपर्याप्ता

गुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जेटला खंड थाय तेटला अपर्याप्ता चउरिन्द्रिय जीवो छे. तेथी अपर्याप्ता तेइन्द्रियो विशेपाधिक छे, कारण के एक प्रतरमां अति घणा अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण खंडो थाय तेटला तेइन्द्रियो छे, तेथी पण अपर्याप्त बेइन्द्रियो विशेपाधिक छे, कारण के एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण अत्यंत घणा खंडो थाय तेटला अपर्याप्त बेइन्द्रियो छे. तेथी अपर्याप्त एकेन्द्रियो अनन्तगुणा छे, कारण के अपर्याप्त वनस्पतिकायिको अनन्त होवाथी हमेशां विद्यमान होय छे. तेथी सेन्द्रिय अपर्याप्ता विशेपाधिक छे, कारण के बेइन्द्रियादि अपर्याप्ताओनो पण तेमां प्रक्षेप थाय छे.

१२. बीजुं अल्पबहुत्व कह्युं, हवे ए पूर्वोक्त पर्याप्ताओनुं त्रीजुं अल्पबहुत्व कहे छे-सौथी थोडा पर्याप्ता चउरिन्द्रिय जीवो छे. कारण के चउरिन्द्रियो अल्प आयुपवाळा होय छे, माटे घणा काळ सुधी रहेता नथी तेथी प्रश्न समये थोडा प्राप्त थाय छे. ते थोडा होवा छ-

११. एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाण-य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिं-

३ इन्द्रिय द्वार

११. हे भगवन्! इन्द्रियवाळा, एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रिय (इन्द्रियरहित) जीवोमा कया जीवो कया जीवोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा पंचेन्द्रियो छे, तेथी चउरिन्द्रियो विशेषा-

शना राशि प्रमाण छे तेथी पण देवीओ संख्यातगुणी छे, कारण के देव करता बत्रीश गणी छे, तेथी पण सिद्धो अनन्तगुणा छे, तेथी पण तिर्यंचो अनन्त छे अहीं युक्ति पूर्वे कहेली छे गतिद्वार समाप्त थयु

११ हवे इन्द्रियद्वार कहे छे—सौथी थोडा पचेन्द्रियो छे, कारण के संख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण विष्कम सूचि जेटला प्रतर श्रेणिना असंख्यातमा भागे रहेली असंख्याती श्रेणिना आकाश प्रदेशना राशि प्रमाण छे तेथी चउरिन्द्रियो विशेषाधिक छे, कारण के तेओनी विष्कमसूचि प्रभूत-घणा संख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण समजवी तेथी पण तेइन्द्रियो विशेषाधिक छे, कारण के तेनी विष्कम सूचि प्रभूततर-अति घणा संख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण जाणवी तेथी पण बेइन्द्रियो विशेषाधिक छे, कारण के तेओनी विष्कमसूचि प्रभूततम-अत्यत घणा संख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण होय छे तेथी पण अनिन्द्रियो अनन्त गुण छे कारण के सिद्धो अनन्ता छे तेथी पण एकेन्द्रियो अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिको सिद्धोथी पण अनन्तगुणा छे तेथी पण सेन्द्रिय-इन्द्रिय सहित विशेषाधिक छे कारण के बेइन्द्रियादिकनो पण तेमा समावेश थाय छे एम सामान्य जीवोनु अल्पबहुत्व कह्यु हवे तेज अपर्याप्ताओनु बीजु अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी थोडा पचेन्द्रिय अपर्याप्ता छे, कारण के एक प्रतरने विषे अगुलना असंख्यातमां भाग प्रमाण जेटला खड थाय तेटला छे तेथी अपर्याप्ता चउरिन्द्रियो विशेषाधिक छे, कारण के एक प्रतरमा घणा अ

१०. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाण य अट्ठगतिसमासेणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ, देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्जगुणाओ, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ २ दारं ॥

---

१०. हे भगवन् ! ए नैरयिको, तिर्यंचयोनिको, तिर्यंचयोनिक स्त्रीओ, मनुष्य, मानुषी, देवो, देवीओ, अने सिद्धोमां आठ गतिना संक्षेप वडे कया जीवो कया जीवोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी मानुषी स्त्रीओ छे., तेथी मनुष्यो असंख्यातगुणा छे, तेथी नैरयिको असंख्यातगुणा छे, तेथी तिर्यंच स्त्रीओ असंख्यातगुणी छे, तेथी देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी सिद्धो अनन्तगुणा छे, अने तेथी तिर्यंचो अनंतगुणा छे.

---

१०. हवे नारक, तिर्यंच, तिर्यंचस्त्री, मनुष्य, मानुषी, देव, देवी अने सिद्ध ए आठनुं अल्पबहुत्व कहे छे—सौथी थोडी मनुष्यस्त्रीओ छे, कारण के संख्याता कोटाकोटी प्रमाण छे, तेथी मनुष्यो असंख्यातगुणा छे, अहीं संमूर्छिम मनुष्यो पण ग्रहण करवा, कारण के वेदनी विवक्षा नथी. ते संमूर्छिम मनुष्यो वमनथी आरंभी नगरनिर्धमन-नगरनी खाळ वगेरेमां उत्पन्न थता असंख्याता होय छे. मनुष्योथी नैरयिको असंख्यातगुणा छे, कारण के मनुष्यो उत्कृष्ट पदे पण घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिना असंख्यातमा भागमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला होय छे, अने नैरयिको अंगुलप्रमाण क्षेत्रमां जेटला आकाश प्रदेश होय तेना त्रीजा वर्गमूलने प्रथम वर्गमूळनी साथे गुणतां जेटली संख्या थाय तेटली आकाशप्रदेशनी श्रेणिना प्रदेश राशि प्रमाण छे, ते माटे असंख्यातगुणा छे. तेथी तिर्यंचस्त्रीओ असंख्यातगुणी छे. कारण के प्रतरना असंख्यातमा भागनी असंख्याती आकाशप्रदेश श्रेणिना जेटला आकाशप्रदेशो थाय तेटली छे, तेथी पण देवो असंख्यातगुणा छे, कारण के असंख्यातगुणा प्रतरना असंख्यातमा भागमां रहेली असंख्याती श्रेणिना आकाशप्रदे-

९ एएसि णं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ।

२ गतिद्वार.

९. हे भगवन् ! नैरयिको, तिर्यंचयोनिको, मनुष्यो, देवो, अने सिद्धोमां पांच गतिना संक्षेपथी कया जीवो कया जीवोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा मनुष्यो छे, तेथी नैरयिको असंख्यातगुणा छे. तेथी देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी सिद्धो अनंतगुणा छे अने तेथी तिर्यंचयोनिको अनन्तगुणा छे.

९. दिशाद्वार कह्यु, हवे गतिद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे-सौथी थोडा मनुष्यो छे, कारण के छन्नुवार छेद करवा वडे जे राशिनो छेद थाय एटले जे राशिनो अर्ध अर्ध छेद करतां छन्नुवार छेद थइ शके, अथवा छन्नुवार बमणा करतां जे संख्या थाय तेटला मनुष्यो छे जेने छन्नुवार छेद आपी शकाय ते राशि आगळ बताववामां आवशे मनुष्योथी नैरयिको असंख्यातगुणा छे, कारण के अंगुलमात्र क्षेत्रमां जेटला आकाश प्रदेशोनी संख्या होय, तेना प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूळवडे गुणतां जेटली संख्या थाय तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला नैरयिको छे तेथी देवो असंख्यातगुणा छे कारण के व्यन्तरो अने ज्योतिषिको प्रत्येक प्रतरना असंख्यातमा भागमां रहेली श्रेणीओना आकाशप्रदेशना राशि प्रमाण छे तेथी सिद्धो अनन्तगुणा छे कारण के ते अभव्योथी अनन्तगुणा छे तेथी तिर्यंचो अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धोथी वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे ए प्रमाणे, नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देव अने सिद्धोनुं अल्पबहुत्व कह्युं

संखेज्जगुणा । तेण परं बहुसमोववन्नगा समणाउसो ! ॥

८. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया । १दारं ।

सरखा उत्पन्न थयेला देवो छे.

८. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा सिद्धो दक्षिण अने उत्तर दिशाए छे, तेथी पूर्वमां संख्यातगुणा छे अने पश्चिममां विशेषाधिक छे.

प्रतिग्रैवेयकमां अने दरेक अनुत्तर विमानमां चारे दिशाए प्रायः सरखा उत्पन्न थाय छे. ते माटे कह्युं छे के—"हे आयुष्मान् श्रमण ! त्यांथी आगळ बहुधा चारे दिशामां सरखा उत्पन्न थाय छे"

८. सिद्धो दक्षिण दिशामां अने उत्तर दिशामां थोडा छे, कारण के अहीं मनुष्यो ज सिद्ध थाय छे, बीजा जीवो सिद्ध थता नथी, मनुष्यो पण सिद्ध थता छेल्ला समये जे आकाश प्रदेशोने अवगाही रहेला छे तेटला आकाश प्रदेशोने अवगाही समश्रेणिए उपर जाय छे जरा पण आडा अवळा जता नथी, अने तेज आकाश प्रदेशोने अवगाही उपर रहे छे, तेमां दक्षिण दिशाए पांच भरतमां अने उत्तर दिशाए पांच ऐरावत क्षेत्रमां अल्प मनुष्यो सिद्ध थाय छे. कारण के क्षेत्र अल्प छे. अने सुषमसुषमादि काळमां तो सिद्धिनो अभाव छे माटे ते क्षेत्रमांथी सिद्ध थयेला सौथी थोडा छे. तेथी पूर्व दिशाए संख्यातगुणा छे, कारण के भरत अने ऐरावत क्षेत्र करतां पूर्व महाविदेह क्षेत्र संख्यातगुण छे, तेथी तेमां रहेला मनुष्यो पण संख्यातगुणा छे अने तेओ सर्व काळे सिद्ध थाय छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के अधोलौकिक गामोमां मनुष्यनी अधिक संख्या छे.

मपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा लंतए कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं अ-

उत्तर दिशाए छे. अने तेथी दक्षिण दिशाए असंख्यातगुणा छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो लांतक कल्पमां पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशाए छे अने तेथी दक्षिणमां असंख्यातगुणा छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो महाशुक्र कल्पमां पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशाए छे, अने तेथी दक्षिण दिशाए असंख्यातगुणा छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो सहस्रार कल्पमां पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशाए छे अने तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. त्यार पछी हे आयुष्मान् श्रमण ! बहु समानपणे–

दिशाए छे, कारण के जे आवलिकाप्रविष्ट विमानो छे ते चारे दिशामां सरखा छे, जे पुष्पावकीर्ण विमानो छे तेमां घणां असंख्याता योजनना विस्तारवाळा छे अने ते दक्षिण अने उत्तर दिशामां छे, बीजी दिशामां नथी, माटे सौथी थोडा वैमानिक देवो पूर्व अने पश्चिम दिशामां छे, तेथी उत्तर दिशामां असंख्यातगुणा छे, कारण के त्यां पुष्पावकीर्ण विमानो घणां छे अने ते असंख्याता योजनना विस्तारवाळा छे तेथी दक्षिण दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के कृष्णपाक्षिको घणे भागे त्यां उत्पन्न थाय छे एम ईशान, सनत्कुमार अने माहेन्द्र कल्पना सूत्रो सबंधे विचार करवो ब्रह्मलोक कल्पमां सौथी थोडा, पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशाए देवो छे, कारण के घणा कृष्णपाक्षिक तिर्यंचो दक्षिण दिशामां उत्पन्न थाय छे, शुक्लपाक्षिको थोडा छे माटे पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशामां देवो सौथी थोडा छे तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे केमके घणा कृष्णपाक्षिको दक्षिण दिशामां उत्पन्न थाय छे ए प्रमाणे लांतक, शुक्र अने सहस्रारकल्पना सूत्रोनो पण विचार करवो आनतादि कल्पमां मनुष्योज उत्पन्न थाय छे, तेथी त्यांथी आरंभी प्रत्येक कल्पमां,

असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणे कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमेण, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारे कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थो देवा बंभलोए कप्पे पुरच्छि-

पश्चिम दिशाए छे, तेथी उत्तरमां असंख्यातगुणा छे अने तेथी दक्षिणमां विशेपाधिक छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो ईशान कल्पमां पूर्व अने पश्चिम दिशाए छे, तेथी उत्तरमां असंख्यातगुणा छे अने तेथी दक्षिणमां विशेपाधिक छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो सनत्कुमार कल्पमां पूर्व अने पश्चिम दिशाए छे, तेथी उत्तर दिशाए असंख्यातगुणा छे, अने तेथी दक्षिण दिशामां विशेपाधिक छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो माहेन्द्र कल्पमां पूर्व अने पश्चिम दिशाए छे, तेथी उत्तरमां असंख्यातगुणा छे अने तेथी दक्षिणमां विशेपाधिक छे. दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा देवो ब्रह्मलोक कल्पमां पूर्व, पश्चिम अने

त्यां घणा वधारे नगरो छे. सौथी थोडा ज्योतिष्को पूर्व अने पश्चिम दिशामां छे, कारण के चंद्र-सूर्यना उद्याननना जेवा द्वीपोमां थोडाज ज्योतिपिको होय छे, तेथी दक्षिण दिशामां विशेपाधिक छे, कारण के त्यां घणा विमानो छे अने कृष्णपाक्षिको दक्षिण दिशामां उत्पन्न थाय छे. तेथी पण उत्तर दिशामां विशेपाधिक छे, कारण के मानस सरोवरमां क्रिडानुं स्थान छे एम समजी क्रीडा करवामां प्रवृत्तिवाळा घणा ज्योतिपिक देवो हमेशां रहे छे. वळी मानस सरोवरमां जे मत्स्यादि जलचरो छे ते नजीकमां रहेला विमानोना दर्शनथी तेने जातिस्मरण थाय छे अने कंइक मतनो अंगीकार करी, अनशनादि करीने नियाणुं करी ज्योतिष्कमां उत्पन्न थाय छे. तेथी दक्षिण दिशाना ज्योतिपिको करतां उत्तर दिशाना ज्योतिपिको विशेपाधिक छे. सौधर्म कल्पमां वैमानिक देवो सौथी थोडा पूर्व अने पश्चिम

७ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा पुरच्छिमेणं, पच्चत्थिमेण विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चत्थिमेण, उत्तरेणं

७. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा भवनवासी देवो पूर्वमा अने पश्चिममां छे, तेथी उत्तरमा असंख्यातगुणा छे, अने तेथी दक्षिणमा असंख्यातगुणा छे. दिशाने आश्रयी सौथी थोडा व्यंतर देवो पूर्वमा छे, तेथी पश्चिममां विशेषाधिक छे, तेथी उत्तरमा विशेषाधिक छे अने तेथी दक्षिणमा विशेषाधिक छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा ज्योतिष्क देवो पूर्व अने पश्चिममां छे, तेथी दक्षिणमा विशेषाधिक छे, अने तेथी उत्तरमा विशेषाधिक छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा देवो सौधर्म कल्पमां पूर्व अने

७ 'दिसाणुवाएण सव्वथोवा भवणवासी' इत्यादि दिशानी अपेक्षाए सौथी थोडा भवनवासी पूर्व अने पश्चिम दिशामा छे, कारण के त्यां थोडा भवनो छे तेथी उत्तर दिशामा असंख्यातगुणा छे, कारण के भवनवासी देवोनु पोतानु स्थान होवाथी त्या घणा भवनो छे तेथी दक्षिण दिशामा असंख्यातगुणा छे, कारण के त्या भवनो घणा वधारे छे ते आ प्रमाणे—प्रत्येक निकाये चार चार लाख भवनो अधिक छे अने त्या घणा कृष्णपाक्षिको उत्पन्न थाय छे, ते माटे असंख्यातगुणा छे व्यन्तर सूत्रने विषे आ विचार छे—ज्या पोलाण भाग छे त्या व्यन्तरो चाले छे, ज्या घन भाग छे त्या चालता नथी, तेथी पूर्व दिशामा घन—नक्कर भाग होवाथी व्यन्तरो थोडा छे, तेथी पश्चिम दिशामा विशेषाधिक छे, केमके अधोलौकिक ग्रामोने विषे पोलाण भागनो संभव छे तेथी पण उत्तर दिशामा विशेषाधिक छे, कारण के त्या पोतानु स्थान होवाथी व्यन्तरोना नगरावासो छे तेथी पण दक्षिण दिशामा विशेषाधिक छे कारण के

५. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ।

६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ।

५. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको पश्चिम दिशामां छे, तेथी पूर्वमां विशेपाधिक, तेथी दक्षिणमां विशेपाधिक, अने तेथी उत्तरमां विशेपाधिक होय छे.

६. दिशाने अनुसरीने सौथी थोडा मनुष्यो दक्षिण अने उत्तर दिशाए छे, तेथी पूर्वमां असंख्यातगुणा छे अने पश्चिममां विशेपाधिक छे.

फंइक दीन, दीनतरादि पापकर्म करनारा घणा छे, माटे सातमी पृथिवीना दक्षिण दिशाना नैरयिकोथी छट्टी पृथिवीना पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशाना नैरयिको असंख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे उत्तरोत्तर पृथिवीने आश्रयी विचार करवो. तेथी तेज छट्टी नरकपृथिवीना दक्षिण दिशाना नारको असंख्यातगुणा छे. तेनी युक्ति पूर्वे कही छे. तेथी धूमप्रभा नामे पांचमी नरकपृथिवीना पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशाना नारको असंख्यातगुणा छे, तेथी तेज पांचमी नरकपृथिवीना दक्षिण दिशाना नारको असंख्यातगुणा छे. एम सर्व नरकपृथिवी संबन्धे अनुक्रमे कहेवुं.

५. तिर्यंच पंचेन्द्रिय सूत्र अप्कायिक सूत्रनी पेठे जाणवुं.

६. सौथी थोडा मनुष्यो दक्षिण अने उत्तर दिशामां छे. कारण के पांच भरत अने पांच ऐरावत क्षेत्र नानां छे. तेथी पूर्व दिशामां संख्यातगुणा छे, कारण के ते क्षेत्र संख्यातगणुं मोटुं छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेपाधिक छे, कारण के स्वाभाविक रीते अधोलौकिक ग्रामोने विषे मनुष्योनी संख्या घणी छे.

पुढवीनेरइएहिंतो दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ।

दक्षिण दिशामा असंख्यातगुणा छे दक्षिण दिशाना शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी आ रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामां असंख्यात गुणा छे. तेथी दक्षिणदिशामा असंख्यातगुणा छे.

" पायमिह कूरकम्मा भवसिद्धिया वि दाहिणिल्लेसु । नेरइयतिरियमणुयासुरट्ठाणेसु गच्छन्ति " ॥

प्रायः क्रूरकर्मवाळा जीवो भव्य छता पण दक्षिण दिशामा नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य अने असुरादि स्थानकोमा जाय छे तेथी दक्षिण दिशामा घणा कृष्णपाक्षिक जीवोनी उत्पत्तिनो संभव होवाथी, अने पूर्वे कहेला बन्ने कारणोथी (दक्षिण दिशामा घणा नरकावासो होवाथी अने तेमां घणा नरकावासो असंख्याता योजनना विस्तारवाळा होवाथी) पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशामा रहेला नैरयिको असंख्यातगुणा छे जेम सामान्यतः नैरयिकोनु दिशाने आश्रयी अल्पबहुत्व कह्यु, तेवी रीते रत्नप्रभादि दरेक नरकपृथिवीना नैरयिकोनु कहेवु, कारण के बधे युक्तिनी समानता छे ए प्रमाणे दरेक पृथिवीनु दिशानी अपेक्षाए अल्पबहुत्व कह्यु हवे साते नरक पृथिवीओनु दिशाने आश्रयी अल्पबहुत्व कहे छे—सातमी नरकपृथिवीमा पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशाना नैरयिकोथी सातमी नरकपृथिवीना दक्षिण दिशाना नैरयिको असंख्यात गुणा छे, तेथी तमःप्रभा नामे छट्ठी पृथिवीना पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशामा असंख्यात गुणा छे कारण के अहीं सर्वोत्कृष्ट पाप करनारा संज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो सातमी नरकपृथिवीमा उत्पन्न थाय छे अने तेथी हीन अधिक हीन पापकर्म करनार छट्ठी वगेरे नरकपृथिवीमा उत्पन्न थाय छे सर्वोत्कृष्ट पाप करनार सौथी थोडा छे, अने क्रमशः

ढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो तमाए पुढवीनेरइएहिंतो पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढवीनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढवीनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभा-

नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामां असंख्यातगुणा छे. तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. दक्षिण दिशाना वालुका प्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी बीजी शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामां असंख्यात गुणा छे, तेथी

कृष्णपाक्षिक. कह्युं छे के—

"जेसि अवड्ढो पुग्गलपरियट्टो सेसओ य संसारो । ते सुक्कपक्खिया खलु अहिए पुण कण्हपक्खी उ" ॥

जेओने अपार्ध-कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त संसार बाकी होय ते शुक्लपाक्षिक अने अधिक संसार बाकी होय ते कृष्णपाक्षिक. पथी शुक्लपाक्षिको थोडा छे, कारण के अल्पसंसारी थोडा होय छे. घणा कृष्णपाक्षिको छे, केमके अधिक संसारी घणा होय छे. कृष्णपाक्षिको घणा तथास्वभावथी दक्षिण दिशामां उत्पन्न थाय छे. बाकीनी दिशामां उत्पन्न थता नथी. तेना तथास्वभावने पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे युक्तिवडे पुष्ट कर्यो छे. ते आ प्रमाणे-कृष्णपाक्षिको दीर्घ संसारवाळा होय छे, दीर्घसंसारी घणा पापना उदयथी थाय छे, बहु पापना उदयवाळा क्रूरकर्मवाळा होय छे, अने क्रूरकर्मवाळा प्रायः तथास्वभावथी तद्भवमोक्षगामी छतां दक्षिण दिशामां उत्पन्न थाय छे, बीजी दिशामां उत्पन्न थता नथी. ए संबंधे कह्युं छे के–

घा सक्करप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वालुयप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेण, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पहापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेहिंतो अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो छट्टीए तमाए पु-

शर्कराप्रभादि पथी नरकपृथिवीमा जाणवु]. दक्षिणना अधःसप्तम नरकपृथिवीना नैरयिकोथी छट्ठी तमःप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामा असंख्यातगुणा छे, तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. दक्षिण दिशाना तमःप्रभापृथिवीना नैरयिकोथी पांचमी धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामां असंख्यातगुणा छे, तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. दक्षिण दिशाना धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी चोथी पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तर दिशामां असंख्यातगुणा छे. तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. दक्षिणना पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी त्रीजी वालुकाप्रभाना

अल्प छे, अने प्राय' घणा संख्याता योजन विस्तारवाळा छे तेथी दक्षिण दिशामा रहेला नैरयिको असंख्यातगुणा छे कारण के कृष्णपाक्षिक जीवो घणा दक्षिण दिशामा उत्पन्न थाय छे ते आ प्रमाणे—जीवो बे प्रकारना छे-कृष्णपाक्षिक अने शुक्लपाक्षिक तेनु आ लक्षण छे-जेओने कइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त संसार बाकी छे ते शुक्लपाक्षिक अने तेथी अधिक संसार जेओने छे ते

४. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थो-

४. दिशाने अनुसरीने सौथी थोडा नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तरमां छे अने दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको पूर्व, पश्चिम अने उत्तरमां छे, अने दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे [एम

ज्यां थोडा मनुष्यो छे त्यां तेजस्कायिको थोडा होय छे. तेमां दक्षिण दिशामां पांच भरतमां अने उत्तर दिशामां पांच ऐरावतमां क्षेत्र थोडुं होवाथी थोडा मनुष्यो छे, अने तेओ थोडा होवाथी तेजस्कायिको पण थोडा छे. कारण के त्यां अल्प रांधवा वगेरे क्रियानो संभव छे. तेथी सौथी थोडा दक्षिण अने उत्तर दिशामां तेजस्कायिको छे, अने स्वस्थाननी अपेक्षाए प्रायः परस्पर सरखा छे. तेथी पूर्व दिशामां संख्यातगुणा छे, केमके क्षेत्र संख्यातगणुं छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के अधोलौकिक ग्रामोमां घणा मनुष्यो छे. अहीं ज्यां पोलाण छे त्यां वायु होय छे अने ज्यां घन-नक्कर भाग छे त्यां वायुनो अभाव छे. तेमां पूर्व दिशामां पुष्कळ घन भाग छे, माटे त्यां थोडा वायु होय छे, तेथी पश्चिम दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के त्यां अधोलौकिक ग्रामनो सम्भव छे. तेथी उत्तर दिशामां विशेषाधिक छे, कारण के त्यां भवन अने नरकावास घणा होवाथी अधिक पोलाण छे. तेथी पण दक्षिण दिशामां विशेषाधिक छे. केमके उत्तर दिशा करतां दक्षिण दिशामां घणा भवनो अने नरकावासो छे. ज्यां घणुं पाणी छे त्यां पनक वगेरे घणी अनन्तकायिक वनस्पतिओ होय छे, शंख वगेरे बेइन्द्रिय जीवो घणा होय छे, पिंडरूप थयेला सेवालादिने आश्रयी रहेला कुंथु वगेरे तेइन्द्रिय जीवो घणा होय छे, पद्म वगेरेने आश्रित भ्रमर वगेरे चउरिन्द्रिय जीवो घणा होय छे माटे वनस्पतिकायिकथी मांडी चउरिन्द्रिय सुधीना सूत्रो अप्कायिक सूत्रनी पेठे विचारवां.

४. नैरयिक सूत्रमां सौथी थोडा नैरयिको पूर्व, उत्तर अने पश्चिम दिशाए होय छे, कारण के त्यां पुष्पावकीर्ण नरकावासो

३. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दक्खिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पचत्थिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया पचत्थिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया।

३. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा बेइन्द्रियो पश्चिम दिशामां छे, पूर्वमां विशेषाधिक छे, दक्षिणमां विशेषाधिक छे अने उत्तरमां विशेषाधिक छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा तेइन्द्रियो पश्चिम दिशामां होय छे, पूर्वमां विशेषाधिक, दक्षिणमां विशेषाधिक अने उत्तरमां विशेषाधिक होय छे. दिशाने अनुसरीने सौथी थोडा चउरिन्द्रियो पश्चिम दिशामां छे, पूर्वमां विशेषाधिक, दक्षिणमां विशेषाधिक अने उत्तरमां विशेषाधिक छे.

वगेरेनो समव होवाथी समान छे, माटे अधोलौकिक ग्रामोना खाली भागमां कल्पनाथी गौतम द्वीप नाखीए तो पण ते अधिक ज थाय, तुल्य न थाय, माटे तेटला अधिक अश वडे पश्चिम दिशामां पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे

एम दिशानी अपेक्षाए पृथिवीकायिकोनु अल्पबहुत्व कह्यु हवे अप्कायिकोनु अल्पबहुत्व कहे छे-सौथी थोडा अप्कायिको पश्चिम दिशामा छे कारण के गौतम द्वीपना स्थाने अप्कायिको नथी तेथी विशेषाधिक पूर्व दिशामा छे, कारण के त्या गौतम द्वीप नथी तेथी पण विशेषाधिक दक्षिण दिशामा छे, कारण के त्या चन्द्र अने सूर्यना द्वीपो नथी, तेथी पण उत्तर दिशामा विशेषाधिक छे, कारण के त्या मानस सरोवर छे दक्षिण दिशा अने उत्तर दिशामा सौथी थोडा तेजस्कायिको छे, कारण के मनुष्यक्षेत्रमा ज बादर तेजस्कायिको छे, बीजे स्थळे नथी तेमा पण ज्या घणा मनुष्य छे त्या घणा तेजस्कायिको होय छे कारण के त्या विशेषतः रांधवा वगेरे क्रियानो समव छे

हिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइक्काइया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया।

सरीने सौथी थोडा वायुकायिक जीवो पूर्व दिशामां छे, पश्चिम दिशामां विशेपाधिक छे, उत्तर दिशामां विशेपाधिक छे अने दक्षिण दिशामां विशेपाधिक छे. दिशाने अनुसरीने सौथी थोडा वनस्पतिकायिको पश्चिम दिशामां छे, पूर्व दिशामां विशेपाधिक, दक्षिण दिशामां विशेपाधिक अने उत्तर दिशामां विशेपाधिक होय छे.

के जेटला सूर्य अने चन्द्रना द्वीपो पूर्व दिशामां छे तेटला ज पश्चिममां पण छे, परन्तु एटला मात्रथी तेनी समानता नथी, पण लवण समुद्रमां पश्चिम दिशाए गौतम नामे द्वीप अधिक छे, तेथी पश्चिम दिशामां विशेपाधिक छे.

(प्र०)—पश्चिम दिशामां जेम गौतम नामे द्वीप अधिक छे, तेम पश्चिममां हजार योजन उंडां अधोलौकिक ग्रामो पण छे, तेथी 'खातपूरित' न्यायवडे त्यां तुल्यज पृथिवीकायिको प्राप्त थाय, पण विशेपाधिक प्राप्त न होय'. (उ०)—एम नथी. कारण के अधोलौकिक ग्रामनुं उंडाण हजार योजन छे अने गौतम द्वीपनी उंचाइ एक हजार ने छोंतेर योजन छे, तेनो विस्तार बार हजार योजन छे. मेरुथी आरंभी अधोलौकिक ग्रामोनी पूर्वदिशामां जे नजीकमां हीनपणुं, अधिक होनपणुं छे ते पूर्व दिशामां पण पुष्कळ गर्ता-खाडा

१. लवणसमुद्रमां पश्चिम दिशाए गौतम द्वीप छे तेथी त्यां पृथिवीकायिको विशेषाधिक छे. परन्तु पश्चिममां ज हजार योजन उंडा अधोलौकिक ग्रामो छे, अने तेथी त्यां पोलाण भाग वधारे होवाथी जेटला गौतम द्वीपना अंगे पृथिवीकायिको वध्या हता, तेटला अधोलौकिक ग्रामोने लीधे घट्या तेथी खातपूरित न्याय वडे जेटलो विशेषाधिकतारूप खाडो पड्यो तेटलो पूराइ गयो एटले पूर्व दिशा करतां पश्चिममां शी रीते विशेषाधिक थाय ? ए पूर्वपक्षनो तात्पर्य छे.

२ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविक्काइया दाहिणेणं, उत्तरेणं विसेसाहिया, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, पच्छिमेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउक्काइया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तेउक्काइया दाहिणुत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा, पच्छिमेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउक्काइया पुरच्छिमेण, पच्छिमेण विसेसा-

---

२. दिशानी अपेक्षाए दक्षिण दिशामां सौथी थोडा पृथिवीकायिको छे, तेथी उत्तर दिशामा विशेषाधिक छे, तेथी पूर्व दिशामां विशेषाधिक छे, अने तेथी पश्चिम दिशामा विशेषाधिक होय छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा अप्कायिको पश्चिम दिशामा छे, तेथी पूर्वमा विशेषाधिक, तेथी दक्षिणमां विशेषाधिक अने तेथी उत्तरमां विशेषाधिक होय छे. दिशाने अनुसरी सौथी थोडा तेजस्कायिको दक्षिण अने उत्तर दिशामां होय छे, तेथी पूर्व दिशामा सख्यातगुणा छे अने तेथी पश्चिम दिशामा विशेषाधिक छे. दिशाने अनु-

---

२-१ हवे विशेषपणे जीवोनु अल्पबहुत्व कहे छे 'दिगनुपातेन'-दिशाने अनुसारे पृथिवीकायिकोनो विचार करता सौथी थोडा पृथिवीकायिको दक्षिण दिशामा छे कारण के ज्या घन-नक्कर भाग छे त्या घणा पृथिवीकायिको होय छे, ज्या सुषिर—पोलाण छे त्या थोडा होय छे दक्षिण दिशामा भवनपतिना घणा भवनो अने घणा नरकावासो छे तेथी घणा पोलाण भागनो समव छे, माटे दक्षिण दिशामा सौथी थोडा पृथिवीकायिको छे तेथी उत्तर दिशामा विशेषाधिक छे, कारण के उत्तर दिशामा दक्षिण दिशा करता थोडा भवनो अने थोडा नरकावासो छे, तेथी अधिक घन भागनो समव होवाथी घणा पृथिवीकायिको छे माटे विशेषाधिक कह्या छे तेथी पण पूर्व दिशामा विशेषाधिक छे, केमके त्या चन्द्र-सूर्यना द्वीपो आवेला छे तेथी पण पश्चिम दिशामा विशेषाधिक छे, कारण

आ संबंधे अनुयोग द्वारमां कह्युं छे के-'ते णं वालग्गा सुहुमपणगजीवस्स ओगणाहितो असंखेज्जगुणा' ते वाळना अग्रभागो सूक्ष्म पनक जीवना शरीरनी अवगाहनाथी असंख्यातगुणा छे. माटे ज्यां पण ए देखाता नथी त्यां पण छे एम मानवुं जोइए. आ संबंधे मूल टीकाकार कहे छे के "आ विश्वमां सर्व जीवोथी घणा वनस्पतिकायिको छे, ए हेतुथी तेओ ज्यां होय छे त्यां घणा जीवो होय छे. छे. 'ज्यां अप्काय छे त्यां अवश्य वनस्पतिकायिको होय'.छे. ए हेतुथी वनस्पतिकायिकोनुं बहुपणुं छे. पाणीमां पनक सेवाल हढ वगेरे बादर वनस्पति जीवो पण होय छे, परंतु तेओ सूक्ष्म अवगाहनावाळा अने आज्ञाग्राह्य छे, चक्षुग्राह्य नथी.' पुष्कळ पाणी समुद्रादिमां होय छे, कारण के द्वीपथी समुद्रनो बमणो विस्तार छे. ते समुद्रोमां पण प्रत्येक पूर्व अने पश्चिम दिशाए अनुक्रमे चन्द्र अने सूर्यना द्वीपो छे. जेटला भागमां चंद्र-सूर्यना द्वीपो रहेला छे तेटला भागमां पाणीनो अभाव होय छे, अने पाणीना अभावथी वनस्पतिनो पण अभाव होय छे. केवळ पश्चिम दिशामां लवण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवनो आवास गौतम नामनो द्वीप लवणसमुद्रमां अधिक छे अने त्यां पाणीना अभावथी वनस्पतिकायिकोनो अभाव छे, माटे सर्वथी थोडा वनस्पतिकायिको पश्चिम दिशामां छे. तेनाथी पूर्व दिशामां विशेपाधिक छे, केमके त्या गौतम द्वीप नथी तेथी तेटला अंशे अधिक जीवो होय छे. तेथी दक्षिण दिशामां विशेपाधिक छे, केमके त्यां चन्द्रसूर्यना द्वीपो नथी, अने ते नहि होवाथी पुष्कळ पाणी होय छे. पाणीनी पुष्कळताथी वनस्पतिकायिको पण घणा होय छे, माटे विशेपाधिक छे. तेथी उत्तरदिशामां विशेपाधिक जीवो छे. शा कारणथी छे? तेनो उत्तर ए छे के, उत्तर दिशाए संख्याता योजन प्रमाणवाळा द्वीपोमांना कोई द्वीपमां लंबाइ अने पहोळाइ वडे संख्याता क्रोड योजन प्रमाण मानस सरोवर होय छे, तेथी दक्षिण दिशानी अपेक्षाए उत्तर दिशामां घणुं पाणी छे अने घणुं पाणी होवाथी घणा वनस्पतिकायिको होय छे, पुष्कळ शंख वगेरे बेइन्द्रियो होय छे, तटपर पडेला शंखादिना कलेवरने आश्रयी कीडी वगेरे घणा तेइन्द्रियो होय छे, पद्म वगेरेमां घणा भ्रमरादि चउरिन्द्रियो होय छे अने घणा मत्स्य वगेरे पंचेन्द्रियो पण होय छे. माटे उत्तर दिशामां विशेपाधिक जीवो कह्या छे. एम दिशाने अनुसरी सामान्यतः जीवोनुं अल्पबहुत्व कह्युं.

१. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया।

१ दिशाद्वार.

१. दिशाने अनुसरी सर्वथी थोडा जीवो पश्चिम दिशामां छे, पूर्वमां विशेषाधिक छे, तेथी दक्षिणमां विशेषाधिक छे अने तेथी उत्तर दिशामा विशेषाधिक छे.

---

१ तेमा प्रथम दिशाद्वार कहे छे—अहीं प्रथम आचारांग सूत्रमां दिशाना अनेक प्रकारो वर्णव्या छे तेमा अहीं क्षेत्रदिशा ग्रहण करवी, कारण के ते नियत छे बीजी दिशाओ न ग्रहण करवी, कारण के ते अनवस्थित अने अनुपयोगी छे क्षेत्रदिशानु उत्पत्ति स्थान तिर्यग् लोकना मध्य भागमा रहेला आठ रुचक प्रदेशो छे कह्यु छे के—तिर्यग् लोकना मध्यभागमा आठ प्रदेशरूप रुचक छे अने ते दिशा अने विदिशानु उत्पत्तिस्थान छे 'दिसाणुवाएण' दिशाओना अनुपात-अनुसरण, अपेक्षा, एटले दिशाओनी अपेक्षाए सर्वथी थोडा जीवो 'पच्छिमेन' पश्चिम दिशामा छे केवी रीते छे? ए प्रश्ननो उत्तर आपे छे- आ अल्पबहुत्व बादर जीवोनी अपेक्षाए समजवु परन्तु सूक्ष्म जीवोने आश्रयी न जाणवु, कारण के सूक्ष्म जीवो सर्व लोकमा व्याप्त अने प्रायः बधा स्थळे सरखा छे बादर जीवोमा पण सर्वथी घणा जीवो वनस्पतिकायिको छे, केमके ते जीवो हमेशा अनन्त सख्यारूपे होय छे माटे वनस्पति कायिको घणा होय त्या घणा जीवो होय छे, ज्या अल्प वनस्पतिकायिको होय त्या अल्प जीवो होय छे ज्या पुष्कळ पाणी होय त्या घणा वनस्पतिकायिको होय छे कारण के 'जत्थ जल तत्थ वण' ज्या जल होय त्या वनस्पतिकाय होय छे-एवु शास्त्र वचन छे; तेथी पाणीमा पनक-(पाच वर्णनी फुग) अने सेवालादि अवश्य होय छे ते पनक अने सेवालादि बादर नामकर्मना उदयवाळा छे तोपण अत्यन्त सूक्ष्म अवगाहनावाळा होवाथी अने घणा जीवोना पिंडरूप होवाथी बधे होवा छता पण चर्मचक्षुथी देखी शकाता नथी

तइयं अप्पावहुयं पयं ।

दिसि-गइ-इंदिय-काए जोए वेए कसाय-लेसा य । सम्मत्त-नाण-दंसण-संजय-उवओग-आहारे ॥१॥
भासग-परित्त-पज्जत्त-सुहुम-सन्नी भवऽत्थिए चरिमे । जीवे य खित्त-बन्धे पुग्गल-महदंडए चेव ॥ २ ॥

त्रीजुं अल्पबहुत्व पद.

(१) दिशा, (२) गति, (३) इन्द्रिय, (४) काय, (५) योग, (६) वेद, (७) कषाय, (८) लेश्या, (९) सम्यक्त्व, (१०) ज्ञान, (११) दर्शन, (१२) संयत, (१३) उपयोग, (१४) आहार, (१५) भाषक, (१६) परीत्त-प्रत्येकशरीरी अने शुक्लपाक्षिक, (१७) पर्याप्त, (१८) सूक्ष्म, (१९) संज्ञी, (२०) भव-भवसिद्धिक, (२१) अस्तिकाय, (२२) चरम, (२३) जीव, (२४) क्षेत्र, (२५) बन्ध, (२६) पुद्गल, (२७) महादंडक-एम त्रीजा पदमां सत्यावीश द्वारो छे.

बीजा स्थानपदनी व्याख्या करी, हवे त्रीजा अल्पबहुत्वपदनी व्याख्यानो प्रारंभ करीए छीए. तेनो पूर्वना पद साथे संबंध आ प्रमाणे छे—अहीं पहेला पदमां पृथिवीकायिकादि जीवोनुं स्वरूप कह्युं, बीजा पदमां ते ज जीवोनो स्वस्थानादि वडे विचार कर्यो अने आ पदमां दिशाना विभागादिवडे तेओनुं अल्पबहुत्व कहेवानुं छे. तेमां प्रारंभमां द्वार प्रतिपादक बे संग्रहगाथाओ छे. तेमां दिशाद्वारथी आरंभी महादंडक पर्यंत सत्यावीश द्वारोनुं कथन छे. तेमां 'परित्त' इति. सोळमा परित्तद्वारमां परित्त-प्रत्येकशरीरी अने शुक्लपाक्षिको कह्या छे. कारण के परित्त बे प्रकारे छे-कायपरित्त अने भवपरित्त. कायपरित्त-प्रत्येकशरीरवाळा अने भवपरित्त-शुक्लपाक्षिको.

छे यथा, पथी ज 'अजराः' शरीरना अभावथी जरा रहित, 'अमराः' मरण रहित, कारण के शरीररहित होवाथी तेने प्राणना त्यागरूप मरणनो असंभव छे कह्यु छे के–'वयनी हानि थवी ते जरा अने प्राणोनो त्याग थवो ते मरण ते बन्ने शरीरना सद्भावमां होय छे, शरीरना अभावमा जरा अने मरण आकाशनी पेठे होता नथी वळी तेओ 'असङ्गाः' सङ्गरहित छे, कारण के बाह्य अने अभ्यन्तर परिग्रहरहित छे

'निच्छिन्न' इत्यादि 'निस्तीर्णसर्वदु खा' सर्व दु खने तरी गयेला, 'जातिजरामरणबन्धनविमुक्ता'–जाति–जन्म, जरा–वयनी हानि, प्राणत्यागरूप मरण अने तेना बधाना कारणभूत बन्धन–कर्मोनो समग्रपणे नाश थयेलो होवाथी विशेषथी मुकायेला, जन्म, जरा, मरण अने बधनथी मुकायेला छे तेथी तेओ सर्वदु खो तरी गया छे, केमके दु खना कारणोनो अभाव छे अने तेथी ज सिद्धो अव्याबाध अने शाश्वत सुखनो अनुभव करे छे २०–२२

आचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकानुवादमां बीजु स्थानपद समाप्त



सिद्धत्ति य वुद्धत्ति य पारगयत्ति । य परंपरगयत्ति उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २१ ॥
निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का । अव्वाबाहं सोक्खं अणुहोंती सासयं सिद्धा ॥ २२ ॥

पन्नवणाए भगवइए वितीयं ठाणपयं समत्तं

सिद्ध, बुद्ध, पारगत, परंपरागत, जेणे कर्मरूप कवचनो त्याग कर्यो छे एवा, जरारहित, मरणरहित अने संगरहित छे. सर्वदुःखोने तरी गयेला, जन्म, जरा, मरणना बंधनथी मुकायेला सिद्धो शाश्वत काल पर्यन्त अव्याबाध सुखनो अनुभव करे छे. २१-२२.

प्रज्ञापना सूत्रमां बीजुं स्थानपद समाप्त.

अन्तने अथवा प्रयोजनना अन्तने गत-पामेला ते पारगत कहेवाय छे. तथाभव्यत्ववडे सूचित सकल प्रयोजननी समाप्ति वडे समग्र प्रकारनी कर्तव्यशक्तिथी रहित ते पारगत जाणवा. आवा प्रकारना छतां पण केटलाक यदृच्छावादीओ क्रम सिवाय सिद्धपणुं जणावे छे. कह्युं छे के-" एकादि संख्याना क्रमथी नहि, तेम धनप्राप्तिना नियोगथी नहि, परन्तु दरिद्रने राज्यप्राप्तिना जेवी मुक्ति क्वचित् केम न होय "? तेनो निषेध करवा माटे 'परंपरागताः' ए विशेषण आपेलुं छे. ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूप परंपराथी अथवा मिथ्यादृष्टि, सास्वादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति, अनिवृत्ति, सूक्ष्मसंपराय, उपशांतमोह, क्षीणमोह, सयोगी केवली अने अयोगी केवली-ए गुणस्थानकोनी परंपराथी मुक्तिने प्राप्त थयेला, आवा छतां पण केटलाक वादिओ 'तत्त्वथी कर्मरूप कवच-आवरणथी नहि मुकायेला' माने छे. केमके 'तीर्थनिकारदर्शनादिहागच्छति' तीर्थनो तिरस्कार जोवाथी अहीं आवे छे' आ वचनथी तेओ संसारमां अवतार धारण करवानो स्वीकार करे छे. ते मतनो निरास करवा 'उन्मुक्तकर्मकवचाः' कर्मरूप कवच-आवरण रहित-ए विशेषण आप्युं छे. उत्-प्रबलपणे-फरीथी संसारमां अवतार नहि धारण करवारूपे जेणे कर्मरूप कवच-आवरणनो त्याग कर्यो

इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ २० ॥

तेम सर्वकाल तृप्त थयेला अने अनुपम निर्वाणने प्राप्त थयेला सुखी सिद्धो अव्याबाधपणे शाश्वत काल सुधी रहे छे. २०.

छे केटलाक काळे तेने अरण्यनु स्मरण थयु, राजाए विसर्जन कर्यो अरण्यवासीओ पूछे छे के-'केवु नगर छे ?' ते जाणवा छता पण त्या कोइनी उपमा नहि होवाथी ते नगरना गुणोनु वर्णन करवा समर्थ नथी अर्थनो उपनय आ प्रमाणे छे-'इय सिद्धाण' इत्यादि ए प्रमाणे सिद्धोनु सुख अनुपम छे, कारण के तेनी उपमा नथी तोपण बाळजनोने ख्याल्मा आवे माटे कईक विशेषताथी आनु साद्दृश्य-सरखापणु कह्यु छे ते सामळो-'जह सव्व' इत्यादि 'यथा' उदाहरणनो उपन्यास करवा माटे छे जेम कोइपण पुरुष 'सर्वकामगुणित' सर्व कामना गुणयुक्त, सर्व प्रकारना सौन्दर्य वडे सस्कारवाळु भोजन खाइने क्षुधा अने तृषाथी रहित थयेलो अमृतथी तृप्त थयेलो होय तेम रहे छे, तेम निर्वाण-मोक्षने प्राप्त थयेला सिद्धो सर्वकाळ-सादि अनन्त काळ पर्यन्त तृप्त-सर्वप्रकारनी उत्सुकतानी निवृत्ति थवाथी परम सतोषने प्राप्त थयेला, उपमा नहि होवाथी अनन्यसदृश, पडवानो अभाव होवाथी शाश्वत, लेश पण व्याबाधा-पणानो असभव होवाथी अव्याबाध सुखने प्राप्त थयेला छे तेथी सुखयुक्त थइने रहे छे १७-२०

हवे विशेषपणे विचार करे छे-'सिद्धत्ति य' इत्यादि सित-बाधेला आठ प्रकारना कर्मने जेओए ध्मात-भस्मीभूत कर्या छे एटले अनेक भवना कर्मरूप इन्धनो बाळी नाख्या छे एवा सिद्धो छे सामान्य रीते कर्मादि सिद्धो पण कहेवाय छे कह्यु छे के-'कर्म, शिल्प, विद्या, मन्त्र, योग, आगम, अर्थ, यात्रा, अभिप्राय, तप अने कर्म क्षयने विषे सिद्ध शब्द छे" माटे कर्मादि सिद्धनो निषेध करवा माटे कहे छे-'बुद्धा'-जेओए अज्ञान निद्रामा सुतेला जगतमा बीजाना उपदेश सिवाय जीवादिरूप तत्त्वने जाणेल छे एवा, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी स्वभावरूप बोधवाळा, आवा छता पण 'ससार अने निर्वाण बन्ने छोडीने रहेला छे' एम कोइ माने छे-कह्यु छे के "जे ससार अने निर्वाणमा रहेल नथी, परन्तु दुनीयाना कल्याणने माटे, रहेल छे वळी सर्व लोकोने अचिन्त्य चिन्तामणि रत्न करता पण अधिक अने महान् छे " आथी तेवा सिद्धोनो व्यवच्छेद-निषेध करवा माटे 'पारगता' विशेषण आपेलु छे जेओ पार-ससारना

जह णाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुविहे वियाणंतो । न चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥ १७ ॥
इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं । किंचि विसेसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वोच्छं ॥१८॥
जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्ज जहा अमियतित्तो ॥१९॥

जेम कोइ मलेच्छ बहु प्रकारना नगरना गुणोने जाणतो त्यां उपमा नहि होवाथी कही शकतो नथी. एम सिद्धोनुं सुख अनुपम छे, तेनी उपमा नथी, तो पण कंइक विशेषताथी एनुं सादृश्य-सरखापणुं कहुं छुं ते सांभळो. जेम कोइ पुरुष सर्व कामना गुणवाळुं भोजन खाइने तृषा अने क्षुधाथी रहित थइ अमृतथी तृप्त थयेलो होय तेनी पेठे रहे (१७-१९).

छे. ते माटे एम कह्युं छे के-'सव्वागासे न माइज्जा'—सर्व आकाशमां न माय. तात्पर्य ए छे के-शिष्ट पुरुषो जेने सुख कहे छे ते सुखथी मांडी सुखनो एक एक अंश वधारतां जे छेवटनुं निरतिशय सुख होय छे त्यां सुधीना सुखना अंशो सर्व आकाश प्रदेशो करतां पण अधिक छे तेथी सर्व आकाशमां समाई शके नहि, जो एम न होय तो सर्व आकाशमां जे न माय ते एक एक सिद्धमां केम समाय? एवो पूर्वाचार्यनो संप्रदाय-परंपरा छे. १६.

हवे ते सिद्धोना सुखनी निरुपमता बतावे छे-'जहनाम' इत्यादि. जेम कोइ म्लेच्छ गृहनिवास वगेरे बहु प्रकारना नगरना गुणोने जाणवा छतां अरण्यमां जइ अन्य म्लेच्छोने कहेवा शक्तिमान् थतो नथी. केम कही शकतो नथी? ए प्रश्नना उत्तरमां जणावे छे 'उपमाना अभावथी'. ए गाथानो अक्षरार्थ छे. भावार्थ कथाथी जाणवो—"एक महा अरण्यवासी म्लेच्छ अरण्यमां रहे छे. एक समये अश्वथी हरण करायेलो एक राजा अटवीमां आव्यो. ते तेणे जोयो. सत्कार करी राजाने पोताना गाम लइ गयो. राजा पण तेने नगरमां लइ गयो अने 'उपकारी छे' एम समजी तेनुं अत्यन्त सन्मान कर्युं. ते धवल गृहादिनो उपभोग करवा वडे राजानी जेम रहे

सिद्धस्स सुहोरासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा । सोऽणंतवग्गभइओ सव्वागासे न माइज्जा ॥ १६ ॥

जो सिद्धना सुखनो राशि सर्वकालनो पिंडित—एकठो करेलो होय तेने अनन्त वर्गमूलोथी घटाडीए तो पण सर्व आकाशमां न माय. (१६).

असत्कल्पनाथी एक एक आकाशप्रदेश उपर स्थापन करीए, एम सकल आकाशना प्रदेशोने पूरवाथी जो के ते अनन्त थाय छे तो पण तेना अनन्ता वर्ग करीए, तोपण एटलुं वधवा छतां पण मुक्तिना सुखनी तुल्य न थाय १४-१५

एज बाबत अन्य भंगीथी जणावे छे—'सिद्धस्स सुहोरासी' इत्यादि सिद्धोना सुखनो राशि 'सर्वाद्धापिंडित' तेने सर्व सादि अनन्त काल वडे पिंडित करीए एटले सिद्ध जे सुख प्रतिसमय अनुभवे छे तेने बधुं एकत्र करीए अने तेने 'अनन्तवर्गमूलभक्त'—अनन्त वर्गमूलोथी घटाडता जईए अने त्यां सुधी घटाडीए के ज्यां सुधी सर्वकाल गुणक वडे गुणाकार करता जे अधिक थयेलुं छे ते सर्वने घटाडवाथी सिद्धपणाना प्रथम समयभावी सुख मात्र रहे, ते पण सर्व आकाशमां न माय एटले एटलुं सुख मात्र पण सर्व आकाशमां न समाई शके तो बधुं सुख समायुं तो दूर रह्युं' एम जणाववा माटे सिद्धना सुखनी राशिनो पिंड करी फरी अपवर्तन कर्युं—घटाड्युं अहीं आ भावार्थ छे—विशिष्ट आनन्दरूप सुख ग्रहण करवुं, के ज्याथी आरंभीने शिष्ट पुरुषो सुख शब्दनो प्रयोग करे छे, एटले शिष्ट पुरुषो जेने सुख कहे छे ते सुखथी मांडीने एक एक गुणनी वृद्धिना तारतम्यथी सुखने वधारता जवुं के ज्यां सुधी अनन्तगुण वृद्धि करवा वडे निरतिशय-जेनाथी बीजुं कोई चडीयातुं न होय एवुं छेवटनुं सुख प्राप्त थाय, एवुं अत्यन्त (शाश्वत) उपमारहित, एकान्त उत्सुकतानी निवृत्तिरूप अत्यन्त स्थिरतारूप छेल्ली कोटीनुं सुख होय ते सुख सर्वदा सिद्धोने होय छे, ते सुखथी मांडी अने प्रथमना सुखथी उपर वधे रहेल तारतम्यथी सुखना विशेषरूप गुणो-अंशो छे ते सर्वाकाश प्रदेशना करता पण घणा वधारे

सुरगणसुहं समत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं । नवि पावइ मुत्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥ १५ ॥

सर्वथा जुए छे. अव्याबाध स्वरूपने प्राप्त थयेला सिद्धोने जे सुख छे ते सुख मनुष्योने नथी, तेम सर्व देवोने पण नथी. (१२–१३).
सर्व देवोना समस्त सुखने सर्वकालना (अनन्त) समयवडे पिंडित करी तेने अनन्तगुण करी पुनः तेनो अनन्त वार वर्ग करीए तो पण सिद्धिसुखना तुल्य न थाय. (१४–१५).

ववा माटे छे. हवे सिद्धो 'केवलज्ञान अने केवल दर्शनवडे समग्र वस्तु ने जाणे छे' ए बतावे छे–'केवलज्ञानेनोपयुक्ताः' केवलज्ञान वडे उपयुक्त, परन्तु अन्तःकरण वडे नहि, कारण के तेमने अन्तःकरण होतुं नथी तेथी केवलज्ञानना उपयोगवाळा, 'सर्वभावगुणभावान्' सर्व पदार्थना गुण अने भाव–पर्यायोने जाणे छे. अहीं प्रथम भावशब्द पदार्थवाची छे अने बीजो भाव शब्द पर्यायवाची छे. गुणपर्यायनो आ प्रमाणे भेद छे–'सहवर्तिनो गुणाः' द्रव्यनी साथे रहेनारा धर्मो गुण अने 'क्रमवर्तिनः पर्यायाः' क्रमवर्ती–अनुक्रमे थवावाळा धर्मो पर्याय कहेवाय छे. तथा अनन्त केवलदृष्टिओ वडे–अनन्त केवल दर्शनो वडे 'सर्वतः खलु'–सर्वथा ज जुए छे. अहीं 'खलु' शब्द अवधारणार्थक छे. केवलदर्शननी अनन्तता अनन्त सिद्धो होवाथी जाणवी. अहीं प्रथम ज्ञाननुं ग्रहण 'प्रथम ज्ञानोपयोगमां रहेला सिद्ध थाय छे' ए जणाववा माटे छे.
हवे सिद्धो निरुपमसुखवाळा छे' ते बतावे छे—'नवि अत्थि' इत्यादि. मनुष्योने–चक्रवर्ती वगेरेने पण ते सुख नथी, अनुत्तर सुधीना सर्व देवोने पण ते सुख नथी, के अव्याबाधा–विविध प्रकारनी आबाधा–शारीरिकादि दुःखना अभावने प्राप्त थयेला सिद्धोने जे सुख छे. बीजाओने जेवी रीते सुख नथी ते प्रकारान्तरथी बतावे छे—'सुरगणसुहं' इत्यादि. देवगणनुं समस्त–अतीत अनागत अने वर्तमान काळनुं संपूर्ण सुख तेने 'सर्वाद्धापिण्डित' सर्वकाळना समयो वडे गुणीए अने तेने पुनः अनन्तगुण करीए अने जेटलुं थाय तेटलुं सुख

जेम के उष्णता ए अग्निनुं व्यावर्तक लक्षण छे. जे लक्ष्यथी इतर वस्तुनो भेद न जणावे, मात्र स्वरूप जणावे ते व्यावहारिक लक्षण. जेमके अभिधेयत्व–प्रमेयत्वादि पदार्थनुं लक्षण छे. ते पदार्थथी बीजी वस्तु नहि होवाना लीधे लक्ष्यथी बीजी वस्तुनो भेद जणावतुं नथी.

असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य नाणे य । सागारमणागार लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ १२ ॥
केवलनाणुवउत्ता जाणंता सव्वभावगुणभावे । पासंता सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिऽणंताहिं ॥ १३ ॥
नवि अत्थि माणुसाणं तं सुक्खं नवि य सव्वदेवाणं । जं सिद्धाणं सुक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं ॥ १४ ॥

शरीरातीत, आत्मप्रदेशोना घनवाळा, दर्शन अने ज्ञानना उपयोगवाळा सिद्धो छे, माटे साकार अने अनाकार उपयोग-ए सिद्धोनुं लक्षण छे. केवलज्ञानना उपयोगवाळा सिद्धो सर्व पदार्थना गुणो अने पर्यायोने सर्वथा जाणे छ अने अनन्त केवलदर्शन वडे

रहेला छे अने ते प्रदेशो असंख्याता छे कह्यु छे के "एक सिद्धना क्षेत्रमा अनन्ता सिद्धो रहेला छे अने प्रदेशनी वृद्धि अने हानि वडे जे सिद्धो रहेला छे ते तेना करता असंख्यातगुणा छे कारण के अवगाह क्षेत्र असंख्यातप्रदेशात्मक छे अने प्रतिप्रदेश अनन्त सिद्धो छे तेथी असंख्यातगुणा छे १०-११

हवे सिद्धोनु लक्षण जणावे छे-'असरीरा' इत्यादि सिद्धो अशरीर-औदारिकादि पांच प्रकारना शरीर रहित अने 'जीवघना' मुख अने पेट वगेरेना छिद्रो पूरवाथी आत्मप्रदेशोनो घन थाय छे, माटे आत्मप्रदेशना घनरूप थयेला 'उपयुक्ता दर्शने च ज्ञाने च' एटली केवळ दर्शन अने केवळ ज्ञानना उपयोगवाळा, जो के सिद्धपणाना आविर्भावना समये केवलज्ञान होय छे तेथी ज्ञान प्रधान छे तो पण आ सामान्य सिद्धनु आ लक्षण छे एम जणाववा माटे प्रथम सामान्य विषयक-सामान्यग्राहक दर्शन कह्यु सामान्यग्राहक दर्शन अने विशेषग्राहक ज्ञान कहेवाय छे माटे साकार अने अनाकार एटले सामान्य अने विशेष उपयोगरूप छे आ हमणा कहेलु ते तदन्यव्यावृत्तिस्वरूप-सिद्धोथी अन्य वस्तुनी व्यावृत्ति-भिन्नता रूप 'लक्षण समजवु अहीं 'तु' शब्द आगळनी गाथामा कहेवाशे एवा निरुपम सुखनी विशेषता बता

१ लक्षण—असाधारण धर्म, तेना बे प्रकार छे—व्यावर्तक अने व्यावहारिक जे लक्ष्यथी बीजी वस्तुनो भेद जणावे ते व्यावर्तक लक्षण

जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का । अन्नोऽन्नसमोगाढा पुट्ठा सव्वा वि लोगंते ॥१०॥
फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धा । तेऽवि य असंखिज्जगुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥११॥

ज्यां एक सिद्ध छे त्यां भवक्षयथी मुक्त थयेया अनन्त सिद्धो होय छे. ते परस्पर मळीने रहेला छे. बधाय लोकान्तवडे स्पर्श करायेला छे. सिद्धो पोताना सर्व आत्मप्रदेशो वडे अवश्य अनन्त सिद्धोनो स्पर्श करे छे. देश अने प्रदेशथी पण जे स्पर्श करायेला छे ते पण तेथी असंख्यातगुणा छे. (१०–११)

आ सिद्धो परस्पर भिन्न देशमां रहेला छे के नहि? ए प्रश्नना उत्तरमां भिन्न देशमां रहेला नथी एम अमे कहीए छीए. शा हेतुथी एम कहो छो? तेनो उत्तर आपे छे–'जत्थ य' इत्यादि. ज्यां एक सिद्ध निर्वाणने प्राप्त थयेल छे त्यां अनन्ता सिद्धो भवना क्षय वडे मुक्त थयेला छे. अहीं भवक्षयना कथन वडे स्वेच्छा वडे भवमां अवतारग्रहण करवानी शक्तिवाळा सिद्धनो निषेध कर्यो. 'अन्योऽन्यसमवगाढाः' ते सिद्धो परस्पर मळीने रहेला छे. कारण के धर्मास्तिकायादिनी पेठे तेनो तेवा प्रकारनो अचिन्त्य परिणाम छे. तेमज लोकना 'अन्ते स्पृष्टाः'–बधा स्पर्शीने रहेला छे. 'फुसइ' इत्यादि. एक सिद्ध अवश्य पोताना सर्व आत्म-प्रदेशो वडे अनन्त सिद्धोनो स्पर्श करे छे. सर्व प्रदेशो वडे स्पर्श करायेला सिद्धो करतां देश अने प्रदेशोथी स्पर्श करायेला सिद्धो असंख्यात गुणा छे. केवी रीते छे? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे–अहीं एक सिद्धनुं जेटलुं अवगाहना क्षेत्र छे तेटला परिपूर्ण एक क्षेत्रमां रहेला बीजा पण अनन्त सिद्धो होय छे अने ते सिवाय बीजा सिद्धो जेओ ते क्षेत्रना एक एक प्रदेशने स्पर्शीने रहेला छे ते पण प्रत्येक अनन्ता छे. एम बे, त्रण, चार अने पांच आदि प्रदेशोनी वृद्धि वडे स्पर्श करीने रहेला छे ते प्रत्येक अनन्ता छे, तेमज ते मूलक्षेत्रना एक एक प्रदेशने छोडीने जे सिद्धो रहेला छे ते पण प्रत्येक अनन्त छे. एम बे, त्रण, चार, पांच वगेरे प्रदेशोने छोडीने अवगाढ–रहेला छे ते पण प्रत्येक अनन्ता छे. एम प्रदेशनी वृद्धि अने हानि वडे जेओ रहेला छे ते सिध्धो परिपूर्ण एक क्षेत्रमां रहेला सिद्धो करतां असंख्यातगुणा छे. कारण के पूर्णावगाढ क्षेत्रना प्रतिप्रदेश अनन्त सिद्धो

सिद्धो थाय छे अहीं अवगाहनाना प्रमाणनो विचार कर्यो छे ते सामान्य सिद्धोनी अपेक्षाए छे माटे कदपण दोष नथी 'एगा य होइ' इत्यादि परिपूर्ण एक हाथ अने अधिक आठ आगळ ए सिद्धोनी जघन्य अवगाहना छे अने ते जघन्य अवगाहना बे हाथना प्रमाणवाळा कूर्मापुत्र वगेरेनी जाणवी अथवा सात हाथनी उंचाइवाळा छता पण यन्त्रनी अन्दर पीलवावडे सङ्कुचित शरीरवाळानी अपेक्षाए जघन्य अवगाहना जाणवी भाष्यकार कहे छे के-"पांचसो धनुष शरीरवाळानी उत्कृष्ट अवगाहना, सात हाथ प्रमाण शरीरवाळानी मध्यम अवगाहना अने बे हाथना शरीरवाळानी जघन्य अवगाहना शरीरना त्रीजा भाग न्यून जाणवी सात हाथ उंचाइवाळानी सिद्धि जघन्यथी कही छे, तो बे हाथ प्रमाणशरीरवाळानी केम थाय ? ते तीर्थंकरनी अपेक्षाए कही छे, बाकीना सिद्ध थता सामान्य केवलीनी अपेक्षाए बे हाथ प्रमाण शरीरवाळा कूर्मापुत्रादि जघन्यथी जाणवा' आ संबंधे अन्य आचार्यो कहे छे के-सङ्कुचित थयेला सात हाथना शरीरवाळा सिद्धनी अपेक्षाए जघन्य अवगाहना जाणवी ८

हवे कहेली बाबतने फरीथी कहेवा वडे सिद्धोना संस्थाननुं स्वरूप कहे छे-'ओगाहणाइ' इत्यादि-'अवगाहनया' शरीरनी अवगाहनानी अपेक्षाए सिद्धो 'त्र्यंशभागेन परिहीना' त्र्यंश-शरीरना त्रीजा भाग हीन होय छे, माटे सिद्धोनुं संस्थान 'अनित्थंस्थ'-इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं, आवा प्रकारे रहे ते इत्थंस्थ, तेवुं न होय ते अनित्थंस्थ-वदनादिना शुषिर-पोलाण भागने पूरवावडे पूर्वनो आकार अन्यथा थवाथी-अनियत आकारवाळु छे ए भावार्थ छे वळी जे सिद्धादिना गुणोना वर्णनमां 'सिद्धे न दीहे, न हस्से' सिद्ध दीर्घ नथी, तेम ह्रस्व नथी' इत्यादि सूत्र वडे दीर्घपणा वगेरेनो प्रतिषेध कर्यो छे ते पण पूर्वाकारनी अपेक्षाए संस्थाननुं जुदाए होवाथी जाणवो परन्तु संस्थानना सर्वथा अभावथी न समजवो आ संबंधे भाष्यकार कहे छे-"शुषिर-वदनादिना छिद्रोने पूरवावडे अने पूर्वनो आकार अन्यथा थवाथी सिद्धोनु संस्थान अनित्थंस्थ-अनियत आकारवाळु छे आ कारणथीज सिद्धादिना गुणमां दीर्घत्वादिनो प्रतिषेध कर्यो छे, कारण के अनित्थंस्थ-अनियताकारवाळु संस्थान पूर्वाकारनी अपेक्षाए छे, पण नथी आकारनो अभाव छे एम न समजवुं ९.

१ विशेषा० गा० ३१६८ २ विशेषा०गा० ३१६२

एगा य होइ रयणी अट्ठेव य अंगुलाइं साहिया। एसा खलु सिद्धाणं जहन्नओगाहणा भणिया ॥८॥
ओगाहणाइ सिद्धा भवत्तिभागेण होंति परिहीणा। संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥९॥

कही छे. (८) सिद्धो अवगाहनामां शरीरना त्रीजा भाग वडे हीन छे, माटे जरा अने मरणथी मुक्त थयेला सिद्धोनुं संस्थान-अनित्थंस्थ-अनियत प्रकारनुं होय छे. (९)

छे, तो तेना शरीरप्रमाणमांथी त्रीजो भाग बाद करीए तो मरुदेवीनी सिद्धावस्थानी अवगाहना साडा त्रणसो धनुष थाय, तो उपर कहेला प्रमाणवाळी उत्कृष्ट अवगाहना केम घटी शके? (उ०) तमे कहेलो दोष आवतो नथी, कारण के मरुदेवीनुं नाभिराजाथी कंइक न्यून प्रमाण हतुं. उत्तम संस्थानवाळा पुरुषोथी उत्तम संस्थानवाळी स्त्रीओ पोतपोताना काळनी अपेक्षाए कंइक न्यून प्रमाणवाळी होय छे. माटे मरुदेवीनुं पांचसो धनुषनुं शरीर होवाथी कंइपण दोष आवतो नथी. वळी मरुदेवी हाथी उपर बेठेला अने संकुचित शरीरवाळा सिद्ध थयेला छे, तेथी शरीरनो संकोच थयेलो होवाथी अधिक अवगाहनानो संभव नथी. माटे अहीं कोइपण प्रकारनो परस्पर विरोध आवतो नथी. भाष्यकार कहे छे के—'मरुदेवीनुं शरीरप्रमाण केम घटे? तेनुं शरीर नाभिराजाथी कंइक न्यून हतुं, माटे ते पांचसो धनुषवाळा ज छे. अथवा शरीरसंकोच थवाथी सिद्ध थयेल छे.' ६-७.

'चत्तारि रयणीओ' इत्यादि. चार हाथ अने त्रीजा भाग न्यून एक हाथ एटले चार हाथ अने सोळ आंगळ ए सिद्धोनी मध्यम अवगाहना छे.

(प्र०) आगममां जघन्यपदे सात हाथनी उंचाइवाळानी सिद्धि कही छे, तो उपर कहेली आ जघन्य अवगाहना कहेवाय, मध्यम अवगाहना केम कहेवाय? (उ०) तमारी शंका वस्तुतत्त्वना अज्ञानथी थयेली छे माटे अयुक्त छे. कारण के जघन्यपदे सात हाथ प्रमाण शरीरवाळानी सिद्धि कही छे ते तीर्थंकरनी अपेक्षाए छे. सामान्य केवली तो तेथी न्यून प्रमाणवाळा होय तोपण तेनी

तिन्नि सया तित्तीसा धणुत्तिभागो य होइ नायव्वो । एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥६॥
चत्तारि य रयणीओ रयणी तिभागूणिया य बोद्धव्वा । एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥७॥

त्रणसो तेत्रीश धनुष अने एक धनुषनो त्रीजो भाग-ए प्रमाणे सिद्धोनी उत्कृष्ट अवगाहना कही छे. (६) चार हाथ अधिक त्रीजाभाग न्यून एक हाथ-ए सिद्धोनी मध्यम अवगाहना कही छे. (७) एक हाथ अने अधिक आठ आंगुल-ए सिद्धोनी जघन्य अवगाहना

तेना छिद्रो पूरवाथी तेना त्रीजा भागवडे हीन सिद्धोनी-'अवगाहन्ते अस्यां' जेमां रहे ते अवगाहना-आत्मप्रदेशोनी अवस्था तीर्थंकर गणधरोए कहेली छे अहीं पूर्वभवना संस्थानना प्रमाणनी अपेक्षाए त्रीजा भागहीन सिद्धोनुं संस्थान छे ए भावार्थ छे ए वातने स्पष्ट करीने बतावे छे-'जं संठाणं तु इहं' इत्यादि जेटला प्रमाणवाळुं संस्थान आ मनुष्यभवमां हतुं (भवन्ति प्राणिनः कर्मवशवर्तिनोऽस्मिन् इति भव '-जेमां कर्मने वशवर्ती प्राणीओ उत्पन्न थाय ते भव-शरीर) ते शरीरनो त्याग करता पहेलां काययोगने छोडता छेल्ला समये शुक्ल ध्यानना सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती नामे चोथा पायाना सामर्थ्यथी वदन, उदरादि छिद्रोने पूरवाथी त्रीजा भागवडे हीन आत्मप्रदेशोना घनरूप 'तं संठाणं तहिं तस्स' तेज संस्थान मूळ शरीरना प्रमाणनी अपेक्षाए त्रीजा भागवडे हीन प्रमाणवाळुं त्यां लोकना अग्र भागवर्ती 'तस्य' ते सिद्धने होय छे ५-

हवे अवगाहनाना उत्कृष्टावगाहनादि भेदो कहे छे—'तिन्नि सया तेत्तीसा' इत्यादि त्रणसो तेत्रीश धनुष अने धनुषनो त्रीजो भाग (एक हाथ अने आठ आंगळ) ए सिद्धोनी उत्कृष्ट अवगाहना तीर्थंकर-गणधरोए कहेली छे, अने ते अवगाहना पांचसो धनुष प्रमाणशरीरवाळाने आश्रयी जाणवी

(प्र०) नाभिकुलकरनी पत्नी मरुदेवी हती, नाभिराजानुं शरीरप्रमाण पांचसो पचीश धनुष हतुं, ते ज शरीरप्रमाण मरुदेवीनुं हतुं, केमके 'संघयण, संस्थान अने उंचाई कुलकरोना समान होय छे'-एवुं शास्त्रनुं वचन छे अने भगवती मरुदेवी तो मोक्षे गयेला

अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया । इहं बोंदिं चइत्ता णं तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥३॥
दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हविज्ज संठाणं । तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४॥
जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि । आसी य पदेसघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥५॥

जइने सिद्धिपदने प्राप्त करे छे ? (२) सिद्धो अलोकाकाशवडे स्खलित थयेला छे-रोकायेला छे, लोकना अग्रभागने विषे रहेला छे, अने आ लोकमां शरीरनो त्याग करीने त्यां जइने सिद्ध थाय छे. (३)

लांबु के टुंकुं छेल्ला भवनुं जे संस्थान-शरीर होय तेनाथी त्रीजा भाग हीन सिद्धोनी अवगाहना कहेली छे. (४) आ मनुष्य लोकमां भव-शरीरनो त्याग करता छेल्ला समयमां आत्मप्रदेशना घनरूप जे संस्थान होय छे ते संस्थान त्यां सिद्धने होय छे. (५)

सिद्धो अलोक वडे-केवळ आकाशास्तिकाय वडे स्खलित थयेला छे. अहीं अलोकमां धर्मास्तिकायादिना अभावथी गति थती नथी, तेथी अलोकने अडीने रहेवुं एज प्रतिस्खलना छे, परन्तु सिद्धो प्रतिघातरहित होवाथी संबन्ध थतां विघात थवारूप तेने स्खलना थती नथी. केमके प्रतिघातयुक्त पदार्थोनो संबन्ध थवाथी विघात थवारूप स्खलना थाय छे, अन्यनी थती नथी, 'लोकाग्रे च प्रतिष्ठिताः' सिद्धो पंचास्तिकायात्मक लोकना अग्र भागमां प्रतिष्ठित—फरी संसारमां पाछा न आववुं पडे तेवी रीते रहेला छे. तथा अहीं मनुष्य लोकमां बोन्दि-शरीरनो त्याग करीने समयान्तर-अन्य समय अने प्रदेशान्तर-बीजा आकाशप्रदेशोनो स्पर्श कर्या सिवाय त्यां लोकना अग्रभागे सिद्ध थाय छे—कृतार्थ थाय छे. १-३.

हवे सिद्धिपदने प्राप्त थयेला सिद्धोनुं जे संस्थान छे ते जणावे छे—'दीघ वा हस्व वा' इत्यादि. पांचसो धनुषप्रमाण दीर्घ-मोटुं, बे हाथप्रमाण हस्व-नानुं अने 'वा' शब्दथी मध्यम विचित्र प्रकारनुं छेल्ला भवमां जे संस्थान होय छे ते शरीरना मुख-उदर वगे-

तत्थ वि य ते अवेया अवेयणा निम्ममा असंगा य। संसारविप्पमुक्का पएसनिव्वत्तसंठाणा ॥१॥
कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइट्ठिया। कहिं बोंदिं चइत्ता णं कत्थ गंतूण सिज्झइ ? ॥२॥

त्या पण वेदरहित, वेदना रहित, ममत्वरहित, असंग, संसारथी मुक्त थयेला अने आत्मप्रदेश वडे निष्पन्न थयेल संस्थान जेओनुं छे एवा सिद्धो रहे छे. १.

सिद्धो कोनाथी प्रतिहत–स्खलित थयेला छे–रोकायेला छे ? सिद्धो क्यां रहेला छे ? अने क्यां शरीरनो त्याग करी क्यां

'तत्थ वि य ते अवेया' इत्यादि त्यां पण–सिद्धक्षेत्रमां पण ते सिद्ध भगवंतो 'अवेदा' पुरुषवेदादि रहित होय छे, 'अवेदना' साता अने असाता वेदनाना अभावथी वेदना रहित, 'निर्ममा'–ममत्वरहित अने 'असंगा' बाह्य अने अभ्यन्तर संगरहित होय छे आ हेतुथी एम छे ? 'संसारविप्रमुक्ताः' संसारथी मुकायेला छे अहीं हेतुमां प्रथमा विभक्ति छे जेथी संसारथी विप्रमुक्त छे तेथी वेद, वेदना, ममत्व अने संगरहित छे वळी ते सिद्धो केवा छे ? 'प्रदेशनिर्वृत्तसंस्थाना' आत्मप्रदेशो वडे निष्पन्न थयेल संस्थान जेओनुं छे एवा छे, परन्तु तेओनुं बाह्य पुद्गलो वडे बनेलुं संस्थान नथी कारण के तेओए पाचे शरीरनो सर्वथा त्याग करेलो छे अहीं शिष्य प्रश्न करे छे—'कहिं पडिहया सिद्धा'–इत्यादि अहीं सप्तमी विभक्ति तृतीयाना अर्थमां छे जेमके 'तिसु तेसु अलंकिया पुहवी' ते त्रण वडे पृथिवी अलंकृत छे तेथी आ अर्थ थाय छे–सिद्धो 'केन प्रतिहता' शाथी प्रतिहत–स्खलित थयेला छे ? कया स्थानमां प्रतिष्ठिता'–रहेला छे ? अने कया क्षेत्रमां बोन्दि–शरीरने छोडीने क्यां जइने सिद्ध थाय छे–कृतार्थ थाय छे ? 'सिज्झइ' ए स्थळे बहुवचननो प्रयोग 'सिज्झंति' जोइए, पण सूत्रनी शैलीथी एकवचननो प्रयोग विरुद्ध नथी बीजे स्थळे पण आवा प्रयोगो मळे छे—'वत्थ–गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य। अच्छंदा जे न भुञ्जंति न से चाइ त्ति वुच्चइ'। 'से चाई' अहीं पण बहुवचनने ठेकाणे एकवचननो प्रयोग छे एम सिद्धो संबंधे शिष्ये प्रश्न कर्यो एटले आचार्य उत्तर आपे छे–'अलोए पडिहया सिद्धा' अहीं पण सप्तमी विभक्ति तृतीयाना अर्थमां छे

या, सउज्जोया, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा । ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सीआए जोयणम्मि लोगंतो, तस्स जे से उवरिल्ले गाउए तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, एत्थ णं सिद्धा भगवंतो साइया अपज्जवसिया अणेगजाइजरामरणजोणिसंसारकलंकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसहीपवंचसमइक्कंता सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति ।

स्निग्ध, घसेली, साफ करेली, रजरहित, निर्मल, पंकरहित, निरावरण कांतिवाळी, प्रभायुक्त, शोभासहित, उद्द्योत सहित, प्रसन्नता आपनार, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे. ते ईषत्प्राग्भाराथी सीआए-नीसरणीनी गतिथी एक योजन उपर लोकान्त छे, ते योजनना उपरनो एक गाउ, अने ते गाउना उपरना छट्ठा भागमां सिद्ध भगवंतो आदिसहित पण अन्तरहित, अनेक जन्म, जरा, मरण अने योनिओमां परिभ्रमणनो क्लेश, पुनर्भव अने गर्भवासमां रहेवाना प्रपंचथी रहित, शाश्वत अनागत काळ पर्यन्त रहे छे.

भगवन्तो रहेला छे. ते सादि छे, कारण के कर्मक्षय थया पछीज सिद्ध थाय छे. तेथी अनादि शुद्ध पुरुषना प्रवादनो निषेध जणाव्यो. वळी तेओ 'अपर्यवसिताः' अनन्त-अन्तरहित छे, कारण के तेओने रागादि नहि होवाथी त्यांथी पडवानो असंभव छे. रागादि क्लेशो ज सिद्धपणाथी भ्रष्ट करवाने समर्थ छे, अने ते सिद्ध भगवंतने नथी, कारण के तेओए तेनो निर्मूल नाश करेलो छे. अने निर्मूल नाश करायेला रागादि बीज नहि होवाथी फरीथी उत्पन्न थता नथी. 'अनेकजातिजरामरणयोनिसंसारकलंकलीभाव-पुनर्भवगर्भवसतिप्रपञ्चसमतिक्रान्ताः' अनेक जाति-जन्म, जरा अने मरण वडे ते ते योनिओमां संसार-संसरण-भ्रमण करवाथी जे कलंकलीभाव-कदर्थना थाय छे, तेमज दीव्य सुखने प्राप्त थयेलाने पण फरीथी संसारमां गर्भवासनो प्रपंच प्राप्त थाय छे ते बन्नेने ओळंगी गयेला सिद्धो पण हेतुथी शाश्वत काल सुधी रहे छे.

घा, लोयग्गथूभियत्ति घा, लोयग्गपडिवुज्झणा इ वा, सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा इ वा । ईसीपब्भारा ण पुढवी सेया संखदलविमलसोत्थियमुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवण्णा, उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया, सव्वज्जुणसुवन्नमई, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्ठा, मट्ठा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरि-

---

६ सिद्धालय, ७ मुक्ति, ८ मुक्तालय, ९ लोकाग्र, १० लोकाग्रस्तूपिका, ११ लोकाग्रप्रतिवाहिनी, अने १२ सर्वप्राण-भूत-जीव-सत्त्वसुखावहा. ते ईषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेत अने शंखदलना चूर्णना निर्मल स्वस्तिक, मृणाल-कमलदंड, पाणीना रजकण, झाकळ, गायना दूध अने हारना जेवा वर्णवाळी छे. ते चत्ता मूकेला छत्रना आकार जेवी अने सर्व श्वेत सुवर्णमय छे. ते स्वच्छ, सुकोमळ,

---

होवाथी लोकाग्रस्तूपिका, ११ 'लोकाग्रप्रतिवाहिनी' लोकाग्रेण प्रत्यूह्यते-लोकना अग्रभाग वडे धारण कराय छे माटे लोकाग्रप्रतिवाहिनी, १२ 'सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा' सर्व प्राणो, भूतो, जीवो अने सत्त्वोने सुख आपनार. प्राणो-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो भूत-तरुओ, जीवो-पंचेन्द्रियो अने सत्त्व बाकीना प्राणीओ समजवा कह्यु छे के—

"प्राणा द्वि-त्रि-चतुः प्रोक्ताः भूतास्तु तरवः स्मृताः । जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः शेषाः सत्त्वा उदीरिताः" ॥

ते ईषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेत छे ते श्वेतपणु उपमाथी बतावे छे-'शङ्खदलविमलस्वस्तिक-मृणाल-दकरज-तुषार-गोक्षीर-हारवर्णा' शंखदलना चूर्णनो निर्मल स्वस्तिक, मृणाल-कमलदंड, पाणीना रजकण, तुषार-हिम, दूध अने हारना जेवा वर्णवाळी छे 'उत्तानकछत्रसंस्थानसंस्थिता' उत्तान-चत्ता राखेला छत्रना जेवा आकारवाळी, तथा 'सर्वार्जुनसुवर्णमयी' सर्वथा श्वेत सुवर्णमय छे ते ईषत्प्राग्भारा पृथिवीथी उपर 'सीयाए' निसरणीनी गतिथी एक योजन जइए एटले लोकान्त प्राप्त थाय छे ते एक योजनना उपरनो चोथो गाउ छे, ते गाउनो सौथी उपरनो छट्ठो भाग-त्रणसो तेत्रीश धनुष एक हाथ अने आठ आंगळ प्रमाण छे, ते क्षेत्रमां सिद्ध

तीसं च सयसहस्साइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ता। ईसिपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते। तओ अणंतरं च णं मायाए मायाए पएसपरिहाणीए परिहायमाणी परिहायमाणी सव्वेसु चरमंतेसु मच्छियपत्ताओ तणुययरी, अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पन्नत्ता। ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधिज्जा पन्नत्ता। तंजहा-ईसि इ वा, ईसीपब्भारा इ वा, तणू इ वा, तणुतणू इ वा, सिद्धित्ति वा, सिद्धालए वा, मुत्तित्ति वा, मुत्तालए इ वा, लोयग्गेत्ति

ईषत्प्राग्भारा पृथ्वीना बरोबर वच्चेना भागनुं आठ योजन प्रमाण क्षेत्र जाडाइमां आठ योजन छे. त्यार पछी ते थोडी थोडी प्रदेशनी परिहानिथी घटती घटती सर्व बाजुना छेडाओमां माखीनी पांख करतां पण वधारे पातळी छे अने जाडाइमां आंगळना असंख्यातमा भागनी छे. ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना बार नाम कहेलां छे. ते आ प्रमाणे—१ ईषत्, २ ईषत्प्राग्भारा, ३ तन्वी, ४ तनुतन्वी, ५ सिद्धि,

उंचाइमां आठ योजन प्रमाण क्षेत्र छे, त्यार पछी ते सर्व दिशाओ अने विदिशाओमां मात्रा-थोडी थोडी प्रदेशनी हानिथी घटती बधा चरमान्त-छेडाओमां माखीनी पांखथी पण अतिपातळी छे अने जाडाइमां अंगुलना असंख्यातमा भागनी छे. ते ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना बार नाम छे. जेम के-१ 'ईसि' इ वा' पदना एक देशमां पदसमुदायनो आरोप थतो होवाथी 'ईषत्' कहेवाय छे. २ ईषत्प्राग्भारा, ३ 'तणु' इति वा-बाकीनी पृथिवीनी अपेक्षाए अति पातळी होवाथी तन्वी कहेवाय छे ४ 'तनुतन्वी' इति-जगतमां प्रसिद्ध पातळा पदार्थोथी पण पातळी छे, कारण के माखीनी पांखथी पण छेडाना भागमां अतिपातळी छे. ५ 'सिद्धिः' सिद्धक्षेत्रना पासे होवाथी सिद्धि कहेवाय छे. ६ 'सिद्धालय' इति सिद्धक्षेत्रने नजीक होवाथी उपचारथी सिद्धोनुं आलय-आधार छे, माटे सिद्धालय, एम ७ मुक्ति अने ८ मुक्तालय पण जाणवुं. लोकना अग्रभागमां होवाथी ९ लोकाग्र, १० लोकाग्रना स्तूपिका-शिखर जेवी

इभागे । तत्थ णं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति । सव्वे समिड्ढिया, सव्वे समबला, सव्वे समाणुभावा, महासुक्खा, अणिंदा, अप्पेस्सा, अपुरोहिया, अहमिंदा नाम ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ।

५८. कहि ण भंते ! सिद्धाणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि ण भंते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! सव्वट्ठसिद्धस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालस जोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा णामं पुढवी पन्नत्ता । पणयालीसं ,जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेण, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं

घणा अनुत्तरौपपातिक देवो रहे छे. ते बधा हे आयुष्मान् श्रमण ! समानऋद्धिवाळा, समानबळवाळा, समानप्रभाववाळा, महासुखवाळा, इन्द्ररहित, प्रेष्य–चाकर रहित, पुरोहितरहित अने अहमिन्द्र ते देवगणो कह्या छे.

५८. हे भगवन् ! सिद्धोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! सिद्धो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! सर्वार्थसिद्ध नामे महाविमानना उपरना स्तूपिका–शिखरना अग्रभागथी उपर बार योजन दूर ईषत्प्राग्भारा नामे पृथिवी छे. ते पीसतालीश लाख योजन लांबी अने पहोळी छे. तेनी परिधि एक क्रोड बेंताळीश लाख, त्रीश हजार बसो ने ओगणपचास योजनथी कंइक विशेषाधिक छे. ते

५८ सिद्धना सूत्रमा 'एगा जोयण कोडी' इत्यादि ईषत्प्राग्भारापृथिवीनी परिधिनु परिमाण कह्यु छे ते विष्कम्भनो वर्ग करी तेने दसे गुणी मूळ काढवु-इत्यादि गणितथी स्वय जाणी लेवु, कारण के ते सुगम छे अथवा क्षेत्रसमासनी टीकाथी जाणी लेवु, कारण के त्या पीसतालीश लाख योजन प्रमाण विस्तारवाळा मनुष्यक्षेत्रनी परिधिनो सविस्तर विचार करेलो छे, अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनी परिधि पण एटलीज छे ते ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना बरोबर मध्य भागमा आयाम-लंबाई अने विष्कम्भ-पहोळाई वडे तथा बाहल्य-जाडाइमा एटले

मसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहुगाओ जोयणकोडीओ, बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ, उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, सोहम्मीसाणसणंकुमार-जाव आरणच्चुयकप्पा तिन्नि अट्ठारसुत्तरे गेविज्जगविमाणावाससए वीईवइत्ता तेण परं दूरं गया नीरया, निम्मला, वितिमिरा, विसुद्धा, पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालया महाविमाणा पन्नत्ता। तंजहा—विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे। ते णं विमाणा सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्ठा, मट्ठा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरिया, सउज्जोया, पासाइया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ णं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्ज-

तारारूपथी बहु सेंकडो योजन, घणा हजार योजन, घणा लाख योजन, घणा कोटीयोजन, अने घणा कोटाकोटी योजन उपर दूर जइए-एटले सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार यावत्-आरण-अच्युत कल्पो अने त्यार बाद त्रणसो अढार ग्रैवेयक विमानोने ओळंगी त्यांथी अत्यन्त दूर जइए एटले रजरहित, निर्मल, अंधकार रहित, विशुद्ध एवा पांच दिशामां पांच अत्यंत मोटा अनुत्तर महाविमानो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—१ विजय, २ वैजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित अने ५ सर्वार्थसिद्ध. ते विमानो सर्व रत्नमय, स्वच्छ, सुकुमार, स्निग्ध, घृष्ट-तीक्ष्ण सराणथी घसेला, मृष्ट-कोमळ सराणथी घसेला, रजरहित, मळरहित, कीचडरहित, निरावरण कांतिवाळां प्रभासहित, शोभासहित, उद्द्योतसहित, प्रसन्नता आपनार, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता अनुत्तरौपपातिक देवोना स्थानो छे. ते उपपात, समुद्घात, स्वस्थान-ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां

५६. कहि णं भंते ! उवरिमगेविज्जगाणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि ण भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं उवरिमगेविज्जगाण तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता । पाईणपडीणायया, सेस जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं । नवर एगे विमाणावाससए भवतीति मक्खायं, सेस तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ।

एयारसुत्तर हेट्ठिमेसु सत्तुत्तर च मज्झिमए । सयमेग उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा॥

५७ कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदि-

---

५६. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त उपरना ग्रैवेयक देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! उपरना ग्रैवेयक देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! मध्यम ग्रैवेयकानी उपर यावत् जइए एटले उपरना ग्रैवेयकोना त्रण ग्रैवेयकविमानप्रतरो छे. ते पूर्व-पश्चिम लांबा-इत्यादि बधु नीचेना ग्रैवेयकोनी पेठे जाणवु. अहीं एक सो विमानो छे एम कह्यु छे बाकी बधु तेमज कहेवु. हे आयुष्मान् श्रमण ! यावत् ते देवगणो अहमिन्द्र छे. 'एकसो अगियार नीचेना ग्रैवेयकोमा, एकसो सात मध्यम ग्रैवेयकोमा अने एक सो उपरना ग्रैवेयकोमा तथा पाच अनुत्तर विमानो छे.'

५७. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त अनुत्तरौपपातिक देवोना क्या स्थानो छे ? हे भगवन् ! अनुत्तरौपपातिक देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीनी बरोबर सरखी अने रमणीय भूमि प्रदेशथी उपर चन्द्र, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र अने

ज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता। पाईणपडीणायया जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण। नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवतीति मक्खायं । ते णं विमाणा जाव पडिरूवा। एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगाणं जाव तिसु वि लोगस्स असंखिज्जइभागे। तत्थ णं बहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसंति, जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ।

छे ? हे गौतम ! नीचेना ग्रैवेयकोनी उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए यावत् जइए एटले मध्यम ग्रैवेयक देवोना त्रण ग्रैवेयकविमानप्रस्तरो छे. ते पूर्व-पश्चिम लांबा छे-इत्यादि बधुं नीचेना ग्रैवेयकोनी जेम कहेवुं. परन्तु अहीं एकसो सात विमानो छे एम कह्युं छे. ते विमानो यावत्-प्रतिरूप छे. अहीं मध्यम ग्रैवेयक देवोना स्थानो छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान-ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागे छे. तेमां घणा मध्यम ग्रैवेयक देवो रहे रहे छे. हे आयुष्मान् श्रमण ! यावत् ते देवगणो अहमिन्द्रो छे.

५५. ग्रैवेयक सूत्रमां 'समहर्द्धिकाः' समान महाऋद्धि जेओने छे एवा, एम 'समद्युतिकाः' समान कांतिवाळा—इत्यादि पण जाणवुं. तेओ 'अनिन्द्राः' इन्द्र अधिपति तरीके जेओने नथी एवा—इन्द्र रहित छे. 'अप्रेष्याः'-ज्यां नोकरपणुं नथी एवा, 'अपुरोहिताः' ज्यां शांतिकर्म करनार पुरोहित नथी एवा, कारण के त्यां अशांति नथी. तेओ केवा छे? ते देवगणो बधा अहमिन्द्रो-पोतेज इन्द्ररूप छे-एम हे आयुष्मान् श्रमण ! कह्युं छे.

त्तरे विमाणावाससए भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा सव्वरयणामया, जाव पडिरूवा । एत्थ णं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । सव्वे समिड्ढिया, सव्वे समज्जुइया, सव्वे समजसा, सव्वे समबला, सव्वे समाणुभावा, महासुक्खा, अणिंदा, अपेस्सा, अपुरोहिया अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ।

५५. कहि णं भंते ! मज्झिमगाणं गेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! म-

---

ग्रैवेयक देवोना एकसो अगियार विमानो छे एम कह्युं छे. ते विमानो सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नीचेना ग्रैवेयक देवोना स्थानो कह्या छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान-ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां घणा नीचेना ग्रैवेयक देवो रहे छे. हे आयुष्मान् श्रमण ! ते बधा समानऋद्धिवाळा, समानद्युतिवाळा, समान यशवाळा, समान प्रभाववाळा, इन्द्ररहित, प्रेष्य-चाकर रहित, पुरोहित रहित अने अहमिन्द्र नामे ते देवगणो कह्या छे.

५५. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मध्यम ग्रैवेयक देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! मध्यम ग्रैवेयक देवो क्यां रहे

अशोक, सप्तपर्ण, चंपक, चूत अने सनत्कुमारावतंसक होय छे माहेन्द्रमां स्फटिक, रत्न, जातरूप अने माहेन्द्रावतंसक, ब्रह्मलोकमां अशोक, सप्तपर्ण, चंपक, चूत अने ब्रह्मलोकावतंसक, लांतकमां अंक, स्फटिक, रत्न, जातरूप अने लांतकावतंसक, महाशुक्रमां अशोक, सप्तपर्ण, चंपक, चूत अने महाशुक्रावतंसक, सहस्रारमां अंक, स्फटिक, रत्न, जातरूप अने सहस्रारावतंसक, प्राणतमां अशोक, सप्तपर्ण, चंपक, चूत अने प्राणतावतंसक, अच्युतमां अंक, स्फटिक, रत्न, जातरूप अने अच्युतावतंसक छे

वीसा दस सहस्सा ॥१॥ एए चेव आयरक्खा चउग्गुणा ।

५४.कहि णं भंते ! हिट्ठिमगेविज्जगाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! हिट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आरणच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं हिट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता । पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणवित्थिन्ना, पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया, अच्चिमालीभासरासिवण्णाभा, सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा । तत्थ णं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं एकारसु-

---

सामानिक देवो छे. तेथी चार गुणा आत्म रक्षक देवो छे.

५४. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नीचेना ग्रैवेयक देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! नीचेना ग्रैवेयक देवो क्यां रहे छे ? हे गोतम ! आरण अने अच्युत कल्पोनी उपर यावत्–ऊर्ध्व दूर–जइए त्यारे अहीं नीचेना ग्रैवेयक देवोना त्रण ग्रैवेयक विमानना प्रस्तरो–पाथडा छे. ते पूर्व–पश्चिम लांबा, अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण छे. परिपूर्ण चन्द्रनी आकृतिवाळा, अर्चि–किरणोनी माळा अने कान्तिसमूहना जेवा वर्णवाळा–इत्यादि वाकीनु बधुं ब्रह्मलोकनी पेठे यावत्–प्रतिरूप छे त्यां सुधी जाणवुं. त्यां नीचेना

---

५४. अवतंसक विमानो अतिदेशथी–'अमुकनी पेठे जाणवां' एम समानताथी कह्यां छे, तेथी समजवामां मुश्केली पडे माटे शिष्य जनोना अनुग्रह माटे प्रथमथीज आरंभी जुदा जुदा कहीए छीए–सौधर्म कल्पमां पूर्व दिशाए अशोकावतंसक, दक्षिण दिशाए सप्तपर्णावतंसक, पश्चिम दिशाए चंपकावतंसक, उत्तर दिशाए चूतावतंसक छे. अने वच्चे सौधर्मावतंसक छे. एम ईशान कल्पमां पूर्वादि दिशाना क्रमथी अंकावतंसक, स्फटिकावतंसक, रत्नावतंसक, जातरूपावतंसक अने मध्यमां ईशानावतंसक. सनत्कुमार कल्पमां

फलिहवडिंसए, रयणवडिंसए, जायरूववडिंसए, मज्झे एत्थ अच्चुयवडिंसए। ते णं वडिंसया सव्वरयणामया, जाव पडिरूवा। एत्थ णं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइ-भागे। तत्थ णं बहवे आरणच्चुया देवा परिवसंति। अच्चुए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, जहा पाणए जाव विहरइ। नवर तिण्हं विमाणावाससयाणं, दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ। बत्तीस अट्ठवीसा बारस अट्ठ चउरो (य)सयसहस्सा। पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि। सत्त विमाणसयाइं चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥ सामाणियसंगहणीगाहा–चउरासीई असीई बावत्तरी सत्तरी य सट्ठी य। पन्ना चत्तालीसा तीसा

देवोनो राजा रहे छे—इत्यादि आणतनी पेठे यावत्—'विहरे छे' त्यां सुधी जाणवुं. परन्तु त्रणसो विमानोनुं, दस हजार सामानिक देवोनुं, अने चाळीश हजार आत्मरक्षक देवोनुं अधिपतिपणु करतो यावत्–विहरे छे.

(१) बत्रीश लाख, (२) अठयावीश लाख, (३) बार लाख, (४) आठ लाख, (५) चार लाख, (६) पचास हजार, (७) चाळीश हजार, (८) छ हजार सहस्रार कल्पमां छे, (९–१०) आनत अने प्राणत कल्पमां चारसो अने आरण अने अच्युतने विषे त्रणसो एम ए चारे कल्पोने विषे मळीने सातसो विमानो छे.

सामानिक देवोनी संग्रहणी गाथा—(१) चोराशी हजार, (२) एंशी हजार, (३) बहोंतेर हजार, (४) सित्तेर हजार, (५) साठ हजार, (६) पचास हजार, (७) चालीश हजार, (८) त्रीश हजार, (९–१०) वीश हजार, अने (११–१२) दस हजार,

सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरिया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ णं आरणच्चुयाणं देवाण तिन्नि विमाणावाससया भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरिया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। तेसिणं विमाणाणं कप्पाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसया पन्नत्ता। तंजहा—अंकवडिंसए,

---

छे. ते लंबाइ अने पहोळाइमां असंख्याता कोटाकोटि योजन छे अने परिधि वडे पण असंख्याता कोटाकोटि योजन प्रमाण छे. ते सर्व रत्नमय, स्वच्छ, कोमळ, सुकुमार, घृष्ट—खर सराणथी घसेलां, अने मृष्ट—कोमळ सराणथी घसेलां, रजरहित, निष्पंक, निरावरण कान्तिवाळा, प्रभायुक्त, शोभायुक्त, उद्योतसहित, प्रसन्नता करनार, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे. अहीं आरण अने अच्युत देवोना त्रणसो विमानो छे एम कह्युं छे. ते विमानो सर्व रत्नमय, स्वच्छ, सूक्ष्म, सुकुमार, घसेला अने मृष्ट—सारी रीते घसेला, रजरहित, निर्मल, निष्पंक, निरावरण कान्तिवाळा, प्रभासहित, शोभासहित, उद्द्योतसहित, प्रसन्नता आपनार, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे. ते कल्पोना विमानोना बरोबर मध्यभागमां पांच अवतसक विमानो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ अंकावतंसक, २ स्फटिकावतंसक, ३ रत्नावतंसक, ४ जातरूपावतंसक अने तेना मध्य भागमां अच्युतावसंक छे. ते अवतंसक विमानो सर्व रत्नमय यावत्—प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता आरण—अच्युत देवोना स्थानो छे. उपपात, समुद्घात, अने स्वस्थान—ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा आरण अने अच्युत देवो रहे छे. अहीं अच्युत नामे देवोनो इन्द्र अने

अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ ।

५३ कहि ण भंते ! आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसंति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाणं उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं एत्थ णं आरणच्चुया नामं दुवे कप्पा पन्नत्ता। पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा, अद्धचंदसंठाणसंठिया, अच्चिमालीभासरासिवण्णाभा, असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण, असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं,

---

इत्यादि सनत्कुमारनी पेठे जाणवु परन्तु त्रणसो विमानोनु, वीश हजार सामानिक देवोनु, एंशी हजार आत्मरक्षक देवोनुं अने बीजा घणा देवो तथा देवीओनुं अधिपतिपणु करतो यावत्–विहरे छे

५३. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त आरण अने अच्युत देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! आरण अने अच्युत देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आनत अने प्राणत कल्पनी उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए आरण अने अच्युत नामे बे कल्पो छे ते पूर्व–पश्चिम लांबा अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण छे. ते अर्धचन्द्रनी आकृतिवाळा अने किरणोवाळा अने तेजना राशिना समान वर्णवाळा

---

५३. सामानिक देवोनी संग्रहणी गाथा–'चउरासीइ' इत्यादि सौधर्मेन्द्रना चोराशी हजार सामानिक देवो छे, ईशानेन्द्रना एंशी हजार, सनत्कुमारेन्द्रना बहोंतेर हजार, माहेन्द्रना इन्द्रना सित्तेर हजार, ब्रह्मलोकेन्द्रना साठ हजार, लांतकेन्द्रना पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रना चाळीश हजार, सहस्रारेन्द्रना त्रीस हजार, आनत–प्राणतेन्द्रना वीश हजार अने आरण–अच्युतेन्द्रना दश हजार सामानिक देवो होय छे

यपाणयनामा दुवे कप्पा पन्नत्ता । पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणवितिथण्णा, अद्धचंदसंठाणसंठिया, अचिमालीभासरासिप्पभा, सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा । तत्थ णं आणयपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया भवन्तीति मक्खायं जाव पडिरूवा । वडिंसगा जहा सोहम्मे कप्पे । नवरं मज्झे इत्थ पाणयवडिंसए । ते णं वडिंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । एत्थ णं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयाणं जाव विहरंति । पाणए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे । नवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं, वीसाए सामाणियसाहस्सीणं, असीईए आयरक्खदेवसाहस्सीणं,

---

नामे बे कल्पो आवेला छे. ते पूर्व–पश्चिम लांबा अने उत्तर–दक्षिण विस्तारवाळा छे. ते अर्धचन्द्रमानी आकृति जेवा अने अर्चि–किरणोनी माळा अने कान्तिना समूहना जेवी प्रभावाळा, बाकी बधुं सनत्कुमारनी पेठे यावत् प्रतिरूप छे त्यां सुधी जाणवुं. त्यां आनत अने प्राणत देवोना चारसो विमानो छे एम कह्युं छे. यावत् तेओ प्रतिरूप छे. अवतंसको सौधर्म कल्पमां कह्या प्रमाणे कहेवा. परन्तु अहीं मध्य भागमां प्राणतावतंसक छे. ते बधा अवतंसको सर्व रत्नमय, स्वच्छ, यावत्—प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्त आनत–प्राणत देवोना स्थानो छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान–ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा आनत–प्राणत देवो रहे छे. महाऋद्धिवाळा दश दिशाओने यावत् प्रकाशित करता तेओ पोतपोताना सेंकडो विमानोनुं अधिपतिपणुं करता यावत्–विहरे छे. अहीं प्राणत नामे देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा रहे छे–

संति ? गोयमा ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं सहस्सारे नामं कप्पे पन्नत्ते । पाईणपडीणायए, जहा बंभलोए, नवरं छव्विमाणावाससहस्सा भवन्तीति मक्खायं । देवा तहेव जाव वडिंसगा जहा ईसाणस्स वडिंसगा । नवरं मज्झे इत्थ सहस्सारवडिंसए, जाव विहरंति । सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे । नवरं छण्हं विमाणावाससहस्साणं, तीसाए सामाणियसाहस्सीणं, चउण्ह य तीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं, जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरइ ।

५२ कहिं णं भंते ! आणयपाणयाण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? कहिं णं भंते ! आणयपाणया देवा परिवसंति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं आण-

---

महाशुक्र कल्पना उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए जइए एटले अहीं सहस्रार नामे कल्प आवे छे. ते पूर्व-पश्चिम लांबो छे-इत्यादि ब्रह्मलोकनी पेठे जाणवु. परन्तु अहीं छ हजार विमानो छे एम कह्यु छे. देवो तेमज छे. यावत् अवतंसको ईशानना अवतं-सकोनी पेठे छे. पण मध्य भागमा सहस्रारावतंसक छे. अहीं घणा देवो यावत् विहरे छे अहीं सहस्रार नामे देवोनो इन्द्र देवोनो राजा रहे छे—इत्यादि सनत्कुमारनी पेठे जाणवु. परन्तु छ हजार विमानोनु, त्रीस हजार सामानिक देवोनु अने त्रीस हजारथी चार गुणा आत्मरक्षक देवोनु अधिपतिपणु करतो यावत्—रहे छे.

५२. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता आनत अने प्राणत देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! आनत अने प्राणत देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! सहस्रार कल्पना उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए यावत् जइए त्यारे अहीं आनत अने प्राणत

५०. कहि णं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! महासुक्का देवा परिवसंति ? गोयमा ! लंतगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं महासुक्के नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्णे, जहा बंभलोए। नवरं चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा भवन्तीति मक्खाय। वडिंसगा जहा सोहम्मवडिंसए, जाव विहरंति। महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे। नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससहस्साणं, चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं, चउण्ह य चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ।

५१. कहि णं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! सहस्सारदेवा परिव-

---

५०. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता महाशुक्र देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! महाशुक्र देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! लांतक कल्पना उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए यावद्—जइए त्यारे महाशुक्र नामे कल्प आवे छे. ते ब्रह्मलोकनी पेठे पूर्व–पश्चिम लांबो अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण छे. परन्तु अहीं चाळीश हजार विमानो छे एम कह्युं छे. अवतंसको सौधर्मावतंसकोनी पेठे जाणवा. परन्तु अहीं मध्य भागमां महाशुक्रावतंसक छे. अहीं घणा महाशुक्र देवो यावत्–विहरे छे. अहीं महाशुक्रनामे देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा छे. बाकी बधुं सनत्कुमारनी पेठे जाणवुं. परन्तु चाळीश हजार विमानोनुं, चाळीश हजार सामानिक देवोनुं, अने चालीश हजारथी चार गुणा आत्मरक्षकदेवोनुं अधिपतिपणुं करतो यावत् विहरे छे.

५१. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सहस्रार देवोना क्यां स्थानो छे ! हेभगवन् ! सहस्रार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम !

४९. कहि णं भंते ! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं, जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं लंतए नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायए, जहा बंभलोए। नवरं पण्णास विमाणावाससहस्सा भवन्तीति मक्खायं। वडिंसगा जहा ईसाणवडिंसगा, नवरं मज्झे इत्थ लंतगवडिंसए, देवा तहेव जाव विहरंति। लंतए एत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, जहा सणंकुमारे। नवरं पण्णासाए विमाणावाससहस्साणं, पण्णासाए सामाणियसाहस्सीणं, चउण्ह य पण्णासाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ।

---

४९. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त लांतक देवोना क्यां स्थानो छे. ? हे भगवन् ! लान्तक देवो क्यां रहे छे.? हे गौतम ! ब्रह्मलोक कल्पना उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए घणा योजन यावत् घणा कोटीकोटी योजनो उपर दूर जइने अहीं लांतक नामे कल्प आवेलो छे. ते पूर्व-पश्चिम लांबो-इत्यादि ब्रह्मलोकनी पेठे जाणवुं परन्तु अहीं पचास हजार विमानो छे एम कहुं छे. अवतंसको ईशान कल्पना अवतंसकोनी जेम कहेवा, परन्तु अहीं मध्य भागमां लांतकावतंसक छे. आ स्थळे लांतक देवो ते प्रमाणे यावत्-विहरे छे. अहीं लांतक नामे देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा रहे छे-इत्यादि बधुं सनत्कुमारनी पेठे जाणवुं. परन्तु पचास हजार विमानोनुं, पचास हजार सामानिक देवोनुं, पचास हजारथी चार गुणा आत्मरक्षक देवोनुं अने बीजा घणा देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करतो यावत् विहरे छे.

बंभलोए नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्णे, पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए, अचिमालीभासरासिप्पभे, अवसेसं जहा सणंकुमाराणं। नवरं चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा, वडिंसया जहा सोहम्मवडिंसया, नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडिंसए। एत्थ णं बंभलोगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता सेसं तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, अरयंबरवत्थधरे, एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरइ। नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं, सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं सट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ।

गौतम! सनत्कुमार अने माहेन्द्र कल्पना उपर समान दिशाए अने समान विदिशाए घणा योजनो यावत्–जइने अहीं ब्रह्मलोक नामे कल्प छे. ते पूर्व–पश्चिम लांबो अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण छे. परिपूर्ण चंद्रना आकार जेवा अर्चि–किरणोनी माळानी पेठे भास–कांतिना समूहनी पेठे कांतिवाळो, बाकी बधुं सनत्कुमारनी पेठे कहेवुं. परन्तु चार लाख विमानो छे अवतंसको सौधर्म कल्पना अवतंसकोनी पेठे जाणवा. परन्तु तेना मध्य भागमां ब्रह्मलोकावतंसक छे. अहीं ब्रह्मलोकदेवना स्थानो कहेलां छे. बाकी बधुं यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी तेमज जाणवुं. अहीं ब्रह्म नामे देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा रहे छे. ते रजरहित अने आकाशना जेवा (स्वच्छ) वस्त्र धारण करे छे–इत्यादि बाकीनुं बधुं सनत्कुमारनी पेठे यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी कहेवुं, परन्तु चार लाख विमानोनुं, साठ हजार सामानिक देवोनुं, चार गुणा साठ हजार आत्मरक्षक देवोनुं अने बीजा घणा देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करतो यावत् विहरे छे.

उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं माहिंदे नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायए, जाव एवं जहेव सणंकुमारे। नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा। वडिंसया जहा ईसाणे। नवरं मज्झे इत्थ माहिंदवडिंसए, एवं जहा सणंकुमाराण देवाणं जाव विहरंति। माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, अरयंबरवत्थधरे, एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरइ। नवरं अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं, सत्तरिए सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ।

४८ कहि णं भंते! बम्भलोगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! बम्भलोगदेवा परिवसंति? गोयमा! सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव उप्पइत्ता, एत्थ णं

ईशान देवलोकना उपर समान दिशाओमां अने समान विदिशाओमां घणा योजनो यावत्–घणा कोटाकोटी योजनो दूर जइए एटले अहीं माहेन्द्र नामे देवलोक छे, ते पूर्व–पश्चिम लांबो इत्यादि बधु सनत्कुमारनी पेठे जाणवु. परन्तु तेमां आठ लाख विमानो छे. ईशाननी पेठे अवतंसको जाणवा. परन्तु मध्य भागमां माहेन्द्रावतंसक छे ए प्रमाणे सनत्कुमार देवोने कह्या छे तेम यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी कहेवु.अहीं माहेन्द्र नामे देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा रहे छे. ते रजविनाना आकाशना जेवा स्वच्छ वस्त्रने धारण करे छे. एम सनत्कुमारनी पेठे यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी कहेवु. परन्तु आठ लाख विमानोनु, सीत्तेर हजार सामानिक देवोनु अने सित्तेर हजारथी चार गुणा आत्मरक्षक देवोनु अधिपतिपणुं करतो यावत्–विहरे छे.

४८. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त ब्रह्मलोक देवोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! ब्रह्मलोकना देवो क्यां रहे छे? हे

त्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे सणंकुमारदेवा परिवसंति, महिड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति । नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि । सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ । अरयंबरवत्थधरे, सेसं जहा सक्कस्स । से णं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं, बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं, सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं । नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ ।

४७. कहि णं भंते । माहिंददेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते । माहिंदगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं, जाव बहुयाओ जोयणकोडाकोडीओ

सर्व रत्नमय, स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सनत्कुमार देवोना स्थानो छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान–ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा सनत्कुमार देवो रहे छे. तेओ महाऋद्धिवाळा यावत्–दश दिशाओने प्रकाशित करता विहरे छे. परन्तु अहीं अग्रमहिषीओ नथी. अहीं देवोनो इन्द्र देवोनो राजा सनत्कुमार रहे छे. ते रजरहित आकाशना जेवा (स्वच्छ) वस्त्रोने धारण करे छे. बाकी बधुं शक्रनी पेठे जाणवुं. ते बार लाख विमानोनुं, बहोंतेर हजार सामानिक देवोनुं, बाकी बधुं अग्रमहिषी सिवाय शक्र संबंधे कह्युं हतुं तेम कहेवुं, परन्तु बहोंतेर हजारथी चार गुणा आत्मरक्षक देवोनुं अधिपतिपणुं करतो यावत्–विहरे छे.

४७. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता माहेन्द्र देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! माहेन्द्र देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम !

रियसति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूगाओ जोयणकोडीओ, बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सणंकुमारे णामं कप्पे पन्नत्ते । पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणविच्छिण्णे जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे । तत्थ णं सणंकुमाराण देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा । तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडिंसगा पन्नत्ता । तंजहा—असोगवडिंसए, सत्तवन्नवडिंसए, चंपगवडिंसए, चूयवडिंसए, मज्झे एत्थ सणंकुमारवडिंसए । ते णं वडिंसया सव्वरयणामया, अच्छा जाव पडिरूवा । एत्थ णं सणंकुमारदेवाणं पज्ज-

---

हे गौतम ! सौधर्म देवलोकना उपर सपक्ष—चारे दिशाए अने सप्रतिदिक्—चारे विदिशामां घणां योजनो,घणा सेंकडो घणा हजार, घणा लाख घणा क्रोड अने घणा कोटाकोटी योजनो दूरजइने अहीं सनत्कुमार नामे देवलोक आवेलोछे. ते सौधर्म देवलोकनीपेठे पूर्व—पश्चिम लांबो अने उत्तर—दक्षिण पहोळो अने यावत्—प्रतिरूप छे. त्यां सनत्कुमार देवोना बार लाख विमानो छे एम कह्यु छे. ते विमानो रत्नमय—यावत् प्रतिरूप छे. ते विमानोना बरोबर मध्य भागमां पांच अवतंसक विमानो छे. ते आ प्रमाणे—१ अशोकावतंसक, २ सप्तपर्णावतंसक,३ चंपकावतंसक,४ चूतावतंसक अने तेना मध्य भागमां, ५ सनत्कुमारावतंसक छे. ते अवतंसक विमानो

जे क्रियामा छे ते सपक्ष—समानपणे चारे दिशाए, 'सप्रतिदिशम्' समान छे प्रतिदिक्—विदिशाओ जे क्रियामा ते प्रतिदिक्, समानपणे चारे विदिशामा ए भावार्थ छे

उत्तरड्ढलोगाहिवई, अट्ठावीसविमाणावाससयहस्साहिवई, अरयंबरवत्थधरे, सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे। से णं तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं, असीईए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरीवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं असीईणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ।

४६. कहि णं भंते ! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! सणंकुमारा देवा प-

---

कह्युं छे तेम यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी जाणवुं. अहीं ईशान नामे देवेन्द्र अने देवराजा रहे छे. जेणे हाथमां शूल धारण करेलुं छे एवो, अने जेनुं वाहन वृषभ छे एवो, लोकना उत्तर अर्धभागनो अधिपति अने अठयावीश लाख विमानोनो स्वामी छे. ते रजरहित आकाशना जेवा (स्वच्छ) वस्त्रोने धारण करे छे. बाकी बधुं शक्र संबंधे कह्युं छे तेम यावत् 'प्रकाशित करे छे' त्यां सुधी कहेवुं. ते (ईशानेन्द्र) त्यां अठयावीश लाख विमानोनुं, एंशी हजार सामानिक देवोनुं, तेत्रीश त्रायस्त्रिंशक देवोनुं, चार लोकपालोनुं, परिवारसहित आठ अग्रमहिषीओनुं, त्रण पर्षदोनुं, सात प्रकारना सैन्योनुं, सात सेनाधिपतिओनुं, एंशी हजारथी चार गुणा आत्मरक्षक देवोनुं, बीजा घणा ईशानकल्पवासी देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करतो यावत्–विहरे छे.

४६. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सनत्कुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! सनत्कुमार देवो क्यां रहे छे ?

---

४६. सनत्कुमार देवलोकमां 'सपक्खि सपडिदिसं' इति. 'सपक्षं'—समान छे पक्ष–पूर्व, पश्चिम, उत्तर अने दक्षिणरूप पार्श्वभागो

भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, जाव उड्ढ उप्पइत्ता एत्थ णं ईसाणे णामं कप्पे पन्नत्ते। पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणविच्छिण्णे, एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे। तत्थ णं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। तेसिणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडिंसया पन्नत्ता। तंजहा—अंकवडिंसए, फलिहवडिंसए, रयणवडिंसए, जातरूववडिंसए, मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए। ते ण वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। एत्थ णं ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। सेसं जहा सोहम्मगदेवाण जाव विहरंति। ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, सूलपाणी, वसहवाहणे,

---

जंबूद्वीप नामे द्वीपमा मेरुपर्वतनी उत्तरे आ रत्नप्रभा पृथिवीना बरोबर सम अने रमणीय भूमि भागथी उपर चंद्र,सूर्य,ग्रह,नक्षत्र अने ताराओ संबंधी सेंकडो योजन,हजारो योजन यावत् उपर जइने अहीं ईशान नामे देवलोक आवेलो छे. ते पूर्व–पश्चिम लांबो अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण असंख्याता योजनप्रमाण छे–इत्यादी सौधर्म कल्प सबन्धे कह्युं छे तेम यावत्–प्रतिरूप छे त्यांसुधी कहेवु. त्यां ईशान देवोना अठ्यावीश लाख विमानो छे एम कह्यु छे. ते विमानो सर्व रत्नमय यावत्–प्रतिरूप छे. तेओना बरोबर मध्य भागमा पाच अवतंसक विमानो कह्या छे. ते आ प्रमाणे— १ अंकावतंसक, २ स्फटिकावतंसक, ३ रत्नावतंसक, ४ जातरूपावतंसक अने तेओना मध्यभागमां ५ ईशानावतंसक छे. ते अवतंसक विमानो सर्व रत्नमय यावत्–प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ईशान देवोना स्थानो कहेला छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. बाकी बधुं सौधर्मदेवलोक सम्बन्धे

वत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं,चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं,तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं,चउण्हं लोग-
पालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणीयाणं, सत्तण्हं अणीयाहिवईणं,
चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य दे-
वीण य आहेवच्च पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ।

४५. कहि णं भंते ! ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! ईसाणगदेवा परिव-
संति ! गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, बहुसमरमणिज्जाओ

छे. ते बत्रीश लाख विमानोनो अधिपति, ऐरावणवाहनवाळो, देवोनो इन्द्र, तथा रजरहित आकाशना जेवा स्वच्छ वस्त्रोने धारण
करनार, जेणे माळा अने मुकुट पहेरेला छे एवो, नवा सुवर्णना जेवा सुंदर, अद्भुत अने चंचल कुंडलो वडे जेना गं-
डस्थळो घसाय छे एवो, महाऋद्धिवाळो, यावत् दस दिशाओने प्रकाशित करतो त्यां बत्रीश लाख विमानोनुं, चोराशी हजार सामा-
निक देवोनुं, तेत्रीश त्रायस्त्रिंशक देवोनुं, चार लोकपालोनुं,परिवार सहित आठ अग्रमहिषीओनुं, त्रण परिषदोनुं, सात सेनाओनुं, सात
सेनाधिपतिओनुं, सोळ हजार आत्मरक्षक देवोनुं तथा बीजा अन्य सौधर्मकल्पवासी देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करतो विहरे छे.

४५. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ईशान देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! ईशान देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम !

नवीन होयनी शुं ? एवा हेम-सुवर्णना चारु-सुंदर अने चित्र-आश्चर्यकारक चंचल कुंडलो वडे विलिख्यमान-स्पर्श कराता गंड-
कपोलप्रदेश जेना छे एवो इन्द्र छे.

यणामया, अच्छा, जाव पडिरूवा। एत्थ णं सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखिज्जइभागे। तत्थ णं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयसहस्साणं, साण साण सामाणियसाहस्सीणं, एवं जहेव ओहियाणं तहेव एएसिंपि भाणियव्वं, जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्च जाव विहरंति। सक्के इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, वज्जपाणी, पुरंदरे, सयक्कतु, सहस्सक्खे, मघवं, पागसासणे, दाहिणड्ढलोगाहिवई, बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवई, एरावणवाहणे, सुरिंदे, अयरंबरवत्थधरे, आलइयमालमउडे, नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे, महिड्ढिए, जाव पभासेमाणे। से णं तत्थ

अपेने–उपपात, समुद्घात अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां घणा सौधर्म देवो रहे छे. महाऋद्धिवाळा यावत्–प्रकाशित करता तेओ पोतपोताना त्यां रहेला लाखो विमानोनुं, पोतपोताना हजारो सामानिक देवोनुं पोतपोताना त्रायस्त्रिंशक देवोनुं, ए प्रमाणे जेम सामान्य देवोनुं वर्णन कर्युं तेम सौधर्म देवोनुं पण जाणवुं. यावत् हजारो आत्मरक्षक देवोनुं, ते सिवाय बीजा घणा सौधर्मकल्पवासी वैमानिक देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करतो यावत्–विहरे छे. अहीं देवेन्द्र देवनो राजा शक्र रहे छे. जेणे हाथमां वज्र धारण करेलुं छे एवो, पुरंदर, शतक्रतु, सहस्राक्ष, मघवा, पाकशासन अने लोकना दक्षिणार्धनो अधिपति

करनार, 'अरजाऽम्बरवस्त्रधरः' रजोरहित अने स्वच्छ होवाथी आकाशना जेवा वस्त्रो धारण करनार, 'आलगितमालामुकुट' आलगित–पहेरेला छे माळा अने मुकुट जेणे एवो, 'नवहेमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्यमानगण्ड' अतिशय सुंदरवर्ण होवाथी नव-

न्ने, अद्धचंदसंठाणसंठिए, अचिमालिभासरासिवण्णाभे, असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे। तत्थ णं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा, जाव पडिरूवा। तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडिंसया पन्नत्ता, तंजहा—असोगवडिंसए, सत्तवण्णवडिंसए, चंपगवडिंसए, चूयवडिंसए, मज्झे इत्थ सोहम्मवडिंसए। ते णं वडिंसया सव्वर-

णाभे' किरणोनी माळा अने भासरासि—कान्तिना समूहना जेवा वर्णवाळो छे. ते असंख्याता कोटाकोटी योजन लांबो अने पहोळो छे. तथा तेनी परिधि असंख्याता कोटाकोटी योजन छे. ते सर्व रत्नमय, स्वच्छ यावत्—प्रतिरूप छे. त्यां सौधर्म देवोना बत्रीश लाख विमानो छे एम कह्युं छे. ते विमानो सर्व रत्नमय, यावत् प्रतिरूप छे. ते विमानोना बराबर मध्य भागमां पांच अवतंसक विमानो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे— १ अशोकावतंसक, २ सप्तपर्णावतंसक, ३ चंपकावतंसक, ४ चूतावतंसक, अने तेओना मध्यभागमां सौधर्मावतंसक छे. ते अवतंसक विमानो सर्व रत्नमय, स्वच्छ यावत्—प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सौधर्म देवोना स्थानो कह्यां छे. तेओ

'शतक्रतुः' कार्तिक शेठना भवनी अपेक्षाए सो क्रतु—अभिग्रहविशेषरूप प्रतिमाओ अथवा श्रमणोपासकनी पांचमी प्रतिमा जेणे वहन करी छे एवो,ते इन्द्रे पूर्वे कार्तिक शेठना भवमां सो वार प्रतिमाओ अंगीकार करी हती ते अपेक्षाए शतक्रतु कहेवाय छे. 'सहस्राक्षः' जेने हजार आंखो छे एवो, कारण के इन्द्रने पांचसो मन्त्रीओ होय छे, अने तेनी आंखो इन्द्रना कार्यमां वपराती होवाथी इन्द्रसंबंधी कहेवाय छे, माटे इन्द्रनुं सहस्राक्षपणुं छे. 'मघवान्' मघाः—महा मेघो जेने अधीन छे एवो, 'पाकशासनः' पाक नामे बलवान राक्षसरूप शत्रुनुं शासन

साणं साण अणियाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्चं जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

४४. कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सोहम्मे णाम कप्पे पन्नत्ते। पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणविच्छि-

---

वाळा, पद्मना जेवा गौर, श्वेत, शुभ वर्ण गंध अने स्पर्शवाळा, उत्तम वैक्रिय शरीरवाळा, श्रेष्ठ वस्त्र, गंध, माळा अने विलेपन धारण करनारा, महाऋद्धिवाळा***इत्यादि वर्णन भवनपति देवोनी पेठे 'यावत् विहरे छे' त्यासुधी जाणवुं

४४. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सौधर्म देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! सौधर्म देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरुपर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभा पृथिवीना बहु सम अने रमणीय भूमिना भागथी यावत्–उपर दूर गया पछी अहीं सौधर्म नामे देवलोक आवे छे. ते पूर्व–पश्चिम लांबो अने उत्तर–दक्षिण विस्तीर्ण छे. ते अर्धचंद्रनी आकृतिवाळो, 'अच्चिमालि–भासरासिव-

---

वृषभनुं चिन्ह छे अच्युत कल्पना देवोने मुकुटमां विडिम–मृगविशेषनुं चिन्ह छे 'वरकुंडलोद्योतितानना' श्रेष्ठ कुंडलो वडे मुखने जेओए प्रकाशित कर्युं छे एवा वैमानिक देवो छे बाकीनो भाग सुगम छे

४४ सौधर्मकल्पना सूत्रमां 'अर्चिषां माळावत् भासां राशिवद् वर्णाभा यस्य स 'अर्चिमालिभासराशिवर्णाभ' किरणोनी माळा अने कान्तिना समूहना जेवी वर्णाभा–वर्णनी कान्ति जेने छे एवो, 'वज्रपाणि' जेना हाथमां वज्र छे एवो, 'पुरन्दर' असुरादिना पुर–नगरनो दारण–नाश करनार,

गयवइभुयगखग्गउसभविडिमपागडियचिंधमउडा, पसिढिलवरमउडकिरीडधारिणो, वरकुंडलुज्जोईयाणणा, मउडदित्तसिरिया, रत्ताभा, पउमपम्हगोरा, सेया, सुहवन्नगंधफासा, उत्तमवेउव्विणो, पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा, महिड्ढिया, महज्जुइया, महायसा, महब्बला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथंभियभुया, अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउली, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा, भासुरबोंदी, पलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वन्नेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अचीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं साणं तायत्तीसगाणं, साणं साणं लोगपालाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणियाणं,

---

अने ते अनुक्रमे मृग, महिप, वराह, सिंह, बकरो, देडको, घोडो, हाथी, भुजग–सर्प, गेंडो, बळद, विडिम–मृगविशेप रूप चिह्नो जेओए मुकुटमां प्रकट करेला छे एवा, शिथिल श्रेष्ठ मुकुट अने किरीटने धारण करनारा, जेओए उत्तम कुंडलो वडे मुखने प्रकाशित कर्युं छे एवा, जेओए मुकुटवडे शोभा अर्पण करी छे, मुकुटवडे शोभा प्राप्त करी छे एवा, रक्त प्रकाश-

---

घोडानुं चिन्ह छे, सहस्रारकल्पना देवोने मुकुटमां गजपतिनुं चिन्ह छे. आनतकल्पना देवो मुकुटमां भुजग–सर्पना चिन्हवाळा छे. प्राणत कल्पना देवो मुकुटमां खड्ग–गेंडानुं चिन्ह धारण करे छे. खड्ग ए जंगलनुं चतुष्पद प्राणी छे. आरणकल्पना देवोने मुकुटमां

गाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोयलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुयगेवेज्जणुत्तरेसु एत्थ णं वेमाणियाण देवाणं चउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्ठा, मट्ठा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरिया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ णं वेमाणियाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति। तं जहा—सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुयगेवेज्जणुत्तरोववाइया देवा, ते णं मिगमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहय-

धर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयको अने अनुत्तरोमां वैमानिक देवोना चोराशी लाख, सत्ताणु हजार अने त्रेवीश विमानावासो छे एम कह्युं छे. ते विमानो सर्व रत्नमय, स्वच्छ, कोमळ, स्निग्ध, घसेला, साफ करेला, रजरहित, निर्मल, निष्पंक, निरावरण दीप्तिवाळा, प्रभासहित, शोभासहित, उद्द्योतसहित, प्रसन्नता करनारा, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वैमानिक देवोना स्थानो कहेला छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमा छे. त्यां घणा वैमानिक देवो रहे छे. ते आ प्रमाणे—सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक अने अनुत्तरौपपातिक,

ह्मलोक देवोए मुकुटमां मकरानुं चिन्ह प्रकट करेलुं छे लान्तक देवो मुकुटमां देडकानुं चिन्ह धारण करे छे शुक्र देवलोकना देवोने मुकुटमां

सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणीयाणं, सत्तण्हंअणीयाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, जाव अन्नेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं जाव विहरंति ॥

४३. कहि णं पंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूहिं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ, बहु-

---

मानावासोनुं, चार हजार सामानिक देवोनुं, परिवार सहित चार अग्रमहिषीओनुं, त्रण पर्षदोनुं, सात प्रकारना सैन्योनुं, सात सेनाधिपतिओनुं, सोळ हजार आत्मरक्षक देवोनुं, यावत्–अन्य घणा ज्योतिष्क देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं करता यावत्–विहरे छे.

४३. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वैमानिक देवोना क्यां स्थानो कहेलां छे ? हे भगवन् ! वैमानिक देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना बहु सरखा अने रमणीय भूमिभागथी उपर चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने ताराओ संबन्धी घणा सेंकडो योजन, घणां हजारो योजनो, घणा लाखो योजनो, घणा क्रोड योजनो, घणी कोडाकोडी योजनो उपर दूर जइए एटले अहीं सौ-

---

त्रने नक्षत्रमंडल अने तारने ताराओना आकारनुं मुकुटमां चिह्न छे.

४३. वैमानिक सूत्रमां चोराशी लाख सत्ताणुं हजार अने त्रेवीश विमानो छे. अने ते बत्रीश लाख, अठयावीश लाख, बारलाख, आठ लाख, चार लाख इत्यादि संख्या मेळववाथी थाय छे, सौधर्म देवोने मुकुटमां मृगनुं चिह्न प्रकट छे. ईशान देवोने मुकुटमां पाडानुं चिन्ह छे, सनत्कुमार देवोए मुकुटमां वराहरूप चिह्न प्रकट कर्युं छे, माहेन्द्र देवोए सिंहरूप चिन्ह मुकुटमां प्रकट कर्युं छे. ब्र-

जाव विहरति । चंदिमसूरिया इत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया जाव पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं साणं जोइसियविमाणावाससयसहस्साणं, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीणं

तेओ विश्रामरहित–निरंतर मंडलरूपे गति करनारा, प्रत्येकना नामना लांछन वडे मुकुटमां प्रकट करेलुं चिह्न जेओने छे एवा, महा ऋद्धिवाळा, यावत् शोभता रहेला पोतपोताना लाखो विमानावासोनुं, पोतपोताना हजारो सामानिक देवोनुं, पोतपोतानी परिवार-सहित अग्रमहिषीओनुं, पोतपोतानी पर्षदोनुं, पोतपोताना सैन्योनुं, पोतपोताना सेनाधिपतिओनुं, पोतपोताना हजारो आत्मरक्षक देवोनुं, अने बीजा घणा ज्योतिषिक देवो अने देवीओनु अधिपतिपणुं करता यावत्–विहरे छे. अहीं चन्द्र अने सूर्य ए बे ज्योतिष्कना इन्द्रो अने ज्योतिष्कना राजाओ रहे छे. तेओ महाऋद्धिवाळा, यावत् शोभता पोतपोताना लाखो ज्योतिष्कना वि-

शुभस्पर्शानि वा'सुखकारक स्पर्शवाळा, अथवा शुभ स्पर्शवाळा, बाकीना बधा सूत्रनी पूर्वनी पेठे–यावत्–बृहस्पति चन्द्र वगेरे सुधी व्याख्या करवी बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य, शुक्र, शनैश्चर, राहु, धूमकेतु, बुध अने अंगारक–मंगल ते ग्रहो केवा छे? 'तप्ततपनीयकनकवर्णा' तपावेला तपनीय–कनक–सुवर्णना जेवा वर्णवाळा, अर्थात् कंइक राता वर्णवाळा, ते सिवायना बीजा ग्रहो ज्योतिष्कमां फरे छे, अने जे केतुओ गमन करवामां प्रीतिवाळा तथा अठ्यावीश प्रकारना नक्षत्र देवो ते बधा 'नानासंस्थानसंस्थिताः' विविध आकृतिवाळा अने 'च' शब्दथी तपावेला सुवर्णना जेवा वर्णवाळा छे ताराओ पांच वर्णना छे ए बधा ज्योतिषिक देवो 'स्थितलेश्या–'अवस्थित तेजो लेश्यावाळा छे तथा जेओ 'चारिण' गमन करवाना स्वभाववाळा छे ते 'अविश्राममण्डलगतिका' अविश्राम–निरंतर मंडलाकारे गति करनारा छे 'प्रत्येकनामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटा' प्रत्येके पोतपोताना नामना लांछन वडे मुकुटमां चिन्ह प्रकट कर्युं छे एवा ज्योतिष्को छे तेनो भावार्थ एवो छे के चन्द्रने मुकुटमां पोताना नामना लांछनरूप चन्द्रमंडलनुं चिह्न प्रकट छे सूर्यने सूर्यमंडल, ग्रहने ग्रहमंडल, नक्ष

स्सीणं साणं साणं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणियाणं, साणं साणं अणियाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं

घात अने स्वस्थान–ए त्रणेनी अपेक्षाए लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा ज्योतिपिक देवो रहे छे. ते आ प्रमाणे–बृहस्पति, चन्द्र, सूर्य शुक्र, शनैश्चर, राहु, धूमकेतु, बुध, अंगारक–मंगळ, तेओ तपावेला तपनीय–सुवर्णना जेवा वर्णवाळा छे. (ते सिवाय बीजा) जे ग्रहो ज्योतिश्चक्रमां फरे छे, गतिमां प्रीतिवाळा केतुओ तथा अठ्यावीश प्रकारना नक्षत्र देवगणो छे ते बधा अनेक प्रकारनी आकृतिवाळा छे. ताराओ पांच वर्णना छे अने तेओ बधा स्थितलेश्यावाळा–अवस्थिततेजोलेश्यावाळा छे. जेओ फरवाना स्वभाववाळा छे

पताका तथा छत्रातिछत्र–उपर उपर रहेलां छत्रो, ते बन्ने वडे युक्त, 'तुंगानि' उंचा, 'गगनतलमधिलङ्घयच्छिखराणि' आकाश मार्गनुं अति उल्लंघन करनारा शिखरो जेओना छे एवां, 'जालान्तररत्न–पञ्जरोन्मीलितानीव' जाळीओ भवननी भींतने विषे होय छे अने ते लोक प्रसिद्ध छे, तेनी वच्चेना भागमां विशिष्ट शोभाने माटे ज्यां रत्नो मूकेलां छे एवां, तथा पांजराथी बहार करायेला होयनी शुं एवां, जेमके कोइ वस्तु वांसवगेरेना बनेला प्रच्छादन विशेषरूप पांजराथी बहार करायेली होय अने तेनी कान्ति अविनष्ट होवाथी शोभे छे तेम ते विमानो पण शोभे छे. 'मणिकनकस्तूपिकानि' मणि अने सुवर्णना स्तूपिका–शिखरो जेओने छे एवां, 'विकसितशतपत्रपुण्डरीक–तिलकरत्नार्धचन्द्रचित्राणि' बारणा वगेरेमां आकृतिरूपे रहेलां खीलेलां जे शतपत्रो अने पुंडरीक कमळो, भींत वगेरे उपर रहेला तिलको, बारणा वगेरेमां रहेला रत्नमय अर्धचन्द्रो वडे चित्र–आश्चर्यकारक, 'नानामणिमयदामालंकृतानि' अनेक प्रकारनी मणिमय माळाओ वडे अलंकृत, 'श्लक्ष्णानि' अंदरना तथा बहारना भागमां कोमळ स्पर्शवाळां, 'तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्तटानि' सुवर्णमय, मनोहर रेतीओनो प्रस्तट—भूमि जेओने विशे छे एवां, एटले ज्यां सुवर्णमय वालुका पाथरेली छे एवां, तथा 'सुखस्पर्शानि,

सियसयपत्तपुंडरीया, तिलयरयणद्धचंदचित्ता, नाणामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा, तवणिज्जरुइल-वालुयापत्थडा, सुहफासा, सस्सिरिया, सुरूवा, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति। तं जहा—बहस्सई, चंदा, सूरा, सुक्का, सणिच्छरा, राहू, धूमकेऊ, बुधा, अंगारगा, तत्ततवणिज्जकणगवन्ना जे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीसइविहा नक्खत्तदेवगणा, णाणासंठाणसंठियाओ, पंचवन्नाओ तारयाओ ठियलेसाचारिणो, अविस्साममंडलगई, पत्तेयनामंकपागडियचिंधमउडा महिड्ढिया जाव पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाह-

उल्लसन करनारा जेओना शिखरो छे एवा, जाळीओना मध्यमां रत्नो जेओने छे एवां, तथा पांजरामांथी बहार काढेला होयनी शुं एवां, मणि अने कनकना स्तूपिका-शिखरो जेओना छे एवां, विकसित-खीलेला शतपत्रो, पुंडरीको, तिलको अने रत्नमय अर्ध चन्द्रो वडे विचित्र, अनेक प्रकारनी मणिमय माळाओ वडे सुशोभित, अंदर अने बहार कोमळ, तपनीय-सुवर्णनी मनोहर वालुकानां प्रस्तट-भूमिपीठ जेओने विषे छे एवां, सुखकर स्पर्शवाळां, शोभायुक्त, सुंदर रूपवाळां, प्रसन्नता उत्पन्न करनार, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप छे अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्त ज्योतिषिक देवोना स्थानो कहेलां छे. तेओ उपपात, समुद्‌

चित्र-आश्चर्यभूत, 'वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताका-छत्रातिछत्रकलितानि' वायुथी कंपती विजय-अभ्युदयने सूचवती वैजयन्ती नाम पताका अथवा विजय-वैजयन्तीनी पार्श्ववर्ती कर्णिका, ते प्रधान छे जेमां एवी वैजयन्ती। ते विजयवैजयन्ती तथा पार्श्ववर्ती कर्णरहित होय ते

वसंति ? गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोइसविसए । एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिया, सव्वफालिहमया, अब्भुग्गयमूसियपहसिया इव, विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता, वाउद्धूयविजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया, तुंगा, गगणतलमहिलंघमाणसिहरा, जालंतररयण-पंजलुम्मिलियव्व, मणिकणगथूमियागा, विय-

गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना अत्यंत सम-सरखा अने रमणीय भूमिना भागथी सातसो नेवुं योजन उपर जइए एटले एकसो दस योजन पहोळा अने तीरछा असंख्याता योजनप्रमाण क्षेत्रमां ज्योतिषिक देवोनो विषय-निवास छे. अहीं ज्योतिषिक देवोना तीरछा असंख्याता लाख ज्योतिषिक विमानो छे एम कह्युं छे. ते विमानो अरधा कोठानी आकृतिवाळा, सर्वस्फटिकमय, अभ्युद्गता-चो तरफथी नीकळेली, उत्सृता-चारे तरफ प्रसरेली प्रभा वडे धोळां, विविध प्रकारना मणि, कनक अने रत्नोनी भक्ति-रचना वडे विचित्र, वायु वडे कंपित थयेली विजयनी सूचक वैजयन्ती नामे पताका अने उपर उपर रहेला छत्रो वडे युक्त, उंचा गगनतलनुं

४२. ज्योतिष्कना सूत्रमां 'अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिया' अरधा कोठाना आकारवाळां विमानो छे. आ संबंधे आक्षेप-शंका अने परिहार-समाधान चन्द्रप्रज्ञप्तिटीका अने सूर्यप्रज्ञप्तिनी टीकामां छे त्यांथी जाणी लेवुं. ते विमानो 'सर्वस्फटिकमयानि' सर्वरूपे स्फटिकमय, 'अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितानि' अभ्युद्गता-अभिमुखपणे चोतरफथी नीकळेली, अने उत्सृता-प्रबलपणे सर्व दिशाओमां प्रसरेली प्रभा-दीप्ति वडे सित-धोळां, 'विविधमणिकनकभक्तिचित्राणि' विविध प्रकारना मणि, कनक अने रत्नोनी भक्ति-रचनाविशेषवडे

लोयस्स असखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे अणवण्णिया देवा परिवसंति। महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति। सन्निहिय-सामाणा इत्थ दुवे अणवन्निंदा अणवन्नियकुमाररायाणो परिवसंति। महिड्ढीया, एवं जहा कालमहाकालाणं दोण्ह पि दाहिणिल्लाणं उत्तरिल्लाण य भणिया तहा सन्निहियसामाणाण पि भाणियव्वा। संगहणीगाहा—अणवन्निय-पणवन्निय-इसिवाइय-भूयवाइया चेव। कंदिय-महाकंदिय कोहंडा पयगए चेव। इमे इंदा-'सनिहिया सामाणा धाय-विधाए इसी य इसिवाले। ईसरमहेसरे विय हवइ सुवच्छे विसाले य ॥२॥ हासे हासरई चेव सेए तहा भवे महासेए। पयए पयगवई विय नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ३ ॥

४२. कहि णं भंते! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! जोइसिया देवा परि-

देवोना राजा रहे छे. तेओ महाऋद्धिवाळा–ए प्रमाणे जेम दक्षिणना अने उत्तरना पिशाचना इन्द्र काल अने महाकाल संबंधे कह्युं छे तेम संनिहित अने सामान्य इन्द्र संबंधे पण कहेवुं. आ संग्रहणी गाथानो अर्थ छे–"१ अणपन्निक, २ पणपन्निक, ३ ऋषिवादी, ४ भूतवादी, ५ कंदित, ६ महाकंदित, ७ कोहंड अने ८ पतग ए वानव्यन्तर देवो छे. तेओना आ इन्द्रो छे–१ सन्निहित, २ सामान्य, ३ धाता, ४ विधाता, ५ ऋषि, ६ ऋषिपाल, ७ ईश्वर, ८ महेश्वर, ९ सुवत्स, १० विशाल, ११ हास, १२ हासरति, १३ श्वेत, १४ महाश्वेत, १५ पतग, अने १६ पतंगपति ए अनुक्रमथी जाणवा.

४२. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त ज्योतिषिक देवोना स्थानो क्यां छे? हे भगवन्! ज्योतिषिक देवो क्यां रहे छे? हे

४१. कहि णं भंते! अणवन्नियाणं देवाणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! अणवन्निया देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं हेट्ठा य एगं जोयणसयं सयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा णगरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं जाव पडिरूवा। एत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं

गीतयश इन्द्रो यावत्-विहरे छे.

"काल अने महाकाल, सुरूप अने प्रतिरूप, पूर्णभद्र अने माणिभद्र, भीम अने महाभीम, किन्नर अने किंपुरुप, सत्पुरुष अने महापुरुष, अतिकाय अने महाकाय तथा गीतरति अने गीतयश."

४१. हे भगवन्! अणपन्निक देवोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! अणपन्निक देवो क्यां रहे छे? हे गौतम! आ रत्नप्रभा पृथिवीना हजार योजन जाडा रत्नमय कांडनी उपर अने नीचे सो सो योजन मूकीने यावद्-आठसो योजनमां अणपन्निक देवोना तीरछा असंख्य लाख भूमिसंबन्धी नगरो छे एम कह्युं छे. ते नगरो यावत्-प्रतिरूप छे. त्यां अणपन्निक देवोना स्थानो छे. ते उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागने विषे छे. त्यां घणा अणपन्निक देवो रहे छे. तेओ महाऋद्धिवाळा इत्यादिवर्णन पिशाचोनी जेम यावत्-'विहरे छे'-त्यां सुधी जाणवुं. अहीं सन्निहित अने सामान्य ए बे अणपन्निकोना इन्द्र अने अणपन्निक

दक्षिण दिशानो काळ अने उत्तर दिशानो महाकाळ, भूतोना सुरूप अने प्रतिरूप, यक्षोना पूर्णभद्र अने मणिभद्र, राक्षसोना भीम अने महाभीम, किन्नरोना किन्नर अने किंपुरुप, किंपुरुषोना सत्पुरुष अने महापुरुष, महोरगोना अतिकाय अने महाकाय तथा गन्धर्वोना गीतरति अने गीतयश इन्द्रो जाणवा.

अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ। उत्तरिल्लाणं पुच्छा।गोयमा ! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणं पि। णवरं मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं। महाकाले एत्थ पिसाइंदे पिसायराया परिवसइ, जाव विहरइ। एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणं पि, जाव गंधव्वाणं। णवरं इंदेसु णाणत्तं भाणियव्वं इमेण विहिणा—भूयाणं सुरूव-पडिरूवा, जक्खाणं पुन्नभद्द-माणिभद्दा, रक्खसाणं भीम-महाभीमा, किन्नराणं किन्नर-किंपुरिसा, किंपुरिसाणं सप्पुरिस-महापुरिसा, महोरगाणं अइकाय-महाकाया, गंधव्वाणं गीयरइ-गीयजसा, जाव विहरइ।

काले य महाकाले सुरूव-पडिरूव-पुन्नभद्दे य। तह चेव माणिभद्दे भीमे य तहा महाभीमे ॥ १ ॥
किन्नर-किंपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अइकाय-महाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥ २ ॥

उत्तर दिशाना पिशाचो सबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! जेम दक्षिण दिशाना पिशाचो सबन्धे वक्तव्यता कही छे तेम उत्तरना पिशाचो सबन्धे पण कहेवी. परन्तु मेरु पर्वतनी उत्तर दिशाए छे. अहीं महाकाल नामे पिशाचोनो इन्द्र पिशाचोना राजा वसे छे. यावत्-विहरे छे. ए प्रमाणे जेम पिशाचो सबन्धे हकीकत कही तेम भूतो सबधे यावत्-गधर्वो सबन्धे कहेवी. परन्तु इन्द्रो संबधे विशेषता आ प्रकारे कहेवी-भूतोना सुरूप अने प्रतिरूप इन्द्रो छे. यक्षोना पूर्णभद्र अने माणिभद्र, राक्षसोना भीम अने महाभीम, किन्नरोना किन्नर अने किंपुरुष, किंपुरुषोना सत्पुरुष अने महापुरुष, महोरगोना अतिकाय अने महाकाय तथा गंधर्वोना गीतरति अने

---

४१ परन्तु 'काले य महाकाले' इत्यादि दक्षिण अने उत्तर दिशाना पिशाचोना इन्द्र अनुक्रमे काळ अने महाकाळ जाणवा-पटले

जोयणसएसु एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा जहा ओहिओ भवणवन्नओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरूवा। एत्थ णं दाहिणिल्लाण पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति, महिड्डिया जहा ओहिया जाव विहरंति। काले एत्थ पिसायिंदे पिसायराया परिवसइ, महिड्डीए जाव पभासेमाणे। से णं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जनयरावाससयसहस्साणं, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्ह य अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं

एक सो योजन जइने अने नीचे एक सो योजन छोडीने वच्चे आठसो योजनमां तीरछा असंख्याता लाख भूमिसंबन्धी नगरो छे एम कह्युं छे. ते भवननोनुं वर्णन सामान्य भवनोना वर्णन प्रमाणे यावत्-प्रतिरूप छे-त्यां सुधी जाणवुं. अहीं दक्षिण दिशाना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पिशाचदेवोना स्थानो छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा दक्षिण दिशाना पिशाच देवो रहे छे. ते महा ऋद्धिवाळा-इत्यादि औधिक-सामान्य वर्णन यावद् 'विहरे छे' त्यांसुधी जाणवु. अहीं काल नामे पिशाचनो इन्द्र अने पिशाचनो राजा रहे छे. ते महाऋद्धिवाळो-यावत् (दश दिशाओने) प्रकाशित करे छे. ते त्यां तीरछा असंख्याता लाख भूमिसंबन्धी नगरोनुं, चार हजार सामानिक देवोनुं, परिवारसहित चार अग्रमहिषीओनु, त्रण पर्षदोनुं, सात प्रकारना सैन्यनुं, सात सेनाधिपतिओनुं, सोळ हजार आत्मरक्षक देवोनुं, ते सिवाय बीजा घणा वानमंतर देवो अने देवीओनुं, अधिपतिपणुं करतो यावद् विहरे छे.

मसंखेज्जा भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भोमेज्जनगरा बाहिं वट्टा जहा ओहिओ भवणवन्नओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरूवा। एत्थ णं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ बहवे पिसाया देवा परिवसंति, महिड्डिया जहा ओहिया जाव विहरन्ति। काल-महाकाला इत्थ दुवे पिसाइंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्डिया महज्जुइया जाव विहरंति।

४० कहि णं भंते! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाण ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु

आठ सो योजनमां पिशाच देवोना तीरछा भूमिसबन्धी असंख्याता लाख नगरो छे एम कह्युं छे. ते भूमिसबन्धी नगरो बहारना भागमां गोळ छे-इत्यादि वर्णन सामान्य भवन वर्णन प्रमाणे यावत्-प्रतिरूप-नवीन नवीन रूपने धारण करनारा छे-त्यां सुधी कहेवुं. त्यां पर्याप्त अने अपर्याप्त पिशाच देवोना स्थानो कहेलां छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा पिशाच देवो रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा-इत्यादि सामान्य वर्णन यावत्-'विहरे छे' त्यांसुधी जाणवुं. अहीं काल अने महाकाल नामना बे पिशाचना इन्द्रो पिशाचना राजाओ रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा महाद्युतिवाळा यावत्-विहरे छे.

४०. हे भगवन्! दक्षिण दिशाना पिशाच देवोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! दक्षिण दिशाना पिशाच देवो क्यां रहे छे? हे गौतम! आ जंबूद्वीपनामना द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभा पृथिवीना हजार योजन जाडा रत्न कांडना उपरना भागथी

ईसरसेणावच्चं कारेमाणा,पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

३९. कहि णं भंते ! पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! पिसाया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं पिसायाणं देवाणं तिरिय-

---

पतिओनुं, पोतपोताना हजारो आत्मरक्षक देवोनुं अने बीजा घणा वाणमंतर देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं पुरपतिपणुं–अग्रेसरपणुं, स्वामीपणुं, भर्तापणुं, वडीलपणुं अने आज्ञावडे ईश्वरपणुं तथा सेनापतिपणुं करावता, पालन करता निरंतर चालता नृत्य, गीत अने वगाडेला वीणा, हस्तताल, कांसी तथा निपुण पुरुषोए वगाडेल घन मृदंगना मोटा शब्द वडे दीव्य एवा उपभोग करवा लायक भोगोने भोगवता विहरे छे.

३९. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पिशाच देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! पिशाच देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना हजार योजन जाडा रत्नमय कांडना उपरना भागथी एक सो योजन जइने अने नीचे सो योजन छोडीने वच्चेना

अने कुन्त–भाला जेओना हाथमां छे एवा, 'अनेकमणिरत्नविविधनिर्युक्तविचित्रचिह्नगताः' अनेक प्रकारना चन्द्रकान्तादि मणिओ अने कर्केतनादि रत्नोवडे विविधपणे युक्त विचित्र–अनेक प्रकारनां चिह्नो रहेलां छे जेओने विशे एवा, बाकीनो भाग स्पष्ट छे, अने पूर्वे तेनी व्याख्या करी छे माटे अहीं करता नथी.

दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए लेस्साए, दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते णं तत्थ साणं साणं असंखेज्जभोमेज्जनगरावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणीयाणं, साणं साणं अणीयाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-

अकल छे एवा, अंगद, कुंडल, अने कपोलप्रदेशनो स्पर्श करनार कर्णपीठ–कर्णाभरणने धारण करनार, विचित्र मालाओ मस्तकमां धारण करनारा, कल्याण करनार श्रेष्ठ वस्त्रो जेओए पहेरेला छे एवा, कल्याणकारी श्रेष्ठ माला अने विलेपन धारण करनारा, देदीप्यमान शरीरवाळा, लांबी लटकती वनमालाने धारण करनारा, दीव्य, वर्ण, दीव्य गंध, दीव्य स्पर्श, दीव्य संघयण, दीव्य संस्थान, दीव्य ऋद्धि, दीव्य द्युति, दीव्य प्रभा, दीव्य छाया (कान्ति), दीव्य अर्ची (कीरणो) दीव्य तेज अने दीव्य लेश्या–(शरीरादिवर्णना सौंदर्य) वडे दश दिशाओने उद्द्योतवाळी करता, शोभता त्यां पोतपोताना असंख्याता लाखो भूमिसंबंधी नगरावासोनु, पोतपोताना हजारो सामानिक देवोनु, पोतपोतानी अग्रमहिषीओनु, पोतपोतानी पर्षदोनु, पोतपोताना सैन्यनु, पोतपोताना सेनाधि-

वेषाः' विविध प्रकारना देवी पहेरवेशोवडे वेषने ग्रहण कर्यो छे जेणे एवा, 'प्रमुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रियाः' प्रमुदित–प्रसन्न, कन्दर्प–कामने उद्दीपन करनार वचन अथवा चेष्टा, कलह–राड, केलि–क्रीडा अने कोलाहल जेओने प्रिय छे एवा, 'हास्यबोलबहुलाः' पुष्कळ हास्य अने बोल–अव्यक्त शब्द–कोलाहल करनारा, 'असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता' तलवार, मुद्गर, शक्ति–एक जातनु शस्त्र

कामरूवदेहधारी, णाणाविहवण्णरागवरवत्थविचित्तचिल्लगनियंसणा, विविहदेसिनेवत्थगहियवेसा, पमुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया, हासबोलबहुला, असिमुग्गरसत्तिकुंतहत्था, अणेगमणिरयणविविहनिज्जुत्तविचित्तचिंधगया, महिड्ढिया, महज्जुईया, महायसा, महाबला, महाणुभागा, महासुक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथंभियभुया, अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउली, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदी, पलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वन्नेणं, दिव्वेणं गंधेणं

विकुर्वेला अनेक रूपवाळा देहने धारण करनारा, अनेक प्रकारना वर्ण रूप रंगवाळा, प्रधान, अद्भुत, विचित्र अने देदीप्यमान वस्त्रोने पहेरनारा, विविध प्रकारना देशी वेषो वडे जेओए पहेरवेश धारण कर्यो छे एवा, प्रमुदित तथा कंदर्प, कलह, क्रीडा अने कोलाहलने विषे प्रीतिवाळा, पुष्कळ हास्य अने कोलाहल करनारा, तलवार, मुद्गर, शक्ति अने भालाओ जेना हाथमां छे एवा, अनेक प्रकारना मणि अने विविध रत्नो वडे युक्त, विचित्र चिह्नो वाळा, महा ऋद्धिवाळा, महा कांतिवाळा, महा यशवाळा, महा बलवाळा, महा सामर्थ्यवाळा, महासुखवाळा, हार वडे सुशोभित वक्षःस्थळ जेओनुं छे एवा, कडा अने तुटित—बाहुरक्षक—बाजुबंध वडे जेनी भुजाओ

'कामकामाः' एवो पाठ छे. तेमां काम—स्वेच्छाथी काम—मैथुनसेवा जेओने छे एवा, एटले तेओ अनियमितपणे विषयसेववावाळा, 'कामरूपाः' काम—स्वेच्छाथी रूप जेओनुं छे एवा, 'कामरूपदेहधारिणः' काम—स्वेच्छाए रूप जेओनुं छे एवा देह—शरीरने धारण करनारा, एटले स्वेच्छावडे विकुर्वेला अनेक प्रकारना रूपयुक्त शरीरने धारण करनारा, 'नानाविधवर्णरागवरवस्त्रचित्रचिल्लगनिवसनाः' अनेक प्रकारना वर्णोवडे रंगवाळा प्रधान अनेक प्रकारना अथवा अद्भुत एवा देदीप्यमान वस्त्रोने पहेरनारा, 'विविधदेशीनेपथ्यगृहीत-

सस्सिरिया, समरीइया, सउज्जोया, पासाइया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा । एत्थ णं वाणमन्तराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति । तंजहा—पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किंनरा, किंपुरिसा, भुयगवइणो महाकाया, गन्धव्वगणा य निउणगंधव्वगीयरइणो, अणवन्नियपणवन्नियइसिवायभूयवाइयकंदियमहाकंदिया य कुहंडपयंगदेवा, चंचलचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया, गहिरहसियगीयणच्चणरई, वणमालामेलमउडकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा, सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतविहसंतचित्तवणमालरइयवच्छा, कामगमा, [कामकामा]

३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ भुजगपति महाकाय-महोरगो, ८ निपुण गान्धर्वोना गायनने विषे प्रीतिवाळा गन्धर्व गणो. १ अणपन्निक, २ पणपन्निक, ३ ऋषिवादिक, ४ भूतवादिक, ५ कंदित, ६ महाकंदित, ७ कुहंड अने ८ पतंगदेवो. ते चपल चंचल अने अत्यंत चपल चित्तवाळा तथा क्रीडा अने हास्य प्रिय जेने छे एवा, गंभीर हास्य, गीत अने नृत्यने विषे प्रीतिवाळा, वनमालामय आपीड-शेखर, मुकुट, कुंडल तथा स्वच्छंदपणे विकुर्वेला आभरणो वडे सुंदर भूषण-शोभाने धारण करनारा, सर्व ऋतुमां थवावाळा सुगंधी पुष्पो वडे सारी रीते रचेली लांबी लटकती शोभती प्रिय विकसित अने अनेक प्रकारनी विचित्र वनमाला वक्षःस्थलमां जेओए पहेरेली छे एवा, स्वेच्छाए गमन करनारा, स्वेच्छा वडे रूप वाळा शरीरने धारण करनारा, अर्थात् स्वेच्छाथी

प्रलंब-लांबी लटकती, शोभती, कान्त-प्रिय विकसन्ती-खीलेली-नहि करमायेली पुष्पोवाळी चित्र-नाना प्रकारनी वनमाला जेओए वक्षःस्थळमां धारण करेली छे एवा, 'कामगमा' काम-स्वेच्छापडे गम-गतिवाळा, अर्थात् स्वेच्छाए फरवावाळा, क्वचित्

दुवारदेसभागा, जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया, अउज्झा, सदाजया, सदागुत्ता, अडयालकोट्ठगरइया, अडयालकयवणमाला, खेमा, सिवा, किंकरामरदंडोवरक्खिया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला, उवचियचंदणकलसा, चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा, पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धूयाभिरामा, सुगंधवरगंधिया, गंधवट्टिभूया, अच्छरगणसंघसंविकिन्ना, दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया, पडागमालाउलाभिरामा, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा लण्हा, घट्टा, मट्ठा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कडच्छाया, सप्पहा,

देवोना भवनोना सामान्य वर्णन (सू. २८) प्रमाणे यावत् 'दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रणदिताः' दीव्य वादित्रोना शब्द वडे शब्दमय थयेलां, 'पताकामालाकुलाऽभिरामाः' पताका-ध्वजानी श्रेणि वडे व्याप्त अने अभिराम-मनोहर, सर्व रत्नमय, यावत् 'प्रतिरूपाः-'सुंदर छे त्यां सुधी वर्णन जाणवुं. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वानमंतर देवोना स्थानो कह्यां छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान-ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां घणा वानमंतर देवो रहे छे. ते आ प्रमाणे-१ पिशाच, २ भूत,

चित्तवाळा तथा क्रिडा अने द्रव-परिहास जेओने प्रिय छे एवा, टीकामां तो तेनो अर्थ आ प्रमांणे छे-'चंचल-अनवस्थित चित्तवाळा तथा चलचपल-अत्यंत चपल क्रीडन-क्रीडा अने चित्तने विशे द्रव-परिहास प्रिय जेओने छे एवा.' तथा 'गभीरहसितगीतनर्तनरतयः' गंभीर हास्य, गीत अने नृत्यने विशे जेओने प्रीति छे एवा, तथा 'वनमालापीडमुकुटकुंडल-स्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः' वनमालामय जे शेखर, मुकुट अने कुंडल तथा स्वच्छन्दपणे विकुर्वेला आभरणोवडे सुंदर भूषणने धारण करनारा, 'सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसच्चित्रवनमालारचितवक्षसः' सर्व ऋतुमां थनारा सुगंधी पुष्पोवडे सारी रीते गुंथेली

३८ कहि ण भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहित्ता हिट्ठा वि एगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया, उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा, पागारट्टालयकवाडतोरणपडि-

३८. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त वानमंतर देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! वानमंतर देवो क्यां वसे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना एक हजार योजन प्रमाण जाडा रत्नमय कांडना उपरथी सो योजन प्रवेश करी अने नीचे सो योजन छोडीने मध्यना आठसो योजनमां अहीं वानमंतरदेवोना तीरछाभूमि संबंधी असंख्याता लाखो नगरो छे एम कहुं छे. ते भूमिसंबंधी नगरो बहारना भागमां गोळ, अंदरना भागमां समचोरस अने नीचे कमळनी कर्णिकाना आकारवाळा छे —* * *इत्यादि वर्णन भवनवासीना

३८ वानमंतर सूत्रमां 'तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइ भागे' स्वस्थान, उपपात अने समुद्घातरूप त्रणे स्थानोने आश्रयी तेओ लोकना असंख्यातमा भागने विषे होय छे तथा 'भुयगवइणो महाकाया' महाकाय एटले महोरग, महोरगो केवा छे ? तेना उत्तरमां विशेषण कहे छे—'भुजगपतयः' भुजगपतिओ छे तेमज गन्धर्वगणा—गन्धर्वसमुदायो केवा छे ? ते माटे विशेषण कहे छे—'निपुणगन्धर्वगीतरतयः' 'निपुण—अत्यंत कुशळतायुक्त गन्धर्व जातिना देवोना गीतने विषे प्रीतिवाळा छे ए आठे व्यन्तरोना मूळ भेदो छे, ते सिवाय बीजा आठ अवान्तर—पेटा भेदो छे—'अणपन्निय' अणपन्निक वगेरे. ए सोळे प्रकारना व्यन्तरो केवा छे ? तेना उत्तरमां कहे छे—'चञ्चलचलचपलचित्त-क्रीडनद्रवप्रिया' चचल—अनवस्थित अने चलचपल—अतिशय चपल

रा नागा उदही य पंडुरा दो वि । वरकणगनिहसगोरा हुंति सुवन्ना दिसा थणिया ॥ ८ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जू अग्गी य होंति दीवा य । सामा पियंगुवन्ना वाउकुमारा मुणेयव्वा ॥ ९ ॥ असुरेसु हुंति रत्ता सिलिंध-पुप्फप्पभा य नागुदही । आसासगवसणधरा होंति सुवन्ना दिसा थणिया ॥ १० ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जू अग्गी य हुंति दीवा य । संझाणुरागवसणा वाउकुमारा मुणेयव्वा ॥ ११ ॥

जेवा छे, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, अने द्वीपकुमार श्याम वर्णना छे अने वायुकुमार प्रियंगुवृक्षना जेवा वर्णना जाणवा. असुरकुमारना लाल वस्त्रो, नागकुमार अने उदधिकुमारना शिलिन्ध्र पुष्पनी प्रभा जेवा लीला वस्त्रो, सुवर्णकुमार, दिक्कुमार अने स्तनितकुमार अश्वास्यग-अश्वना मुखमां रहेल फीणना जेवा (धोळा) वस्त्रने धारण करनारा छे. विद्युत्कुमार, अग्निकुमार अने द्वीपकुमारो नीलवर्ण-घेरा लीला वर्णना वस्त्रोवाळा अने वायुकुमारो संध्याना रंग जेवा वस्त्रोवाळा जाणवा.

कसोटी उपरनी रेखा जेवा गौर-रक्तपीत वर्णना सुवर्णकुमारो, दिक्कुमारो अने स्तनितकुमारो छे. विद्युत्कुमारो, अग्निकुमारो अने द्वीपकुमारो 'उत्तप्तकनकवर्णाः' तपावेला सुवर्णना जेवा—कंइक रक्तवर्णना छे. वायुकुमारो श्याम छे. ते श्यामपणुं स्पष्ट करी बतावे छे-'प्रियंगुवर्णाः' प्रियंगु वृक्षना वर्ण जेवा छे. हवे वस्त्रोनो वर्ण जणावे छे—'असुरेसु हुंति रत्ता' इत्यादि बे गाथा छे. असुरकुमारना रातां वस्त्रो छे. नागकुमार अने उदधिकुमारना शिलिन्ध्र वृक्षना पुष्पना जेवा नीलवर्णवाळां वस्त्रो छे, सुवर्णकुमारो, दिक्कुमारो अने स्तनितकुमारो 'अश्वास्यगवसनधराः' अश्वना आस्यग-मुखमां रहेल फीणना जेवा धोळा वस्त्रने धारण करनार होय छे एटले के तेओ बहुधा श्वेत वस्त्रोने पहेरवाना स्वभाववाळा छे. विद्युत्कुमार, द्वीपकुमार अने अग्निकुमार नीलवर्णना वस्त्रोवाळा छे, अने वायुकुमारने संध्याना रंग जेवा वस्त्रो छे.

ई असुरवज्जाणं । सामाणिआ उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ ५ ॥ चमरे धरणे तह वेणुदेवे हरिकंत-अग्गिसीहे य । पुन्ने जलकंते य अमिय-विलम्बे य घोसे य ॥ ६ ॥ बलि-भूयाणंदे वेणुदालि-हरिस्सहे अग्गिमाणव-विसिट्ठे । जलपह तहऽमियवाहणे पभंजणे य महाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्ला णं जाव विहरंति । काला असुरकुमा-

छे. दक्षिणना असुरकुमारेन्द्रना चोसठ लाख, उत्तरना असुरकुमारेन्द्रना साठ लाख, असुरकुमारेन्द्र सिवाय बाकीना बधा दक्षिणना अने उत्तरना प्रत्येकना छ छ हजार सामानिक देवो जाणवा. अने तेथी चार गुणा आत्मरक्षक देवो जाणवा. चमर, धरण, वेणुदेव, हरिकान्त, अग्निशिख, पूर्ण, जलकान्त, अमित, वेलंब, घोष, बलि, भूतानन्द, वेणुदालि, हरिस्सह, अग्निमानव, विशिष्ट, जलप्रभ, तथा अमितवाहन, प्रभञ्जन, महाघोष-एम उत्तर दिशाना इन्द्रो यावत् विहरे छे. असुरकुमार काळा छे, नागकुमार अने उदधिकुमार बन्ने श्वेतवर्णना छे, सुवर्णकुमार श्रेष्ठ सुवर्णनी कसोटी उपरनी रेखाना जेवा कंइक राता पीळा वर्णना छे. दिक्कुमार अने स्तनितकुमार उत्तम कनकना वर्ण

समजवा हवे दक्षिण अने उत्तर दिशाना असुरकुमारादिना अनुक्रमे इन्द्रो बतावे छे—'चमरे धरणे' इत्यादि दक्षिण दिशाना असुरकुमारोनो इन्द्र चमर छे, नागकुमारोनो धरण, सुवर्णकुमारोनो वेणुदेव, विद्युत्कुमारोनो हरिकान्त, अग्निकुमारोनो अग्निशिख, द्वीपकुमारोनो पूर्ण, उदधिकुमारोनो जलकान्त, दिक्कुमारोनो अमित, वायुकुमारोनो वेलंब अने स्तनितकुमारोनो घोष नामे इन्द्र छे 'बलि भूयाणंदे' इत्यादि उत्तर दिशामा रहेनारा असुरकुमारोनो इन्द्र बलि छे नागकुमारोनो भूतानन्द, सुवर्णकुमारोनो वेणुदालि, विद्युत्कुमारोनो हरिस्सह, अग्निकुमारोनो अग्निमाणव, द्वीपकुमारोनो विशिष्ट, उदधिकुमारोनो जलप्रभ, दिक्कुमारोनो अमितवाहन, वायुकुमारोनो प्रभञ्जन, अने स्तनितकुमारोनो महाघोष इन्द्र छे असुरकुमारादिना वर्णोनो संग्रह करीने कहे छे—'काला असुरकुमारा' इत्यादि ये गाथा छे बधा असुरकुमारो काळा छे, नागकुमारो अने उदधिकुमारो बधे 'पाण्डुरा'-श्वेतवर्णना छे, 'वरकनकनिघर्षगौराः' श्रेष्ठ सुवर्णनी

महिड्ढीए सेसं जहा नागकुमाराणं । एवं जहा सुवन्नकुमाराणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाण वि चउदसण्हं इंदाणं भाणियव्वा । नवरं भवणणाणत्तं इंदणाणत्तं वन्नणाणत्तं परिहाणणाणत्तं च इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—चउसट्ठिं असुराणं चुलसीतं चेव होंति नागाणं । बावत्तरिं सुवन्ने वाउकुमाराण छन्नउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं । छण्हंपि जुअलयाणं छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥ २ ॥ चउतीसा चउयाला अट्ठत्तीसं च सयसहस्साइं । पन्ना चत्तालीसा दाहिणओ हुंति भवणाइं ॥ ३ ॥ तीसा चत्तालीसा चउतीसं चेव सयसहस्साइं । छायाला छत्तीसा उत्तरओ हुंति भवणाइं ॥ ४ ॥ चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा-

---

वक्तव्यता कही छे तेम बाकीना चौदे इन्द्रोनी कहेवी. परन्तु भवन, इन्द्र, वर्ण अने परिधाननुं भिन्न भिन्नपणुं आ गाथाओ वडे जाणवुं. 'असुरकुमारेन्द्रना चोसठ लाख, नागकुमारेन्द्रना चोराशी लाख, सुवर्णकुमारेन्द्रना बहोंतेर लाख, वायुकुमारेन्द्रना छन्नुं लाख, द्वीपकुमारेन्द्र, दिशाकुमारेन्द्र, उदधिकुमारेन्द्र, विद्युत्कुमारेन्द्र, स्तनितकुमारेन्द्र अने अग्निकुमारेन्द्र ए छ युगलना प्रत्येकना छोंतेर लाख भवनो छे. (१) चोत्रीश लाख, (२) चुंमाळीश लाख (३) आडत्रीश लाख, (४) पचास लाख अने शेप छ इन्द्रना चाळीस चाळीस लाख दक्षिण दिशामां भवनो छे. (१)त्रीश लाख, चाळीश लाख, चोत्रीश लाख, छेंताळीश लाख, अने शेप छ इन्द्रना छत्रीश छत्रीश लाख भवनो उत्तर दिशामां

संख्यानो संग्रह करवा माटे कहे छे—'चउसट्ठी सट्ठी खलु' इत्यादि. दक्षिणना असुरकुमारेन्द्रना चोसठ हजार सामानिक देवो छे. उत्तर दिशाना असुरकुमारेन्द्रना साठ हजार, 'असुरवर्जानाम्' असुरकुमारेन्द्र सिवाय बाकीना बधा दक्षिणना अने उत्तरना इन्द्रोना प्रत्येकना छ छ हजार 'सामाणिया उ एए' ए सामानिक देवो जाणवा. अने आत्मरक्षक देवो बधे ठेकाणे सामानिक देवोथी चार गुणा

३७. कहि णं भन्ते ! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थ णं उत्तरिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं चउतीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भवणा जाव एत्थ णं बहवे उत्तरिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति, महिड्ढिया जाव विहरंति । वेणुदाली इत्थ सुवन्नकुमारिंदे सुवन्नकुमारराया परिवसइ,

३७. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता उत्तरना सुवर्णकुमार देवोना क्या स्थानो छे ? हे भगवन् ! उत्तरना सुवर्णकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना–यावत्–मध्य भागमां अहीं उत्तरना सुवर्णकुमार देवोना चोत्रीश लाख भवनो छे एम कह्यु छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ छे–इत्यादि यावत्–अहीं घणा उत्तरना सुवर्णकुमार देवो वसे छे. तेओ महा ऋद्धिवाळा, यावत्–विहरे छे. अहीं वेणुदालि नामे सुवर्णकुमारनो इन्द्र सुवर्णकुमारनो राजा रहे छे. ते महर्द्धिक छे. बाकी बधु नागकुमारोनी पेठे जाणवु. जेम सुवर्णकुमारनी

३७ 'चउसट्ठि असुराण' इत्यादि बे गाथाओ सामान्य रीते असुरकुमारादिना भवनोनी संख्या जणावनारी सुगम छे 'चउतीसा चउयाला' चोत्रीश लाख चुमाळीश लाख इत्यादि गाथा दक्षिणना असुरकुमारादिना भवननी संख्या बतावनारी छे तेनी व्याख्या आ प्रमाणे छे–दक्षिण दिशामां असुरकुमारना भवनो चोत्रीश लाख छे, नागकुमारना चुमाळीश लाख, सुवर्णकुमारना आडत्रीश लाख, वायुकुमारना पचास लाख, द्वीपकुमार, दिक्कुमार, उदधिकुमार, विद्युत्कुमार, स्तनितकुमार अने अग्निकुमार ए छना दरेकना चाळीश लाख भवनो छे 'तीसा चत्तालीसा' इत्यादि उत्तर दिशाना असुरकुमारना भवनो त्रीश लाख, नागकुमारना चाळीश चाळीश लाख, सुवर्णकुमारना चुमाळीश लाख, वायुकुमारना छेंताळीश लाख, द्वीपकुमार, दिक्कुमार, उदधिकुमार विद्युत्कुमार स्तनितकुमार अने अग्निकुमारना प्रत्येकना छत्रीश छत्रीश लाख भवनो छे हवे सामानिक अने आत्मरक्षक देवोनी

३६. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठत्तीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा । एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । एत्थ णं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । वेणुदेवे य इत्थ सुवन्नकुमारिन्दे सुवन्नकुमारराया परिवसइ, सेसं जहा नागकुमाराणं ॥

सुवर्णकुमारना राजाओ रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा यावत्–विहरे छे.

३६. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता दक्षिण दिशाना सुवर्णकुमारना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना सुवर्णकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभाना यावत्–एक लाखने अठथोतेर हजार योजनप्रमाण मध्य भागमां अहीं दक्षिण दिशाना सुवर्णकुमारोना आडत्रीश लाख भवनावासो छे एम कहुं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ, यावत्–प्रतिरूप–अत्यंत सुंदर छे. अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सुवर्णकुमारोना स्थानो कह्यां छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. अहीं घणा सुवर्णकुमार देवो रहे छे. अहीं वेणुदेव नामे सुवर्णकुमारनो इंद्र, सुवर्णकुमारनो राजा रहे छे. बाकी बधुं नागकुमारोनी पेठे जाणवुं,

ससयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ ॥

३५. कहि णं भंते ! सुवन्नकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ णं सुवन्नकुमाराणं देवाणं बावत्तरिं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा । तत्थ णं सुवन्नकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, जाव तिसु वि लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति । वेणुदेवे वेणुदाली य इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्णकुमाररायाणो परिवसंति, महड्ढिया जाव विहरंति ।

कुमारनो राजा रहे छे. ते महाऋद्धिवाळो यावत् शोभतो चालीश लाख भवनावासो वगेरेनुं अधिपतिपणुं करतो विहरे छे.

३५. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सुवर्णकुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! सुवर्णकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना यावत् मध्य भागमां अहीं सुवर्णकुमार देवोना बहोंतेर लाख भवनावासो छे एम कह्युं छे ते भवनो बहारना भागमां गोळ–यावत् प्रतिरूप छे त्यां पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सुवर्णकुमार देवोनां स्थानो छे. यावत्–तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान–ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा सुवर्णकुमार देवो रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा इत्यादि बधुं सामान्य भवनपतिने कह्युं छे तेम यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी कहेवुं अहीं वेणुदेव अने वेणुदालि नामे बे सुवर्णकुमारना इन्द्रो

३५. 'तीसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे' स्वस्थान, उपपात अने समुद्घातरूप त्रणे स्थानो आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे.

देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे विहरइ ।

३४. कहि णं भंते उत्तरिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जम्बुदीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति । भूयाणंदे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ, महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । से णं तत्थ चत्तालीसाए भवणावा-

---

परिवारसहित छ अग्रमाहिषीओनुं, त्रण पर्षदोनुं, सात प्रकारना सैन्योनुं,सात सेनाधिपतिओनुं,चोवीश हजार आत्मरक्षक देवोनुं, अने ते सिवाय बीजा घणा नागकुमार देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं, अग्रेसरपणुं करतो विहरे छे.

३४. हे भगवन् ! उत्तरना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नागकुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! उत्तरना नागकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी उत्तर दिशाए एक लाखने एंशी हजार योजन जाडी आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने एक लाख अठ्योतेर हजार योजनप्रमाण मध्य भागमां अहीं उत्तरना नागकुमार देवोना चाळीश लाख भवनावासो छे एम कह्युं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ छे–इत्यादि बधुं दक्षिण दिशाना नागकुमार देवोने कह्युं छे तेम यावद् विहरे छे–त्यां सुधी कहेवुं. अहीं भूतानंद नामे नागकुमारनो इन्द्र नाग-

सहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चउयालीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, जाव पडिरूवा। एत्थ ण दाहिणिल्लाणं नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तीसु वि लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं दाहिणिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्ढिया जाव विहरंति। धरणे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ, महड्ढिए, जाव पभासेमाणे। से णं तत्थ चउयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं, छण्ह सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्हं अणियाहिवईण, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं

क्या रहे छे? हे गौतम! जंबूद्वीपनामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिण दिशाए एक लाखने एंशी हजार योजन जाडी आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करी अने नीचे एक हजार योजन छोडी एक लाखने अठ्योतेर हजार योजनप्रमाण मध्य भागमां दक्षिण दिशाना नागकुमार देवोना चुम्मालीश लाख भवनो छे एम कह्युं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ, यावत् प्रतिरूप—सुंदर छे. अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्त दक्षिण दिशाना नागकुमार देवोना स्थानो कह्या छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान ए त्रणने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागने विषे छे. अहीं दक्षिणना नागकुमार देवो रहे छे तेओ महाऋद्धिवाळा—इत्यादि यावत्—'विहरे छे' त्यां सुधी जाणवुं. अहीं नागकुमारोनो इन्द्र अने नागकुमारोनो राजा धरण रहे छे. ते महाऋद्धिवाळो—इत्यादि यावत् शोभतो विहरे छे. ते त्यांना चुंमालीश लाख भवनावासोनुं, छ हजार सामानिक देवोनुं, तेत्रीश त्रायस्त्रिंश देवोनुं, चार लोकपालोनुं,

देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइ भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा । तत्थ णं णागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तीसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्डिया, महज्जुईआ, सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति। धरणभूयाणंदा एत्थ णं दुवे नागकुमारिंदा, णागकुमाररायाणो परिवसंति महड्डिया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति ।

३३. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेगं जोयण-

---

भवनावासो छे एम कह्युं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ अने अंदरना भागमां समचोरस यावत् प्रतिरूप-अत्यंत सुंदर छे. त्यां पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नागकुमार देवोना स्थानो कहेलां छे. उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान-ए त्रणेने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा नागकुमार देवो रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा अने महाकान्तिवाळा छे. बाकी बधुं सामान्य भवनवासी देवो संबंधे कह्युं छे तेम यावत्-विहरे छे त्यां सुधी जाणवुं. अहीं धरण अने भूतानंद ए बे नागकुमारेन्द्र अने नागकुमारना राजाओ रहे छे. ते महाऋद्धिवाळा-इत्यादि बधुं सामान्य भवनपति देवो संबंधे कह्युं छे तेम यावद् विहरे छे-त्यां सुधी जाणवुं.

३३. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता दक्षिणना नागकुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! दक्षिणना नागकुमार देवो

तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं, सट्ठीए सामाणीयसाहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्ह य सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे विहरइ।

३२. कहि णं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं नागकुमाराणं

रहे छे. ते काळो, अत्यंत काळी वस्तुना जेवो यावत् शोभतो विहरे छे. ते बलीन्द्र त्यां त्रीश लाख भवनावासोनुं, साठ हजार सामानिक देवोनुं, तेत्रीश त्रायस्त्रिंश देवोनुं, चार लोकपालोनुं, पांच परिवारसहित अग्रमहिषीओनुं, त्रण पर्षदोनुं, सात प्रकारना सैन्योनुं, सात सेनाधिपतिओनुं, चार गुणा साठ हजार आत्मरक्षक देवोनुं, अने ते सिवाय बीजा घणा उत्तरना असुरकुमार देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं अने अग्रेसरपणुं करतो विहरे छे.

३२. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त नागकुमार देवोना क्यां स्थानो कहेला छे ? हे भगवन् ! नागकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! एकलाख अने एंशीहजार योजन जाडी आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने एकलाख अठ्योतेर हजार योजन प्रमाण मध्य भागमां अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्त नागकुमार देवोना चोराशी लाख

पोरेवचं जाव विहरंति ॥

२१. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं तीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति। बली एत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसति, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । से णं

चारगुणा चोसठ हजार आत्मरक्षक देवोनुं अने ते सिवाय बीजा घणा दक्षिणना देवो अने देवीओनुं अधिपतिपणुं, अग्रेसरपणुं करावतो यावत् विहरे छे.

२१. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता उत्तरना असुरकुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! उत्तरना असुरकुमार देवो क्यां रहे छे ? हे गौतम ! जंबूद्वीपनामे द्वीपमां मेरुपर्वतनी उत्तरे एकलाख ने ऐंशीहजार योजन जाडी आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करीने अने नीचेथी एक हजार योजन छोडीने एक लाख ने अठयोतेर हजार योजनप्रमाण मध्य भागमां अहीं उत्तरना असुरकुमार देवोना त्रीश लाख भवनावासो छे एम कह्युं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ अने अन्दरना भागमां समचोरस छे. बाकीनुं दक्षिण दिशाना असुरकुमार संबन्धे कह्युं छे तेम यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी जाणवुं. अहीं वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा बली

णावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा सो चेव वण्णओ जाव पडिरूवा। एत्थ णं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तीसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा देवीओ य परिवसंति। काला, लोहियक्खा तहेव जाव भुंजमाणा विहरंति। एएसिणं तहेव तायतीसगलोगपाला भवन्ति। एवं सव्वत्थ भाणियव्वं। भवणवासी ण चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसति, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे। से णं तत्थ चउतीसाए भवणावाससयसहस्साणं, चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्ह य चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूण दाहिणिल्लाणं देवाणं देवीण य आहेवच्च

अने अपर्याप्त दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवोना स्थानको कह्यां छे. ते उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान ए त्रणेनी अपेक्षाए लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां घणा दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवो अने देवीओ रहे छे तेओ काळा तेओना ओष्ठ लोहिताक्ष रत्न अने बिंबीफलना जेवा राता छे-इत्यादि पूर्वोक्त यावत् 'दीव्य भोगो भोगवता विहरे छे' त्यां सुधी जाणवु. ए देवोने ते प्रमाणेज त्रायस्त्रिंश देवो अने लोकपालो होय छे एम बधे य जाणवु. भवनवासी असुरकुमारनो इन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर अहीं रहे छे. ते काळो, अत्यंत काळी वस्तुना जेवो यावत् प्रभासमानः-शोभतो त्याना चोत्रीश लाख भवनावासोनु, चोसठ हजार सामानिक देवोनु, तेत्रीश त्रायस्त्रिंश देवोनुं, चार लोकपाल देवोनु, परिवार सहित पांच अग्रमहिषीओनु,त्रण पर्षदोनु, सात प्रकारना सैन्योनु,सात सेनाधिपतिओनु,

साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणियाणं,साणं साणं अणियाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा, पालेमाणा, महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।

३०. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं चउत्तीसं भव-

---

३०. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवोना क्यां स्थानो कहेलां छे ? हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवो क्यां वसे छे ? हे गौतम ! जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे मेरु पर्वतनी दक्षिण दिशाए एक लाखने ऐंशी हजार योजन प्रमाण जाडी रत्नप्रभा पृथिवी छे, तेमां उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करी अने नीचे एक हजार योजन छोडी एक लाख ने अठ्योतेर हजार योजनरूप मध्य भागमां दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवोना चोत्रीश लाख भवनो छे एम कह्युं छे. ते भवनो वहारना भागमां गोळ अने अंदरना भागमां समचोरस छे–इत्यादि वर्णन यावत् प्रतिरूप–अत्यंत सुंदर छे त्यां सुधी जाणवुं. अहीं पर्याप्ता

सणिम्मलमणिरयणमंडियभुया, दसमुद्दामंडियग्गहत्था, चूडामणिचित्तचिंधगया, सुरूवा, महड्ढिया, महज्जुईआ, महायसा, महाबला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथंभियभुया, अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउली, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदी, पलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वन्नेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते णं तत्थ साणं साणं भवणावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं साणं तायत्तीसाणं, साणं साणं लोगपालाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं,

भोगोने भोगवता विहरे छे.' त्या सुधी जाणवु.

अने बिंबफल-पाका गीलोडाना सरखा अधरोष्ठ जेओना छे एवा, 'पाडुरससिसकलविमल-निम्मलदधि-घन-शंख-गोक्षीर-कुंद-दकरजो-मृणालिकाधवलदन्तश्रेणय' पाडुर-श्वेत, परन्तु संध्याकालमां कारक राता थाय छे तेवो नहि एवा चन्द्रमाना शकल-खंड, ते पण केवो ? विमल-रजरहित अथवा कलंकरहित, तथा निर्मल दहीं, शंख, गायनु दूध, कुन्द-मोगराना फुल, दकरज-पाणीना कणो, मृणालिका कमलनी दांडी, ते बधानी पेठे धोळी दांतनी श्रेणि जेओनी छे एवा, 'हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलताल्जिह्वा' हुतवह-अग्निवडे निर्ध्मात-तपावेलु सुवर्ण धौत-निर्मल तप्त-तपेलु अने कारक रक्त-लाल होय छे तेनी पेठे राता हाथपगना तळीया, तालु अने जीभ जेओना छे एवा, 'अंजनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशा' तथा अंजन-सौवीरांजन, घन-वर्षाकालनो मेघ तेनी पेठे कृष्ण अने रुचकरत्ननी जेम रमणीय अने स्निग्ध केशो जेओना छे एवा [चमरेन्द्र अने बलीन्द्र छे]

उज्जुतुंगनासा, उवचियसिलप्पवालबिंबफलसंनिहाहरोट्ठा, पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोक्खीर-कुंददगरयमुणालियाधवलदंतसेढी,हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा, अंजणघणकसिणगरुयगरमणिज्जणिद्धकेसा,वामेयकुंडलधरा, अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता,ईसिसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता, विइयं च असंपत्ता, भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगयतुडियपवरभू-

गळीनी गुटिका पाडाना शींगडा अने अळसीना पुष्प जेवा वर्णवाळा, विकसित कमळना जेवां निर्मल धोळा अने लाल नेत्रोवाळा, गरुडना जेवी लांबी सीधी अने उंची नासिकावाळा, उपचित-घसेली प्रवालशिला अने बिंबीफळना समान अधरोष्ठ जेओना छे एवा, धोळा अने कलंक रहित चन्द्रना खंड, निर्मल घनरूप थयेलुं दहीं, शंख, गायनुं दूध, मोगराना फुल, पाणीना कणो अने मृणालिका-कमळनी दांडी जेवी धोळी दन्तश्रेणि जेओनी छे एवा, अग्निमां तपावेला अने निर्मल थयेला तप्त सुवर्णनी जेवा राता हाथपगना तळीयां तालु अने जीभ जेओना छे एवा, अंजन अने मेघनी जेवा काळा अने रुचक रत्नना जेवा रमणीय तथा स्निग्ध केशो जेओना छे एवा, डावा भागमां एक कुंडलने धारण करनारा-इत्यादि असुरकुमारना वर्णन प्रमाणे 'दीव्य भोगववा योग्य

काळी कोइपण वस्तु लोकमां प्रसिद्ध होय तेना जेवा, 'नीलगुटिकागवलअतसिकुसुमप्रकाशाः' गळीनी गुटिका, गवल-पाडानुं शींगडुं, अतसी-अळसीनुं पुष्प प्रसिद्ध छे तेओना जेवा प्रकाश-प्रभावाळा, 'विकसितशतपत्रनिर्मलेषत्सितरक्तताम्रनयनाः' विकसित शतपत्र-कमळना जेवा निर्मल इषत्-अमुक भागमां कंइक सित-धोळा,राता अने ताम्र-लाल नयनोवाळा, 'गरुडायत-ऋजु-तुंगनासाः' गरुडना जेवी लांबी ऋजु-सरल अने तुंग-उंची नासिकावाळा, 'उपचितशिलाप्रवालबिम्बफलसन्निभाधरौष्ठाः' उपचित-घसेला शिलाप्रवाल-परवाळां

पगईए पभाए दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा, ते णं तत्थ साणं साणं भवणावाससयसहस्साणं साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं साणं तायत्तीसाणं साणं साणं लोगपालाणं साणं साणं अग्गमहिसीणं साणं साणं परिसाणं साणं साणं अणियाणं साणं साणं अणियाहिवईणं साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा, पालेमाणा, महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति। काला, महानीलसरिसा, णीलगुलियगवलअयसिकुसुमप्पगासा, वियसियसयवत्तणिम्मलईसिसितरत्ततंबणयणा, गरुलायय-

चूडामणि एल जेओना चिह्नरूपे रहेलु छे एवा, सुरूपाः—सुंदररूपवाळा—इत्यादि यावत् 'दिव्य भोगयोग्य शब्दादि भोगो भोगवता विहरे छे' त्यां सुधीना सर्व विशेषणोनो अर्थ पूर्वे प्रमाणे समजवो.

अहीं चमर अने बली—ए बे असुरकुमारना इन्द्रो असुरकुमारना राजाओ रहे छे. तेओ काळा, अत्यंत काळी वस्तुओना जेवा,

मंडित-सुशोभित छे भुज-हाथ जेओना एवा, 'वरमुकुटमंडितायवरना' एवा मुकुटो वडे शोभित छे मस्तक जेओना एवा, 'चूडामणि चित्रचिह्नगताः' चूडामणि नामे विचित्र अद्भुत चिह्न गत-रहेलुं छे जेओने एवा असुरकुमारो छे

चमरेन्द्र अने बलीन्द्र सामान्य रूपमां 'काला' कृष्णवर्णवाळा, ए ज अर्थ उपमानथी जणावे छे-'महानीलसरिसा' मोटा

समरीइया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा; एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घायेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थ णं बहवे असुरकुमारा देवा परिवसंति। काला लोहियक्खबिंबोट्ठा, धवलपुप्फदंता, असियकेसा, वामे एगकुंडलधरा, अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता, ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता, बिइयं च वयं असंपत्ता, भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगयतुडियपवरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडितभुया, दसमुद्दामंडियग्गहत्था, चूडामणिविचित्तचिंधगया, सुरूवा, महिड्ढिया, महज्जुइया, महायसा, महब्बला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथंभियभुया, अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउली, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाणगमल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदी, पलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं सं-

---

नहि उत्पन्न करे एवा सूक्ष्म अने श्रेष्ठ वस्त्रो जेणे पहेरेलां छे एवा, प्रथम कुमारावस्थाने ओळंगी गयेला अने बीजी मध्यम वयने नहि प्राप्त थयेला, भद्र-प्रशस्त यौवनमां वर्तता, तलभंग (हस्ताभरण) तुटित (बाजुबंध) अने बीजा श्रेष्ठ भूषणोमां रहेलां निर्मल मणि अने रत्नो वडे सुशोभित भुजावाळा, दस मुद्रिका (वींटीओ) वडे जेना हस्तना अग्रभागो अलंकृत छे एवा, विचित्र

स्पष्ट करे छे— एटले भद्र-अत्यन्त प्रशस्त यौवन वयमां वर्तता एवा, 'तलभंग-तुटित-वरभूषण-निर्मलमणिरत्नमंडितभुजाः' तलभंग-बाहुनुं आभरण, तुटित-बाजुबंध अने ते सिवाय बीजा श्रेष्ठ आभरणोने विषे चन्द्रकान्तादि मणिओ अने इन्द्रनीलादि रत्नो वडे

गा, जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरियारिया, अउज्झा, सदाजया, सदागुत्ता, अडयालकोट्ठगरइया, अडयालकयवणमाला, खेमा, सिवा, किंकरामरदंडोवरक्खिया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला, उवचितचंदणकलसा, चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा, पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा, सुगंधवरगंधिया, गंधवट्टिभूया, अच्छरगणसंघसविगिन्ना, दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्ठा, मट्ठा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया,

---

पद्मरागमणि अने बिम्बीफलना जेवा लाल ओष्ठवाळा, धोळा पुष्पना जेवा दांतवाळा, काळा केशवाळा, डाबा भागे एक कुंडलने धारण करनारा, आर्द्र चंदन वडे जेमणे शरीरनुं विलेपन कर्युं छे एवा, कंइक शिलिन्ध्रपुष्पना जेवा (कइक रक्त) वर्णवाळा सक्लेश

'असितकेशा' असित-काळा केशो जेमोना छे एवा, देवोने वैक्रिय शरीर होवाथी वात अने केशो वैक्रिय जाणवा, स्वाभाविक न जाणवा 'वामेयकुंडलधरा' डाबा भागमा एक कानमां कुंडलने धारण करनारा, 'आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्राः' आर्द्र-सरस चंदन वडे जेणे शरीरनुं विलेपन कर्युं छे एवा, ईषत्‌शिलिन्ध्रपुष्पप्रकाशानि' ईषत्-कइक शिलिन्ध्र पुष्पना जेवा वर्णवाळा, एटले कइक रातां वर्णवाळा, 'असंक्लिष्टानि'-अत्यंत सुखना उत्पन्न करनार होवाथी जरा पण संक्लेशने नहि उत्पन्न करे एवा सूक्ष्म मृदु अने लघुस्पर्शवाळा, 'प्रवरपरिहिता' श्रेष्ठ वस्त्रोने जेणे पहेरेला छे एवा, प्राकृत होवाथी प्रवर शब्दनी विभक्तिनो लोप थयो छे तथा कुमारावस्थारूप प्रथम वयने ओळंगी गयेला एटले तेना अन्ते वर्तता, अने बीजी मध्यम वयने नहि प्राप्त थयेला, य अ धातने

२९. कहि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं चउसट्ठिं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया, उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा, पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभा-

२९. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता असुरकुमार देवोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! असुरकुमार देवो क्यां वसे छे ? हे गौतम ! एकलाख अने ऍंशी हजार योजन बाहल्य–जाडाइ जेनी छे एवी आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपरथी एक हजार योजन अंदर प्रवेश करी अने नीचे एक हजार योजन छोडीने एक लाखने अठयोतेर हजार योजनप्रमाण मध्य भागमां असुरकुमारोना चोसठ लाख भवनावासो कह्या छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ अने अंदरना भागमां चोरस छे—इत्यादि भवनोनुं वर्णन पडिरूवा यावत्–प्रतिरूप छे–त्यां सुधी (पूर्वना पद २ सू० २८ कह्या प्रमाणे) जाणवुं. आ भवनोमां पर्याप्ता अने अपर्याप्ता असुरकुमार देवोना स्थानो छे. ते उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थान वडे पण लोकना असंख्यातमा भागमां छे. त्यां घणा असुरकुमार देवो रहे छे. तेओ काळा वर्णवाळा, लोहिताक्ष–

२९. असुरकुमारना सूत्रमां 'कालाः' कृष्णवर्णवाळा, 'लोहिताक्षबिम्बोष्ठाः' लोहिताक्ष–माणेक अने बींबीफळ–पाकेला गीलोडानी जेवां जेओना लाल ओष्ठ छे एवा, 'धवलपुष्पदन्ताः' धोळा पुष्पना जेवा अर्थात् मोगरानी कळीओ जेवा जेओना दांतो छे एवा,

जीवाभिगम सूत्रमा कह्युं छे के—"देवा असंघयणी, जम्हा तेसिं नेवट्ठी नेव सिरा"। देवो संघयण रहित होय छे, कारण के तेओने अस्थि अने सिराओ-नसो होती नथी"-इत्यादि 'दिव्यया ऋद्धया' दीव्य-प्रधान परिवारादिक ऋद्धिवडे, 'दिव्यया द्युत्या' दिव्य-इष्टार्थना संयोगरूप द्युतिवडे, कारण के 'द्यु' धातु अभिगमन-इष्टार्थना संयोगना अर्थमा छे' 'दीव्यया प्रभया' भवन अने आवास संबधी दीव्य प्रभावडे, 'दीव्यया छायया' दीव्य छाया-समुदायनी शोभावडे, 'दीव्यया अर्चिषा' शरीर उपर धारण करेला रत्नादिनी तेजोज्वालावडे, 'दीव्येन तेजसा' दीव्य शरीरजन्य तेजवडे, 'दीव्यया लेश्यया' दिव्य देह अने वर्णनी सुन्दरतारूप लेश्यावडे 'दश दिश उद्योतयन्त' दश दिशाओने प्रकाशित करता अने 'प्रभासमानाः' शोभता एवा भवनवासी देवो ते पोताना स्थानने विषे 'साणं साणं-स्वेषां स्वेषां' पोतपोताना भवनावासादिनुं 'आहेवच्च-आधिपत्य'-अधिपतिपणु-रक्षा करतावता, ते रक्षा सामान्य आरक्षकवडे पण कराय छे, माटे कहे छे-'पौरपत्य'-नगरपतिपणु, एटले पोताना आत्मीय वर्गनु अग्रेसरपणु, ते नायकपणा सिवाय पण नायके नीमेला तेवा गृहचिन्तक सामान्य पुरुषनु पण होय छे, माटे पोतानु नायकपणु बताववा कहे छे-'स्वामित्व' स्वामीपणु-नायकपणु, ते नायकपणु पोषकपणा सिवाय पण होय छे जेम सिंह हरिणनो नायक कहेवाय छे पण पोषक नथी, तेथी पोषकपणु बताववा माटे कहे छे-'भर्तृत्व' भर्तापणुं-पोषकपणु छे, वळी 'महत्तरकत्व' महत्तरपणु छे, ते महत्तरपणु आज्ञा-सत्ता रहितनु पण होय छे जेमके, कोई वणिकनु पोताना नोकरवर्ग प्रति होय छे, माटे कहे छे-आज्ञेश्वरसेनापत्य' आज्ञा-सत्तावडे ईश्वरपणु अने सेनापतिपणु, अर्थात् तेओनु पोतपोताना सैन्य प्रति अद्भुत आज्ञानु प्रधानपणु छे, ए प्रमाणे 'कारयन्त' अधिकारी अन्य पुरुषो पासे करावता अने 'पालयन्त' स्वयमेव पालन करता एवा, 'महताऽहत नाट्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण' अहत-आख्यान-कथानक संबधी अथवा अहत-अव्याहत-नित्य चालु एवा नाट्य-नृत्य अने गीत-गायन तथा वागेला तन्त्री-वीणा, तल-हाथना ताळ, ताल-कांसी, त्रुटित-अन्य वादित्रो तथा पटुप्रवादित चतुर पुरुषोए वगाडेल घन मृदंग-मेघना समान ध्वनिवाळा मृदंगना 'महता रवेण' मोटा रव-शब्दवडे 'दिव्यान्' स्वर्ग संबधी एटले प्रधान 'भोगभोगान्' भोगववा योग्य भोगो-शब्दादि विषयोने 'भुञ्जमाना' भोगवता-अनुभव करता 'विहरन्ति' सुखपूर्वक रहे छे

'मकरवर्धमानकनियुक्तचित्रचिह्नगताः' तेमज मकर अने वर्धमानक-शरावसंपुट नियुक्त-भूषणमां-योजेलां चित्र-आश्चर्यभूत चिह्नो गत-रहेलां जेओने छे एवा असुरकुमारादि देवो छे. वळी ते देवो केवा छे? 'सुरूपाः'-सुन्दर रूपवाळा,-अत्यंत इच्छवालायक रूप जेओनुं छे एवा, 'महर्द्धिकाः'-भवनपरिवारादि महान् ऋद्धिवाळा, तेमज 'महाद्युतयः' शरीरनी अने आभरणोनी महा द्युति-कान्तिवाळा, तथा 'महाबलाः' शरीर संबंधी बल जेओमां छे एवा, 'महायशसः' महान् यश जेओनो छे एवा, तथा 'महानुभागाः' महान् अनुभाग-शाप अने अनुग्रह करवानुं सामर्थ्य जेओने छे एवा, 'महेसक्खाः'-महेशाख्याः-महान ईश-इश्वर, ऐश्वर्ययुक्त एवी आख्या-प्रसिद्धिवाळा, अथवा महान् पोताना ईश-ऐश्वर्य जणावनारा, क्वचित् 'महासोक्खाः' महासौख्याः एवो पाठ छे. पुष्कळ साता वेदनीयना उदयथी मोटा सुखवाळा, कोइ आचार्यो 'महासक्खा'-एवो पाठ कहे छे. तेनो शब्दसंस्कार 'महाश्वाक्ष' एवो थाय छे. तेनी पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे व्युत्पत्ति बतावी छे-'आशु गमनाद् अश्वः'-जलदी गमन करे छे माटे अश्व-मन, अने पोतपोताना विषयने व्याप्त करे छे माटे अक्ष-इन्द्रिय, एटले महान् मन अने इन्द्रियो जेओने छे एवा, 'हारविराजितवक्षसः' हार वडे सुशोभित छे वक्ष-स्थल जेओनुं एवा, 'कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः' कटक-कडा अने त्रुटित-बाहुरक्षक-बहेरखां, ते वडे स्तंभित-अक्कड थयेली भुजाओ जेओनी छे एवा, 'अंगद-कुंडल-मृष्टगंडकर्णपीठधारिणः' अंगद-बाहुशीर्षाभरण, बाजुबंध, कुंडल-कर्णना आभरणविशेष अने मृष्ट-स्पर्श कर्यो छे गंड-कपोल प्रदेशनो जेणे एवा कर्णपीठ-कर्णना आभरणविशेषने धारण करनारा, 'विचित्रहस्ताभरणाः' विचित्र हाथना आभूषणो जेओने छे एवा, 'विचित्रमालामौलिमुकुटाः' विचित्र पुष्पनी माळा अने मस्तकने विषे मुकुट जेओने छे एवा, 'कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः' कल्याणक-कल्याणकारी प्रवर-श्रेष्ठ वस्त्र परिहित-पहेर्युं छे जेणे एवा, 'कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधराः-कल्याकारी उत्तम पुष्पनी माळा अने विलेपनने धारण करनारा, 'भास्वरबोन्दयः' भास्वर-देदीप्यमान बोंदि-शरीरवाळा, तथा प्रलम्बवनमालाधराः' लांबी वनमाळाने धारण करनारा, 'दीव्यसंहननेन' दीव्य संघयणवडे, अहीं शक्तिविशेषनी अपेक्षाए संघयण जाणवुं, परंतु साक्षात् संघयण न समजवुं. कारण के देवोने संघयण होतुं नथी. संघयण अस्थिनी रचनारूप छे, अने देवोने अस्थि होतां नथी.

स्वाभाविक रजरहित रहित होवाथी धूळ विनाना, 'निर्मलानि' आगन्तुक मेल रहित होवाथी निर्मळ, 'निष्पङ्कानि' कलंकरहित, अथवा कीचडरहित, 'निष्कङ्कटच्छायानि'-निष्कङ्कट-आवरणरहित कोइपण प्रकारना उपघातरहित छाया-कान्तिवाळा, 'सप्रभाणि' स्वरूपथी प्रभावाळा, 'समरीचीनि' बहार नीकळता कीरणना समुदायवाळा, 'सोद्योतानि' बहार रहेला वस्तुना समूहने प्रकाश करनारा, 'प्रसादीयानि' मननी प्रसन्नता करनारा, तथा दर्शनीयानि जोवा योग्य, जेने जोवाथी चक्षुने श्रम पडतो नथी एवा, 'अभिरूपाणि' अभि-एवा जोनाराना मननी प्रसन्नताने अनुकूळ होवाथी अभिमुख रूप जेओनु छे एवा, अर्थात् अत्यन्त मनोहर, वळी ज 'प्रतिरूपाणि' प्रतिविशिष्ट-उत्तम प्रकारनु रूप जेओनु छे एवा, अथवा प्रतिक्षण नवीन नवीन रूप जेओनु छे एवा भवनो छे [अहीं भवनवासी देवो रहे छे]

'एते भवनवासी' इत्यादि हमणा ज जेओना भेदो कह्या ते असुरकुमारादि भवनवासी देवो अनुक्रमे 'चूडामणिमुकुटरत्नभूषण नियुक्तनागस्फटादिचिह्नधराः' मुकुटमा चूडामणि रत्न जेओने छे एवा, तथा भूषणमा नियुक्त नागनी फेण वगेरे चिह्नने धारण करनारा होय छे ते आ प्रमाणे-जेओने मुकुटमा चूडामणि नामे रत्न चिह्नरूपे छे एवा असुरकुमार भवनवासी छे भूषणमा रहेला नागनी फेणरूप चिह्नने धारण करनारा नागकुमारो छे, भूषणमा रहेला गरुडरूप चिह्नने धारण करनारा सुवर्णकुमारो छे भूषणमा रहेला वज्ररूप चिह्नने धारण करनारा विद्युत्कुमारो छे वज्र ए शक्रेन्द्रनु आयुध छे अग्निकुमारो मुकुटमां रहेला पूर्णकलशरूप चिह्नने धारण करनारा छे द्वीपकुमारो भूषणमा सिंहरूप चिह्नने धारण करनारा होय छे उदधिकुमारो भूषणमां हयवर—अश्वरूप चिह्नने धारण करे छे दिक्कुमारो भूषणमा गजरूप चिह्नने धारण करनारा छे वायुकुमारो भूषणमा मगररूप चिह्नने धारण करे छे स्तनितकुमारो भूषणमा वर्धमान-शरावसंपुटरूप चिह्नने धारण करे छे अक्षरार्थ आ प्रमाणे छे-'भूषणनागस्फटागरुडवज्रा' भूषणोमा नागस्फटा, गरुड अने वज्र जेओने छे एवा, तथा 'पूर्णकलशाङ्कितोष्णीषा' पूर्ण कलशवडे अंकित-चिह्नवाळो उष्णीष-मुकुट जेओनो छे एवा, तथा 'सिंहहयवरगजाङ्का' सिंह, हयवर-अश्व अने हाथीरूप अङ्क-चिह्न जेओना भूषणने विषे छे एवा,

रक्खीणं, अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा, पालेमाणा, महताहतनट्टगीयवाइयतंतितलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

पोतानी पर्षदोनुं, पोतपोताना सैन्योनुं, पोतपोताना सैन्यना अधिपतिओनुं, पोतपोताना हजारो आत्मरक्षक देवोनुं, अने बीजा घणा भवनवासी देवो तथा देवीओनुं अधिपतिपणुं, अग्रेसरपणुं, स्वामिपणुं, भर्तापणुं, वडीलपणुं, आज्ञावडे इश्वरपणुं तथा सेनाना अधिपतिपणुं बीजा पासे करावता अने स्वयं पालन करता, नित्य प्रवर्तमान नृत्य, गायन, तथा वागेला वीणा, हस्ततल, कांसी अने बीजा वादित्रोना मोटा शब्द वडे दिव्य-प्रधान भोगववा योग्य भोगोने भोगवता रहे छे.

प्रधान, कुंदरुक्क-कींदरु, तुरुष्क—शिलारस, तेना धूपना मघमघायमान-चारे तरफ प्रसरेला उद्धूत—उत्कट गन्ध वडे अभिराम—मनोहर, 'सुगन्धवरगन्धगन्धिकानि' तथा सुंदर गन्धवाळा उत्तम सुगंधी पदार्थोना गंध युक्त, पथी 'गन्धवर्तिभूतानि' सुगन्धना अतिशयपणाथी सुगन्ध द्रव्यनी गुटिका जेवां, तथा 'अप्सरोगणसंघसंविकीर्णानि' अप्सराओना गणना संघ-समुदाय वडे सं-सम्यक् अत्यंत रमणीयपणाथी विकीर्ण-व्याप्त थयेलां, तथा दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रणदितानि' दीव्य त्रुटित-वेणु, वीणा अने मृदंगादि वादित्रना शब्दो वडे 'संप्रणदित'—सम्यक् श्रोताओना मनने हरण करवा वडे प्रकर्ष—सर्वकाल नदित—शब्दवाळां, 'सर्वरत्नमयानि' बधा य रत्नमय, परन्तु एक भाग रत्नमय नहि एवां, अच्छानि-आकाश अने स्फटिकनी पेठे अत्यंत स्वच्छ, 'श्लक्ष्णानि' स्निग्ध पुद्गल स्कन्धो वडे बनेलां, स्निग्ध अवयवथी बनेला पटनी पेठे, 'लण्हानि' मसृण-घुंटेला पटनी पेठे कोमळ, 'घृष्टानि' वरसठ सराणना पत्थरथी पाषाणप्रतिमानी पेठे घसेला, 'मृष्टानि'—कोमळ सराण वडे पाषाण प्रतिमानी पेठे घसी कोमळ करेला, तेथी 'नीरजांसि'

तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा,ते णं तत्थ साणं साणं भवणावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं साणं तायत्तीसाण, साण साणं लोगपालाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, साणं साणं परिसाणं, साण साणं अणिआणं, साण साणं अणिआहिवईणं, साण साणं आयरक्खदेवसाह-

प्यमान शरीरवाळा अने लांबी लटकती वनमाळाने धारण करनारा, दीव्य वर्ण, दीव्य गंध, दीव्य स्पर्श, दीव्य संघयण, दीव्य संस्थान (आकृति) दिव्य ऋद्धि, दिव्य कांति, दिव्य प्रभा, दिव्य छाया-समूहगत शोभा, दिव्य अर्ची-रत्नादिनी कांति, दिव्य तेज अने दिव्य लेश्या-शारीर वर्णना सौन्दर्य वडे दस दिशाओने उद्द्योतवाळी करता, शोभता पोतपोताना लाखो भवनावासोनुं पोतपोताना हजारो सामानिक देवोनुं, पोतपोताना त्रायस्त्रिंश देवोनुं, पोतपोताना लोकपालोनु, पोतपोतानी अग्रमहीषीओनु, पोत-

छाण वगेरेथी लींपवु, 'उल्लोइय' भींत अने माळने खडी वगेरेथी धोळवु, ते वडे महित—पूजित, सुशोभित थया, तथा 'गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चांगुलितलानि' दर्दर-गाढ अथवा चपेटा-हथेळी रूपे गोशीर्ष नामना चंदन अने सरस रक्त चंदन वडे दत्त-पञ्चांगुलितल—थापा मापेला छे जेने विषे एवा, 'उपचितचन्दनकलशानि' उपचित—मूक्या छे चंदनकलश—मांगलिक कळशो जेने विषे एवा, 'चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि' चंदनना घट-कळशो वडे सुकृत—सारी रीते करेला अर्थात् सुशोभित तोरणो जेना प्रतिद्वार—बारणाना देशभागने विषे छे एवा, 'आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्घारिय(प्रलंबित)माल्यदामकलापानि' आसक्त-भूमिमां लागेलु, उत्सक्त—उपर चंदरवानी नीचे विपुल—विस्तीर्ण, वृत्त—गोळ 'वग्घारिय'-प्रलंबित लटकती पुष्पनी माळाओनो समूह जेने विषे छे एवा, 'पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि' मूकेला पांच वर्णना सरस सुगंधी पुष्पना ढगलाना उपचार—शोभाथी युक्त, 'कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धुताभिरामाणि' कालागुरु—अगर, प्रवर-

गदकुंडलमट्टगंडतलकन्नपीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदिपलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं

देवो छे. तेओ सुंदर रूपवाळा, महा ऋद्धिवाळा, महा कान्तिवाळा, महा बलवाळा, महा यशवाळा, महा ऐश्वर्यवाळा तरीके सुप्रसिद्ध, (महा सुखवाळा,) हारवडे सुशोभित छातीवाळा, कडा अने बाजुबंधथी जेना हाथ स्तंभित थयेला छे एवा, अंगद, कुंडल तथा जेणे बन्ने कपोलप्रदेश–गालनो स्पर्श कर्यो छे एवा कर्णपीठने धारण करनारा, विचित्र हस्ताभरणवाळा, जेना मस्तकने विषे विचित्र माळा अने मुकुट छे एवा, कल्याणकारी श्रेष्ठ वस्त्र जेणे पहेर्यां छे एवा, कल्याणकारी श्रेष्ठ माळा अने विलेपनने धारण करनारा, देदी-

---

आवी होय तो सो पुरुषोनो नाश करे, मुशल प्रसिद्ध छे अने मुसंढी एक जातनुं शस्त्र छे, तेओ वडे परिवारित–युक्त एवां, एथी ज हमेशां 'अयोध्यानि'—बीजाओ वडे ज्यां युद्ध करवुं अशक्य छे एवां, माटे ज 'सदाजयानि' जेओनो सर्वदा जय छे एवां, 'सदागुप्तानि' हमेशां युद्ध करनारा पुरुषोथी शस्त्रोवडे गुप्त—सुरक्षित एवां, केमके योद्धाओ ते भवननी चोतरफ निरंतर रहेला होवाथी त्यां अन्य शत्रुओनो जरा पण प्रवेश थवो संभवित नथी. 'अडयाल(अष्टचत्वारिंशत)कोष्ठकरचितानि' अडताळीश प्रकारनी रचनायुक्त कोष्ठक—ओरडाओ (शाश्वत होवाथी) ज्यां स्वतः रचेलां छे एवां, अने 'अडयालकृतवनमालानि' अडताळीश प्रकारनी भिन्न रचनावाळी वनमाळाओ ज्यां छे एवां भवनो छे. आ संबंधे अन्य आचार्यो कहे छे के—'अडयाल' शब्द देशीशब्द होवाथी प्रशंसानो वाचक छे. माटे जेमां प्रशस्त कोष्ठक–ओरडाओ रचेला छे एवां अने प्रशस्तरचनावाळी वनमाळाओ जेमां छे एवां भवनो छे. 'क्षेमाणि'—अन्यथी करायेला उपद्रव रहित, 'शिवानि'—सदा मंगलयुक्त, तथा किंकरामरदंडोपरक्षितानि' किंकर—चाकर रूपे रहेला जे देवो छे तेओथी दंड वडे चोतरफ रक्षण करायेलां छे. 'लाउल्लोइयमहितानि' लाइय–भूमिने

अग्गी य दीव उदही य। दिसिपवणथणियनामा दसहा एए भवणवासी ॥ चूडामणिमउडरयणाभूसणणागफडगरुलवइरपुन्नकलसकिउप्फेसा सीहहयवरगयंकमगरवरवद्धमाणनिज्जुत्तचित्तचिंधगता, सुरूवा, महड्ढिया, महज्जुइआ, महब्बला, महायसा, महाणुभावा, महासोक्खा, हारविराइअवच्छा, कडगतुडियथंभियभुआ, अं-

पर्याप्त अने अपर्याप्त भवनवासी देवोना स्थानो छे तेओ उपपातवडे लोकना असंख्यातमा भागमा, समुद्घातवडे लोकना असंख्यातमा भागमा अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां रहेलां छे. त्यां घणा भवनवासी देवो रहे छे. ते आ प्रमाणे– "असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, पवनकुमार, अने स्तनितकुमार–ए दस प्रकारना भवनवासी छे." चूडामणि नामे रत्न जेना मुकुटमा छे, जेओना भूषणमां नागनी फेणं, गरुड अने वज्र छे,तथा पूर्ण कलश वडे अंकित–युक्त 'उप्फेस'–मुकुट जेओनो छे,जेना भूषणमां सिंह अश्ववर–घोडो अने श्रेष्ठ हाथीरूप चिन्ह छे, जेना भूषणमा चित्र–आश्चर्य करनार मगर अने 'वर्धमान–शरावसंपुट रूप चिन्हो नियुक्त छे एवा (अनुक्रमे असुरकुमारादि) भवनवासी

विपुल—विस्तीर्ण, गंभीर–जेनो ताग न आवी शके एवी (ऊंडी) खात अने परीखा ते भवनोनी बारे तरफ आवेली छे खात अने परिखानी एटली विशेषता छे के परिखा उपर पहोळी अने नीचे संकुचित होय छे अने खात उपर अने नीचे बन्ने स्थळे सरखी होय छे 'प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि' दरेक भवनना प्राकारो—किल्लाओने विषे अट्टालक–किल्ला उपरना नोकरोने रहेवाना स्थान, कपाट–पोळना द्वारना कमाडो, अहीं बधा भवनोमा पोळो होय छे ए सूचित कर्युं, अन्यथा नहिं कमाडोनो असंभव छे पोळना द्वारना तोरणो, अने प्रतिद्वार—मोटा बारणाओमां रहेली नानी बारीओ ते रूप देशभाग—विभागो जेमां छे एवा, 'यन्त्रशतघ्नीमुशलमुसंढीपरिवारितानि' नाना प्रकारना यन्त्रो, शतघ्नी—मोटी लाकडीओ अथवा मोटी शिलाओ के जे पाडवामा

मघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा, सुगंधवरगंधिया, गंधवट्टिभूया, अच्छरगणसंघसंविगिन्ना, दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्ठा, मट्ठा, णीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पहा, ससिरिया, समरीइया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा। एत्थ णं भवणवासिदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति। तंजहा-असुरा नाग-सुवन्ना विज्जू

चंदनना कलशो मूक्या छे एवां, चंदना घट वडे सुशोभित तोरणो जेना लघु द्वारोना एक भागमां आवेला छे एवां, भूमिनी नीचे लागेला अने उपर लटकावेल फुलनी माळाओना झुमखांवाळा, वेरायेला पांच वर्णना सरस सुगंधी पुष्पना ढगलाओनी शोभावडे युक्त, काळा अगर, श्रेष्ठ कींदरु अने शिलारसना धूपनी चोतरफ प्रसरती गंधवडे अत्यंत मनोहर, उत्तम प्रकारना गंधयुक्त सुगंधी पदार्थोनी गंधवाळां,सुगंधी द्रव्योनी गुटिकारूप,अप्सराओना गणना समुदाय वडे व्याप्त,दीव्य वादित्रोना शब्दवडे युक्त,सर्व रत्नमय,अतिस्वच्छ, स्निग्ध, कोमळ, घसेलां,साफ करेलां, रजरहित, निर्मल, निष्पंक, निरावरण कान्तिवाळां, प्रभावाळां, कीरणोवाळां, उद्योतवाळां, मनने प्रसन्न करनारां, दर्शनीय-जोवा योग्य, अत्यंत सुंदर, अने प्रतिक्षण नवीन नवीन रूपने धारण करनारां होय छे. आ भवनोमां

खुणावाळां अने नीचेना भागमां 'कमलकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि' कमलनी कर्णिकानी-संस्थान-आकृतिवाळां छे. कमळना मध्य भागमां उंची, समान अने विचित्र विन्दु-टपकावाळी कर्णिका कहेवाय छे. 'उत्कीर्णान्तरविपुलगंभीरखातपरिखानि' उत्कीर्ण—जाणे के कोतरेलुं होयनी शुं एवुं एटले अत्यन्त स्पष्ट अन्तर-भेद जेओनो छे एवी विपुल अने गंभीर खात अने परिखा जेनी चारे तरफ आवेली छे एवां, एटले खात अने परिखानो स्पष्ट भेद मालुम पडे ते माटे बन्नेनी वच्चे एक मोटी पाळ छे. अर्थात् अत्यन्त स्पष्ट अन्तरवाळी

देवाणं सत्त भवणकोडीओ बावत्तरि भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। तेणं भवणा बाहिं वट्टा, अन्तो चउरंसा, अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया, उक्किन्नतरविउलगंभीरखातफलिहा, पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा, जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरियारिया, अउज्झा, सदाजया, सदागुत्ता, अडयालकोट्ठगरइया, अडयालकयवणमाला, खेमा, सिवा, किंकरामरदंडोवरक्खिया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला, उवचियचंदणकलसा, चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा, पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया, (ग्रंथाग्रं १०००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूव-

---

सात क्रोड अने बहोंतेर लाख भवनो छे एम कह्युं छे. ते भवनो बहारना भागमां गोळ, अन्दरना भागमां चतुष्कोण अने नीचेना भागमां कमळनी कर्णिकानी आकृतिवाळा छे, उत्कीर्ण–जाणे के कोतरेल होयनी शुं एवा स्पष्ट अन्तरवाळी, विस्तीर्ण अने उंडी खात (खाइ) अने परिखा जेनी चारे तरफ छे एवा, जेना प्राकारने विषे अट्टालक, कमाड, तोरणो अने प्रतिद्वार–नानी बारीओ छे एवा, यन्त्रो, शतघ्नी (मोटी लाकडी) मुशल अने मुसंढीथी युक्त, ज्यां युद्ध करी न करी शकाय एवा, हमेशा जयवाळां, हमेशां रक्षण करायेलां, अडताळीश ओरडाओनी रचनावाळां, अडताळीश वनमाळाओनी रचनावाळां, उपद्रव रहित, मंगलरूप, किंकर देवोथी दंड वडे रक्षण करायेला, लींपण अने धोळवा वडे सुशोभित, घाटा गोशीर्षचंदन अने सरस रक्तचंदन वडे ज्यां हस्तना थापा मार्या छे एवा, ज्यां

हजार योजन छोडीने मध्यना एक लाख अने अठ्योतेर हजार योजनमां सात क्रोड अने बहोतेर लाख भवनो छे असुरकुमार देवोना चोसठ लाख भवनो छे ते भवनो बहारना भागमां गोळ आकृतिवाळां, अंदरना भागमां सरखा चार

जोयणसयसहस्सेसु अड्डाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पन्नाए अंतरदीवेसु, एत्थ णं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

२८. कहि णं भंते! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! भवणवासी देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं भवणवासीणं

अंदर अढी द्वीप अने समुद्रोमां, पंदर कर्मभूमिमां, त्रीश अकर्मभूमिमां अने छप्पन अंतरद्वीपमां पर्याप्त अने अपर्याप्त मनुष्योना स्थानो कह्यां छे. तेओ उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घात वडे सर्व लोकमां अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे.

२८. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त भवनवासी देवोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! भवनवासी देवो क्यां वसे छे? हे गौतम! आ रत्नप्रभा पृथिवीनी जाडाइ ऍंशीहजार अधिक एक लाख योजन प्रमाण छे. तेमां उपरना भागथी एक हजार योजन प्रवेश करीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने एक लाख ने अठ्योतेर हजार योजन प्रमाण मध्य भागमां भवनवासी देवोना

---

२८. 'कहिणं भंते भवणवासीणं देवाणं' इत्यादि. 'अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायाः' ऍंशी हजार अधिक शतसहस्र—एक लाख योजन बाहल्य—जाडाइ जेनी छे एवी रत्नप्रभा पृथिवीनी उपर अने नीचे एक एक

२६ कहि णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए, अहोलोए तदेक्कदेसभाए, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं सव्वलोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं सव्वलोयस्स असंखेज्जइभागे।

२७. कहि णं भंते! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए

---

२६. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोना क्यां स्थानो छे? हे गौतम! ऊर्ध्व लोकमां तेना एक भागमां, अधोलोकमां तेना एक भागमां, तिर्यग्लोकमां कूवा, तळावो, नदीओ, द्रहो, वावो, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरोवरपंक्तिओ, सरःसरःपंक्तिओ, बिलो, बिलपंक्तिओ, उज्झरो–झरणाओ, निर्झराओ, छिल्लरो, पल्वलो, वप्रो–क्याराओ, द्वीपो, समुद्रो अने सर्व जलाशयो अने जळना स्थानोमां पर्याप्त अने अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोना स्थानो छे. ते उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थान वडे सर्व लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे.

२७. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त मनुष्योना क्यां स्थानो छे? हे गौतम! पीस्तालीस लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रनी

त्तरं च तीसं छव्वीसं चेव सयसहस्सं तु । अट्ठारस सोलसगं चउदसमहियं तु छट्ठीए ॥२॥ अद्धतिवन्नसहस्सा उवरिमहे वज्जिऊण तो भणियं । मज्झे तिसहस्सेसुं होन्ति उ नरगा तमतमाए ॥३॥ तीसा य पन्नवीसा पन्नरस दसेव सयसहस्साइं । तिन्नि य पंचूणेगं पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥ ४ ॥

त्रण हजार योजनमां नरकावासो छे. त्रीश लाख, पचीश लाख, पंदर लाख, दश लाख, त्रण लाख, पांच ओछा एक लाख अने अनुत्तर पांच नरकावासो क्रमशः जाणवा.

'आशीतं'-ऍंशी हजार अधिक एक लाख योजन रत्नप्रभानी जाडाइ छे. 'द्वात्रिंशं'-बत्रीस हजार अधिक एक लाख योजन शर्करा प्रभानी, 'अष्टाविंशं' अठ्यावीश हजार अधिक एक लाख योजन वालुकाप्रभानी, वीश हजार अधिक एक लाख योजन पंकप्रभानी, अढार हजार अधिक एक लाख योजन धूमप्रभानी, सोळ हजार अधिक एक लाख योजन तमःप्रभानी अने आठ हजार अधिक एक लाख योजन 'हेट्ठिमिया' सर्वनी नीचे रहेली तमःतमःप्रभा पृथिवीनी जाडाइ छे. हवे उपर अने नीचे एक एक हजार योजन मुकीने जेटली नरकावासने योग्य नरकपृथिवीनी जाडाई छे तेनो संग्रह करवानी इच्छावाळा आचार्य कहे छे—'अट्ठुत्तरं' इत्यादि बे गाथाओ छे. रत्नप्रभानी जाडाइनुं परिमाण एक लाख ने एंशी हजार योजन छे. तेमां एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचे छोडीने बाकी रहेलुं क्षेत्र नरकावासनुं आधारभूत छे. माटे रत्नप्रभानी नरकावास योग्य जाडाइनुं प्रमाण एक लाख अने अठ्योतेर हजार योजन छे. एम बधे स्थळे उपयोग राखीने विचार करवो. हवे नरकावासनी संख्या बताववा माटे संग्रहणी गाथा कहे छे. 'तीसा य' इत्यादि. तेनो अर्थ स्पष्ट छे.

१ मज्झे उ तीसु सहस्सेसु होन्ति णरगा-शां. सा. ख.

एण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ ण बहवे तमतमापुढवीनेरइआ परिवसंति । काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्ने पन्नत्ताणं समणाउसो ! । ते ण निच्चं भीता, निच्च तत्था, निच्चं तसिया, निच्च उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्ध णरगभय पच्चणुभवमाणा विहरन्ति । आसीय बत्तीसं अट्ठावीसं च हुंति वीसं च । अट्ठारससोलसग अट्ठुत्तरमेव हिट्ठिमिया ॥१॥ अट्ठु-

परन्तु 'कावोयअगणिवण्णाभा' कापोत-'कृष्ण अग्निना वर्ण जेवा' ए पाठ न कहेवो. नैरयिकोना बदले 'तमःतमःप्रभा' एवो पाठ कहेवो. एक लाख एंशी हजार, एक लाख बत्रीश हजार, एक लाख अठयावीश हजार, एक लाख वीश हजार, एक लाख अढार हजार, एक लाख सोळ हजार अने एक लाख आठ हजार योजन बधानी नीचेनी सातमी नरकपृथिवीनी जाडाइ छे.

एक लाख अठयोतेर हजार, एक लाख त्रीश हजार, एक लाख छव्वीश हजार, एक लाख अढार हजार, एक लाख सोळ हजार, छठ्ठी पृथिवीना एक लाख अने चौद हजार योजनमा तथा तमतमा पृथिवीना उपर अने नीचे साडी बावन २ हजार छोडीने वच्चेना

१९-२५. एम सामान्य रीते नैरयिक सूत्रनी व्याख्या करी ए प्रमाणे रत्नप्रभादिना सूत्रोनो यथायोग्यपणे विचार करवो परन्तु छठ्ठी तमःप्रभा अने सातमी तम तमःप्रभा नरकपृथिवीमा जे नरकावासो छे ते 'कापोताग्निवर्णाभा' कापोत-कृष्ण अग्निना वर्ण जेवा न कहेवा, कारण के त्या नारक जीवोनी उत्पत्ति स्थान सिवाय अन्य बधे य स्थळे शीतपरिणाम छे तेथी आ प्रमाणे कहेवामा आवशे—'नवर छट्ठसत्तमीसु ण काउयअगणिवण्णाभा न भवन्ति' परन्तु केवळ छठ्ठी अने सातमी नरकपृथिवीमा नरकावासा कापोत-कृष्ण अग्निना वर्ण जेवा (उष्णरूप) नथी " हवे पूर्वोक्त नरकपृथिवीनी जाडाइनु परिमाण बतावनारी संग्रहणी गाथा कहे छे—'आसीय बत्तीसं'-इत्यादि

२५. कहि णं भंते ! तमतमापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! तमतमापुढवीनेरइया परिवसंति ? गोयमा ! तमतमाए पुढवीए अट्ठोत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, हिट्ठा वि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झे तीसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं तमतमापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं पंचदिसि पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पन्नत्ता । तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे । ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिआ, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुब्भिगंधा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं तमतमापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घा-

२५. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त तमःतमःप्रभापृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! तमःतमःप्रभापृथिवीना नैरयिको क्यां रहे छे ? हे गौतम ! एक लाख अने आठ हजार योजन प्रमाण जाडाइवाळी तमःतमःप्रभा पृथिवीमां उपरथी साडी बावन हजार योजन प्रवेश करी अने नीचे पण साडी बावन हजार योजन छोडी वच्चेना त्रण हजार योजनमां पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा तमःतमःप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना पांच दिशाए पांच अनुत्तर एवा मोटामां मोटा महा नरकावासो कहेला छे. ते आ प्रमाणे-१ काल, २ महाकाल, ३ रौरव, ४ महारौरव, अने ५ अप्रतिष्ठान. ते नरको अंदरना भागमां गोळ—इत्यादि अर्थ पूर्वनी (सू० १८) पेठे जाणवो.

१ रोरुए, २ महारोरुए शां. सा. क.

परिवसंति ? गोयमा ! तमाए पुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेग जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चउदसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं तमप्पभापुढवीनेरइयाणं एगे पंचूणे णरगावाससयसहस्से हवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुब्भिगंधा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं तमापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे तमप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं निच्चं भीता, निच्चं तत्था, निच्चं तासिया, निच्चं उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

रहे छे ? हे गौतम ! एक लाख अने सोळ हजार योजननी जाडाइवाळी तमःप्रभा पृथिवीमां उपरथी एक हजार योजन प्रवेश करी अने नीचे एक हजार योजन छोडीने बाकी एक लाख अने चौद हजार योजन प्रमाण मध्य भागमां तमःप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना पांच न्यून एक लाख नरकावासो छे एम कह्युं छे. ते नरको अंदर गोळाकार इत्यादि अर्थ पूर्ववत् (सू० १८, कहेवो) परन्तु 'कावोयअगणिवण्णाभा' कृष्ण अग्निना जेवा वर्णवाळा छे–ए पाठ न कहेवो अने 'तमःप्रभा' ए पाठ कहेवो.

ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं धूमप्पभापुढवीनेरइयाणं तिन्नि निरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवन्नाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं धूमप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे धूमप्पभापुढवीनेरइया परिवसन्ति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं णरगा निच्चं भीता, निच्चं तत्था, निच्चं तसिया, निच्चं उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

२४. कहि णं भंते! तमापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! तमापुढवीनेरइया

प्रवेश करीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने बाकीना एक लाख अने सोळ हजार योजन प्रमाण मध्यभागमां धूमप्रभापृथिवीना त्रण लाख नरकावासो कह्या छे. ते नरको अंदरना भागमां गोळ, बहार चोरस–इत्यादि अर्थ पूर्वे सू. १८मां कह्या प्रमाणे कहेवो, परन्तु अहीं धूमप्रभानो पाठ कहेवो.

२४. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तमःप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! तमःप्रभा पृथिवीना नैरयिको क्यां

वीनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई, [वीसा] परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवन्नाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ। एत्थ णं पंकप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे पंकप्पभापुढवीनेरइआ परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं निच्चं भीया निच्चं, तत्था, निच्चं तसिया, निच्चं उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

२३. कहि णं भन्ते! धूमप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! धूमप्पभापुढवीनेरइआ परिवसन्ति? गोयमा! धूमप्पभापुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्स

पृथिवीना दस लाख नरकावासो होय छे एम कह्युं छे ते नरको अंदरना भागमा गोळ-इत्यादि अर्थ पूर्वे सू. १८मा कह्या प्रमाणे जाणवो, परन्तु अहीं पंकप्रभानो पाठ कहेवो.

२३. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो छे? हे भगवन्! धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको क्यां रहे छे? हे गौतम! धूमप्रभा पृथिवीनी जाडाई एक लाख अने अढार हजार योजन छे, तेमां उपरथी एक हजार योजन

उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे वालुयप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं निचं भीता, निचं तत्था, निचं तसिआ, निचं उव्विग्गा, निचं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

२२. कहि णं भन्ते! पंकप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भन्ते! पंकप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति? गोयमा! पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं पंकप्पभापुढवीना नैरयिको क्यां रहे छे? हे गौतम! वालुकाप्रभा पृथिवीनी जाडाइ एक लाख अने अठयावीश हजार योजन छे, तेमां उपरना भागथी एक हजार योजन अंदर प्रवेशीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने वाकीना एक लाख अने छवीश हजार योजन प्रमाण मध्य भागमां वालुकाप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना पंदर लाख नरकावासो छे एम कह्युं छे. ते नरको अंदरना भागमां गोळ—इत्यादि अर्थ पूर्वे सू. १८मां कह्या प्रमाणे जाणवो, परन्तु वालुकाप्रभा पाठ कहेवो.

२२. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे भगवन्! पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिको क्यां रहे छे? हे गौतम! पंकप्रभा पृथिवीनी जाडाइ एक लाख अने वीश हजार योजन छे, तेमां उपरना भागथी एक हजार योजन प्रवेश करी नीचे एक हजार योजन छोडीने वाकीना एक लाख अने अढार हजार योजन प्रमाण मध्य भागमां पंकप्रभा

२१. कहि णं भन्ते ! वालुयप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते ! वालुयप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति ? गोयमा ! वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं वालुयप्पभापुढवीनेरईयाणं पन्नरसनरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई,[वीसा], परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ। एत्थ णं वालुयप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता।

जेवी आकृतिवाळा तथा 'तमसा'–प्रकाशना अभावथी हमेशां अंधकारवाळा छे. ज्यां ग्रह, चन्द्र, सूर्य, अने नक्षत्ररूप ज्योतिष्कोनो मार्ग नथी एवा छे. मेद, वसा–चरबी, परुनो समुदाय, रुधिर अने मांसना चिक्खिल्ल–कीचडना अनुलेपन–वारंवार लींपावाथी लिप्त–खरडायेलुं भूमितळ जेओनुं छे एवा, अशुचि–बीभत्स, [विस्र–विष्टानी जेवी गंधवाळा], अत्यन्त दुरभिगंधवाळा, कापोत–कृष्ण अग्निना वर्ण जेवा, कर्कश स्पर्शवाळा, दुःखे करी सहन करवा योग्य, अशुभ एवा नरको छे अने ते नरकोमां अशुभ वेदनाओ छे. अहीं शर्करा प्रभाना नैरयिको रहे छे ते काळा, काळी कान्तिवाळा, जेना दर्शनथी अत्यन्त रोमांच थाय एवा, भीम–भयंकर इत्यादि बधो अर्थ सू. १८मा कह्या प्रमाणे जाणवो.

२१. हे भगवन् ! पर्याप्त अने अपर्याप्त वालुकाप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! वालुकाप्रभा पृथि-

पुढवीनेरइया परिवसन्ति ? गोयमा ! सक्करप्पभापुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पणवीसं निरयावाससयसहस्सा हवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमांसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवन्नाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा णरगा, असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं०, समुग्घाएणं०, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे सक्करप्पभापुढवीनेरइआ परिवसन्ति। काला,कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा,भीमा,उत्तासणगा,परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो !। ते णं निच्चं भीता, निच्चं तत्था, निच्चं तसिया, निच्चं उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

अनुभव करता रहे छे.

२०. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिको क्यां रहे छे ? हे गौतम ! एक लाख अने बत्रीश हजार योजन प्रमाण जाडाइवाळी शर्कराप्रभा पृथिवीमां उपरना भागथी एक हजार योजन प्रवेश करी अने नीचे एक हजार योजन छोडीने तेना एक लाख अने त्रीश हजार योजन प्रमाण मध्यभागमां शर्कराप्रभा पृथिवीना पचीश लाख नरकावासो होय छे एम कह्यु छे. ते नरको अंदरना भागमां गोळ, बहारना भागमां चोरस अने नीचे क्षुरप्रना

ल्लित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा णरगा, असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्पभापुढवीनेरइया परिवसन्ति। काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं निच्च भीया, निच्च तसिया, निच्च उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

२०. कहि णं भंते! सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! सक्करप्पभा-

---

पडनो समूह, रुधिर अने मासना कीचडवडे वारंवार लींपावाथी जेनु भूमितल खरडायेलु छे एवा, अशुचि-अपवित्र, बीभत्स-घृणा उत्पन्न करे एवा, विष्ठा-विष्टाना जेवी गंधवाळा, अत्यंत दुरभिगन्धवाळा, काळा अग्निना वर्ण जेवी आकृतिवाळा, कर्कशस्पर्शवाळा, दुःखपूर्वक सहन थइ शके एवा, अशुभ नरको छे अने ते नरकमा अशुभ वेदनाओ छे अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता रत्नप्रभा पृथ्वीना नैरयिकोना स्थानो कहेलां छे तेओ उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागे छे, समुद्घात वडे लोकना असंख्यातमा भागे छे अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागे छे. त्यां घणा रत्नप्रभाना नैरयिको वसे छे. तेओ काळा, काळी कान्तिवाळा, जेनाथी गंभीर-उत्कट रोमहर्ष-रोमांच उत्पन्न थाय एवा, भयंकर, त्रास आपनारा अने वर्ण वडे परम कृष्ण-अत्यंत काळा हे आयुष्मान् श्रमण! कह्या छे. तेओ सदा भयभीत, सदा त्रस्त, सदा त्रास पमाडेला, सदा अत्यंत अशुभरूप अने निरंतर संबद्ध-नरक भयनो

१९. कहि णं भंते ! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइआ परिवसन्ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा, ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमांसचिक्खि-

१९. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता रत्नप्रभापृथ्वीना नैरयिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे ? हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वीना नैरयिको क्यां रहे छे ? हे गोतम ! एकलाख अने ऐंशी हजार योजन प्रमाण जाडाइवाळी रत्नप्रभा पृथ्वीना उपरना एक हजार योजन अंदर प्रवेश करीने अने नीचे एक हजार योजन छोडीने बाकी एक लाख अने अठ्योतेर हजारयोजन प्रमाण मध्य भागमां रत्नप्रभा पृथ्वीना नैरयिकोना त्रीश लाख नरकावासो छे एम कह्युं छे.ते नरको अंदर गोळ अने बहारना भागमां समचोरस तथा नीचे क्षुरप्रनी आकृतिवाळा, प्रकाशना अभावथी हमेशां अंधकारवाळा, जयां ग्रह, चन्द्र, सूर्य अने नक्षत्ररूप ज्योतिष्कोनो मार्ग नथी एवा, मेद, वसा

थयेला, हमेशां त्रासिताः' परमाधार्मिक देवोए अने परस्पर त्रासने पमाडेला अने हमेशां 'उद्विग्नाः' यथासंभव अत्यंत दुःसह शीत अने उष्ण वेदनाना अनुभवथी परमाधार्मिक देवोए अने परस्पर एकबीजाए उत्पन्न करेला दुःखना अनुभवथी उद्विग्न थयेला, नरकावासथी पराङ्मुख चित्तवाळा, एम नित्य—सर्वदा परम—एकान्त अशुभ अने निरंतर संबधवाळा कदाचित् पण वच्चे जरा पण विच्छिन्न नहि थयेला एवा नरकभय—नरकदुःखनो (प्रत्यनुभवन्तः) अनुभव करता रहे छे.

कारण के तेने जोवाथी पण अतिसृग उत्पन्न थाय छे क्वचित् 'वीसा'—विस्ना—एवो मूळ पाठ छे तेनो अर्थ विस्र-काचा मळना जेवी गन्धवाळा, 'परमदुरभिगन्धा'—अत्यन्त दुरभिगन्धवाळा, मरी गयेला गवादिना कलेवरोथी पण अत्यत अनिष्ट दुर्गन्धवाळा, 'कापोताग्निवर्णाभाः'—लोढाने तपाववाथी जेवो कपोत-बहु काळो अग्निनो वर्ण होय छे, एटले जेवी अत्यत कृष्णवर्णरूप अग्निनी ज्वाला नीकळे छे तेवा प्रकारनी आभा-आकृतिवाळा, अर्थात् तपावेला लोढाना अग्निनी ज्वाला जेवा, कारण के नारकोना उत्पत्ति स्थान सिवाय नरकावासो बधे स्थळे उष्णरूप छे आ हकीकत छट्ठी अने सातमी नरकपृथिवी सिवाय जाणवी ते आगळ कहेवामा आवशे—"छट्ठी अने सातमी नरक पृथिवीमा नरकावासो कापोत-कृष्ण रूप अग्निना वर्ण जेवा नथी" 'कर्कशस्पर्शा' तथा कर्कश-असिपत्रना जेवो अत्यत दुःसह स्पर्श जेओनो छे एवा, तेथी ज 'दुरध्यासा'—दुःखपूर्वक सहन कराय एवा, 'अशुभा' वर्णनथी तथा गन्ध, रस, स्पर्श अने शब्दो वडे अशुभ नरको छे, अने अशुभा-अत्यत असातारूप नरकने विषे वेदना होय छे 'एत्थ णं' इत्यादि अहीं पर्याप्त अने अपर्याप्त नैरयिकोना स्थानो छे इत्यादि यावत् त्या घणा नैरयिको वसे छे ते काळा छे तेमा कोइ नरयिक प्रभा रहित होवाथी थोडो काळो होय, ते आशका [illegible] करवा माटे बीजु विशेषण आपे छे—'कालावभासा' काळी कान्तिवाळा, एटले जेनाथी काळी प्रभानु निर्गमन थाय छे एवा, अर्थात् तेओ कृष्ण प्रभाना समुदायथी उपचित थयेला छे ए भावार्थ छे 'गम्भीरलोमहर्षा' जेनाथी भय वडे गभीर—अत्यत उत्कट रोमहर्ष-रोमाच थाय छे एवा, तात्पर्य ए छे के कृष्ण अने कृष्णप्रभावाळा नैरयिको होय छे, के जेओ दर्शनमात्रथी पण बीजा नारक जीवोने भय उत्पन्न करवा वडे अत्यन्त रोमाच उत्पन्न करे छे ए कारणथी भयकर छे, अने भयकर होवाथी 'उत्त्रासनका' शेष नारक जीवोने त्रास आपनारा छे वधारे शु कहेवु ! तेओ वर्ण वडे अतिशय कृष्ण छे, तेथी वधारे कोइ पण काळी वस्तु नथी, अथवा तेथी कोइ भयानक वस्तु नथी, हे आयुष्मान् श्रमण ! तेओ अत्यन्त कृष्ण वर्णवाळा छे—एम में तथा अन्य तीर्थंकरोए कहेलु छे ते नैरयिको नित्य—हमेशां क्षेत्रना स्वभावथी उत्पन्न थयेला अत्यत गाढ अन्धकारना दर्शनथी भयभीत थयेला, नित्य—हमेशा त्रस्त-परमाधार्मिक देवोए अने परस्पर उत्पन्न करेला आगळना पण दुःखना भयथी त्रासने प्राप्त

णं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति। काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमकण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो!। ते णं तत्थ निच्चं भीता, निच्चं तत्था, निच्चं तासिया, निच्चं उव्विग्गा, निच्चं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति।

कापोत–काळा अग्निना जेवा वर्णवाळा, कर्कश स्पर्शवाळा, दुःसह अने अशुभ नरकावासो छे. अने ते नरकावासोमां अशुभ–अत्यंत दुःखरूप वेदना छे. आ नरकावासोमां पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नैरयिकोना स्थानो कहेलां छे. तेओ उपपातवडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घातवडे लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां छे. अहीं घणा नैरयिको वसे छे. तेओ काळा, काळी कान्तिवाळा, जेओथी गंभीर–अत्यंत रोमांच थाय एवा, भयंकर, त्रास उत्पन्न करनारा अने वर्णथी हे आयुष्मान् श्रमण! अत्यंत काळा छे. ते नैरयिको त्यां हमेशां भयभीत थयेला, हमेशां त्रास पामेला, हमेशां (परमाधार्मिकोए अने परस्पर) त्रास पमाडेला, हमेशां उद्विग्न थयेला अने हमेशां एकान्त अशुभ अने निरंतर संबन्धवाळा नरकभयनो अनुभव करता रहे छे.

काळ सिवाय अन्य समये हमेशां लेशमात्र पण प्रकाश नहि होवाथी मेघथी ढंकायेली कृष्णपक्षनी अर्धरात्रिने विषे जन्मांधनी पेठे गाढ अन्धकार होय छे. माटे कह्युं छे के-"तमसा—प्रकाशना अभावथी हमेशां अन्धकारवाळा होय छे." कारण के त्यां प्रकाश करनार सूर्यादिना अभावथी हमेशां अंधकार रहेलो छे. ते प्रकारे कहे छे—"व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कपथाः"—ज्यां ग्रह, चन्द्र, सूर्य अने नक्षत्र तथा उपलक्षणथी तारारूप ज्योतिष्कोनो पथ—मार्ग नथी एवा, 'मेदोवसापूयपटलरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतलाः'—स्वाभाविक मेद, वसा, अने परुनो समुदाय तथा रुधिर अने मांसवडे थयेला चिक्खिल्ल—किचडवडे अनुलेपन—एकवार लींपायेलाने वारंवार लींपवा वडे लीप्त—लींपायेलुं भूमितळ जेओनुं छे एवा, आ कारणथी अशुचयः—अपवित्र, बीभत्स,

भाए, तमतमप्पभाए, एत्थ णं नेरइयाणं चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं नरगा अंतो वट्टा, बाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा] परमदुब्भिगंधा, काउयअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगा-

---

तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां नैरयिकोना चोराशी लाख नरकावासो होय छे एम कह्युं छे ते नरकावासो अंदरना भागोमां वृत्त-गोळाकृतिवाळा छे, बहारना भागमा समचोरस छे अने नीचेना भागमा क्षुरप्र-अस्त्रानी आकृतिवाळा छे तथा तमसा-प्रकाशना अभावथी हमेशा अंधकारवाळा अने ग्रह, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्ररूप ज्योतिषिकोना मार्गरहित छे. मेद, वसा, परुनो समूह, रुधिर अने मांसना कीचडथी अनुलेपन-वारंवार खरडावाथी लिप्त-लींपायेलु भूमितळ जेओनु छे एवा, अशुचि-अपवित्र,बीभत्स, विस्र-अत्यंत दुर्गंधी,

---

भागमा गोळ आकारवाळा अने बहारना भागमा समचोरस आकारवाळा छे आ वात भूमिपीठनी उपरना मध्य भागने आश्रयी कहेली छे सर्व पीठादिनी अपेक्षाए तो आवलिकाप्रविष्ट-पंक्तिबद्ध नरकावासो क्रमशः गोळ, त्रिकोण अने चतुष्कोण संस्थानवाळा छे अने पुष्पावकीर्ण (छूटा छूटा) नरकावासो जुदा जुदा संस्थानवाळा छे 'अध-क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता'—नीचे भूमितळमा क्षुरप्र-अस्त्रनी आकृति जेवो तीक्ष्णतावाळो आकार छे ते आ प्रमाणे-ते नरकावासोमा भूमितल कोमळता रहित होवाने लीधे तीक्ष्ण कांकरावाळु छे अने तेमा पग मूकता कांकराना स्पर्शमात्रथी क्षुरप्र वडे जेम पग कपाइ जाय तेम पग कपाइ जाय छे 'नित्यांधकार-तमसा'-तमसा-प्रकाशना अभावथी जे तम छे ते तम वडे 'नित्यान्धकारा' हमेशा अंधकारवाळा, अहीं ओरडा घरोमा पण अंधकार होय छे, केवळ बहारना भागमा सूर्यनो प्रकाश होवाथी अत्यन्त मन्द अन्धकार होय छे परन्तु नरकमा तो तीर्थंकर जन्म, दिक्षादि

ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ।

१८.कहि णं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! नेरइया परिवसन्ति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु, तंजहा–रयणप्पभाए सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्प-

---

अने जळना स्थानोमां अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पंचेन्द्रियोना स्थानो कह्यां छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां छे.

१८. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नैरयिकोना क्यां स्थानो छे ? हे भगवन् ! नैरयिको क्यां वसे छे ? हे गौतम ! स्वस्थानवडे साते नरक पृथिवीओमां, ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालुकाप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा,

---

१८. हवे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नैरयिकोना स्थाननी प्ररूपणा करवा माटे कहे छे-'कहिणं भंते' इत्यादि. हे भगवन् ! कया प्रदेशमां पर्याप्ता अने अपर्याप्ता नैरयिकोना स्थानो कह्यां छे ? ए ज विषयने वधारे स्पष्टताथी पूछे छे के बीजा पण समजी शके—हे भगवन् ! कया प्रदेशमां नैरयिको वसे छे ? भगवान कहे छे—हे गौतम ! स्वस्थानने आश्रयी सात पृथिवीमां वसे छे. तेनो नामोच्चार करीने कहे छे—रत्नप्रभा वगेरे स्पष्ट छे. 'एत्थ' अहिं–आ सात पृथिवीओमां नैरयिकोना सर्व संख्यावडे चोराशी लाख नरकावासो छे. ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभामां त्रीश लाख नरकावासो छे, शर्कराप्रभामां पचीश लाख, वालुकाप्रभामां पंदर लाख, पंकप्रभामां दस लाख, धूमप्रभामां त्रण लाख, तमःप्रभामां पांच ओछा एक लाख अने तमःतमःप्रभामां पांच—एम सर्व संख्यावडे चोराशी लाख नरकावासो में अने अन्य तीर्थंकरोए कह्या छे. ते चोराशी लाख संख्याप्रमाण वधा य नरकावासो प्रत्येक अंदरना

गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे ।

१७ कहि णं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए, अहोलोए तदेक्कदेसभाए, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु, चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं

सर्व जलाशयोमां अने जळना स्थानोमां अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता चउरिन्द्रियोना स्थानो कह्यां छे. ते उपपात वडे, समुद्घात वडे अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां छे

१७. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता पंचेन्द्रियोना क्यां स्थानो कहेलां छे ? हे गौतम ! ऊर्ध्वलोकमां तेना एक भागमां अधोलोकमां तेना एकभागमां, तीरछा लोकमां कूवा, तळावो, नदीओ, द्रहो, वावो, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरोवरपंक्तिओ, सरसरपंक्तिओ, बिलो, बिलपंक्तिओ, उज्झरो, निर्झरो, चिल्ललो, पल्वलो, वप्रो, द्वीपो, समुद्रो, अने सर्व जळाशयो

लोए तदेक्कदेसभाए, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, विलेसु, विलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

१६. कहि णं भंते! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु,

---

सरोवरो, सरोवरपंक्तिओ, विलो, विलपंक्तिओ, उज्झरो, निर्झरो, चिल्ललो, पल्वलो, वप्रो, द्वीपो, समुद्रो, अने सर्व जलाशयो तथा जळना स्थानोमां अहीं पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेइन्द्रियोना स्थानो कह्यां छे. तेओ उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे.

१६. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता चउरिन्द्रियोना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! ऊर्ध्व लोकमां तेना एक भागमां, अधोलोकमां तेना एक भागमां, तीरछा लोकमां कूवाओ, तळावो, नदीओ, द्रहो, वावो, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरोवरपंक्तिओ, सरसरपंक्तिओ, विलो, विलपंक्तिओ, उज्झरो, निर्झरो, चिल्ललो, पल्वलो, वप्रो, द्वीपो, समुद्रो, अने

तेना एक भागमां–मेरु पर्वतादिनी वाव वगेरेमां, अधोलोकमां तेना एक भागमां अधोलौकिकग्रामना कूवा तळाव वगेरेमां समजवुं.

लोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

१५. कहि ण भंते! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए, अहो-

अधोलोकमा तेना एक भागमा, तिर्यग्लोकमा अवट–कूवा, तळावो, नदीओ, द्रहो, वावो, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ (सीधी नानी नदीओ), गुंजालिकाओ (वाकी नानी नदीओ), सरोवरो, सरोवरनी पंक्तिओ, सरःसरःपंक्तिओ, बिलो, बिलनी पंक्तिओ, उज्झरो (झरणाओ), निर्झरो (सदा वहेता झरणाओ), छिल्लरो, पल्वलो, वप्रो (क्याराओ), द्वीपो, समुद्रो अने बधा जलाशयो अने जळना स्थानोमां पर्याप्त अने अपर्याप्त बेइन्द्रियोना स्थानो कहेलां छे. ते उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घातवडे लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे.

१५. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त तेइन्द्रियोना क्या स्थानो छे? हे गौतम! ऊर्ध्व लोकमा तेना एक भागमा, अधोलोकमां तेना एक भागमा, तीरछा लोकमां–कूवाओ, तळावो, नदीओ, द्रहो, वावो, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ,

बेइन्द्रियादिक घणा जीवो पाणीमा उत्पन्न थाय छे माटे बधा सूत्रोमा अवट–कूवा वगेरे स्थानो (समानपणे) कह्या छे उर्ध्वलोकमा

१३. कहि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ।

१४. कहि णं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे, अहो-

---

स्थानो छे त्यांज अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना स्थानो छे. ते उपपातवडे सर्वलोकमां, समुद्घातवडे सर्वलोकमां, अने स्वस्थानवडे लोकना असंख्यातमा भागमां छे.

१३. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे ? हे गौतम ! ते बधा एक प्रकारना, विशेषरहित, भेदरहित अने सर्वलोकमां व्याप्त छे.

१४. हे भगवन् ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बेइन्द्रियोना क्यां स्थानो कह्यां छे ? हे गौतम ! ऊर्ध्व लोकमां तेना एक भागमां,

---

समुद्घातवडे सर्वलोकमां होय छे. ज्यारे बादरनिगोदो सूक्ष्मनिगोदोनुं आयुष बांधीने अन्ते मरण समये मरणसमुद्घात करी आत्मप्रदेशोने उत्पत्तिदेश सुधी विस्तारे छे त्यारे बादर निगोद पर्याप्तानुं आयुष हजी सुधी पण क्षीण थयुं नथी माटे बादर पर्याप्त निगोदो ज समुद्घातने प्राप्त थयेला अने सर्वलोक व्यापी होय छे. तेथी समुद्घात वडे सर्वलोकमां होय छे' एम कह्युं छे. स्वस्थान वडे लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे, कारण के घनोदधि वगेरे बधा स्थानो मळीने पण लोकनो असंख्यातमो भाग थाय छे. बाकी बधुं सुगम छे.

१४—१७. ए प्रमाणे बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने सामान्य पञ्चेन्द्रियो संबंधे पण सूत्रो जाणवा, परन्तु शंख वगेरे

यासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थ णं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

१२ कहि णं भंते! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

ओमां (नानी सीधी नदीओमां), गुंजालिकाओमां (वांकी लघु नदीओमां), सरोवरोमां, सरोवरपंक्तिओमां, सरःसरःपंक्तिओमां, बिलोमां, बिलपंक्तिओमां, उज्झरोमां-झरणाओमां, निर्झरोमां (हमेशां वहेता झराओमां), छिल्लरोमां, पल्वलोमां, वप्रोमां (क्याराओमां), द्वीपोमां, समुद्रोमां, सर्व जलाशयोमां, जळस्थानोमां अहीं पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना स्थानो कह्यां छे. ते उपपातने आश्रयी सर्वलोकमां, समुद्घातने आश्रयी सर्वलोकमां अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां छे.

१२. हे भगवन्! अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! ज्यां पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना

-साधारण वनस्पतिकायिकोनो समय छे सूक्ष्मनिगोदोनी भवस्थिति (आयुष) अन्तर्मुहूर्तनी छे तेथी तेओ पर्याप्त बादर निगोदोमां उत्पन्न थता अने पर्याप्त बादर निगोदनुं आयुष अनुभवता शुद्ध ऋजुसूत्र नयनी दृष्टिथी बादर पर्याप्त वनस्पतिकायिक तरीके कहेवाय छे अने उपपात वडे सर्वदा सर्व लोकने व्याप्त करे छे तेथी कह्युं छे के-'उपपात वडे सर्वलोकमां होय छे' 'समुग्घाएण सव्वलोए'-

१०. कहि णं भंते! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सुहुमवाउकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो!।

११. कहि णं भंते! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहिसु, सत्तसु घणोदहिवलएसु, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु; उड्ढलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए अगडेसु, तडागेसु, नदीसु, दहेसु वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहि-

---

१०. हे भगवन्! पर्याप्त अने अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! तेओ बधा एक प्रकारना, विशेपरहित, भेदरहित अने सर्व लोकमां व्याप्त हे आयुष्मान् श्रमण! कह्यां छे.

११. हे भगवन्! पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोना क्यां स्थानो छे? हे गौतम! स्वस्थाननी अपेक्षाए सात घनोदधिमां, सात घनोदधिवलयोमां, अधोलोकमां पातालकलशोमां, भवनोमां, भवनप्रस्तटोमां, ऊर्ध्वलोकमां कल्पोमां, विमानोमां, विमानावलिकाओमां, विमानप्रस्तटोमां, तीरछा लोकमां अवट—कूवाओमां, तळावोमां, नदीओमां, द्रहोमां, वावीओमां, पुष्करिणीओमां, दीर्घिका-

---

१०-१३. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिकना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! ते बधा एक प्रकारना, विशेपरहित, भेदरहित, अने सर्व लोकमां व्याप्त छे. बादर पर्याप्त वनस्पतिकायिक सूत्रमां 'उववाएं सव्वलोए' तेओ उपपात वडे सर्वलोकमां होय छे, अहीं पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकोनुं स्वस्थान घनोदधि वगेरे छे, कारण के त्यां सेवाळ वगेरे बादर निगोदोनो

९ कहि णं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असखेज्जेसु भागेसु।

---

९. हे भगवन् ! अपर्याप्त बादर वायुकायिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे ? हे गौतम ! ज्यां पर्याप्ता बादर वायुकायिकोना स्थानो छे, त्यांज अपर्याप्त बादर वायुकायिकोना स्थानो कह्यां छे. ते उपपातवडे सर्वलोकमा, समुद्घातवडे सर्व लोकमा अने स्वस्थानवडे लोकना असख्याता भागोमा छे.

पण लोगस्स असखेज्जेसु भागेसु'–उपपातवडे लोकना असख्याता भागोमा छे–इत्यादि पर्याप्ता वायुओ अत्यत घणा छे, कारण के ज्या खाली जग्या छे त्या वायु छे, अने आ लोकमा खाली जग्या घणी छे, तेथी पर्याप्त बादर वायुओ पणे उपपातादिने आश्रयी लोकना असख्याता भागोमा होय छे पण कह्यु छे अपर्याप्त बादर वायुकायिकसूत्रमा 'उववाएण समुग्घाएण य सव्वलोए'–उपपात अने समुद्घातने आश्रयी सर्वलोकमा होय छे अहीं देव नारक सिवाय बाकीना बधा स्थानोथी आवीने बादर अपर्याप्त वायुकायमा उत्पन्न थाय छे, अने बादर अपर्याप्ता अन्तराल गतिमा पण होय छे, वळी बादर पर्याप्त अने अपर्याप्त वायुकायिकोना घणा स्थानो छे तेथी व्यवहार नयना मतवडे पण उपपातने आश्रयी तेओनु सर्वलोक व्यापीपणु घटी शके छे, माटे कइ पण दोष नथी समुद्घात वडे तेओनु सवलोक व्यापीपणु सुप्रसिद्ध छे कारण के सर्व सूक्ष्म जीवोमा अने सर्व लोकमा तेओनी उत्पत्तिनो सभव छे

भवणछिद्देसु, भवणनिक्खुडेसु, निरएसु, निरयावलियासु, निरयपत्थडेसु, निरयछिद्देसु, निरयनिक्खुडेसु, उड्ढलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, विमाणछिद्देसु, विमाणनिक्खुडेसु, तिरियलोए पाईणपडीणदाहिणउदीण–सव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु, लोगनिक्खुडेसु य, एत्थ णं बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु।

भवनोमां, भवनप्रस्तटोमां, भवनछिद्रोमां, भवननिष्कुटो–गवाक्षोमां, नरकोमां, नरकावलिकाओमां, नरकप्रस्तटोमां, नरकछिद्रोमां, नरकनिष्कुटोमां, ऊर्ध्वलोकमां कल्पोमां, विमानोमां, विमानावलिकाओमां, विमानप्रस्तटोमां, विमानछिद्रोमां, विमाननिष्कुटोमां, तिर्यग्लोकमां पूर्व, पश्चिम, दक्षिण अने उत्तरमां बधा य लोकाकाशमां, लोकनिष्कुटोमां, अहीं बधे पर्याप्त बादर वायुकायिकोना स्थानो कह्यां छे. ते उपपातवडे लोकना असंख्याता भागोमां, समुद्घात वडे लोकना असंख्याता भागोमां अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्याता भागोमां रहे छे.

छे, त्यांज अपर्याप्त बादर वायुकायिकोना स्थानो कह्या छे. ते उपपात वडे सर्व लोकमां, समुद्घात वडे सर्व लोकमां अने स्वस्थान वडे लोकना असंख्याता भागोमां छे. ए प्रमाणे बादर वायुकायिक अने वनस्पतिकायिक प्रत्येकना त्रण त्रण सूत्रो जाणवा. परन्तु पर्याप्त बादर वायुकायिकना सूत्रमां भवनछिद्रो–भवनोना अवकाशान्तरो–खाली जग्याओ, भवननिष्कुटो–गवाक्षादिना जेवां कोइक भवनना भागो, नरकना छिद्रो, नरकनिष्कुट–गवाक्षादिना जेवा नरकावासप्रदेशो, एम विमानछिद्रो अने विमाननिष्कुटो जाणवा. 'उववा-

८ कहि णं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणवाएसु, सत्तसु घणवायवलएसु, सत्तसु तणुवाएसु, सत्तसु तणुवायवलएसु, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु,

८. हे भगवन् ! पर्याप्ता बादर वायुकायिकोना क्या स्थानो कह्यां छे ? हे गौतम ! स्वस्थान-पोताना स्थाननी अपेक्षाए सात प्रकारना घनवातमा, सात प्रकारना घनवातवलयोमां, सात तनुवातमां, सात तनुवातवलयोमा, अधोलोकमा पातालकलशोमां,

देवा सुधी आत्मप्रदेशोने दड रूपे विस्तारी अन्तराल गतिमा वर्तता अने बादर अपर्याप्त तेजस्कायिकना आयुषनो अनुभव करता होवाथी तेओ 'बादर अपर्याप्त तेजस्कायिक' कहेवाय छे, तेओ समुद्घातने प्राप्त थयेला अ अन्तराल गतिमा वर्तता होय छे, अने समुद्घातावस्थामा सर्वलोकने व्याप्त करे छे माटे एम कह्यु छे के-'समुद्घात वडे सर्वलोकमा होय छे' बीजा आचार्यो कहे छे के-"बादर अपर्याप्ता तेजस्कायिको घणा छे केमके एक एक पर्याप्ताने आश्रयी असख्याता अपर्याप्ताओ उत्पन्न थाय छे अपर्याप्ताओ तो सूक्ष्ममा पण उत्पन्न थाय छे अने सूक्ष्म जीवो तो बधे स्थळे छे तेथी बादर अपर्याप्त तेजस्कायिको पोताना भवने अन्ते मारणान्तिक समुद्घात करीने सर्व लोकने पूर्ण करे छे माटे कोइ पण दोष नथी, परन्तु [1]निरूपचरित-वास्तविक तेजस्कायिक जीवोनी समुद्घातनी प्ररूपणा करवा रूप गुण छे स्वस्थाननी अपेक्षाए लोकना असख्यातमा भागमा रहे छे कारण के पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्तानी उत्पत्ति थाय छे अने पर्याप्तानु स्थान तो मनुष्यक्षेत्र छे, अने ते लोकना असख्यातमा भागे छे सूक्ष्म पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेजस्कायिकसूत्रनी व्याख्या सूक्ष्म पर्याप्त अने अपर्याप्त पृथिवीकायिक सूत्रनी पेठे जाणवी

८-९. हे भगवन् ! अपर्याप्त बादर वायुकायिकोना क्या स्थानो कह्या छे ? हे गौतम ! ज्या पर्याप्ता बादर वायुकायिकोना स्थानो

१ तेजस्कायिकना आयुष, नाम अने गोत्रनो उदय होवाथी निरुपचरित-वास्तविक तेजस्कायिको कहेवाय छे

अने वद्धायुप छे ते द्रव्यथी वादर अपर्याप्त तेजस्कायिक छे, पण भावथी नथी. कारण के ते समये तेने तेना आयुप, नाम अने गोत्रनो उदय नथी. माटे ते बन्नेनो अहीं अधिकार नथी, परन्तु अभिमुखनामगोत्रवाळा वादर अपर्याप्त तेजस्कायिकोनो अधिकार छे, कारण के पोताना स्थाननी प्राप्तिनी अभिमुखतारूप उपपात तेओनो ज घटी शके छे. जो के ऋजुसूत्र नयनी दृष्टिए वादर अपर्याप्त तेजस्कायिकना आयुप, नाम अने गोत्रनो उदय होवाथी पूर्वोक्त बे कपाट अने तिर्यग्लोकनी वहार रहेला छतां 'वादर अपर्याप्त तेजस्कायिक' कहेवाय छे. तोपण अहीं व्यवहार नयनी दृष्टिथी जेओ पोताना उत्पत्ति स्थाननी समश्रेणिमां बे कपाटने विशे रहेला छे अने जेओए पोताना उत्पत्ति स्थानने अनुसरी तीरछा लोकमां प्रवेश कर्यो छे तेज वादर अपर्याप्त तेजस्कायिक कहेवा, वाकीना कपाटना आन्तरामां रहेला न कहेवा. कारण के तेओ विपम स्थानमां रहेला छे, तेथी जेओए हजी पण बे कपाटमां प्रवेश कया नथी, तेम तिर्यग्लोकमां पण प्रवेश कर्यो नथी तेओ पूर्वभवनी अवस्थावाळा छे ते माटे ए वादर अपर्याप्त तेजस्कायिक तरीके न गणवा. कह्युं छे के—"पीसताळीश लाख पहोळा वन्ने कपाटो छए दिशाए लोकान्तने स्पर्शेला छे, तेनी अंदर जे तेजस्कायिको छे ते ग्रहण करवा." ते माटे कह्युं छे के—'उववाएणं दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य'–उपपातने आश्रयी बे ऊर्ध्व कपाटोमां अने तिर्यग्लोक रूपी तट्ट–स्थाळने विषे होय छे." ए प्रमाणे आ सूत्रनुं व्यवहार नयनी दृष्टिथी व्याख्यान कर्युं. कारण के तेवा प्रकारनो संप्रदाय छे. 'विचित्रा सूत्राणां गतिः'–सूत्रोनी गति विचित्र होवाथी ए वात युक्त छे. 'समुग्घाएणं सव्वलोए'–समुद्घात वडे सर्वलोकमां होय छे.' अहीं पूर्वे जेनुं स्वरूप कह्युं छे ते वन्ने कपाटोना वच्चेना भागमां जे सूक्ष्मपृथिवीकायिकादि जीवो वादर अपर्याप्त तेजस्कायिकोमां उत्पन्न थवाना छे तेओ मारणान्तिक समुद्घात करी विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण मात्र अने लंबाइमां उत्कपथी लोकान्तपर्यन्त आत्मप्रदेशोने विस्तारे छे. ते प्रमाणे अवगाहना संस्थानपदमां कहेवामां आवशे.—"हे भगवन्! जेणे मारणान्तिक समुद्घात करी छे एवा पृथिवीकायिकना तैजस शरीरनी केटली मोटी अवगाहना कही छे? हे गौतम! विस्तार अने जाडाइमां शरीर प्रमाण तथा लंबाइमां जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट लोकान्त सुधी होय छे." तेथी सूक्ष्म पृथिवीकायिकादि उत्पत्ति

उक्काइआ जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो।

तेजस्कायिको छे ते बधा हे आयुष्मान् श्रमण ! एक प्रकारना, विशेषतारहित, भेदरहित अने सर्वलोकमां व्याप्त छे

आश्रयी लोकना बन्ने ऊर्ध्व कपाटमा अने तीरछा लोकरूप तट्ट-थाळ-स्थाळमा वर्ते छे अहीं अढी द्वीप समुद्रथी मांडीने, अढी द्वीप समुद्र प्रमाण जाडा, पूर्व-पश्चिम अने उत्तर-दक्षिण स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत लांबा जे बे कपाटो छे, जेणे केवली समुद्घातनी पेठे ऊर्ध्व अने अधो बन्ने बाजु लोकान्तनो स्पर्श करेलो छे ते बन्ने ऊर्ध्व कपाटोमा तथा स्वयंभूरमण समुद्रनी वेदिका पर्यन्त विस्तारवाळा अने अढारसो योजन प्रमाण जाडा तट्ट-स्थाळना आकार जेवा तीरछा लोकमा एटले समस्त तीरछा लोकमा उपपात वडे अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकोना स्थानो कहेला छे कोइ आचार्यो 'तिरियलोगतट्ठे य' एवो पाठ कहे छे, अने ते पाठनी आवी व्याख्या करे छे—'ते बन्ने कपाटमा अने तत्स्थ—बन्ने कपाटमा रहेला तिर्यग्लोकमा अर्थात् बन्ने कपाटमा अन्तवर्ती तीरछा लोकमा' ए अर्थ जाणवो तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे—पूर्वोक्त स्वरूपवाळा बन्ने ऊर्ध्व कपाटमा अने ते कपाटना अन्तर्गत तीरछा लोकमा, पण बधा तीरछा लोकमा नहि एम कपाट सिवायना तिर्यग्लोकनो निषेध करवा माटे आ वाक्य छे, पण विधान करवा माटे नथी, केमके विधान तो कपाटना ग्रहण करवाथी ज सिद्ध छे अहीं तत्त्व केवलज्ञानी के विशिष्ट ज्ञानीगम्य छे

अहीं भावार्थ आ छे—त्रण प्रकारना बादर अपर्याप्त तेजस्कायिको छे—१ एकभविक, बद्धायुष्क अने अभिमुखनामगोत्र तेमा जेओ कोइ एक विवक्षित-अमुक भव पछी तुरत ज बादर अपर्याप्त तेजस्कायिकपणे उत्पन्न थशे ते एक भविक, पूर्व भवनो त्रीजो भाग वगेरे बाकी होय त्यारे जेओए बादर अपर्याप्त तेजस्कायिकनु आयुष्य बांध्यु छे ते बद्धायुष्क, जेओ पूर्व भवनो त्याग कर्या पछी बादर अपर्याप्त तेजस्कायिकनु आयुष, नाम अने गोत्र साक्षात् वेदे छे ते अभिमुखनामगोत्र कहेवाय छे तेमा जेओ एक भविक

६. कहि णं भन्ते! बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! जत्थेव बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

७. कहि णं भंते! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तगाण य अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सुहुमते-

---

६. हे भगवन्! अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! ज्यां पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना स्थानो छे त्यांज अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना स्थानो छे. ते उपपात वडे लोकना बन्ने ऊर्ध्व कपाटोमां अने तिर्यग्लोकरूप ताटमां होय छे, समुद्घातवडे सर्वलोकमां होय छे अने स्वस्थानवडे लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे.

७. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म तेजस्कायिकोना क्यां स्थानो छे? हे गौतम! जे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म

तेजस्कायिको लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे. कारण के तेओ थोडा छे. समुद्घातने आश्रयी विचार करतां पण लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे. केमके मरण समुद्घात वडे आत्मप्रदेशोनो दंडरूपे विस्तार करवा छतां पण तेओ थोडा होवाथी मात्र लोकना असंख्यातमा भागने व्याप्त करे छे, स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे. कारण के मनुष्यक्षेत्रनी लंबाइ अने पहोळाइ पीस्ताळीश लाख योजन प्रमाण होवाथी ते लोकनो असंख्यातमो भाग थाय छे.

६—७ अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना स्थानो संबंधे पूछे छे—'कहिणं भंते' इत्यादि. 'हे भगवन्' इत्यादि प्रश्नसूत्रनो अर्थ स्पष्ट छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! ज्यां पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोनां स्थानो छे त्यां अपर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोनां पण स्थानो कहेलां छे, केमके पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्ताओ रहे छे. 'उववाएणं दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे य' ते उपपातने

ज्ञेसु दीवसमुद्देसु, निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु, वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु, एत्थ णं बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

समुद्रोमां, व्याघात–प्रतिबंध न होय त्यारे पंदर कर्मभूमिमां, अने व्याघात–प्रतिबंधने आश्रयी पांच महाविदेहोमां अहीं पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना स्थानो कह्या छे. ते उपपातवडे लोकना असंख्यातमा भागमा समुद्घातवडे लोकना असंख्यातमा भागमा अने स्वस्थानवडे लोकना असंख्यातमा भागमां रहे छे.

छे भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! स्वस्थानने आश्रयी मनुष्यक्षेत्रमा–अढी द्वीपसमुद्रमा होय छे तेमां 'अढी' ए विशेषण समुद्रने लागु पडतु नथी माटे ते द्वीपोनु विशेषण जाणवु तेथी जम्बूद्वीप, धातकिखंड अने अर्ध पुष्करवर द्वीप ए अढी द्वीपोमा, अने लवण अने कालोदधि ए बे समुद्रो जाणवा 'निर्व्याघातेन' व्याघात–प्रतिबंधना अभावमा पांच भरत, पांच ऐरावत अने पांच महाविदेहरूप पंदर कर्मभूमिमा अने 'व्याघात प्रतीत्य' व्याघातने आश्रयी पांच महाविदेहमा होय छे अहीं आ भावार्थ छे–व्याघात एटले प्रतिबंधरूप अति स्निग्ध के अतिरूक्ष काळ समजवो, तेवा प्रकारनो काळ होय त्यारे बादर अग्निनो विच्छेद होय छे तेथी ज्यारे पांच भरत अने पांच ऐरावत क्षेत्रोमा सुषमसुषमा, सुषमा अने सुषमदुष्षमा ए त्रण आरा वर्तता होय त्यारे अतिस्निग्धकाळ होय छे अने दुःषमदुष्षमा नामे छट्ठो आरो वर्ततो होय त्यारे अतिरूक्ष काळ होय छे अने ते काळमा अग्निनो विच्छेद थाय छे तेवा प्रकारना काळरूप व्याघात–प्रतिबन्ध होय त्यारे पांच महाविदेहोमा अने व्याघात न होय त्यारे पंदर कर्मभूमिमा, अहीं बादर तेजस्कायिकोना स्थानो कहेला छे उपपात–उक्त स्थानोनी प्राप्तिनी अभिमुखताने आश्रयी एटले अन्तराल गतिमा वर्तता होय त्यारे पण विचार करता बादर

इभागे। कहि णं भंते! बादरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरआउकाइपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता तत्थेव बादरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं, सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सुहुमआउकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो!।

५. कहि णं भंते! बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता गोयमा! सट्ठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइ-

---

अपर्याप्त बादर अप्कायिकोना क्यां स्थानो छे? हे गौतम! ज्यां पर्याप्त बादर अप्कायिकोना स्थानो छे त्यां अपर्याप्त बादर अप्कायिकोना स्थानो छे. ते उपपातवडे सर्वलोकमां, समुद्घातवडे सर्वलोकमां अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे. हे भगवन्! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म अप्कायिकोना क्यां स्थानो कहेलां छे? हे गौतम! सूक्ष्म अप्कायिको जे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता छे ते बधा एक प्रकारना, विशेषतारहित, अनानात्व—भेदरहित अने सर्वलोकमां व्याप्त हे आयुष्मान् श्रमण! कहेलां छे.

५. हे भगवन्! पर्याप्ता बादर तेजस्कायिकोना क्यां स्थानो कह्यां छे? हे गौतम! स्वस्थानवडे मनुष्यक्षेत्रनी अंदर अढी द्वीप—

—नहि खोदेला अने थोडा पाणीवाळा जमीनना प्रदेशो के पर्वतना प्रदेशो, पल्वल—नहि खोदेला सरोवरो, वप्रो—क्याराओ, घणुं शुं कहेवुं? पण बधा जलाशयोमां एटले जळना स्थानोमां पर्याप्त बादर अप्कायिको होय छे. बाकीना बधानो विचार पूर्वेनी पेठे करवो.

५. हवे बादर पर्याप्ता तेजस्कायिकोना स्थानो संबंधे प्रश्न करे छे,—'हे भगवन्! बादर तेजस्कायिकोना' इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम

सत्तसु घणोदहिवलएसु, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, उड्ढलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए अगडेसु, तलायेसु, नदीसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललएसु, पल्ललएसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु, जलट्ठाणेसु, एत्थ णं बादरआउकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्ज-

---

घनोदधिवलयोमां, अधोलोकमां, पातालकलशोमां, भवनोमां, भवनप्रस्तटोमां, ऊर्ध्वलोकमां, कल्पोमां, विमानोमां, विमानावलिकाओमां, विमानप्रस्तटोमां, तिर्यग्लोकमां, अवटो–कूवा, तळावो, नदीओ, द्रहो, वापीओ, पुष्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरोवरपंक्तिओ, सरःसरःपंक्तिओ, बिलो, बिलपंक्तिओ, उज्झर–झरणाओ, निर्झर–झराओ, छिल्लरो, पल्वलो, वप्रो, द्वीपो, समुद्रो, सर्व जलाशयो अने जलना स्थानोमां अहीं पर्याप्ता बादर अप्कायिकोना स्थानो कह्यां छे. तेओ उपपात वडे लोकना असंख्यातमा भागमां, समुद्घातवडे लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थानवडे लोकना असंख्यातमा भागमां छे. हे भगवन् !

ळावो प्रसिद्ध छे, नदीओ गंगा–सिंधु वगेरे, पद्मद्रहादि द्रहो, चारखुणावाळी वावो अने गोळ आकारवाळी पुष्करिणीओ कहेवाय छे अथवा पुष्कर–कमळो जेमां होय ते पुष्करिणी, दीर्घिका–सीधी नानी नदीओ, ते वांकी होय तो तेने गुंजालिका कहे छे घणा जुदा जुदा पुष्पोयुक्त होय ते सरोवरो, एक पंक्तिमां रहेला सरोवरो ते सरःपंक्ति, तेवी घणी सरोवरनी पंक्तिओ, जे पंक्तिबद्ध सरोवरोमां कूवामां पाणी प्रणालिकाथी चाले ते सरःसरःपंक्ति कहेवाय, तेवी घणी सरःसरःपंक्तिओ, बिलो–जगती वगेरे स्थळे स्वाभाविक थयेला नाना कूवाओ, 'उज्झर'–पर्वतोमांना पाणीना झरणाओ, प्रवाहो, ते सदा स्थायी हमेशां वहेता होय ते निर्झर–झरणा कहेवाय, छिल्लरो

विकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! ।

४. कहि णं भन्ते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु,

---

पृथिवीकायिको जे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता छे ते बधा हे आयुष्मान् श्रमण ! एक प्रकारना, विशेषता रहित, भिन्नता रहित अने सर्व लोकमां व्याप्त छे.

४. हे भगवन् ! पर्याप्त बादर अप्कायिकोना क्यां स्थानो कहेलां छे ? हे गौतम ! स्वस्थानने आश्रयी सात घनोदधिमां, सात

कारण के पूर्वे कहेला स्वस्थानादि विचारने आश्रयी तेमां भेद नथी. एटले तेओमां उपपात, समुद्घात अने स्वस्थानोनो भेद नथी. 'अविशेषाः' विशेषता रहित एटले जेवा पर्याप्ता छे तेवा बीजा अपर्याप्ता पण जाणवा. 'अनानात्वाः' भिन्नता रहित छे, एटले देशना भेदथी तेओनो भेद नथी. तात्पर्य ए छे के जे आधारभूत आकाश प्रदेशोमां आ पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको छे, तेज आकाशप्रदेशोमां अपर्याप्ता पण छे. वळी 'सर्वलोकपर्यापन्नाः' उपपात, समुद्घात अने स्वस्थान वडे सर्वलोकव्यापी छे-एम में तथा अन्य ऋषभादि तीर्थंकरोए कहेलुं छे. आथी आगमनुं कथंचित् (अर्थनी अपेक्षाए) नित्यपणुं जणाव्युं. 'हे आयुष्मन् श्रमण'! ए भगवाने गौतमने कहेलुं संबोधन छे. एम अप्कायिकना बादर अने सूक्ष्म विषयक सूत्रो जाणवां. परन्तु पर्याप्त बादर अप्कायिकना सूत्रमां तेओनुं स्थान सात घनोदधिवलयोमां छे अने ते घनोदधिवलयो पोतपोतानी नरक पृथिवीना पर्यन्तभागने वींटीने रहेला अने वलयनी आकृतिवाळां छे. 'अधोलोए पायालेसु.' अधोलोकमां वलयामुख प्रमुख पातालकलशोमां छे, केमके ते कलशोमां पण बीजा तृतीयांशमां देशथी अने बीजा तृतीयांशमां सर्वथा पाणीनो सद्भाव छे. भवनोमां, कल्पोमां अने विमानोमां पाणी वाव वगेरेमां होय छे. अहीं विमानादि कहेलां छे ते देवलोकमां रहेलां जाणवां. केमके ग्रैवेयकादिने विषे वावोनो असंभव होवाथी पाणी होतुं नथी, अवट-कूवा, तडाग-त-

पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे।

३. कहि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमपु-

---

त्यां ज अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो छे. उपपातवडे सर्वलोकमा, समुद्घातवडे सर्वलोकमां अने स्वस्थानवडे लोकना असख्यातमा भागमां छे.

३. हे भगवन् ! पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिकोना अने अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकोना क्यां स्थानो छे ? हे गौतम ! सूक्ष्म

देव अने नारक सिवाय बाकीना बधा स्थानोमा थाय छे माटे अन्तराल गतिमा पण वर्तता अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिको ग्रहण करवा, वळी तेओ स्वभावथी पण घणा छे, माटे उपपात अने समुद्घात वडे सर्वलोकव्यापी होय छे अन्य आचार्य कहे छे के-तेओ स्वभावथी ज घणा छे तेथी उपपात अने समुद्घात वडे सर्वलोकव्यापी छे तेमा केटलाकनो उपपात ऋजुगतिथी अने केटलाकनो उपपात वक्रगतिथी थाय छे, ऋजुगति सुप्रसिद्ध छे अहीं ज्यारे केटलाएक जीवो प्रथम वक्रगतिने संहरे छे त्यारे बीजा जीवो ते वक्रगतिना देशने पूर्ण करे छे, एम बीजी वक्रगतिना देशनु संहरण थता पण अन्य वक्रगतिनी उत्पत्ति थाय छे, ए रीते प्रवाहथी वक्रगतिना संहरण अने तेनी पूर्तिमा निरन्तर लोक व्याप्त थाय छे 'सट्ठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे' स्वस्थानने आश्रयी लोकना असख्यातमा भागमा होय छे जेम पर्याप्तानो विचार कर्यो छे तेम अपर्याप्तानो पण विचार आपवो केमके पर्याप्ताने आश्रयी अपर्याप्ता उपजे छे

३-४ सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त अने अपर्याप्त सूक्ष्म जे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको छे ते बधा एक प्रकारना छे,

२. कहि णं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविक्काइयाणं

२. हे भगवन् ! अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोना क्यां स्थानो छे ? हे गोतम ! ज्यां पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोना स्थानो छे,

'समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे.' समुद्घातने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां वर्ते छे. अहीं आ भावार्थ छे—ज्यारे सोपक्रमायुषवाळा के निरुपक्रम आयुषवाळा पर्याप्त बादर पृथिवीकायिको पोताना आयुषनो त्रीजो भाग आदि बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधीने मारणान्तिक समुद्घात करे छे अने उत्पत्ति स्थान पर्यन्त आत्मप्रदेशोनो दंड विस्तारवा छतां पण थोडा होवाथी लोकना असंख्यातमा भागे रहे छे, अने पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकनुं आयुष हजी सुधी समुद्घातावस्थामां पण क्षीण थयुं नथी माटे तेओ पर्याप्त बादरपृथिवीकायिको पण कहेवाय छे.

अहीं पूर्वे पृथिव्यादिने विषे बादर पर्याप्त पृथिवीकायिकोनु स्वस्थान मात्र कह्युं, हवे 'स्वस्थनेन' स्वस्थानननी अपेक्षाए लोकना केटला भागमां रहे छे'? ते बतावे छे—'सट्ठाणेणं लोगस्स असंखिज्जभागे.' स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां वर्ते छे. स्वस्थान रत्नप्रभा वगेरे छे, ते बधां मळवा छतां पण लोकनो असंख्यातमो भाग थाय छे. ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभा पृथिवीनो पिंड एक लाख अने एंशी हजार योजन प्रमाण छे. ए प्रमाणे बाकीनी पृथिवीओ पोतपोतानी जाडाइ वडे कहेवी. पातालकलशो पण लाख योजन प्रमाण उंचा छे. नरकावासो पण त्रण हजार योजन उंचा छे. विमानो पण बत्रीसो योजन प्रमाण उंचा छे. माटे ए बधां मळवा छतां पण परिमित होवाथी लोकना असंख्यातमा भाग प्रमाण थाय छे.

२. बादर अपर्याप्त पृथिवीकायिकना सूत्रमां 'उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए'—उपपात वडे सर्वलोकमां अने समुद्घात वडे सर्वलोकमां होय छे. अहीं अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिको अन्तराल गतिमां पण अने स्वस्थानमां पण अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकनुं आयुष विशिष्ट विपाकथी वेदे छे अने देवो अने नारको सिवाय बाकीनी बधी कायथी आवीने उत्पन्न थाय छे. अने मरीने पण

पर्वतोमा, कच्छादि विजयोमा, विद्युत्प्रभादि वृक्षस्कार पर्वतोमा, भरतादि वासक्षेत्रोमा, वर्षधरोमां—हिमवत् वगेरे पर्वतोमा, वेलाओमा-समुद्रादिना पाणीनी रमणभूमिमा, भरती वगेरेना पाणीनी भूमिमा, जम्बुद्वीपनी जगती आदिनी वेदिकाओमां, विजयादि द्वारोमा, अने द्वारादि सबधी तोरणोमा, घणु शु कहेवु, पण बधा द्वीपो अने समुद्रोमा, ए बधा स्थळे पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोना स्थानो में तेमज बीजा तीर्थंकरोए कहेलां छे 'उववाएण' इत्यादि उपपात-उत्पत्ति, पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोना जे हमणा ज स्थानो कह्या ते स्थानप्राप्तिने अभिमुख होय पण उत्पत्ति स्थानने प्राप्त थएला न होय ए भावार्थ छे ते उपपातने आश्रयी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको चौद रज्जुप्रमाण आ लोकना असख्यातमा भागमा रहे छे अहिं कोइ आचार्यो आ सूत्रनी एवी व्याख्या करे छे—ऋजुसूत्र नय विचित्र छे, तेथी ज्यारे स्थूल ऋजुसूत्र नयनी दृष्टिथी पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोनो विचार करीए त्यारे तेओ उत्पत्ति स्थाने आवी आहारादि पर्याप्तिओ पूर्ण करी विशिष्ट विपाकथी पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकनु आयुष अनुभवे छे ते ज ग्रहण करवा, परन्तु अन्तराल गतिमा वर्तता होय ते न लेवा कारण के तेओ ते वखते विशिष्ट विपाकयुक्त आयुषनो अनुभव करता नथी माटे तेओनु स्वस्थान रत्नप्रभा वगेरे बधा मळीने पण लोकनो असख्यातमो भाग थाय छे माटे उपपातने आश्रयी पण लोकनो असख्यातमो भाग जाणवो" बीजा आचार्य आ प्रमाणे कहे छे—"पर्याप्ता बादरपृथिवीकायिको बीजा बधाथी थोडा छे, तेथी अन्तराल गतिमा वर्तता होय तेने पण ग्रहण करता तेओ लोकना असख्यातमा भागमा रहे छे माटे एमा कोइ पण दोष नथी तथा समुद्घातने आश्रयी पण लोकना असख्यातमा भागमा वर्ते छे एम सूत्रकार कहेशे एम नहि मानो तो समुद्घातनी अवस्थामा स्वस्थान सिवाय बीजा क्षेत्रमा रहेवानो संभव होवाथी समुद्घातने आश्रयी लोकनो असख्यातमो भाग घटी शकशे नही" अहीं तत्त्व शु छे ते केवलज्ञानी के विशिष्ट श्रुतज्ञानी गम्य छे

तात्पर्य ए छे के पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिको थोडा छे अने तेथी तेओ अपान्तराल गतिमा वर्तता होय तेने पण ग्रहण करता उपपातने आश्रयी लोकना असख्यातमा भागमा रहे छे, जो घणा होय तो समुद्घातने आश्रयी बीजा क्षेत्रमा रहेवानो संभव होवाथी सूत्रोक्त लोकनो असख्यातमो भाग घटी शकशे नहि माटे उपपातने आश्रयी अपान्तराल गतिमा वर्तता होय तेने पण ग्रहण करवा

प्रतीति करावया माटे विवक्षित अर्थ पूछे छे. (२) अथवा प्रायः सूत्रोनी रचना सर्वत्र गणधरना प्रश्न अने तीर्थंकरना उत्तररूप छे, माटे भगवान् आर्यश्यामाचार्य पण ए प्रमाणे प्रश्न अने उत्तररूप सूत्रनी रचना करे छे. (३) अथवा गणधर गौतमस्वामीने छद्मस्थ होवाथी अनाभोग (अनुपयोग) नो संभव छे. कह्युं छे के "अहीं कोई छद्मस्थने अनाभोग न होय एम नथी, केमके तेने ज्ञानने आवरवाना स्वभाववाळुं ज्ञानावरणीय कर्म होय छे." माटे गौतमस्वामीने संशय उत्पन्न थयो होवाथी पूछे छे, तेथी कोइपण प्रकारनो दोष-विरोध नथी. 'गौतम' ए लोकप्रसिद्ध महाविशिष्ट गोत्रनो प्रतिपादक आमन्त्रण शब्द छे. 'हे गौतमगोत्रवाळा' ए तेनो भावार्थ छे. स्वस्थानने आश्रयी, ज्यां पर्याप्त बादर पृथिवीकायिको रहे छे, अने ज्यां रहीने तेनो वर्णादिना विभाग वडे व्यवहार करी शकाय छे एटले अमुक वर्णादिवाळा छे एम कही शकाय छे ते स्वस्थान कहेवाय छे. स्वस्थाननु ग्रहण उपपात अने समुद्घातना स्थाननुं जुदापणुं बताववा माटे छे, तेथी स्वस्थानने आश्रयी आठे पृथिवीओमां बधे य पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोना स्थानो छे. ते आठे पृथिवीओना नामनो उच्चार करीने कहे छे-'तं जहा' इत्यादि. रत्नप्रभामां अने यावत् आठमी इषत्प्राग्भारा—सिद्धशिला पृथिवीमां तथा अधोलोकमां वडवामुख वगेरे पातालकलशोमां, भवनपतिनिकायना आवासरूप भवनोमां, भवननी भूमिरूप भवनप्रस्तटोमां, अहीं भवनना ग्रहणथी केवळ भवनोनुं ग्रहण करवुं, अने भवनोना प्रस्तटोना ग्रहणथी भवनोनी वच्चे रहेली भूमिकानुं ग्रहण करवुं तथा नरकोमां एटले छुटा छुटा नरकावासोमां, नरकावलीओमां-आवलीकाबद्ध नरकावासोमां, नरकनी भूमीरूप नरक प्रस्तटोमां, अहीं पण नरक अने नरकावलीना ग्रहणथी केवळ नरकावासोनुं ज ग्रहण करवुं अने नरक प्रस्तटना ग्रहणथी नरकनी वच्चे रहेली भूमिका ग्रहण करवी. उर्ध्वलोकमां कल्पोमां-सौधर्मादि बार देवलोकोमां, विमानोमां—छुटा छुटा ग्रैवेयक संबंधी विमानोमां, विमानावलिकाओमां-आवलिकाबद्ध ग्रैवेयकादि विमानोमां, विमाननी भूमिकारूप विमानना प्रस्तटोमां, अहीं पण प्रस्तटनुं ग्रहण विमाननी वच्चेना भागमां यथासंभव रहेवावाळा पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोना स्थानना ग्रहण माटे छे. तेमज तीरछा लोकमां टंकोमां-टुंकोमां, छिन्न टंकोमां, सिद्धायतन प्रमुख कूटोमां, शैलोमां-शिखररहित पर्वतोमां, शिखरीओमां-शिखरयुक्त पर्वतोमां, प्राग्भारोमां-कइंक नीचा

कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए टंकेसु, कूडेसु, सेलेसु, सिहरीसु, पब्भारेसु, विजएसु, वक्खारेसु, वासेसु, वासहरपव्वएसु, वेलासु, वेइयासु, दारेसु, तोरणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, एत्थ णं बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे।

नरकावलिकाओ अने नरकप्रस्तटोमां होय छे. उर्ध्वलोकमां कल्पो, विमानो, विमानावलिकाओ अने विमानप्रस्तटोमां होय छे. तिर्यग्लोकमां टंको, कूटो, शैलो-पर्वतो, शिखरी-शिखरयुक्त पर्वतो, प्राग्भारो-कइक नीचा पर्वतो, विजयो, वक्षस्कारो, वर्षक्षेत्रो, वर्षधर पर्वतो, वेलाओ, वेदिकाओ, द्वारो, तोरणो, द्वीपो अने समुद्रोमां, अहीं पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो कहेलां छे. तेओ उपपात-उत्पत्तिने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे, समुद्घातनी अपेक्षाए लोकना असंख्यातमा भागमां अने स्वस्थानने आश्रयी लोकना असंख्यातमा भागमां होय छे.

उत्पन्न थाय छे, कथंचित् नाश पामे छे अने कथंचित् ध्रुव-नित्य छे) ए मातृकापद—वर्णाक्षरोना मात्र श्रवणथी जेमने अत्यन्त श्रुतज्ञानावरण कर्मनो क्षयोपशम थयो छे तथा, चौद पूर्वने धारण करनारा अने सर्वाक्षरोना सन्निपात—संयोग ने जाणनारा छे, तेथी विवक्षित पूछवा योग्य अर्थना ज्ञानसहित छे, तो शा माटे पूछे छे? केमके चतुर्दश पूर्वधर अने सर्वोत्कृष्ट श्रुतलब्धिवाळाने प्रज्ञापनीय-कहेवा योग्य कोईपण वस्तु अविदित नथी कह्यु छे के—"जो पर पूछे तो (विशिष्ट ज्ञानी छद्मस्थ) असंख्य भवोने पण कहे, परन्तु सातिशय विशिष्ट ज्ञान रहित छद्मस्थ तेने जाणतो नथी" तो विशिष्ट श्रुतज्ञानी भगवान् गौतम शा माटे प्रश्न करे छे? (उ०) तमारुं कथन बरोबर छे, (१) परन्तु केवळ जाणवा छतां भगवान् गौतम स्वामी पूर्वे अन्य समये शिष्योने कहेल अर्थनी फरीथी तेने

बीयं ठाणपयं ।

१. कहि णं भंते ? बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्टाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा–रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, ईसीप्पब्भाराए; अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, निरएसु, निरयावलियासु, निरयपत्थडेसु; उड्ढलोए

२ स्थानपद.

१. हे भगवन् ! पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोना स्थानो क्यां कह्यां छे ? हे गौतम ! स्वस्थानने–पोताने रहेवाना स्थानने आश्रयी आठे पृथिवीओमां होय छे. ते आ प्रमाणे— १ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालुकाप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६ तमःप्रभा, ७ तमःतमःप्रभा अने ८ इषत्प्राग्भारा–सिद्धशिलामां छे, अधोलोकमां पातालकलशो, भवनो, भवनप्रस्तटो, नरको,

२ स्थानपद.

१ एम प्रथम पदनी व्याख्या करी, हवे बीजा पदनो प्रारंभ करीए छीए. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. प्रथम पदमां पृथिवीकायादिक जीवोनी प्ररूपणा करी अने अहीं तेओना स्थानादिनी प्ररूपणा करे छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे. 'भदन्त' ए परम गुरु तीर्थंकरनुं संबोधन छे. 'हे भदन्त ! पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोना स्वस्थान वगेरे क्यां कहेलां छे' ? एम गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो एटले भगवान् वर्धमान स्वामी 'हे गौतम' एम गौतम स्वामीने संबोधी उत्तर आपे छे—'सट्ठाणेणं' इत्यादि. जेनुं कुशलनुं मूळ उपचित–वृद्धि पाम्युं छे एवा भगवान गौतम पण गणधर छे अने तीर्थंकरे कहेला "उप्पन्ने वा विगमे वा धुवे वा" (कथंचित्

यक्षो तेर प्रकारना छे जेमके—१ पूर्णभद्र, २ मणिभद्र, ३ श्वेतभद्र, ४ हरितभद्र, ५ सुमनोभद्र, ६ व्यतिपातिकभद्र, ७ सुभद्र, ८ सर्वतोभद्र, ९ मनुष्ययक्ष, १० वनाधिपति, ११ वनाहार, १२ रूपयक्ष, अने १३ यक्षोत्तम राक्षसो सात प्रकारना छे जेमके—१ भीम, २ महाभीम, ३ विघ्न, ४ विनायक, ५ जलराक्षस, ६ राक्षसराक्षस, अने ७ ब्रह्मराक्षस भूतो नव प्रकारना छे जेमके—१ सुरूप, २ प्रतिरूप, ३ अतिरूप, ४ भूतोत्तम, ५ स्कन्द, ६ महास्कन्द, ७ महावेग, ८ प्रतिच्छन्न, अने ९ आकाशग पिशाचो सोळ प्रकारना छे जेमके—१ कूष्माण्ड, २ पटक, ३ [1]सुजोषा, ४ आह्निक, ५ काल, ६ महाकाल, ७ चोक्ष, ८ अचोक्ष, ९ तालपिशाच, १० मुखरपिशाच, ११ अधस्तारक, १२ देह, १३ विदेह, १४ महाविदेह १५ तूष्णीक अने १६ वनपिशाच

'कल्पोपगा कल्पातीताः' इति कल्प—आचार, ते अहीं इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशादिना व्यवहाररूप जाणवो ते आचारने उपग—प्राप्त थयेला ते कल्पोपग कहेवाय छे ते सौधर्म, ईशानादि देवलोकनिवासी जाणवा यथोक्त आचार रूप कल्पने अतीत–अतिक्रान्त थयेला ते कल्पातीत ते अधस्तन अधस्तन ग्रैवेयकादि जाणवा ते बधा अहमिन्द्रो होवाथी कल्पातीत कहेवाय छे हवे कल्पोपग देवो बतावे छे—'सौधर्मा ईशाना' इत्यादि सौधर्म देवलोकनिवासी सौधर्म देवो, ईशान देवलोकनिवासी ईशान देवो कहेवाय छे ए प्रमाणे बधे ए विचार करवो केमके 'तात्स्थ्यात् तद्व्यपदेश' तेने विषे रहेवाथी तेनो व्यवहार थाय छे, जेमके पंचालदेश निवासी 'पंचाल' कहेवाय छे

आचार्यश्रीमलयगिरिविरचित प्रज्ञापनाटीकामां प्रथम प्रज्ञापना पदनो अनुवाद समाप्त

१ 'जापा' इति पा.

सिद्धा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्तं अणुत्तरोववाइआ। सेत्तं कप्पाईया। सेत्तं वेमाणिआ। सेत्तं देवा। सेत्तं पंचिंदिया। सेत्तसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं जीवपन्नवणा। सेत्तं पन्नवणा।

पन्नवणाए भगवईए पढमपयं सम्मत्तं।

पपातिक देवो पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ विजय, २ वैजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित अने ५ सर्वार्थसिद्ध. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम अनुत्तरोपपातिक देवो कह्या. ए प्रमाणे कल्पातीत देवो, वैमानिक देवो, अने पंचेन्द्रियो कह्या. अने एम संसारी जीवप्रज्ञापना, जीवप्रज्ञापना अने प्रज्ञापना कही.

भगवती प्रज्ञापनाना अनुवादमां प्रथम पद समाप्त.

प्रायथी विशिष्ट अने विशिष्टतर उत्तर वैक्रिय करवावाळा, कुमारनी पेठे उत्कृत रूप, वेष, भाषा, आभरण, शस्त्र, वस्त्र, शिबिकादि यान अने वाहन जेओने छे एवा, उत्कट रागवाळा, अने क्रीडामां तत्पर होय छे माटे कुमारना जेवा होवाथी तेओ कुमार कहेवाय छे. 'किनरो' इत्यादि. किन्नरो दस प्रकारना छे—१ किन्नर, २ किंपुरुष, ३ किंपुरुषोत्तम, ४ किन्नरोत्तम, ५ हृदयंगम, ६ रूपशाली, ७ अनिन्दित, ८ मनोरम, ९ रतिप्रिय, अने १० रतिश्रेष्ट. किंपुरुषो दस प्रकारना छे,—१ पुरुष, २ सत्पुरुष, ३ महापुरुष, ४ पुरुषवृषभ, ५ पुरुषोत्तम, ६ अतिपुरुष, ७ महादेव, ८ मरुत, ९ मेरुप्रभ अने १० यशस्वान्. महोरग दस प्रकारना छे. जेमके—१ भुजंग, २ भोगशाली, ३ महाकाय, ४ अतिकाय, ५ स्कन्धशाली, ६ मनोरम, ७ महावेग, ८ महायक्ष, ९ मेरुकान्त अने १० भास्वान्. गन्धर्वो बार प्रकारना छे, जेमके—१ हाहा, २ हूहू, ३ तुंबरु, ४ नारद, ५ ऋषिवादिक, ६ भूतवादिक, ७ कादंब, ८ महाकादंब, ९ रैवत, १० विश्वावसु, ११ गीतरति अने गीतयश.

महिट्ठिमगेविज्जगा, हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा, हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगा, मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जगा, मज्झिममज्झिम गेविज्जगा, मज्झिमउवरिमगेविज्जगा, उवरिमहेट्ठिमगेविज्जगा, उवरिममज्झिमगेविज्जगा, उवरिमउवरिमगेविज्जगा । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । सेत्त गेविज्जगा। से किं तं अणुत्तरोववाइया ? अणुत्तरोववाइया पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—विजया, वेजयन्ता, जयन्ता, अपराजिता, सव्वट्ठ-

---

कल्पातीत देवो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—ग्रैवेयक अने अनुत्तरोपपातिक. ग्रैवेयक देवो केटला प्रकारना छे ? ते नव प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ नीचेनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयको, २ नीचेनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयको, ३ नीचेनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयको, ४-मध्यम त्रिकना नीचेना ग्रैवेयको, ५ मध्यम त्रिकना मध्यम ग्रैवेयको, ६ मध्यम त्रिकना उपरना ग्रैवेयको, ७ उपरनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयको, ८ उपरनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयको, ९ उपरनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयको. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम ग्रैवेयक देवो कह्या. अनुत्तरोपपातिक देवो केटला प्रकारना कह्या छे ? अनुत्तरो-

---

"जे 'द्योतयन्ति' प्रकाशित करे ते ज्योतिष्-विमानो, तेमा उत्पन्न थयेला ज्योतिष्को अथवा ज्योतिष्-देवो, अने तेज ज्योतिष्को अहीं स्वार्थमां 'क' प्रत्यय थयो छे मुकुटना जेवा, मस्तक उपरना मुकुटमां रहेला, पोत पोतना चिह्नरूप उज्ज्वल प्रभामंडल समान सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र अने ताराना मंडल वडे. सुशोभितकान्तिवाळा ज्योतिष्क देवो होय छे" 'विविध मान्यन्ते' पुण्यवाळा जीवो वडे जेमो विविध रीते उपभोग कराय ते विमानो, तेमां उत्पन्न थयेला ते वैमानिको. हवे ए देवोना अनुक्रमे भेदो कहे छे—भवनवासी देवो केटला प्रकारना छे' इत्यादि असुरकुमार, नागकुमार वगेरे भवनवासी जाणवा शा माटे तेओ कुमार कहेवाय छे ? कुमारनी पेठे चेष्टा करे छे माटे कुमार कहेवाय छे ते आ प्रमाणे कुमारनी पेठे सुकुमार, मृदु मधुर अने सुंदर गतिवाळा, शृंगारना अभि-

य। से किं तं कप्पोवगा? कप्पोवगा बारसविहा पन्नत्ता। तंजहा—सोहम्मा, ईसाणा, सणंकुमारा, माहिंदा, बंभलोया, लंतगा, महासुक्का, सहस्सारा, आणया, पाणया, आरणा, अच्चुया। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं कप्पोवगा। से किं तं कप्पाईया? कप्पाईया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—गेविज्जगा य अणुत्तरोववाइया य। से किं तं गेविज्जगा? गेविज्जगा नवविहा पन्नत्ता। तंजहा—हिट्टि

वैमानिक देवो केटला प्रकारना छे? वैमानिक देवो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—कल्पोपग अथवा कल्पोपपन्न अने कल्पातीत. कल्पोपग देवो केटला प्रकारना छे? कल्पोपग देवो बार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे १ सौधर्म, २ ईशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लांतक, ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार, ९ आनत, १० प्राणत, ११ आरण अने १२ अच्युत. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम कल्पोपग देवो कह्या. कल्पातीत देवो केटला प्रकारना छे?

तेओनुं अन्तर नथी. अथवा 'विविधमन्तरमाश्रयरूपं येषां ते व्यन्तराः' पर्वतनी अंदर, गुफानी अंदर के वननी अंदर विविध प्रकारना आश्रयरूप अन्तर जेओने छे ते व्यन्तर. प्राकृत होवाथी 'वाणमन्तर' एवो सूत्रमां पाठ छे. अथवा 'वानमन्तर' ए पदनो संस्कार करवो. तेनी आ प्रमाणे व्युत्पत्ति थाय छे,—'वनानामन्तराणि वनान्तराणि, तेषु भवा वानमन्तराः' वनना अन्तरोमां रहेला वानमन्तरो कहेवाय छे. पृषोदरादिमां होवाथी वन्ने पदनी वच्चे मकार आवेलो छे. द्योतयन्ति—जे जगतने प्रकाशित करे ते ज्योतिष्-विमानो, तेमां उत्पन्न थयेला ज्योतिष्को कहेवाय छे. अथवा मस्तक उपरना मुकुटमां प्रकाशना मंडलना समान सूर्यादि मडल वडे 'द्योतयन्ति' प्रकाशित करे ते ज्योतिष्—सूर्यादि देवो कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—सूर्यने मुकुटना अग्रभागमां सूर्याकार, चन्द्रने चन्द्राकार, ग्रहने ग्रहाकार अने ताराने ताराना आकारनुं चिह्न छे, अने ते वडे प्रकाशित करे छे तत्त्वार्थ भाष्यकार कहे छे के—

पन्नत्ता। तंजहा—किन्नरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, जक्खा, रक्खसा, भूया, पिसाचा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्तं वाणमन्तरा। से किं तं जोइसिया? जोइसिया पंचविहा पन्नत्ता। तंजहा—चंदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, तारा,। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्तं जोइसिया॥ से किं तं वेमाणिआ? वेमाणिआ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—कप्पोवगा य कप्पाईया

प्रकारना छे? वानमंतर देवो आठ प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ किन्नर, २ किंपुरुष, ३ महोरग, ४ गांधर्व, ५ यक्ष, ६ राक्षस, ७ भूत अने ८ पिशाच. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम वानव्यंतर देवो कह्या. ज्योतिषिक देवो केटला प्रकारना कह्या छे? ज्योतिषिको पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ चन्द्र २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र अने ५ तारा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम ज्योतिषिक देवो कह्या.

आवासो शरीरना प्रमाणवाळा, मोटा मंडपवाळा अने विविध प्रकारना मणि अने रत्नना दीवा वडे दिशाओना समुदायने प्रकाशित करनारा छे व्यन्तर—अन्तर-अवकाश, ते जहीं आश्रयरूप जाणवो विविध प्रकारना वन नगर अने आवास रूप अन्तर-आश्रय जेओने छे ते व्यन्तर कहेवाय छे तेमा रत्नप्रभा पृथिवीना पहेला रत्नकांडने विषे उपर अने नीचे सो सो योजन छोडीने बाकीना आठसो योजन प्रमाण मध्य भागमा भवनो होय छे अने नगरो तिर्यग् लोकमा होय छे जेमके तिर्यग्लोकमा जंबूद्वीपना द्वारना अधिपति विजय देवनी बीजा जंबूद्वीपमां बार हजार योजन प्रमाण नगरी छे अने आवासो त्रणे लोकमा होय छे जेमके ऊर्ध्व लोकने विषे पंडक वनादिमा आवासो होय छे अथवा 'विगतमन्तरं मनुष्येभ्यो येषां ते व्यन्तराः' जेओनु मनुष्योथी अन्तर गयु छे ते व्यन्तरो कहेवाय छे ते आ प्रमाणे—केटलाक व्यन्तरो चक्रवर्ती-वासुदेव प्रमुख मनुष्योनी चाकरनी पेठे सेवा करे छे माटे मनुष्योथी

७८. से किं तं देवा ? देवा चउव्विहा पन्नत्ता । तंजहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिआ, वेमाणिआ। से किं तं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पन्नत्ता । तंजहा—असुरकुमारा, नागकुमारा, सुवन्नकुमारा, विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसाकुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमारा । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । सेत्तं भवणवासी । से किं तं वाणमंतरा ? वाणमंतरा अट्ठविहा

---

७८. देवो केटला प्रकारना छे ? देवो चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ भवनवासी, २ वानमंतर, ३ ज्योतिषिक अने ४ वैमानिक. भवनवासी देवो केटला प्रकारना छे ? भवनवासी देवो दस प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिशाकुमार, ९ वायुकुमार अने १० स्तनितकुमार. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम भवनवासी देवो कह्या. वानमंतर देवो केटला

लिक यथाख्यात सयोगी अने अयोगी केवली गुणस्थानके होय छे. 'सेत्तं' इत्यादि उपसंहारना समूहनुं प्रतिपादक सूत्र सुगम छे. एम मनुष्यो कह्या.

७८. हवे देवोनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—देवो केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे—देवो चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ भवनवासी, २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिक. तेमां जेओ भवनमां वसवाना स्वभाववाळा छे तेओ भवनवासी कहेवाय छे. आ व्युत्पत्ति बहुधा नागकुमारादि देवोनी अपेक्षाए जाणवी. कारण के ते देवो प्रायः भवनोमां वसे छे अने कदाचित् आवासोमां पण वसे छे. अने असुरकुमारो विशेषतः आवासोमां वसे छे अने कदाचित् भवनोमां वसे छे. प्र०-भवन अने आवासमां शो भेद छे ? उ०-भवनो बहारना भागमां गोळ छे, अंदर चार खुणावाळां छे अने नीचेना भागमां कमळनी कर्णिकाना जेवां छे.

णसुहुमसंपरायचरित्तारिया य विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया य। सेतं सुहुमसंपरायचरित्तारिया। से किं तं अहक्खायचरित्तारिया ? अहक्खायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—छउमत्थअहक्खायचरित्तारिया य केवलिअहक्खायचरित्तारिया य। सेत्तं अहक्खायचरित्तारिया। सेत्तं चरित्तारिया। सेत्तं अणिड्डिपत्तारिया। सेत्तं कम्मभूमगा। सेत्तं गब्भवक्कंतिआ। सेत्तं मणुस्सा।

सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो अने विशुद्धयमान सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो. एम सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो कह्या.

यथाख्यात चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? यथाख्यात चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—छद्मस्थ यथाख्यात चारित्रार्यो अने केवली यथाख्यात चारित्रार्यो. एम यथाख्यात चारित्रार्यो कह्या. एम चारित्रार्यो, अनृद्धिप्राप्त—ऋद्धिने नहि प्राप्त थयेला आर्यो, कर्मभूमिना मनुष्यो, गर्भज मनुष्यो अने मनुष्यो कह्या.

तेथा क्षपकश्रेणि के उपशमश्रेणि उपर चढनारने विशुद्धयमानक सूक्ष्मसंपराय चारित्र होय छे अने उपशमश्रेणिथी पडनारने संक्लिश्यमानक सूक्ष्मसंपराय चारित्र होय छे

यथाख्यात—अथशब्द यथार्थ अर्थमां छे अने आ अभिविधि-मर्यादा अर्थनो सूचक छे एटले यथार्थपणे मर्यादापूर्वक ख्यात-कथित-कहेलु कषायोदयरहित चारित्र ते अथाख्यात य सबवे कहु छे के—'अथ' यथार्थपणे 'आ' अभिविधि-मर्यादा वडे ख्यात-कहेलु कषायोदय रहित चारित्र ते अथाख्यात चारित्र कहेवाय छे" तेनु 'यथाख्यात' एवु बीजु नाम पण छे तेनो अन्वर्थ-व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे-यथा-जेम सर्व लोकमां ख्यात-प्रसिद्ध छे तेवा प्रकारनु जे कषायोदय रहित चारित्र ते यथाख्यात ते चारित्र बे प्रकारनु छे—छाद्मस्थिक अने कैवलिक छाद्मस्थिक यथाख्यात चारित्र उपशान्तमोह गुणस्थानके होय छे अने क्षय

से किं तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? सुहुमसंपरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—संकिलिस्समा-

सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—संक्लिश्यमान

(१९–२०) भिक्षाद्वार (अने पन्थद्वार)—भिक्षा अने विहारनो क्रम त्रीजी पौरुषीमां-त्रीजा पहोरमां होय छे. बाकीनी पौरुषीमां कायोत्सर्ग होय छे. निद्रा पण तेने अल्प होय छे. जो कोइ पण रीते एमनुं जंघाबल (चालवानुं बळ) क्षीण थयुं होय तो विहार नहि करवा छतां पण महाभाग्यशाली एवा ते अपवाद सेवता नथी. परन्तु तेज स्थळे रही कल्प प्रमाणे संयमयोग साधे छे. कह्युं छे के—"त्रीजी पौरुषीमां तेओनो भिक्षाकाल अने विहारकाळ होय छे अने बाकीनी पौरुषीमां प्रायः कायोत्सर्ग होय छे. निद्रा पण अल्प होय छे. जंघाबल क्षीण थवाथी विहार नहि करता एवा ते महाभाग्यशाली अपवाद सेवता नथी, परन्तु त्यांज रही कल्पनी विधि प्रमाणे संयमयोग साधे छे."

आ परिहारविशुद्धिक बे प्रकारना छे—इत्वर अने यावत्कथिक. तेमां जेओ कल्प समाप्त थया पछी तुरतज तेज कल्प के गच्छने प्राप्त थवाना छे ते इत्वर. जेओ कल्पनी समाप्ति थया पछी तुरतज जिनकल्पने अंगीकार करवाना छे ते यावत्कथिक जाणवा. कह्युं छे के—"इत्वर स्थविरकल्पमां अने यावत्कथिक जिनकल्पमां जाणवा," अहीं स्थविरकल्पनुं ग्रहण (अन्य कल्पनुं) उपलक्षण (बोधक) छे, तेथी पोताना कल्पने विशे रहेनारा पण इत्वर जाणवा. तेमां इत्वर परिहारविशुद्धिकने कल्पना प्रभावथी देव, मनुष्य अने तिर्यंच कृत उपसर्गो, तरत घात करनारा रोगो अने अत्यंत असह्य वेदनाओ पेदा थती नथी. पण यावत्कथिकने संभवे पण खरी. केमके तेओ जिनकल्पने अंगीकार करवानी इच्छावाळा जिनकल्पभावने अनुसरे छे. अने जिनकल्पिकने उपसर्गादि संभवे छे. कह्युं छे के—"इत्वरिकने उपसर्गो, रोगो अने वेदनाओ होती नथी, अने यावत्कथिकने विकल्पे संभवे छे."

ज्यां सूक्ष्म—लोभांशना अवशेषरूप संपराय-कषायोदय छे ते सूक्ष्मसंपराय. ते बे प्रकारे छे—विशुद्धयमानक अने संक्लिश्यमानक.

रहित होय छे, अने तेनु पालन करवुं पण पने विशुद्धितु स्थानक छे "

(१४) प्रव्रज्याद्वार—परिहारविशुद्धि चारित्रवाळो पवा प्रकारनी कल्पनी मर्यादा होवाथी कोइने दीक्षा आपतो नथी कह्यु छे के—"कल्पनी स्थिति समजीने ते कोइने प्रव्रज्या आपतो नथी, कारण के कल्पनी तेवी मर्यादा छे " परन्तु यथाशक्ति उपदेश आपे छे

(१५) मुंडापनद्वार—परिहारविशुद्धि चारित्रवाळो कोइने मुंडतो नथी प्रव्रज्या ग्रहण कर्या पछी अवश्य मुंडन होय छे, तेथी प्रव्रज्याना ग्रहण वडे मुंडनलु ग्रहण थाय छे तो शा माटे जुदु द्वार कह्यु ? उपरनो प्रश्न अयुक्त छे प्रव्रज्या द्वारमा अवश्य मुंडन होय तेम समर्पित नथी, कारण के अयोग्यने कोइ पण रीते प्रव्रज्या-दीक्षा आपी होय, छतां पण अयोग्यतानु ज्ञान थाय तो तेने मुंडननो समय नथी, माटे जुदु द्वार कह्यु छे

(१६) प्रायश्चित्तविधिद्वार—मनथी पण सूक्ष्म अतिचार लाग्यो होय तो तेने चतुर्गुरुक (आयपील) प्रायश्चित्त होय छे कारण के के आ कल्प एकाग्रता-प्रधान छे अने तेना भंगमा मोटो दोष लागे छे

(१७) कारणद्वार—कारण-आलंबन, ते विशुद्ध ज्ञानादि जाणवा ते आ परिहारविशुद्धिकने होता नथी, जेथी तेने आश्रयी अपवाद सेववो पडे परन्तु आ महात्मा सर्वत्र निरपेक्ष थइने क्लिष्ट कर्मना क्षय निमित्ते पारंभेला पोताना कल्पने यथोक्त विधिथी समाप्त करे छे कह्यु छे के—"कारण एटले आलंबन, ते सुपरिशुद्ध ज्ञानादि जाणवा, ते आलंबन तेने उचित नथी, कारण के ते बहुधा तपरूप साधन-आलंबनवाळो छे आ महात्मा सर्वत्र निरपेक्ष थइने क्लिष्ट कर्मना क्षय निमित्ते आरंभेल कल्पने दृढतापूर्वक समाप्त करे छे

(१८) निष्प्रतिकर्मताद्वार—शरीरना संस्कार रहित आ महात्मा अक्षिमलादिकने पण कदाचित् दूर करता नथी तेमज प्राणान्त कष्ट आवी पडे तो पण बीजु अपवाद पद सेववा नथी कह्यु छे के—"हमेशा शरीरना संस्कार रहित ते आंखना मेल वगेरेने पण दूर करता नथी, प्राणान्तिक महाकष्ट आवी पडे तो पण बीजा पदमा वर्तता नथी अल्पदोष अने बहुदोषनी विचारणाना विषयथी रहित होय छे अथवा शुभ भावथी पण पने बधु छे "

उत्कर्षथी सैंकडो गणरूप होय छे. पुरुषनी गणनावडे जघन्यथी आ कल्पनो स्वीकार करनार सत्यावीश अने उत्कृष्ट [1]हजार पुरुषो होय छे. अने पूर्वप्रतिपन्न जघन्यथी सैंकडो अने उत्कर्षथी हजारो होय छे. कह्युं छे के—"जघन्यथी त्रण गण अने उत्कषथी सो गण आ कल्पनो स्वीकार करे छे. अने पूर्वप्रतिपन्न तो उत्कृष्ट अने जघन्यथी सैंकडो गण होय छे. जघन्यथी सत्यावीश अने उत्कृष्टथी हजार अने पूर्वप्रतिपन्न तो जघन्यथी सैंकडो उत्कर्षथी हजारो होय छे." वळी ज्यारे पूर्वप्रतिपन्न कल्पथी कोई एक नीकळी जाय अने अन्य प्रवेश करे त्यारे आ कल्पनी प्रतिपत्तिमां-स्वीकार करवामां एक न्यून थयो तेने उमेरतां कोई वखते एक पण होय के पृथक्त्व-घणा पण होय छे. पूर्वप्रतिपन्न पण ए प्रमाणे विकल्पथी एक होय के पृथक्त्व-घणा होय. कह्युं छे के—"एक न्यून थयो तेने उमेरतां प्रतिपद्यमान (स्वीकार करनार) गणनाए विकल्पे एक पण होय. [अने घणा होय.] तथा पूर्वप्रतिपन्न विकल्पे एक होय के पृथक्त्व-घणा होय."

(१३) अभिग्रहद्वार—अभिग्रहो चार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ द्रव्याभिग्रह, २ क्षेत्राभिग्रह, ३ कालाभिग्रह, अने ४ भावाभिग्रह. आ अभिग्रहो संबन्धे अन्यत्र चर्चा करी छे माटे फरी अहीं तेनी चर्चा करता नथी. तेमां परिहारविशुद्धिकने आ अभिग्रहो होता नथी, कारण के तेनो कल्पज उक्त स्वरूपना अभिग्रहरूप छे. कह्युं छे के—"विचित्र स्वरूपवाळा कोइ पण द्रव्यादि अभिग्रहो एने होता नथी. केमके एनो जीतकल्प ज कल्पने उचित अभिग्रहरूप छे. आ कल्पने विशे गोचरी वगेरे आचारो नियत अने अवश्य अपवाद

१ गणनाद्वारमां प्रतिपद्यमान जघन्यथी त्रण गण अने उत्कृष्ट सो गण कह्या अने पुरुषगणनामां जघन्यथी सत्यावीश अने उत्कृष्ट हजार कह्या छे. तो जघन्य त्रण गण होवाथी सत्यावीश संख्या घटे छे, पण उत्कृष्ट सो गण होवाथी पुरुषगणनामां नवसो थाय छे, पण हजार संख्या घटी शकती नथी. परिहारविशुद्धिकने रोगादिनो संभव छे, तेथी कदाच वैयावच्च करनारामांथी कोइ एक रोगादि कारणे वैयावच्च करवा असमर्थ होय अने तेना बदले अन्य प्रवेश करे, अने ए रीते सो गणमां एक एक वधारता सो वधे. अथवा वधा मळीने पण सो संख्या वधे तो ए रीते हजार संख्या थाय, परन्तु आ कल्पनानुं साधक प्रमाण हजी कोइ मळ्युं नथी. तत्त्व केवलिगम्य.

९ मासकल्प अने १० पर्युषणाकल्प चार अवस्थित कल्प आ प्रकारे छे-१ शय्यातरपिंड, २ चातुर्याम-चार महाव्रत, ३ पुरुषज्येष्ठ, ४ कृतिकर्मकरण-ए चार अवस्थित कल्पो छे "

(९) लिंगद्वार-आ चारित्र द्रव्यलिंग अने भावलिंग-ए बन्ने प्रकारना लिंगने विषे होय छे कारण के बन्ने प्रकारना लिंगमाथी एक पण लिंग सिवाय परिहारविशुद्धि कल्पने योग्य सामाचारीनो असभव छे

(१०) लेश्याद्वार-तेजोलेश्या प्रमुख पछीनी त्रण विशुद्ध लेश्यामां परिहारविशुद्धिक कल्पनो स्वीकार करे छे पूर्वप्रतिपन्न-परिहार विशुद्धिने पूर्वे प्राप्त थयेलो तो सर्व लेश्याओमां कथञ्चित् वर्ततो होय छे तेमा पण अत्यत संक्लिष्ट एवी बीजी अविशुद्ध लेश्यामा रहेतो नथी तेवी लेश्यामा रहे तो पण ते लावा काळ सुधी रहेतो नथी, परन्तु थोडो काळ रहे छे कारण के ते पोताना सामर्थ्यथी जलदी तेथी निवृत्त थाय छे प्र०-तो प्रथमथीज ते अशुद्ध लेश्याओमा केम प्रवर्ते छे? उ०-कर्मने वशवर्ती होवाथी प्रवर्ते छे कह्यु छे के-"विशुद्ध एवी त्रण लेश्यामा ते कल्पनो स्वीकार करे छे पण बाकीनी अविशुद्ध लेश्याओमा स्वीकार करतो नथी पूर्वप्रतिपन्न-ते कल्पने पूर्वे प्राप्त थयेलो तो सर्व लेश्याओमा कथञ्चित् होय छे अत्यत संक्लिष्ट एवी अविशुद्ध लेश्यामा प्रवर्ततो नथी, अविशुद्ध लेश्याओमा प्रवृत्ति करे तो थोडा काळ सुधी करे छे, कारण के कर्मोनी गति विचित्र छे तोपण वीर्य-सामर्थ्य फळ आपे छे"

(११) ध्यानद्वार—वृद्धि पामता धर्मध्यान वडे परिहार विशुद्धिक कल्पनो स्वीकार करे छे अने पूर्वप्रतिपन्न-पूर्वे ते कल्पने प्राप्त थयेलो तो आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमा पण होय छे परन्तु ते प्राय ध्यान निरनुबन्ध-परपरा रहित होय छे कह्यु छे के—"ध्यानमा -वृद्धि पामता धर्मध्यान वडे ते कल्पनो स्वीकार करे छे, पूर्वप्रतिपन्न तो इतर ध्यानमा होय तो तेनो प्रतिषेध नथी ए प्रमाणे उत्कट ध्यानयोग छता तीव्र कर्मना परिणामथी रौद्र अने आर्त ध्यानमा पण एनो सद्भाव छे, परन्तु प्राय ते दुर्ध्यानना अनुबन्ध-परपरा रहित होय छे "

(१२) गणनाद्वार—जघन्यथी त्रण गणो अने उत्कर्षथी सो गणो आ चारित्रनो स्वीकार करे छे पूर्वप्रतिपन्न तो जघन्यथी अने

(६) आगमद्वार—परिहारविशुद्धिक अपूर्व-नवीन आगमनुं अध्ययन करतो नथी, कारण के ते कल्पने आश्रयी ग्रहण करेला उचित योगना आराधनथी ज कृतकृत्य थाय छे. परन्तु पूर्वे अध्ययन करेलुं विस्मरण न थाय ते माटे हमेशां एकाग्रमनवाळो थइ प्रायः सारी रीते तेनुं स्मरण करे छे. कह्युं छे के—"आ (परिहारविशुद्धिक) हमेशां एकाग्रमनवाळो थइने विस्मरणादि न थाय माटे पूर्वे भणेलुं सम्यक् रूपे प्रायः स्मरण करे छे."

(७) वेदद्वार-वेदने आश्रयी परिहारविशुद्धि चारित्रनी प्रवृत्तिकाळे पुरुषवेद होय के नपुंसकवेद होय, पण स्त्रीवेद न होय, केमके स्त्रीने परिहारविशुद्धि चारित्रना कल्पनी प्राप्ति होती नथी. परन्तु अतीतनय-भूतकाळने आश्रयी पूर्वे प्रतिपन्नतो (पूर्वे जेणे परिहारविशुद्धि कल्प अंगीकार करेलो छे तेनो) विचार करता ते वेदसहित होय के वेदरहित होय. तेमां श्रेणीनी प्राप्तिना अभावमां वेदसहित होय छे अने उपशमश्रेणिनी प्राप्तिमां के क्षपकश्रेणिनी प्राप्तिमां वेदरहित होय छे. कह्युं छे के—"प्रवृत्तिकाळे स्त्री सिवायना बे वेदमांथी एक वेद होय अने पूर्वप्रतिपन्न वेदसहित होय के वेदरहित होय.[1]"

(८) कल्पद्वार—आ चारित्रवाळो स्थितकल्पमां होय छे, पण अस्थित कल्पमां होतो नथी. 'ठियकप्पंमि नियमा' केमके स्थित कल्पमां अवश्य होय छे'-एवु शास्त्र वचन छे. अचेलकपणा आदि दश कल्पमां रहेला साधुओनो कल्प स्थितकल्प कहेवाय छे. जेओ शय्यातर पिंडादि अस्थित कल्पमां रहेला छे, बाकीना अचेलकादि छ कल्पमां रहेला नथी ते साधुओनो कल्प अस्थित कल्प कहेवाय छे. कह्युं छे के—"स्थितकल्प, अने अस्थितकल्प एम बे प्रकारनो कल्प छे. तेमां अचलेकत्वादि बधा स्थानकमां रहेला होय ते प्रथम स्थितकल्प. पण चार स्थानकमां स्थित होय अने छ स्थानकमां अस्थित होय ते बीजो अस्थित कल्प.". अचेलकत्वादि दश स्थानको आ प्रमाणे छे-१ अचेलकपणुं, २ औद्देशिक, ३ शय्यातरपिंड, ४ राजपिंड, ५ कृतिकर्म, ६ व्रत, ७ ज्येष्ठ, ८ प्रतिक्रमण,

१ उपशम श्रेणिमां के क्षपकश्रेणिमां पण नवमा गुण स्थानकना संख्याता भाग गया पछी छेल्लो संख्यातमो भाग बाकी होय त्यारे वेदनो उपशम के क्षय करे छे त्यारे वेदरहित थाय छे, ते पहेलां वेदसहित होय छे.

संयमस्थानो बन्ने चारित्रना (सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्रना) छे तेमा परिहारविशुद्धिक कल्पनो अंगीकार पोतानाज संयमस्थानोमा वर्तता साधुने होय छे पण बाकीना संयमस्थानोमा वर्तमान साधुने होतो नथी ज्यारे अतीत नयने आश्रयी पूर्वप्रतिपन्ननी विवक्षा करीए त्यारे बाकीना संयमस्थानोमा पण होय छे एटले पूर्वे अतीतकाळे परिहारविशुद्धिक चारित्रने प्राप्त थयेलो हतो अने ते कल्पनी समाप्ति थया पछी तेने बीजा चारित्रनो संभव होवाथी बीजा चारित्रोमा पण वर्तमान छतां भूतकाळनी अपेक्षाए पूर्वप्रतिपन्नपणु अविरुद्धपणे छे कह्यु छे के—"स्वस्थानोमा—पोताना संयमस्थानोमां वर्ततो होय त्यारे परिहारविशुद्धि चारित्रनी प्राप्ति थाय छे अने पूर्वप्रतिपन्न—पूर्वे परिहारविशुद्धिने प्राप्त थयेलो अन्य चारित्रमां पण होय छे ते अन्य चारित्रमां वर्तमान होय तो पण अतीतनयने आश्रयी 'परिहारविशुद्धिक' कहेवाय छे"

(४) तीर्थद्वार—परिहारविशुद्धिक चारित्र अवश्य तीर्थ प्रवर्तमान होय त्यारेज होय छे, परन्तु तेना विच्छेदमां के तेनी अनुत्पत्तिमां ते तीर्थनोअभाव होय त्यारे जातिस्मरणादि वडे होतु नथी कह्यु छे के—"तीर्थद्वार—ते अवश्य तीर्थमां होय छे, पण तेना अभावमा होतु नथी एटले तीर्थना विच्छेदमां के तेनी अनुत्पत्तिमां जातिस्मरणादि वडे परिहारविशुद्धिक चारित्र होतु नथी"

(५) पर्यायद्वार—पर्याय बे प्रकारनो छे—गृहस्थपर्याय अने यतिपर्याय ते प्रत्येकना जघन्यथी अने उत्कृष्टथी एम बब्बे प्रकार छे तेमां गृहस्थनो पर्याय जघन्यथी ओगणत्रीश वर्ष अने यतिनो पर्याय वीश वर्षनो होय छे उत्कर्षथी बन्ने पर्यायो कंइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण होय छे कह्यु छे के—"आ परिहारविशुद्धि चारित्रनो जघन्यथी गृहस्थपर्याय ओगणत्रीश वर्ष, अने यति पर्याय वीश वरसनो होय छे उत्कृष्ट बन्नेनो पर्याय देशथी न्यून पूर्वकोटी वर्ष प्रमाण छे"

(२) काळद्वार—तेओनो जन्म अवसर्पिणीमां त्रीजा अने चोथा आरामां होय छे अने सद्भाव पांचमा आरामां पण होय छे. उत्सर्पिणीमां बीजा, त्रीजा अने चोथा आरामां जन्म अने सद्भाव त्रीजा अने चोथा आरामां होय छे. कह्युं छे के—"अवसर्पिणीना (त्रीजा अने चोथा) बन्ने आरामां जन्मथी होय छे अने त्रीजा, चोथा अने पांचमा ए त्रण आरामां सद्भावथी होय छे. उत्सर्पिणीमां जन्म अने सद्भावथी विपरित समजवुं. एटले बीजा, त्रीजा अने चोथामां जन्मथी होय छे अने सद्भावथी त्रीजा अने चोथा आरामां होय छे." नोत्सर्पिणी–अवसर्पिणीरूप चोथा आराना जेवा काळने विषे तेओनो संभव नथी, कारण के महाविदेह क्षेत्रमां तेओनो असंभव छे–एटले तेवो काळ महाविदेह क्षेत्रमां छे अने त्यां परिहारविशुद्धि चारित्रवाळानो संभव नथी.

(३) चारित्रद्वार—चारित्रद्वारमां संयमस्थानद्वारा मार्गणा–विचार करवानो छे. तेमां सामायिक अने छेदोपस्थापनीय चारित्रना जे जघन्य संयमस्थानो छे ते परस्पर सरखा छे, कारण के ते बन्नेना सरखा परिणाम छे. त्यार पछी असंख्य लोकाकाशप्रदेश प्रमाण संयमस्थानो छोडी उपरना जे संयमस्थानको छे ते परिहारविशुद्धिचारित्रवाळाने योग्य छे अने ते पण केवलज्ञानीनी प्रज्ञाथी विचार करतां असंख्याता लोकाकाशप्रदेश प्रमाण थाय छे. ते संयमस्थानो पहेला अने बीजा चारित्रनी साथे अविरोधी छे. कारण के ते बन्ने चारित्रमां पण ते संयमस्थानोनो संभव छे. ते पछी उपरना जे असंख्याता संयमस्थानो छे ते सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्रने योग्य छे. कह्युं छे के—"पहेला अने बीजा चारित्रना संयमस्थानो जघन्य स्थाने परस्पर तुल्य छे. त्यार पछी असंख्याता लोकोकाकाशप्रदेश प्रमाण संयमस्थानो छोडीने उपर परिहारविशुद्धि चारित्रना संयमस्थानो छे. ते पण असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण छे. अने ते पहेला अने बीजा चारित्रनी साथे अविरोधी छे. त्यार पछी उपरना असंख्याता

१ क्षेत्रद्वार—क्षेत्रने विषे जन्म अने सद्भावने आश्रयी बे प्रकारनी मार्गणा छे जे क्षेत्रमां उत्पन्न थयो छे त्यां जन्मने आश्रयी मार्गणा अने जे क्षेत्रने विषे कल्पमां-परिहारविशुद्धि चारित्रमां वर्तता होय, त्यां सद्भावने आश्रयी मार्गणा छे कह्यु छे के—"क्षेत्रने विषे जन्मथी अने सद्भावने आश्रयी बे प्रकारनी मार्गणा छे ज्यां जन्म्यो छे त्यां जन्मथी मार्गणा अने ज्यां कल्प-चारित्र-परिहार विशुद्धि चारित्रमां वर्तता होय त्यां सद्भावथी मार्गणा होय छे" तेमां परिहारविशुद्धिचारित्रवाळो जन्मथी अने सद्भावथी पांच भरत अने पांच ऐरावत क्षेत्रमां होय छे, पण महाविदेह क्षेत्रमां होतो नथी वळी तेओनुं संहरण पण थतु नथी, जेथी जिनकल्पिकनी पेठे सर्व कर्मभूमिमां के सर्व अकर्मभूमिमां प्राप्त थाय कह्यु छे के—तेओ अवश्य संहरणरहित भरत अने ऐरावत क्षेत्रमां होय छे

चारित्रना वर्णन प्रसंगे पण छेल्ला २० मा बन्धद्वारनो गणना करी छे अने भिक्षाद्वार सुधी विवरण कर्यु छे, पण बन्धद्वारनुं विवरण कर्युं नथी अने छेल्ला भिक्षाद्वारनो साथे विहारक्रमनुं वर्णन छे "भिक्षाद्वारे-भिक्षाविहारक्रमश्चास्य तृतीयस्यां पौरुष्यां भवति, शेषासु च कायोत्सर्गः"। वळी भिक्षाद्वारना वर्णनमां विहारना क्रमनुं वर्णन पण असंगत लागे छे माटे अही बन्धद्वारने बदले पन्थद्वार के पथिद्वार होवुं जोइए जेथी पथिद्वार के पन्थद्वारमां विहारना क्रमनुं वर्णन संगत थाय छे आ संबंधे प्रवचनसारोद्धारनी टीकामां खुलासो छे "भिक्षाद्वारे पथिद्वारे च भिक्षाविहारक्रमश्चास्य तृतीयस्यां पौरुष्यां भवति"। भिक्षाद्वार अने पन्थद्वारमां भिक्षा अने विहारनो क्रम परिहारविशुद्धि चारित्रवाळाने त्रीजा पहोरमां होय छे अने बाकीना पहोरमां काउस्सग्ग करवानो होय छे पछीथी बधेय सरखा पाठ मळे छे तेथी 'पथि द्वारे च' ए पाठ त्रुटित थयो होय एम संभवे छे जुओ प्रवचनसारोद्धार गाथा-६०२-६१० टीका पत्र १७२-१

होय छे. तेमां वे भिक्षानो अभिग्रह होय छे. कल्पस्थितादि–वाचनाचार्य वगेरे [अहीं आदि शब्दथी अनुपरिहारिक–वैय्यावृत्त्य करनारा लेवा.) प्रतिदिवस आयंबिल करे छे. एम छ मास सुधीनुं तप करीने तप करनारा वैयावृत्य करे छे अने वैयावृत्य करनारा परिहारिक पदमां रही छ मास सुधी तप करे छे. पछी कल्पस्थित–वाचनाचार्य पण एम छ मास सुधी तप करे छे. बाकीना बधा वैयावृत्य करे छे अने तेमांथी एक कल्पस्थित–वाचनाचार्य थाय छे. ए प्रमाणे अढार मास प्रमाणवाळो कल्प संक्षेपथी वर्णव्यो छे. विशेष हकीकत कल्पादि विशेषसूत्रथी जाणी लेवी." परिहारविशुद्धि कल्पनी समाप्ति थया पछी तेओ फरीथी परिहारविशुद्धि चारित्रने, जिनकल्पने के गच्छने प्राप्त थाय छे. ते चारित्रने अंगीकार करवानी इच्छावाळा तीर्थंकरनी पासे के तीर्थंकरनी पासे जेणे ए चारित्र पूर्वे ग्रहण करेलुं छे तेनी पासे ए चारित्र ले छे. अन्यनी पासे लेता नथी. एओनुं जे चारित्र ते परिहारविशुद्धि चारित्र कहेवाय छे.

हवे ए परिहारविशुद्धि चारित्रवाळा कया क्षेत्रमां अने कये काळे होय छे ? ए प्रश्नना उत्तरमां क्षेत्र–काळ वगेरेना निरूपण माटे वीश द्वारो कहे छे—१ क्षेत्रद्वार, २ काळद्वार, ३ चारित्रद्वार, ४ तीर्थद्वार, ५ पर्यायद्वार, ६ आगमद्वार, ७ वेदद्वार, ८ कल्पद्वार, ९ लिंगद्वार, १० लेश्याद्वार, ११ ध्यानद्वार, १२ गणद्वार, १३ अभिग्रहद्वार, १४ प्रव्रज्याद्वार, १५ मुंडापनद्वार, १६ प्रायश्चित्तद्वार, १७ कारणद्वार, १८ निष्प्रतिकर्मताद्वार, १९ भिक्षाद्वार, २० वैन्धद्वार. (पन्थद्वार).

२ प्रज्ञापना सूत्रनी टीकाना मुद्रित अने लिखित बधा पुस्तकोमा परिहारविशुद्धिचारित्रना वर्णन प्रसंगे २० द्वारोनी गणनामा 'वन्धद्वार' एवो पाठ मळे छे, पण तेना विवरण प्रसंगे वन्धद्वारनुं वर्णन मळतुं नथी. देवेन्द्रसूरिप्रणीत षडशिति–चोथा कर्मग्रन्थनी टीकामां परिहारविशुद्धिक

"प्रथम दीक्षितने तथा बीजा तीर्थंकरना तीर्थमां प्रवेश करनारने निरतिचार छेदोपस्थापन अने मूळ गुणघातीने सातिचार छेदोपस्थापन चारित्र होय छे अने ते बन्ने प्रकारना चारित्र स्थितकल्पमां होय छे" बन्ने प्रकारना एटले सातिचार अने निरतिचार चारित्र स्थितकल्पमां—पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थकाळे होय छे

जे चारित्रमां परिहार—तपविशेषवडे विशुद्धिचारित्र थाय ते परिहारविशुद्धि कहेवाय छे तेना बे प्रकार छे—निर्विशमानक अने निर्विष्टकायिक, विवक्षित—परिहारविशुद्धि चारित्र—तपविशेषनुं आराधन करनारा निर्विशमानक अने जेणे विवक्षित चारित्रनुं—तपविशेषनुं आराधन करेलुं छे ते निर्विष्टकायिक ते चारित्रवाळानी साथे चारित्रनो अभेद होवाथी चारित्र पण ए प्रमाणे कहेवाय छे अहीं नव साधुओनो गण होय छे तेमां चार निर्विशमानक—तप करनारा, चार वैयावृत्त्य करनारा अने एक कल्पस्थित—वाचनाचार्य होय छे यद्यपि आ कल्पमां वर्तमान बधा य साधुओ श्रुतातिशयसंपन्न होय छे, तो पण तेवा प्रकारनो कल्प होवाथी तेओमांथी कोई एक वाचनाचार्य तरीके स्थापन करवामां आवे छे निर्विशमानकनो तप आ प्रमाणे छे "परिहारविशुद्धि चारित्रवाळाने शीत, उष्ण अने वर्षा [illegible] प्रत्येकने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट तप करवानो धीर पुरुषोए कहेलो छे तेमां ग्रीष्म ऋतुमां जघन्य चतुर्थ भक्त (एक उपवास) मध्यम षष्ठ भक्त (बे उपवास) अने उत्कृष्ट अष्टम भक्त (त्रण उपवास) छे त्यार पछी शिशिर ऋतुमां तप करवानो कहीशु शिशिर ऋतुमां बे उपवासथी आरंभी चार उपवास पर्यन्त जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट तप करवानो होय छे अने वर्षाऋतुमां त्रण उपवासथी आरभी पांच उपवास सुधी तप जाणवो पारणाने दिवसे आयंबिल होय छे अने भिक्षामां पांच भिक्षा ग्रहण करवानी

१ संसृष्ट अने असंसृष्टादि सात प्रकारनी भिक्षा छे, तेमां प्रथमनी संसृष्ट अने असंसृष्ट ए बे भिक्षा छोडी उद्धृतादि पांच भिक्षा ग्रहण करवानी छे तेमां पण एक भक्त संबंधी अने एक पाणी संबंधी एम बेनो अभिग्रह होय छे एटले प्रतिदिन बे ज भिक्षा लेवानी होय छे

चरित्तारिया। से किं तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया? परिहारविसुद्धियचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—निविस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया य निविट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया य। से त्तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया।

परिहारविशुद्धिक चारित्रार्यो केटला प्रकारना छे? तेओ बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—निर्विशमानक परिहारविशुद्धिक चारित्रार्यो अने निर्विष्टकायिक परिहारविशुद्धिक चारित्रार्यो. एम परिहारविशुद्धिक चारित्रार्यो कह्या.

छेदोपस्थापन चारित्रनो परम विशुद्धिविशेषरूप सूक्ष्मसंपरायादिरूप चारित्रनी प्राप्तिमां भंग थतो नथी तेम इत्वर सामायिकनो पण विशुद्धि विशेषरूप छेदोपस्थापन चारित्रनी प्राप्तिमां भंग थतो नथी. जो प्रव्रज्या छोडे तोज भंग थाय, परन्तु विशुद्धि विशेषनी प्राप्तिमां भंग न थाय. कह्युं छे के-" चारित्रना त्याग करनारने भंग थाय, परन्तु छे तेने वधारे विशुद्ध करे तेने संज्ञामात्रनो भेद थाय छे. पण जेम सूक्ष्मसंपरायनो प्राप्तिमां छेदोपस्थापननो भंग थतो नथी तेम इत्वर सामायिकनो छेदोपस्थापननी प्राप्तिमां शी रीते भंग थाय?"

जे चारित्रमां पूर्वव्रत पर्यायनो छेद अने उपस्थापन—फरीथी महाव्रतोनुं आरोपण छे ते छेदोपस्थान. ते बे प्रकारनुं छे—सातिचार अने निरतिचार. तेमां इत्वर सामायिकवाळा नव दीक्षितने जे महाव्रतोनुं आरोपण करवामां आवे छे ते तथा एक तीर्थंकरना तीर्थमांथी बीजा तीर्थंकरना तीर्थमां प्रवेश करतां होय छे ते निरतिचार छेदोपस्थापन. जेम पार्श्वनाथना तीर्थथकी वर्धमान स्वामीना तीर्थमां प्रवेश करतां चार महाव्रतरूप धर्म छोडी पांच महाव्रतरूप धर्म स्वीकारे त्यारे तेने निरतिचार छेदोपस्थान चारित्र होय छे. अने मूल गुणनो (महाव्रतोनो) घात करनारने फरीथी महाव्रतो आपवा ते सातिचार छेदोपस्थापन चारित्र. कह्युं छे के—

सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किं तं छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया ? छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—साइयारछेदोवट्ठावणियचरित्तारिया य निरइयारछेदोवट्ठावणियचरित्तारिया य । सेत्तं छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया ।

चारित्रार्यो. एम सामायिक चारित्रार्यो कह्या. छेदोपस्थापनीय चारित्रार्यो केटला प्रकारे छे ? तेओ बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—सातिचार छेदोपस्थापनीय० अने निरतिचार छेदोपस्थापनीय०. एम छेदोपस्थापनीय चारित्रार्यो कह्या.

भरत अने ऐरावत क्षेत्रना मध्यम बावीश तीर्थंकरना तीर्थमां पहेला तथा महाविदेह क्षेत्रना तीर्थंकरना तीर्थमां पहेला साधुने जाणवुं कारण के तेने उपस्थापन (वडी दीक्षा)—करीथी महाव्रत ग्रहण करवानुं होतुं नथी कह्युं छे के—" सर्व प्रकारना चारित्र ए सामायिकरूप छे, परन्तु छेदादि विशेषणो वडे विशिष्ट कराय त्यारे जुदा जुदा चारित्र कहेवाय छे, अने अविशेषित—छेदादि विशेषणरहित चारित्र 'सामायिक' एवी सामान्य संज्ञारूपे रहे छे तेमां सावद्य योगनो त्याग करवारूप सामायिक चारित्र छे तेना बे प्रकार छे—इत्वर अने यावत्कथिक तेमां प्रथम इत्वर सामायिक पहेला अने छेल्ला जिनना तीर्थमां जेने हुज महाव्रतनुं आरोपण कर्युं नथी एवा नव दीक्षित शिष्यने थोडा काळ माटे होय छे बाकीना तीर्थंकरोना तीर्थमां अने महाविदेहना तीर्थंकरोना तीर्थमां यावत्कथिक सामायिक होय छे " प्र०—" इत्वर सामायिक पण 'करेमि भंते' सामाइयं—हे भगवन् ! हुं यावज्जीव सामायिकनो स्वीकार करुं छुं'—एम जीवनपर्यन्त ग्रहण कराय छे, तो फरीथी महाव्रतो ग्रहण करती वेळाए तेनो त्याग करता प्रतिज्ञानो भंग केम न थाय ? उ०—अमे पहेलाज कह्युं छे के बधां चारित्रो सामान्यरूपे सामायिकचारित्र रूप छे, कारण के बधामां सावद्य योगनी विरति छे परन्तु छेदादि विशुद्धिविशेषथी विशिष्ट थतां अर्थथी अने नामान्तरथी भिन्नपणुं प्राप्त करे छे तेथी जेम यावत्कथिक सामायिक के

कसायवीयरायचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया। सेत्तं खीणकसायवीयरायचरित्तारिया। सेत्तं वीयरायचरित्तारिया।

अहवा चरित्तारिया पंचविहा पन्नत्ता। तंजहा—सामाइअचरित्तारिया, छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया, परिहारविसुद्धियचरित्तारिया, सुहुमसंपरायचरित्तारिया, अहक्खायचरित्तारिया य। से किं तं सामाइयचरित्तारिया? सामाइयचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—इत्तरियसामाइयचरित्तारिया य आवकहियसामाइयचरित्तारिया य।

समयवर्ती अयोगी केवली० चारित्रार्यो. एम अयोगी केवली० चारित्रार्यो कह्या, केवली० चारित्रार्यो कह्या, क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो कह्या. अने वीतराग चारित्रार्यो कह्या.

अथवा चारित्रार्यो पांच प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ सामायिक चारित्रार्यो, २ छेदोपस्थापनीय चारित्रार्यो, ३ परिहार विशुद्धिक चारित्रार्यो, ४ सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्यो, ५ यथाख्यात चारित्रार्यो. सामायिक चारित्रार्यो केटला प्रकारना छे? सामायिक चारित्रार्यो बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—इत्वरिक सामायिक चारित्रार्यो अने यावत्कथिक सामायिक

पर्यन्त. तेमां इत्वर सामायिक भरत अने ऐरावत क्षेत्रमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमां जेणे फरीथी महाव्रतो ग्रहण कर्या नथी एवा प्रथम दीक्षितने होय छे. अने यावत्कथिक सामायिक प्रव्रज्याना ग्रहण समयथी मांडी जीवनपर्यन्त होय छे. ते

से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया ? सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । सेत्त सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया । से किं त अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया ? अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीण-

---

गोकेवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? तेओ बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती सयोगी केवली० चारित्रार्यो अने अप्रथमसमयवर्ती सयोगी केवली० चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती सयोगी केवली० चारित्रार्यो अने अचरमसमयवर्ती सयोगी केवली० चारित्रार्यो एम सयोगी केवली० चारित्रार्यो कह्या. अयोगी केवली० चारित्रार्यो केटला प्रकारना छे ? अयोगी केवली० चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती अयोगी केवली० चारित्रार्यो अने अप्रथमसमयवर्ती अयोगी केवली० चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती अयोगी केवली० चारित्रार्यो अने अचरम

शब्दरूपे व्यवहार थाय छे ते सामायिक बे प्रकारनुं छे—इत्वर अने यावत्कथिक इत्वर-थोडा काळनुं अने यावत्कथिक-जीवन

रियाय। से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया? बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया। सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया।

से किं तं केवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया? केवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य।

तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने अप्रथमसमयवर्ती बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती बुद्धबोधितछद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने अचरमसमयवर्ती बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. एम बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो कह्या. तथा छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो कह्या.

केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सयो-

अर्थथी अने नामान्तरथी तेना जुदा जुदा भेदो थाय छे, अने प्रथम चारित्र विशेषणरहित होवाथी तेनो 'सामायिक' एवा सामान्य

त्तारिया य केवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। से किं त छउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया? छउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया? सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्ता-

छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने अप्रथमसमयवर्ती स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने अचरमसमयवर्ती स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. एम स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो कह्या. बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे?

त्यागरूप छे जो के बधा चारित्रो (पापव्यापारना त्यागरूप होवाथी) सामायिकरूप छे; तो पण छेदादि विशेषणो वडे विशिष्ट थता

७७. से किं तं वीयरागचरित्तारिया ? वीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । से किं तं उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया? उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा–पढमसमयउवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य अपढमसमयउवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य। सेत्तं उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया। से किं तं खीणकसायवीयरायचरित्तारिया ? खीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–छउमत्थखीणकसायवीयरायचरि-

७७. वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? वीतराग चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो. उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने प्रथम समय सिवायना उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने चरमसमय सिवायना उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो. एम उपशान्तकषाय वीतराग चारित्रार्यो कह्या. क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो अने केवली क्षीणकषाय वीतराग चारित्रार्यो.

(विनयादिनी पेठे अही स्वार्थमां इक प्रत्यय थयो छे जेमके वैनयिक.) ते सामायिक चारित्र सर्वसावद्य–हिंसादि पापव्यापारना

सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—संकिलिस्समाणा य विसुज्झमाणा य। सेत्तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया। से किं तं बादरसंपरायसरागचरित्तारिया? बादरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पढमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य अपढमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य अचरिमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य। अहवा बादरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पडिवाई य अपडिवाई य। सेत्तं बादरसंपरायसरागचरित्तारिया।

सराग चारित्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो, अने प्रथम समय सिवायना बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो अथवा चरमसमयवर्ती बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो अने चरमसमय सिवायना बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो, अथवा बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रतिपाती अने अप्रतिपाती. एम बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो कह्या

सामायिकादि चारित्रनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे—सम—रागद्वेषरहित होवाथी समभावपूर्वक आय—गमन, प्रवृत्ति ते समाय आ बीजी पण साधुओनी क्रियाओनुं उपलक्षण—सूचक छे कारण के साधुओनी बधी क्रिया रागद्वेषरहित छे ते समाय—रागद्वेषरहित प्रवृत्ति वडे थयेलुं, अथवा तेमां थयेलुं ते सामायिक अथवा सम—ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो आय—लाभ ते समाय, तेज सामायिक

२ जुओ विशेषावश्यक भाष्य गा ३४३७

य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य। से किं तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य। अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य। अहवा

अने बादरसंपराय सराग चारित्रार्यो. सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो अने अप्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो अने अचरमसमयवर्ती सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो. अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—संक्लिश्यमान अने विशुद्ध्यमान. एम सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो कह्या. बादरसंपराय

७६. दर्शनार्यना भेदो कहीने हवे चारित्रार्यना भेदो कहे छे–'से किं तं' इत्यादि. 'ते चारित्रार्यो केटला प्रकारना छे'–इत्यादि पाठ यावत्–'अथवा चारित्रार्यो पांच प्रकारना छे'–त्यांसुधी सुगम छे. जे आ उपशान्तकषायत्वादि विशेषताना प्रथम समये वर्ते छे ते प्रथमसमयवर्ती अने तेथी द्वितीयादि समयने विषे वर्तता होय ते अप्रथमसमयवर्ती जाणवा. तथा तेज उपशान्तकषायत्वादि विशेषताना छेल्ला समये वर्तता होय ते चरमसमयवर्ती अने तेना पहेलां [1]द्विचरम, त्रिचरमसमयादिने विषे वर्तमान होय ते अचरमसमयवर्ती कहेवाय छे.

१ द्विचरम–छेल्ला समयनो पहेलानो समय, त्रिचरम–छेल्लानी पहेलाना बे समयो.

खीणकसायवीयरायदंसणारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेत्तं केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेत्तं खीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेत्तं दंसणारिया ॥

७६. से किं तं चरित्तारिया ? चरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—सरागचरित्तारिया य वीयरागचरित्तारिया य । से किं तं सरागचरित्तारिया ? सरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया

वीतराग दर्शनार्यो अने अचरमसमयवर्ती सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. एम सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या. अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने अप्रथम समयना अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. एम अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या, केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या. क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या अने दर्शनार्यो कह्या.

७६. चारित्रार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? चारित्रार्यो बे प्रकारे कह्या छे? ते आ प्रमाणे—सरागचारित्रार्यो अने वीतराग चारित्रार्यो, सराग चारित्रार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? सराग चारित्रार्यो बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्रार्यो

यछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया । से किं तं केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया ? केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया ? सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया । से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया ? अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—पढमसमयअजोगिकेवलि-

---

वीतराग दर्शनार्यो. एम बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या. अने ए प्रमाणे छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या. केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथम समयवर्ती सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने अप्रथमसमयवर्ती सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती सयोगी केवली क्षीणकषाय

अपढमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। अहवा चरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। सेत्त सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया। से किं त बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया? बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—पढमसमयबुद्धबोहियखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। सेत्त बुद्धबोहि-

---

वीतराग दर्शनार्यो. स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथम समयवर्ती स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने अप्रथम समयवर्ती स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने अचरमसमयवर्ती स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. एम स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो कह्या बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? तेओ बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथमसमयवर्ती बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने प्रथम समय सिवायना बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने चरम समय सिवायना बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय

वीयरायदंसणारिया य। अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीयरायदंसणारिया य। सेत्तं उवसंतकसायवीयरायदंसणारिया। से किं तं खीणकसायवीयरायदंसणारिया? खीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–छउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। से किं तं छउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया? छउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य। से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया? सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायदंसणारिया य

रागदर्शनार्यो बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथम समयना उपशान्तकषाय वीतरागदर्शनार्यो अने अप्रथम समय (प्रथम समय सिवायना) उपशान्तकषाय वीतराग दर्शनार्यो. अथवा चरमसमयवर्ती उपशान्तकषाय वीतरागदर्शनार्यो अने अचरम समयवर्ती उपशान्तकषाय वीतरागदर्शनार्यो (छेल्ला समय सिवायना उपशान्तकषाय वीतरागदर्शनार्यो). क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यो अने केवली क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो. छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो अने बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय

७५ से किं त वीयरायदंसणारिया ? वीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा—उवसतकसायवीयरायदंसणारिया य खीणकसायवीयरायदंसणारिया य । से किं त उवसतकसायवीयरायदंसणारिया ? उवसतकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा—पढमसमयउवसतकसायवीयरायदंसणारिया य अपढमसमयउवसंतकसाय-

७५. वीतरागदर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? वीतरागदर्शनार्यो बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे—उपशांतकषाय वीतरागदर्शनार्यो अने क्षीणकषाय वीतरागदर्शनार्यो. उपशांतकषाय वीतरागदर्शनार्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? उपशान्तकषाय वीत-

---

अज्ञान तपस्वीना तप, विद्या अने अतिशय—चमत्कार जोवाथी मूढ—स्वभावथी जेनी सम्यग्दर्शनरूप दृष्टि चलित थयेली नथी ते अमूढदृष्टि कहेवाय छे अहीं सुलसा श्राविका उदाहरण छे ते अंबडपरिव्राजकनी बाह्य समृद्धि जोइने मोह न पामी ए प्रमाणे गुणीप्रधान आचार कह्यो, हवे गुणप्रधान आचार कहे छे 'उववूह' इत्यादि उपबृंहण—साधर्मिक—समान धर्मपाळनारा सद्गुणोनी प्रशंसा करवा वडे तेनी वृद्धि करवी स्थिरीकरण—धर्मथी खेद पामता, पराङ्मुख थनाराओने धर्ममां स्थिर करवा वात्सल्य—साधर्मिकनो प्रीति वडे उपकार करवो प्रभावना—धर्मकथादि वडे तीर्थ—शासननी प्रसिद्धि करवी अहीं गुणप्रधान आचारनो निर्देश गुण अने गुणीनो कथंचित् भेद जणाववा माटे छे जो कथंचित् भेद न होय, अने एकान्त अभेद मानवामा आवे तो गुणोनी निवृत्ति थता गुणीनी पण निवृत्ति थाय, अने तेम थाय तो शून्यतानो प्रसंग प्राप्त थाय ए आठ दर्शनाचारो कह्या एम सराग दर्शनना भेदो कह्या अने तेना कथनथी सराग दर्शनार्यना भेदो कह्या

वळी प्राकृत रचना पण प्रत्यक्ष अने अनुमानथी अविरोधी छे, माटे ते परिकल्पित हशे एवी अवान्तर कल्पनानी शंका करवी अयोग्य छे. कारण के सर्वज्ञ सिवाय प्रत्यक्ष अने अनुमान प्रमाणथी अविरोधी वचननो असंभव छे. अर्हतना शासनने प्राप्त थयेलो जीवज दर्शननुं आचरण करतो होवाथी तेना प्राधान्यनी विवक्षाथी निशंकित दर्शनाचार कहेवाय छे. एथी सम्यग् दर्शन अने सम्यग्दर्शनसहित आत्मानो कंथचित् अभेद बताव्यों. जो एकान्त भेद होय तो दर्शनरहित आत्मानी पेठे तेने दर्शनना फळनो संबन्ध नहि थवाथी मोक्षना अभावनो प्रसंग थाय. ए रीते पछीना त्रणे य पदोनो विचार करवो. निःकांक्षित इति. कांक्षित–कांक्षा, ते जेनाथी गइ छे ते निःकांक्षित–देश कांक्षा अने सर्वकांक्षा रहित. तेमां देशकांक्षा–दिगंबरादि दर्शनोनी इच्छा करे, सर्वकांक्षा–'सर्व दर्शनो सारां छे' एवो विचार करे. आ बन्ने प्रकारनी कांक्षा अयुक्त छे. कारण के बाकीना दर्शनोमां असत्य प्ररूपणा अने छ जीवनिकायनी पीडानो संभव छे. 'निर्विचिकित्स'–इति. विचिकित्सा–मतिविभ्रम, अथवा फलनो संशय, आवा प्रकारनी विचिकित्सा रहित होय ते निर्विचिकित्स कहेवाय. जिनशासन तो उत्तम छे, पण तेथी तेमां प्रवृत्त थयेला मने फळ मळशे के नहि. कारण के कृषीवल–खेडुत वगेरेनी क्रिया सफळ अने निष्फळ बन्ने प्रकारनी जणाय छे. खेडुतने कृषीनुं फळ कदाच मळे छे अने कदाच मळतुं नथी. आवा प्रकारना विकल्प–संशय रहित होय. केमके संपूर्ण कारण ए कार्यने सिद्ध करनार नथी होतुं एम नथी, पण अवश्य सिद्ध करे छे–एवो जेने निश्चय थयेलो छे ते निर्विचिकित्स–फळना संदेह रहित कहेवाय. एटला अंशे निःशंकितथी आ भिन्न छे. अथवा 'निव्विदुगुंछो' एवो पाठ पण छे. एटले 'निर्विद्वज्जुगुप्सः'–विद्वान–साधुनो जुगुप्सारहित. साधुनी जुगुप्सामां श्रावकनी पुत्री उदाहरण छे, तथा 'अमूढदृष्टिः'–बाल–

हुवे जे लिंग-चिन्हो वडे सम्यग्दर्शन उत्पन्न थयेलु छे एम निश्चय कराय ते लिंग-चिन्हो बतावे छे-' परमत्थ संथवो वा ' इत्यादि परमार्थसंस्तव—परम-तात्त्विक अर्थ-जीवादि पदार्थोनो संस्तव-परिचय-तत्परतावडे बहुमानपूर्वक जीवादि पदार्थने जाणवानो अभ्यास, सुदृष्टपरमार्थसेवना-जेणे यथार्थरीते जीवादि पदार्थने जाणेला छे तेनी पर्युपासना, यथाशक्ति तेमना वैयावृत्यमां प्रवृत्ति करवी, तथा जेमनो दर्शनथी भ्रष्ट थयेला छे एवा निह्नवादि तथा कुत्सित दर्शन जेमोनु छे एवा बौद्धादि कुदर्शनीनो त्याग करवो, तेओनो परिचय न करवो अने सम्यक्त्वनी श्रद्धा करवी-ए परमार्थसंस्तवादि चिन्होवडे 'सम्यक्त्व छे' एम निश्चय कराय छे

आ सम्यग्दर्शनना आठ आचारो छे तेनु यथार्थपणे पालन करवु केमके तेना उल्लंघनथी सम्यग्दर्शननो अतिक्रम-उल्लंघन थाय छे माटे ते आचारो बतावे छे-' निस्संकिय ' इत्यादि शंकित-शंका, ते बे प्रकारनी छे-देश शंका अने सर्व शंका देशशंका अने सर्वशंका रहित निःशंकित कहेवाय छे तेमां देशशंका-जीवपणु समान छे, छतां एक भव्य अने बीजो अभव्य केम होय? सर्वशंका-एवा सिद्धान्तो प्राकृत भाषामां रचेला होवाथी कल्पित हशे आ प्रमाणे देशशंका के सर्वशंका करवी योग्य नथी कारण के भावो बे प्रकारना छे-हेतुग्राह्य अने अहेतुग्राह्य तेमां आत्मानु अस्तित्व वगेरे हेतुग्राह्य भावो छे कारण के तेना साधक अनुमानादि प्रमाणो छे अभव्यत्वादि भावो अहेतुग्राह्य छे, अमारा जेवानी अपेक्षाए तेना साधक प्रमाणनो अभाव छे, कारण के तेना हेतुओ विशिष्ट ज्ञाननो विषय छे सिद्धान्तनी प्राकृतरचना तो बाल वगेरेना उपकार माटे छे कह्यु छे के—

" बाल—स्त्री—मूढ—मूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् । अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः स्मृतः ॥ "

चारित्रनी इच्छावाळा बाल, स्त्री, मूढ अने मूर्ख मनुष्योना उपकारने माटे तत्त्वज्ञोए प्राकृत भाषामां सिद्धान्तनी रचना करी छे

उत्पन्न थयेली रुचिवाळो छतां पण आत्मा तथाविध क्षयोपशमने लीधे बाकीना बधा तत्त्वोमां रुचिवाळो थाय एवा प्रकारनो बीजरुचि जाणवो. अधिगमरुचि संबंधे कहे छे—'सो होई' इत्यादि. जेणे श्रुतज्ञान—अगियार अंगो, उत्तराध्ययनादि, पईन्ना, दृष्टिवाद अने (च शब्दथी) उपांगो अर्थथी जाणेला छे ते अधिगमरुचि कहेवाय छे. विस्ताररुचिनुं वर्णन करे छे—'दव्वाण' इत्यादि. जेणे धर्मास्तिकायादि सर्व द्रव्योना पण सर्व भावो—पर्यायोने यथायोग्य रीते प्रत्यक्षादि सर्व प्रमाणो वडे अने नैगमादि नयोना भेदो वडे जाणेला छे ते विस्ताररुचि जाणवो, कारण के सर्व द्रव्यपर्यायने जाणवाथी तेनी रुचि अत्यन्त निर्मल थयेली होय छे. क्रियारुचि संबंधे कहे छे—'दंसण' इत्यादि. क्रियारुचि—दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, विनय सर्व समिति—ईर्यासमिति वगेरे सर्व समितिओमां अने मनोगुप्ति वगेरे बधी गुप्तिओमां क्रियाभावनी रुचि होय, तात्पर्य ए छे के—जेने दर्शनादि आचारनुं पालन करवामां रुचि छे—ते क्रियारुचि कहेवाय छे. संक्षेपरुचि संबंधे कहे छे—'अणभिग्गहिय' इत्यादि. अनभिगृहितकुदृष्टिः—जेणे कोई पण कुदर्शननो स्वीकार कर्यो नथी, जे जिनप्रणीत प्रवचनने विशे अकुशल छे अने जे शेष—बाकीना कपिलादि प्रणीत प्रवचनने विषे अनभिगृहित छे एटले जेणे कपिलादि दर्शन अभिमुखताथी उपादेयरूपे स्वीकार्युं नथी, जाण्युं नथी एवा प्रकारनो संक्षेपरुचि जाणवो. ['अनभिगृहीत कुदृष्टिः' ए विशेषणथी बीजा दर्शनना स्वीकारनो प्रतिषेध कर्यो, अने बीजा 'अनभिगृहीत' विशेषणथी अन्य दर्शनना ज्ञाननो पण प्रतिषेध कर्यो.] धर्मरुचि संबंधे कहे छे—'जो अत्थिकाय' इत्यादि. जे जीव जिनेश्वरे कहेला अस्तिकाय—धर्मास्तिकायादिना धर्म—गतिक्रियामां सहाय आपवा वगेरे स्वभावनी अथवा श्रुतधर्म के चारित्रधर्मनी श्रद्धा करे छे ते धर्मरुचि जाणवो. ए प्रमाणे निसर्गादि विशेषताने लीधे रुचिरूप सम्यग्दर्शन दस प्रकारे कह्युं.

इत्यादि 'भूयत्थेण' ए भावप्रधान निर्देश छे, तेथी भूतार्थपणे–सत्यरूपे 'आ पदार्थो सद्भूत–परमार्थरूप छे' ए प्रमाणे जेणे जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर अने 'च' शब्दथी बन्धादिकने 'सहसमुइआ' सहसमत्या–आत्मानी साथे थएला संगत–स्वाभाविक मति वडे–परोपदेश सिवाय जातिस्मरण अने प्रतिभादिरूप मति वडे सत्यरूपे परिज्ञात–जाणेला छे, एटलुंज नहि परन्तु जे जीवादि पदार्थोने अनुभवे, तेना उपर रुचि करे अने तत्त्वरूपे आत्ममय परिणमावे—ए निसर्ग–निसर्गरुचि जाणवो ए ज अर्थने वधारे स्पष्ट करे छे—'जो जिणदिट्ठे भावे' इत्यादि जे जिनेश्वरे जाणेला द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावना भेदथी अथवा नाम–स्थापनादिना भेदथी चार प्रकारना भावोने स्वयमेव–कोईना उपदेश सिवाय पोतानी मेळे 'एवमेव एतत्'–जिनोए जे प्रमाणे जीवादि तत्त्व जाणेलां छे ते प्रमाणे ज छे, अन्यथा नथी' एम श्रद्धा करे ते निसर्गरुचि जाणवो हवे उपदेशरुचि संबंधे कहे छे—'ए ए चेव' इत्यादि पद—जिन अथवा छद्मस्थे उपदेश करेला जीवादि पदार्थोनी श्रद्धा करे ए उपदेशरुचि जाणवो आज्ञारुचि संबंधे कहे छे—'जो हेउमजाणंतो' इत्यादि जे विवक्षित अर्थना साधक हेतुने नहि जाणतो आज्ञाथी ज [अहीं तु शब्द निश्चयार्थक छे] प्रवचननी श्रद्धा करे के 'प्रवचनोक्त अर्थ एम ज छे, अन्यथा नथी' ए आज्ञारुचि जाणवो सूत्ररुचि संबंधे कहे छे—'जो सुत्त' इत्यादि जे सूत्र अंगप्रविष्ट के अंगबाह्यनुं अध्ययन करतो तेज अंगप्रविष्ट के अंगबाह्य श्रुत वडे सम्यक्त्व पामे ते सूत्ररुचि हवे बीजरुचिनुं वर्णन करे छे—'एगपएणेगाइं' इत्यादि जीवादि तत्त्वना एक पदवडे 'अनेकानि पदानि' अनेक जीवादि पदोने विषे [प्राकृत होवाथी अहीं सप्तमी विभक्तिनो अर्थ समजवो] धर्म अने धर्मीनो अभेदोपचार होवाथी जे सम्यक्त्व–सम्यक्त्ववाळो आत्मा उदकमां तेलबिंदुनी पेठे प्रसरे, केवी रीते? जेम पाणीना एक भागमां पडेलुं छतां तेलनुं बिंदु सर्वभागने व्याप्त करे, तेम जीवादि तत्त्वना एक अंशमां

परमार्थसंस्तव–परमार्थ–जीवादि अर्थनो संस्तव–परिचय, अभ्यास, सुदृष्टपरमार्थसेवा—जेणे परमार्थने जाण्या छे एवा तत्त्वज्ञ पुरुषोनी उपासना, व्यापन्नकुदर्शनवर्जना (व्यापन्नदर्शन–निह्नवादि पतित अने बौद्धादि कुदर्शनीनो त्याग), अने सम्यक्त्वनी श्रद्धा–ए सम्यग्दर्शनना लिंग–चिन्हो छे. निःशंकित, (शंकारहित), निःकांक्षित (परदर्शननी इच्छा रहित), निर्विचिकित्स–फळना संशय रहित, अमूढदृष्टि—मूढदृष्टि रहित, उपबृंहण, स्थिरीकरण, वात्सल्य अने प्रभावना [ए आठ दर्शनाचार जाणवा].

जे माने ते आज्ञारुचि समजवो. 'सुत्त–बीयरुइमेव' इति. अहीं पण रुचिशब्द प्रत्येकनी साथे जोडवो, सूत्र—आचारादि अंगप्रविष्ट, अने अंगबाह्य–आवश्यक दशवैकालिकादि, ते वडे जेने रुचि थाय ते, एटले के आचारांगादि अंगप्रविष्ट अने दशवैकालिकादि अंगबाह्य सूत्रनुं अध्ययन करतां जे सम्यक्त्व प्राप्त करे अने शुद्ध अने शुद्धतर परिणामवाळो थाय ते सूत्ररुचि समजवो. बीजनी पेठे अनेकार्थने जणावनार एक पण वचन ते बीज, ते वडे जेने रुचि थाय ते बीजरुचि. आ बन्ने पदनो समाहारद्वन्द्व समास करवो, तेथी नपुंसकनो निर्देश कर्यो छे. 'अहिगमवित्थाररुई' इति. अधिगमरुचि अने विस्ताररुचि.अधिगम—विशिष्ट परिज्ञान, नय अने प्रमाणद्वारा थतुं ज्ञान, तेथी जे तत्त्वरुचि थाय ते अधिगमरुचि. विस्तार–संपूर्ण बार अंगोनुं नयो वडे पर्यालोचन–विचार करवो, ते वडे वृद्धिगत थयेली रुचि जेने छे ते विस्ताररुचि. 'किरिया–संखेवधम्मरुई' इति. अहीं पण रुचिशब्द प्रत्येकनी साथे जोडवो. क्रिया–संयमनुं सम्यक् पालन करवुं, तेमां जेने रुचि छे ते क्रियारुचि. सविस्तर तत्त्वनुं ज्ञान नहि होवाथी संक्षेप–जिनोक्त तत्त्वनुं संग्रहात्मक सामान्य ज्ञान, तेमां जेने रुचि छे ते संक्षेपरुचि. धर्म–अस्तिकायधर्म–धर्मास्तिकायादिने विषे अथवा श्रुतधर्मादिने विषे जेने रुचि छे ते धर्मरुचि. ए रीते गाथानो संक्षिप्त अर्थ कर्यो. हवे विस्तारथी सूत्रकार स्वयं पोते तेनी व्याख्या करे छे–भूयत्थेण

सव्वाहिं नयविहीहिं वित्थाररुइत्ति नायव्वो ॥९॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणए सव्वसमिइगुत्तीसु । जो किरिया-भावरुई सो खलु किरियारुई नाम ॥१०॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइत्ति होइ नायव्वो । अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥११॥ जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च । सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरुइत्ति नायव्वो ॥१२॥ परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥१४॥ सेत्तं सरागदंसणारिया ।

अने दृष्टिवाद रूप श्रुतज्ञान अर्थथी जाणेलुं छे ते अभिगमरुचि. जेणे सर्व प्रमाणो अने सर्व नयो वडे द्रव्यना सर्व भावो उपलब्ध-जाणेला छे ते विस्ताररुचि जाणवो. दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, विनय, सर्व समिति अने गुप्तिने विषे क्रियाभावनी–आचरणनी रुचि होय ते क्रियारुचि. जेणे कोई पण कुदृष्टि–कुदर्शननो स्वीकार कर्यो नथी, जे जैन प्रवचनमां अकुशल छे अने बाकीना इतर प्रवचन–दर्शनोमां जेने अनभिगृहीत–अभिमुखपणे–उपादेयपणे ज्ञान नथी ते संक्षेपरुचि जाणवो. जिनेश्वरे कहेला अस्ति-काय–धर्मास्तिकायादिना धर्मनो–स्वभावनो, श्रुत धर्म अने चारित्रधर्मनी श्रद्धा करे छे ते धर्मरुचि जाणवो.

तत्वनुं कथन करवुं, ते वडे जेने रुचि थाय ते, अर्थात् गुर्वादिना उपदेशथी जिनप्रणीत तत्त्वमां जेने रुचि थाय ते उपदेशरुचि सर्वज्ञना वचनरूप आज्ञामां जेने रुचि छे ते आज्ञारुचि 'जिनाज्ञा ज तत्त्व–परमार्थरूप छे, बाकीनी युक्तिजाल तत्त्वरूप नथी' एम

हत्ति य निसग्गरुइत्ति नायव्वो ॥३॥ एए चेव उ भावे उवदिट्ठे जो परेण सद्दहइ । छउमत्थेण जिणेण व उवए- सरुइत्ति नायव्वो ॥४॥ जो हेउमयाणंतो आणाए रोयए पवयणं तु । एमेव नन्नहत्ति य एसो अणारुई नाम ॥५॥ जो सुत्तमहिज्जन्तो सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व सो सुत्तरुइत्ति णायव्वो ॥६॥ एगपएणेगाइं पदाइं जो पसरई उ सम्मत्तं । उदए व्व तिल्लबिन्दू सो बीयरुइत्ति नायव्वो ॥७॥ सो होइ अभिगमरुई सुयनाणं जस्स अत्थओ दिट्ठं । इक्कारस अंगाइं पइन्नगा दिट्ठिवाओ य ॥८॥ दव्वाण सव्वभावा सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ।

जाणेला छे अने तेनी श्रद्धा करे छे ते निसर्गरुचि. जे जिने उपदेशेला चार प्रकारना भावोनी 'एमज छे अन्यथा नथी' ए प्रमाणे स्वयमेव श्रद्धा करे ते निसर्गरुचि जाणवो. जे अन्य छद्मस्थ अथवा जिने उपदेश करेला एज भावोनी श्रद्धा करे ते उपदेशरुचि जाणवो. जे हेतुने जाण्या सिवाय आज्ञावडे 'एमज छे, अन्यथा नथी' ए प्रमाणे प्रवचन उपर रुचिवाळो होय ते आज्ञारुचि. जे सूत्रनुं अध्ययन करता अंग के अंगबाह्य श्रुत वडे सम्यक्त्वने प्राप्त करे ते सूत्ररुचि जाणवो. जीवादि तत्त्वना एक पदनी रुचिवडे अनेक पदने विषे जेनी सम्यक्त्व–रुचि श्रद्धा पाणीमां तेलना बिंदुनी पेठे प्रसरे ते बीजरुचि जाणवो. जेणे अगियार अंगो, पइन्ना

७४. तेमां सरागदर्शनार्योनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे–'से किं तं' इत्यादि. सरागदर्शनार्यो केटला प्रकारना छे? आचार्य कहे छे–सरागदर्शनार्यो दस प्रकारना कह्या छे–'निसग्गुवएस–' इत्यादि. अहीं रुचि शब्दनो प्रत्येकनी साथे संबंध करवो एटले निसर्गरुचि. तेमां निसर्ग स्वभावथी रुचि–जिनोक्त तत्त्वनी श्रद्धा जेने होय ते निसर्गरुचि जाणवो. उपदेश–गुरु वगेरेए वस्तु

७३. से किं तं दंसणारिया ? दंसणारिया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरायदंसणारिया य ।

७४ से किं तं सरागदंसणारिया ? सरागदंसणारिया दसविहा पन्नत्ता । तंजहा—निसग्गुवएसरुई आणारुई सुत्तबीयरुइमेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवे य पुण्णपावं च । सहसंमुइयाऽऽसवसंवरे य रोएइ उ निस्सग्गो ॥२॥ जो जिणदिट्ठे भावे चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । एमेव नन-

श्रुतज्ञानार्यो, ३ अवधिज्ञानार्यो, ४ मनःपर्यवज्ञानार्यो, अने ५ केवलज्ञानार्यो एम ज्ञानार्यो कह्या. दर्शनार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? दर्शनार्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सराग दर्शनार्यो अने वीतराग दर्शनार्यो.

७४. सरागदर्शनार्यो केटला प्रकारना छे ? सरागदर्शनार्यो दश प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ निसर्गरुचि, २ उपदेशरुचि, ३ आज्ञारुचि, ४ सूत्ररुचि, ५ बीजरुचि, ६ अभिगमरुचि, ७ विस्ताररुचि, ८ क्रियारुचि, ९ संक्षेपरुचि, १० धर्मरुचि. जेणे जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर (अने बधादिक) सह संमत्या—स्वाभाविक मतिवडे (परोपदेश सिवाय) सत्यरूपे

७३ दर्शनार्यानुं प्रतिपादन करे छे—दर्शनार्यो केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे—दर्शनार्यो बे प्रकारना छे—सरागदर्शनार्यो अने वीतरागदर्शनार्यो तेमां सराग—कषाय सहित दर्शन—सम्यग्दर्शनवाळा आर्यो ते सरागदर्शनार्यो कहेवाय छे वीतराग—उपशान्तकषाय के क्षीणकषाय दर्शन—सम्यग्दर्शनवाळा, ज्या बधा कषायोनो उपशम के क्षय थयो छे एवा सम्यग्दर्शन सहित आर्यो ते वीतरागदर्शनार्यो

५ पुक्खरसारिया, ६ भोगवइया, ७ पहराइया, ८ अंतक्खरिया, ९ अक्खरपुट्ठिया, १० वेणइया, ११ निण्हइयो, १२ अंकलिवी, १३ गणियलिवी, १४ गंधव्वलिवी, १५ आयंसलिवी, १६ माहेसरी, १७ दोमिलिवी, १८ पोलिन्दी। सेत्तं भासारिया।

७२. से किं तं नाणारिया ? नाणारिया पंचविहा पन्नत्ता। तंजहा—आभिणिबोहियनाणारिया, सुयनाणारिया, ओहिनाणारिया, मणपज्जवनाणारिया, केवलनाणारिया। सेत्तं नाणारिया।

प्रवर्ते छे. ब्राह्मी लिपी लखवाना अढार प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ ब्राह्मी, २ यवनानी, ३ दोसापुरीया, ४ खरौष्ट्री, ५ पुक्खरसारिया, ६ भोगवती, ७ पहराइया, ८ अंतक्खरिया, ९ अक्खरपुट्ठिया, १० वैनयिकी, ११ निह्नविकी १२ अंकलिपी, १३ गणितलिपी, १४ गांधर्वलिपी, १५ आयंस (आदर्श)लिपी, १६ माहेश्वरी, १७ दोमिलिपी, १८ पौलिन्दी. एम भाषाआर्यो कह्या.

७२. ज्ञानार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? ज्ञानार्यो पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ आभिनिबोधिकज्ञानार्यो, २

७१–७२. भाषार्योनुं प्रतिपादन करे छे–ब्राह्मी, यवनानी वगेरे लिपीना भेदो संप्रदाय थकी जाणी लेवा. एम भाषाऽऽर्यो कह्या. हवे ज्ञानार्यो कहे छे–सुगम छे. [आभिनिबोधिक वगेरे यथा संभव पांच ज्ञानवाळा होय ते ज्ञानार्यो कहेवाय छे.]

---

१ गिण्हइया शां. सा. ख. २ आरास लि– शां. सा. ख.

घरुट्टा, छव्वियया, कट्ठपाउयारा, मुंजपाउयारा, छत्तारा, वज्झारा, पोत्थारा, लेप्पारा, चित्तारा, संखारा, दंतारा, भंडारा, जिज्झगारा, सेल्लारा, कोडिगारा, जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्त सिप्पारिया ।

७१ से किं तं भासारिया? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति, जत्थऽवि य णं बंभी लिवी पवत्तइ । बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेक्खविहाणे पण्णत्ते । तंजहा–१ बंभी, २ जवणालिया, ३ दोसापुरिया, ४ खरोट्टी,

---

देयड (दंत–मसक करनार), वरुट–पिंछीकार, छविक–सादडी वगेरे करनारा, काष्ठपादुकाकार–लाकडानी पादुका करनारा, मुंजपादुकाकार–मुंजनी पादुका करनारा, छत्रकार, वज्झार, पोत्थकार–पुस्तक करनारा, लेप्यकार, चित्रकार, शंखकार, दन्तकार, भांडकार–कसारा, जिज्झगार, सेल्लगार, कोटिकार, ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते. एम शिल्पार्यो कह्या.

७१. भाषाऽऽर्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? जेओ अर्धमागधी भाषा वडे बोले छे ते भाषाआर्यो कहेवाय छे. ज्यां ब्राह्मी लिपी

---

७० हवे शिल्पार्यो कहे छे–तुन्नाक–सोयथी आजीविका करनार, दरजी तन्तुवाय–वणकर, पट्टकार–पट्टकूल–पटोळा वणनारा, देयडा–दंति–मसक करनारा, वरुट–पिच्छिक–पींछी करनारा छविक–सादडो वगेरे गुंथनारा, काष्ठपादुकाकार–लाकडानो पादुका–चाखडीओ करनार, एम मुंजपादुकाकार–मुंजनी पादुका करनारा, छत्रकार–छत्रीओ करनारा एम बधाना पदो जाणी लेवा

१ घरुडा शां सा स २ बमरा शा. सा स

६८. से किं तं कुलारिया ? कुलारिया छव्विहा पन्नत्ता । तंजहा–उग्गा, भोगा, राइन्ना, इक्खागा, णाया, कोरव्वा । सेत्तं कुलारिया ।

६९. से किं तं कम्मारिया ? कम्मारिया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–दोसिया, सोत्तिया, कप्पासिया, सुत्तवेयालिया, भंडवेयालिया, कोलालिया, नरवाहणिया, जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं कम्मारिया ।

७०. से किं तं सिप्पारिया ? सिप्पारिया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–तुण्णागा, तंतुवाया, पट्टागारा, देयडा,

६८. कुलार्यो केटला प्रकारना छे ? कुलार्यो छ प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ उग्र, २ भोग, ३ राजन्य, ४ इक्ष्वाकु, ५ ज्ञात अने ६ कौरव्य. एम कुलार्यो कह्या.

६९. कर्मार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? कर्मार्यो अनेक प्रकारना कह्या छे. १ दौष्यिक, २ सौत्रिक, ३ कार्पासिक, ४ सूत्रवैकालिक, ५ भांडवैकालिक, ६ कोलालिय, ७ नरवाहनिक, ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते. एम कर्मार्यो कह्या.

७०. शिल्पार्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? शिल्पार्यो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—तुन्नाग, तन्तुवाय, पट्टकार,

शास्त्रोमां अनेक जातिओनुं वर्णन करेलुं छे, तो पण लोकमां अंबष्ठ, कलिन्द, वैदेह, वेदग, हरित अने चुंचुणरूप इभ्य जातिओ पूज्य जाति तरीके प्रसिद्ध छे. माटे आ जाति वडे सहित होय ते जातिआर्यो, परन्तु बाकीनी जाति वडे जातिआर्य कहेवाता नथी.

१ नरंदावणिया शा. सा. क. नरवावणिया शां. सा. ख

कुंणाला, कोडीवरिसं च लाँढा य ॥५॥ सेयविया वि य णयरी केकैअद्ध च आरिय भणिय। इत्थुप्पत्ती जिणाणः चक्कीण राम-कण्हाणं ॥६॥ सेत्तं खेत्तारिया।

६७. से किं तं जातिआरिया? जातिआरिया छव्विहा पन्नत्ता। तंजहा-अंबट्ठा य कलिंदा विदेहा वेदगा इ य। हरिया चुंचुणा चेव छ एया इब्भजाईओ ॥ सेत्तं जातिआरिया।

---

१८ दशार्णदेश अने मृत्तिकावती, १९ चेदिदेश अने शौक्तिकावती, २० सिन्धुसौवीर अने अने वीतभय २१ शूरसेन अने मथुरा. २२ भंगदेश अने पापानगरी, २३ पुरावर्तदेश अने मापानगरी, २४ कुणालदेश अने श्रावस्ती, २५ लाटदेश अने कोटीवर्ष, अने २६ केकयार्ध अने श्वेतांबिकानगरी. ए आर्यदेशो कह्या छे. अहीं जिन-तीर्थंकर, चक्रवर्ती, राम अने कृष्णनी उत्पत्ति थाय छे-एम क्षेत्रार्यो कह्या.

६७. जात्यार्यो केटला प्रकारे कह्या छे? जात्यार्यो छ प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ अंबष्ठ, २ कलिंद, ३ विदेह, ४ वेदग, ५ हरित, अने ६ चुंचुण. ए छ इभ्य जातिओ छे.

क्षेत्रो कह्या छे केमके आ साडीपचीस देशोमां तीर्थंकर, चक्रवर्ती, राम-बलदेव, अने कृष्ण-वासुदेवनी उत्पत्ति थाय छे माटे आर्यक्षेत्र छे ए वडे क्षेत्रार्य अने क्षेत्रानार्यनी व्यवस्था बतावी ज्यां तीर्थंकरादिनी उत्पत्ति थाय ते आर्य, अने बाकीना अनार्य एम क्षेत्रार्यो कह्या

६७-६९. हवे जातिआर्यनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—सुगम छे परन्तु एटली विशेषता छे के—यद्यपि बीजा

६६. से किं तं खेत्तारिया? खेत्तारिया अद्धछव्वीसतिविहाणा पन्नत्ता। तंजहा—रायगिह मगहे, चंपा अंगा, तह तामलित्ति वंगा य। कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसी चेव कासी य ॥१॥ साएय कोसला, गयपुरं च कुरू, सोरियं कुसट्टा य। कंपिल्लं पंचाला, अहिछत्ता जंगला चेव ॥२॥ बारवई सुरट्ठा, मिहिल विदेहा य वच्छ कोसंबी। नंदिपुरं संडिल्ला, भद्दिलपुरमेव मलया य ॥३॥ वइराड वच्छ, वरणा अच्छा, तह मत्तियावइ दसण्णा। सोत्तियवई य चेदी, वीयभयं सिंधुसोवीरा ॥४॥ महुरा य सूरसेणा, पावा भंगी[२२](गा) य मास पुरिवट्टा। सावत्थी य

६६. क्षेत्रार्यो केटला प्रकारना कह्या छे? क्षेत्रार्यो साडी पचीश प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—१ मगध देश अने राजगृह नगर, २ अंगदेश अने चंपानगरी, ३ वंगदेश अने तामलिप्ती, ४ कलिंगदेश अने कांचनपुर, ५ काशीदेश अने वाराणसी नगरी, ६ कोसलादेश अने साकेतपुर (अयोध्या), ७ कुरुदेश अने गजपुर, ८ कुशावर्त अने शौरिपुर, ९ पंचालदेश अने कांपिल्यपुर, १० जंगलदेश अने अहिछत्रानगरी, ११ सौराष्ट्र, अने द्वारावती १२ विदेह अने मिथिला, १३ वत्सदेश अने कौशाम्बी, १४ शांडिल्यदेश अने नन्दिपुर, १५ मलयदेश अने भद्दिलपुर, १६ वच्छदेश अने वैराटपुर, १७ वरणदेश अने अच्छानगरी,

१४ शांडिल्यमां नन्दिपुर, १५ मलयमां भद्दिलपुर, १६ वच्छमां वैराटपुर, १७ वरणदेशमां अच्छापुरी, १८ दशार्णमां मृत्तिकावती, १९ चेदिमां शौक्तिकावती, २० सिन्धुसौवीरमां वीतभयपत्तन, २१ शूरसेनमां मथुरा, २२ भंगदेशमां पापा, २३ पुरिवर्तदेशमां मासा, २४ कुलाणदेशमां श्रावस्ती, २५ लाटदेशमां कोटीवर्ष, २६ केकयजनपदार्धमां श्वेतांबिकानगरी. एटला साडीपचीश देशरूप आर्य-

६५. से किं त आरिया ? आरिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा—इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य । से किं त इड्ढिपत्तारिया ? इड्ढिपत्तारिया छव्विहा पन्नत्ता । तजहा—१ अरहता, २ चक्कवट्टी, ३ बलदेवा, ४ वासुदेवा, ५ चारणा, ६ विज्जाहरा । सेत्त इड्ढिपत्तारिया । से किं त अणिड्ढिपत्तारिया ? अणिड्ढिपत्तारिया नवविहा पन्नत्ता । तजहा—खेत्तारियो, जातिआरियाँ, कुलारिआ, कम्मारियाँ, सिप्पारिआ, भासारियाँ, नाणारिया, दसणारियाँ, चरित्तारिया ।

६५. आर्यो केटला प्रकारे छे ? आर्यो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—ऋद्धिप्राप्त-अरिहत, चक्रवर्तीपणु-इत्यादि ऋद्धिने प्राप्त थयेला, अनृद्धिप्राप्त-ऋद्धिने नहि प्राप्त थयेला. ऋद्धिप्राप्त आर्यो केटला प्रकारे कह्या छे ? ऋद्धिप्राप्त आर्यो छ प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ अरिहंत, २ चक्रवर्ती, ३ बलदेव, ४ वासुदेव, ५ चारण मुनिओ अने ६ विद्याधर एम ऋद्धिप्राप्त आर्यो कह्या. अनृद्धिप्राप्त—ऋद्धिने नहि प्राप्त थयेला आर्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? अनृद्धिप्राप्त आर्यो नव प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ क्षेत्रार्य, २ जातिआर्य, ३ कुलार्य, ४ कर्मार्य, ५ शिल्पार्य, ६ भाषार्य, ७ ज्ञानार्य, ८ दर्शनार्य, ९ चारित्रार्य.

६५–६६ आर्योनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्र कहे छे—बधो पाठ सुगम छे, परन्तु राजगृह नगर छे अने मगध देश छे ए प्रमाणे बधे स्थळे अक्षरार्थ करवो भावार्थ आ प्रमाणे छे—१ मगध देशमां राजगृह नगर छे, २ अंगदेशमां चपा, ३ बगमा तामलिप्ती, ४ कलिंगमां कांचनपुर, ५ काशीमां वाराणसी, ६ कोसलामां साकेतपुर-अयोध्या, ६ कुरुदेशमां गजपुर, ८ कुशावर्तमां सौरिकपुर, ९ पाचालमां कांपिल्यपुर, १० जंगलमां अहिछत्रा, ११ सुराष्ट्रमा द्वारावती, १२ विदेहमां मिथिला, १३ वत्सदेशमां कौशाम्बी,

हारोस–दोवे–वोक्काण–गन्धाहारग–पहलिय–अज्झल–रोमपास–पउसा–मलयाय–वंधुयाय–सूयलि–कुंकुणग–मेय–पल्हव–मालव–मग्गर–आभासिआ–णक्क–चीण–ल्हसिय–खसा–घासिय–णहर–मोंढ–डोंविलग–लओस–पओस–कक्केय–अक्खाग–हूण–रोमग–भरु–मरुय–चिलाय–विसयवासी य एवमादी । सेत्तं मिलक्खू ।

डोड, भडग, निण्णग, पक्कणिय, कुलक्ख, गोंड, सिंहल, पारस, गोध, कोंच, अंवड, इदमिल, चिल्लल, पुलिंद, हारोस, दोव (दोच), वोक्काण, गंधाहारग, पहलिय, अज्झल, रोमपास, पउस, मलयाय, वंधुयाय, सूयलि, कोंकणग, मेय, पल्हव, मालव, मग्गर, आभासिय, णक्क, चीण, ल्हसिय, खस, घासिय, (खासिय) णहर, मोंढ, डोंविलग, लओस, पओस, कक्केय, अक्खाग, हूण, रोमग, भरु, मरुय, चिलाय–किरात, विसयवासीय इत्यादि. एम म्लेच्छो कह्या.

प्राकृत होवाथी अने आर्ष होवाथी 'मिलक्खू' एवुं रूप थयुं छे. आचार्य उत्तर आपे छे–म्लेच्छो अनेक प्रकारना कह्या छे. तेना अनेक प्रकार शक, यवन, चिलात, शवर, वर्वर वगेरे देशना भेदथी जाणवा. शक देशना निवासी शक अने यवन देशना निवासी यवन कहेवाय छे. एम वधे य जाणवुं, परन्तु आ भिन्न भिन्न देशो लोकथी जाणी लेवा.

१ दोच शा. सा. क. डोव शा. सा. ख. २ रामणस शां. सा. ३ चुंचुयाय शा. सा. ४ कणवीर आ. स. ५ खसा–खासिय आ. स. ६ णेढूर आ. स. ७ वियवासी य आ. स.

६४ से किं तं मिलक्खू ? मिलक्खू अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–सगा जवणा चिलाय–सबर–बब्बर–काय–मुरुंडोड–भडग–निण्णग–पक्कणिया–कुलक्ख–गोंड–सिंहल–पारस–गोधा–कोंच–अंबड–इदमिल–चिल्लल–पुलिंद–

पांच ऐरवत अने पांच महाविदेह वडे. [तेना पंदर प्रकार थाय छे.] ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—आर्यो अने म्लेच्छो.

६४. म्लेच्छो केटला प्रकारना छे ? म्लेच्छो अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—शक, यवन, चिलात, शबर, बर्बर, मुरुं-

थाय छे, ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे–'पंचहिं भरहेहिं' इत्यादि पांच भरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेह वडे भेद करता पंदर प्रकारना थाय छे ते पंदर प्रकारना होवा छतां पण संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे–आर्य अने म्लेच्छ. तेमां 'आरात्–याताः' आरात् अव्यय दूर अने समीप वाची छे हेय धर्माथी दूर गयेला अने उपादेय धर्मोनी समीप प्राप्त थयेला ते आर्य कहेवाय छे [पृषोदरादिनी पेठे रूपनी सिद्धि थाय छे] अव्यक्त भाषा अने आचारवाळा म्लेच्छो कहेवाय छे कारण के म्लेच्छ् धातु अव्यक्त भाषा–बोलवाना अर्थमां छे अहीं भाषानुं ग्रहण उपलक्षण छे, तेथी जेओनो सर्व प्रकारनो व्यवहार शिष्टोने असंमत छे ते म्लेच्छो जाणवा

६४ तेमां अल्प वक्तव्य होवाथी प्रथम म्लेच्छोनी वक्तव्यता कहे छे–'से किं तं' इत्यादि हवे म्लेच्छो केटला प्रकारना छे ?

१ मुरुंडोड आ स २ अंधदमिल शां या

६३. से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पन्नरसविहा पन्नत्ता । तंजहा–पंचहिं भरहेहिं, पंचहिं एरवएहिं, पंचहिं महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तंजहा–आ[य]रिया य मिलक्खू य ।

६३. कर्मभूमिना मनुष्यो केटला प्रकारना छे ? कर्मभूमिना मनुष्यो पंदर प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पांच भरत,

पांच देवकुरु अने पांच उत्तरकुरुने विषे मनुष्यो त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळा, त्रण गाउ प्रमाण शरीरनी उंचाइवाळा, समचतुरस्र संस्थानवाळा अने वज्रऋषभनाराच संघयणयुक्त होय छे. तेओने बसो छप्पन पांसळीओ छे. तेओ त्रण दिवस गया बाद आहार ग्रहण करे छे अने ओगणपचास दिवस अपत्यनी पालना करे छे. कह्युं छे के–" बन्ने कुरुक्षेत्रमां मनुष्यो त्रण पल्योपमना उत्कृष्ट आयुषवाळा, अने त्रण कोश उंचा होय छे. तेओने बसो छप्पन पांसळीओ होय छे " तेओ सुषमासुषमा काळना प्रभावने अनुभवता ओगण पचास दिवस सुधी संततिनुं पालन करे छे. तेमज तेओने त्रण दिवसे आहार होय छे.

आ बधा क्षेत्रोमां अन्तरद्वीपनी पेठे मनुष्योने कल्पवृक्षोए आपेला भोगो होय छे, परन्तु अन्तरद्वीपनी अपेक्षाए पांच हैमवत अने पांच हैरण्यवतने विशे मनुष्योना उत्थान–बल–वीर्यादि अने कल्पवृक्षोना फळोनो आस्वाद तथा पृथिवीनुं माधुर्यपणुं वगेरे भावो पर्यायने आश्रयी अनन्तगुणां जाणवा. तेनाथी पण पांच हरिवर्ष अने पांच रम्यकवर्षमां अनन्तगुणा भावो छे. तेथी पण पांच देवकुरु अने पांच उत्तरकुरुने विशे अनन्तगुण भावो छे. एम अकर्मभूमिना मनुष्यो कह्या.

६३. कर्मभूमिना मनुष्यो केटला प्रकारना छे ? आचार्य कहे छे के पंदर प्रकारना कह्या छे. तेना पंदर प्रकार क्षेत्रना भेदथी

१ 'मिलिक्खू' इति सर्वत्र पाठः (आ. स.)

पचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पचहिं, देवकुरूहिं पचहिं उत्तरकुरूहिं । सेत्त अकम्मभूमगा ।

हैरण्यवत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यकवर्ष, पांच देवकुरु अने पाच उत्तरकुरु वडे त्रीश प्रकारना छे. एम अकर्मभूमिना मनुष्यो कह्या.

इत्यादि पांच हेमवतवडे, पाच हैरण्यवतवडे, पाच हरिवर्ष वडे पाच रम्यकवर्ष वडे पाच देवकुरु वडे अने पाच उत्तरकुरुवडे भेद करता त्रीश प्रकारना थाय छे. केमके छने पांचे गुणता त्रीश संख्या थाय छे तेमा पाच हैमवत अने पांच हैरण्यवत क्षेत्रमा मनुष्यो गाउप्रमाण शरीरनी उंचाईवाळा, पल्योपमना आयुषवाळा, वज्रऋषभ नाराचसंहननवाळा अने समचतुरस्र संस्थानयुक्त होय छे तेओ चोसठ पासळीओवाळा, एक दिवस पूरो थया पछी आहार ग्रहण करनारा अने ओगण्यएंशी दिवस सुधी अपत्यनुं पालन करवा वाळा होय छे कह्युं छे के–हैमवत अने हैरण्यवत क्षेत्रमां एक गाउ उंचा, पल्योपम आयुषवाळा अने वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा अहमिन्द्र–स्वच्छ मिथुनवासी मनुष्यो होय छे मनुष्योने चोसठ पासळीओ अने तेओनो आहार चतुर्थभक्त–एक दिवस अतिक्रम्या, पछी होय छे तेओ ओगणाएंशी दिवस सुधी अपत्य–संततिनुं पालन करनारा होय छे

पाच हरिवर्ष अने पाच रम्यक क्षेत्रने विषे बे पल्योपमना आयुषवाळा, बे गाउ प्रमाण शरीरना उंचाईवाळा, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा अने समचतुरस्र संस्थान सहित होय छे तेओ बे दिवस गया बाद आहार ग्रहण करे छे तेओने एकसो अठ्यावीश पांसळीओ होय छे अने तेओ चोसठ दिवस सुधी संततिनुं पालन करे छे कह्युं छे के "हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रने विषे आयुषनुं प्रमाण बे पल्योपम अने शरीरनी उंचाई बे कोशनी कहेली छे तेओ बे दिवसे आहार करे छे अने चोसठ दिवस सुधी संततिनुं पालन करे छे तेओनी पांसळीओ एकसो अठ्यावीश जाणवी "

६२. से किं तं अकम्मभूमगा? अकम्मभूमगा तीसविहा पन्नत्ता। तंजहा–पंचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हिरण्णवएहिं,

६२. अकर्मभूमिना मनुष्यो केटला प्रकारना छे? अकर्मभूमिना मनुष्यो त्रीश प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–पांच हैमवत, पांच

वृक्षना पुष्पो अने फळो तेओनो आहार होय छे. तेवा प्रकारनो आहार करीने प्रासाद वगेरेनी आकृतिवाळा घरना आकार जेवा कल्पवृक्षो छे तेमां सुखपूर्वक रहे छे. ते क्षेत्रमां शरीरने उपद्रव करनारा डांस, मच्छर, जू, मांकण अने मक्षिकादि जन्तुओ उत्पन्न थता नथी. सर्प, वाघ सिंहादि उपन्न थाय छे ते पण मनुष्योने बाधा–पीडा कारक थता नथी. अने तेओ पण परस्पर हिंस्य–हिंसक भावमां वर्तता नथी, कारण के तेओ क्षेत्रना प्रभावथी रौद्र परिणाम–हिंसाना परिणाम रहित छे. मनुष्ययुगलो छेवटना समये एक युगलनो जन्म आपे छे, अने ओगणायंशी दिवस सुधी ते युगलनुं पालन करे छे. तेओना शरीरनी उंचाई आठसो धनुष छे, अने पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण आयुष छे. कह्युं छे के "अन्तरद्वीपना मनुष्यो आठसो धनुष उंचा, सदा मुदित–प्रसन्न अने पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण आयुषवाळा मिथुनधर्मनुं पालन करे छे. ते मनुष्योने चोसठ पांसळीओ होय छे अने तेओनो आहार एक दिवस गया बाद होय छे अने तेओ ओगणायंशी दिवस सुधी संताननुं पालन करे छे." तेओ थोडा कषायवाळा अने थोडा प्रेमना अनुबंधवाळा होवाथी मरीने स्वर्गे जाय छे. तेओनुं मरण मात्र बगासा, खांसी के छींक वगेरेनी क्रिया पूर्वक थाय छे, परन्तु शरीरनी पीडापूर्वक होतुं नथी. ए अन्तरद्वीपना मनुष्यो कह्या.

हवे अकर्मभूमिना मनुष्योनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे–अकर्मभूमिना मनुष्यो केटला प्रकारना छे? आचार्य कहे छे के–अकर्मभूमिना मनुष्यो त्रीश प्रकारना छे. ते त्रीश प्रकार क्षेत्रना भेदथी थाय छे, ते प्रमाणे कहे छे–'पंचहिं हेमवएहिं'

अने स्वभावथी ज उदार शृंगार अने सुंदर वेषवाळी छे तेमज स्वभावथी ज हास्ययुक्त वचनो अने विलासना विषयमां अत्यन्त निपुणतावाळी छे

तथा पुरुषो अने स्त्रीओ बन्ने स्वभावथी ज सुगंधीवदनवाळा, स्वल्प क्रोध, मान, माया अने लोभवाळा, तेमज संतोषी, औत्सुक्यरहित, नम्रता अने सरलता युक्त होय छे ममत्वनु कारणभूत मणि, कनक अने मोती वगेरे मनोहर वस्तुओ छता पण ममत्वना आग्रहरहित, सर्वथा वेरानुबन्ध विनाना, हाथी, घोडा, ऊंट, गाय, भेंस-इत्यादि छता तेना परिभोगनी इच्छा रहित होय छे तेओ पगे चालनारा, ज्वरादिरोग, यक्ष, भूत, पिशाचादि, ग्रह अने मरकीना उपद्रवथी रहित होय छे परस्पर स्वस्वामिभावथी रहित होवाने लीधे बधा अहमिन्द्रो-स्वतन्त्र छे तेने चोसठ पासळीओ होय छे, अने एकान्तर-एक दिवस गया बाद आहार ग्रहण करे छे तेओना आहार पण शालि वगेरे धान्यनो नथी, परन्तु पृथिवीनी माटी अने कल्पवृक्षना पुष्पो अने फलो होय छे ते आ प्रमाणे-ते क्षेत्रमा स्वभावथी ज शालि, जव, अडद, मग वगेरे धान्यो थाय छे, परन्तु ते मनुष्योना उपयोगमां आवता नथी जे त्यांनी पृथिवी छे ते साकरथी पण अनन्तगुण माधुर्यवाळी छे अने कल्पवृक्षोना पुष्प अने फळोना जे आस्वाद छे ते चक्रवर्तीना भोजनथी पण अधिक गुणवाळो छे कह्युं छे के-"हे भगवन्! तेओना पुष्पफळोनो केवो स्वाद कह्यो छे? हे गौतम! जेम कोई चार दिशा पर्यन्त पृथिवीना स्वामी चक्रवर्तीनुं कल्याणकारक अने लाखो रुपिआना व्ययथी तैयार थयेलु, सुंदर वर्णयुक्त, गन्धयुक्त, रसयुक्त, स्पर्शयुक्त, आस्वादनीय, दर्प उत्पन्न करे एवुं, मद उत्पन्न करे एवुं, पुष्टिकारक अने सर्व इन्द्रिय अने गात्रने प्रसन्नता आपे एवुं भोजन आस्वाद वडे होय छे, तेथी पण वधारे इष्ट आस्वाद वडे कहेलुं छे" तेथी पृथिवी अने कल्प

४ स्तूप, ५ धाव, ६ ध्वजा, ७ पताका, ८ स्वस्तिक, ९ जव, १० मत्स्य, ११ मकर, १२ कूर्म, १३ श्रेष्ठ रथ १४ स्थाल, १५ अंशुक-वस्त्र, १६ अष्टापद. १७ अंकुश, १८ सुप्रतिष्ठक (शरावसंपुट), १९ मोर, २० फुलनी माळा, २१ अभिषेक, २२ तोरण, २३ पृथिवी, २४ समुद्र, २५ श्रेष्ठ भवन, २६ आदर्श, २७ पर्वत, २८ हाथी, २९ वृषभ. ३० सिंह, ३१ छत्र, अने ३२ चामर रूप प्रशस्त अने उत्तम बत्रीश लक्षण धारण करनारा होय छे.

स्त्रीओ पण उत्तम सर्वांग सुंदर अने सर्व प्रकारना स्त्रीओना गुणसहित होय छे. परस्पर मळेली आंगळीवाळा अने पद्मनी पांखडीना जेवा कोमळ तेमज कूर्मना जेवा मनोहर चरणोवाळी, जेओनी जंघाओ रोमरहित अने प्रशस्त लक्षणवाळी छे एवी, गुप्त अने पुष्ट ढींचणवाळी, केळना स्तंभ जेवा संहत, सुकुमार अने पुष्ट साथळवाळी, मुखनी लंबाइना प्रमाणथी त्रणगुणा, पुष्ट अने विशाल जघन (केडनो आगळनो भाग)ने धारण करनारी, स्निग्ध कान्तिवाळी, सुंदर रचनावाळी मृदु-नरम रोमराजि जेओनी छे एवी, जेनुं नाभिमंडल दक्षिणावर्तना तरंगयुक्त छे, जेनुं उदर प्रशस्त लक्षण सहित छे, जेना पडखा बरोबर संगत-सरखा छे, जेना स्तनो सुवर्णना कलश जेवा संहत-मळेला, अति उंचा, गोळ आकृतिवाळा अने पुष्ट छे एवी, सुकुमार बाहुलतावाळी, स्वस्तिक, शंख अने चक्रादिनी आकृतिवाळी रेखा वडे सुशोभित करतल अने पादतल जेना छे एवी, मुखना त्रीजा भागनी उंचाइवाळी पुष्ट अने शंखना जेवी डोकवाळी, प्रशस्त लक्षणवाळी अने पुष्ट दाढीनी जेओनी छे एवी, जेना अधरोष्ठ दाडिमना फुल जेवा लाल छे, जेना तालु अने जीभ रक्त कमळ जेवा छे, जेना लोचन विकसित कुमुदनी पांखडी जेवा लांबा अने सुंदर छे, जेनी भ्रूलता-भ्रूकुटी चडावेला धनुष्पृष्ठनी आकृति जेवी सुसंगत छे, जेओनुं ललाट प्रमाणयुक्त छे, जेओना केश स्निग्ध, मनोहर अने सुंवाळा छे एवी, पुरुषथी कंइक न्यून उंचाइवाळी

वेदिका अने वनखंड वडे युक्त, जंबूद्वीपनी वेदिकाथी त्रणसो योजन प्रमाण अंतरवाळा, घनदन्त, लष्टदन्त, गूढदन्त अने शुद्धदन्त नामे चार अन्तरद्वीपो छे एवी रीते आ द्वीपो हिमवान् पर्वत उपर चारे विदिशामा रहेला छे [illegible] बधा मळीने अठ्यावीश द्वीपो थाय छे

ए प्रमाणे हिमवान पर्वतना समानवर्ण अने प्रमाणवाळा, तथा पद्मद्रहना समान लांबा पहोळा अने वळी पुंडरीक द्रह वडे सुशोभित शिखरी पर्वतने विषे पण लवण समुद्रना जलना स्पर्शथी आरंभी उपर कह्या प्रमाणे अन्तरवाळा, चारे विदिशाने विषे रहेला एकोरुकादि द्वीपोना समान नामवाळा, बराबर अन्तर, लंबाई अने विस्तारवाळा अठ्यावीश द्वीपो रहया बधा मळीने छप्पन अन्तर्द्वीपो थाय छे तेमा रहेला मनुष्यो पण उपचारथी एज नामवाळा कहेवाय छे केमके 'तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेशः' तेमा रहेला होवाथी तेनो व्यवहार थाय छे–ए न्याय छे जेम पंचाल देशनिवासी पुरुष 'पंचाल' कहेवाय छे ते मनुष्यो वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा, कंक पक्षीना जेवा परिणाम पाचन शक्तिवाळा, अनुकूळ वायुना वेगवाळा अने समचतुरस्रसंस्थानवाळा होय छे ते आ प्रमाणे–सुप्रतिष्ठित अने कूर्मना जेवा सुंदर चरणवाळा, सुकुमार, नरम थोडा रोमवाळी अने कुरुविन्दना सरखी गोळ वे जंघावाळा, गुप्त अने सुबद्ध संधिवाळा जानु–ढींचण जेओना छे एवा, जेओना साथळ हस्तिनी सुंढ समान गोळ छे, जेनी केड सिंहना सरखी छे, जेओनो मध्यभाग वज्रना समान छे, जेओनु नाभिमंडल दक्षिणावर्तयुक्त छे, जेओना छाती श्रीवत्सना चिन्हवाळी विशाळ अने पुष्ट छे, जेओना बाहु नगरना दरवाजाना भोगळ समान लांबा छे एवा, सुश्लिष्ट–सुशोभित मणिबन्धवाळा, जेओना हाथ–पगना तळीआ राता कमळना जेवां लाल छे, जेओनी डोक चार आंगळ प्रमाण सरखी गोळाकार शंखना जेवी छे, जेओनु मुख शरदना चंद्रना जेवु सौम्य छे एवा, छत्रना आकार जेवा माथावाळा, अस्फुटित–फाटेला स्निग्ध कान्तिवाळा अने सुवाळा केशो जेओना छे एवा, कमंडलु, २ कलश, ३ यूप,

अयोमुख अने शष्कुलीकर्णनी पछी गोमुख छे. एम आगळ पण विचार करवो.

ए आदर्शमुखादि चारे द्वीपोनी पछी फरीथी पण अनुक्रमे ईशानादि प्रत्येक विदिशामां प्रत्येक द्वीपथी छसो छसो योजन जइए एटले छसो योजन लांबा अने पहोळा तथा अढारसो सत्ताणुं योजन परिधिवाळा, उपर कहेला प्रमाणवाळी पद्मवरवेदिका अने वनखंड वडे जेनो आसपासनो प्रदेश सुशोभित छे एवा, जंबूद्वीपनी वेदिकाथी छसो योजनना अन्तरवाळा अश्वमुख, हस्तिमुख, सिंहमुख अने व्याघ्रमुख नामना चार द्वीपो छे.

ए अश्वमुखादि चार द्वीपनी पछी अनुक्रमे ईशानादि प्रत्येक विदिशामां प्रत्येक द्वीपथी सातसो योजन जइए त्यारे सातसो योजन लांबा अने पहोळा, बावीसो तेर योजननी परिधिवाळा, पूर्वे कह्या प्रमाणे प्रमाणवाळी पद्मवरवेदिका अने वनखंडथी वींटायेल, जंबूद्वीपनी वेदिकाथी सातसो योजन प्रमाण अन्तरवाळा अश्वकर्ण, हरिकर्ण, अकर्ण अने कर्णप्रावरण नामे चार द्वीपो छे.

त्यारबाद अश्वकर्णादि चार द्वीपोनी पछी अनुक्रमे ईशानादि प्रत्येक विदिशामां प्रत्येक द्वीपथी आठसो आठसो योजन अतिक्रम्या पछी आठसो योजन लांबा अने पहोळा पचीससो ओगणत्रीस योजननी परिधिवाळा यथोक्त प्रमाणवाळी पद्मवरवेदिका अने वनखंडवडे जेनो बाह्य प्रदेश सुशोभित छे एवा, जंबूद्वीपनी वेदिकाथी आठसो योजन प्रमाण अन्तरवाळा उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख अने विद्युद्दन्त नामे चार द्वीपो छे.

ते पछी आ उल्कामुखादि चार द्वीपोनी आगळ अनुक्रमे ईशानादि प्रत्येक विदिशामां प्रत्येक द्वीपथी नवसो नवसो योजन जईए त्यारे नवसो योजन लांबा अने पहोळा तथा अठयावीससो पीसताळीश योजननी परिधिवाळा, पूर्वोक्त प्रमाणवाळी पद्मवर-

त्यारे त्रीजी दाढा उपर पूर्वोक्त प्रमाणवाळो वैषाणिक नामे द्वीप छे तथा ते हिमवान् पर्वतनो पश्चिम दिशामां तेना छेडाथी आरंभी पश्चिमोत्तर-वायव्य कोणने विषे लवणसमुद्रमां त्रणसो योजन ओळंगीने जइए त्यारे चोथी दाढा उपर पूर्वोक्त प्रमाणवाळो नांगोलिक नामे द्वीप छे एम चारे द्वीपो हिमवान् पर्वतनो चारे विदिशामा तुल्य प्रमाणवाळा रहेला छे. कह्युं छे के "क्षुल्ल-लघु हिमवान् पर्वतनी पूर्व अने पश्चिम बाजुए विदिशामा त्रणसो योजन जइए त्यारे त्रणसो योजन विस्तारवाळा अन्तर्द्वीपो होय छे. तेओनी कंइक न्यून नवसो ओगणपचास योजन परिधि छे. तेना आ नामो छे-१ एकोरुक, २ आभासिक ३ वैषाणिक अने ४ नांगोलिक

त्यार बाद एकोरुकादि चारे द्वीपनी आगळ अनुक्रमे ईशानादि विदिशामां चारसो चारसो योजन ओळंगीने जइए त्यारे चारसो योजन लांबा अने पहोळा तथा कंइक न्यून बारसो पांसठ योजन परिधिवाळा, उपर कह्या प्रमाणे पद्मवर वेदिका अने वनखंड वडे तेनो आसपासनो भाग सुशोभित छे एवा अने जंबूद्वीपनी वेदिकाथी चारसो योजन प्रमाण अन्तरवाळा हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शष्कुलीकर्ण नामे चार द्वीपो छे ते आ प्रमाणे-एकोरुकनी पछी हयकर्ण, आभासिकनी पछी गजकर्ण, वैषाणिकनी पछी गोकर्ण अने नांगोलिकनी पछी शष्कुलीकर्ण छे

हवे ए हयकर्णादि चारे द्वीपनी पछी फरीने पण अनुक्रमे ईशानादि प्रत्येक विदिशामां प्रत्येक द्वीपथी पांचसो पांचसो योजन जइए त्यारे पांचसो योजननी लंबाइ अने विस्तारवाळा पंदरसो एकाशी योजननी परिधिवाळा, पूर्वोक्त प्रमाणवाळा पद्मवरवेदिका अने वनखंड वडे जेनो बाह्य भाग सुशोभित छे एवा, जंबूद्वीपनी वेदिकाथी पांचसो योजन प्रमाण अन्तरवाळा १ आदर्शमुख, २ मेंढमुख, ३ अयोमुख अने ४ गोमुख नामना चार द्वीपो छे ते आ प्रमाणे-हयकर्णनी पछी आदर्शमुख, गजकर्णनी पछी मेंढमुख, गोकर्णनी पछी

शिखरनो मध्यभाग सुशोभित छे. ते चोतरफ कल्पवृक्षनी श्रेणि वडे रम्य अने पूर्व अने पश्चिमना छेडा वडे लवण समुद्रना जळने स्पर्श करे छे. ते हिमवान् पर्वतने लवण समुद्रना जळना स्पर्शथी आरंभी पूर्व अने पश्चिम दिशामां प्रत्येकने गजदन्तना आकारवाळी बब्बे दाढाओ नीकळेली छे. तेमां ईशान कोणमां जे दाढा नीकळेली छे तेना उपर हिमवान् पर्वतना पर्यन्त भागथी आरंभी त्रणसो योजन लवण समुद्रमां जइए त्यारे अहीं त्रणसो योजन लांबो अने पहोळो तथा कंईक न्यून नवसो ओगणपचास योजन परिधिवाळो एकोरुक नामे द्वीप छे. आ द्वीप पांचसो धनुष पहोळी अने बे गाउ उंची पद्मवरवेदिकाथी चोतरफ सुशोभित छे. ते पद्मवरवेदिकानुं वर्णन जीवाभिगमसूत्रनी टीकामां कह्या प्रमाणे जाणवुं. ते पद्मवरवेदिका चारे तरफ सर्वथा वनखंड वडे वींटायेली छे. वनथी वनखंडनी आ विशेषता छे–प्रायः घणा समान जातिना वृक्षोनो समुदाय ते वन, जेमके अशोकवन, चंपकवन, अने अनेक जातना उत्तम वृक्षोनो समुदाय ते वनखंड. जीवाभिगमनी मूळ टीकामां कह्युं छे के–"एगजाइएहिं रुक्खेहिं वणं, अणेगजाइएहिं उत्तमेहिं वणसंडे"। एक जातना वृक्षो वडे वन अने अनेक जातना उत्तम वृक्षो वडे वनखंड कहेवाय छे. चक्रवाल–गोळाकारे रहेला ते वनखंडनो विस्तार कंइक न्यून बे योजननो छे अने परिधि पद्मवरवेदिकाना जेटलो छे. आ वनखंडनुं वर्णन करेलुं छे ते अत्यंत विस्तृत छे माटे बताव्युं नथी, परन्तु जीवाभिगमनी टीकाथी जाणी लेवुं. हवे ते हिमवान् पर्वतना छेडाथी आरंभी दक्षिणपूर्व–अग्नि कोणमां त्रणसो योजन लवण समुद्रमां प्रवेश करीए एटले अहीं बीजी दाढा उपर एकोरुक द्वीपना जेटला प्रमाणवाळो आभासिक नामे द्वीप छे. तथा ते हिमवान् पर्वतनी पश्चिम दिशाने विशे तेना छेडाथी आरंभी दक्षिण–पश्चिम–नैऋत्य कोणमां त्रणसो योजन लवण समुद्रमां जइए

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ. स.) प. १८१–१८३. २ जीवाभिगमटीका (आ. स.) प. १८३–१९८.

कन्ना, १९ अकन्ना, २० कण्णपाउरणा, २१ उक्कामुहा, २२ मेहमुहा, २३ विज्जुमुहा, २४ विज्जुदंता २५ घणदंता, २६ लट्ठदंता, २७ गूढदंता, २८ सुद्धदंता । सेत्तं अन्तरदीवगा ।

हरिकर्ण, १९ अकर्ण, २० कर्णप्रावरण, २१ उल्कामुख, २२ मेघमुख, २३ विद्युन्मुख, २४ विद्युद्दन्त, २५ घनदन्त, २६ लष्टदन्त, २७ गूढदन्त, अने २८ शुद्धदन्त. ए प्रमाणे अन्तरद्वीपग मनुष्यो कह्या.

द्वीपो व्यक्तिभेदनी अपेक्षा कर्या सिवाय अठ्यावीश प्रकारना ज कह्या छे अने तेमां उत्पन्न थयेला मनुष्यो पण अठ्यावीश प्रकारना कह्या छे हवे अंतरद्वीपना नामनो निर्देश करी बतावे छे— ' एगूरुय—एगोरुया ' इत्यादि ते आ प्रमाणे—एकोरुक वगेरे. एमां सघळा अठ्यावीश द्वीपोमां सात चतुष्क थाय छे ए प्रत्येक हिमवान् अने शिखरी पर्वत उपर छे तेमां प्रथम हिमवान् पर्वत उपर रहेला अन्तरद्वीपनो विचार करीए छीए.

आ जंबूद्वीपमा भरत अने हैमवत क्षेत्रनी मर्यादा बतावनार हिमवान् नामे पर्वत छे ते भूमिमां पचीश योजन ऊंडो, सो योजननी उंचाइवाळो, भरतक्षेत्रथी बमणा विस्तारवाळो, सुवर्णमय, अने चीनना वस्त्र जेवा वर्णवाळो छे तेना बन्ने पडखा अनेक वर्णवाळा अने विशिष्ट कान्तिवाळा मणिना समूहथी सुशोभित छे ते बधे य सरखा विस्तारवाळो अने गगनमंडळने स्पर्श करनारा रत्नमय अगियार शिखरो वडे विराजित छे जेनुं तळ वज्रमय छे अने जेनो तटभाग विविध प्रकारना मणियो अने सुवर्णथी शोभित छे, एवा दस योजन ऊंडा अने पूर्व-पश्चिम हजार योजन लांबा तथा दक्षिण अने उत्तरे पांचसो योजनना विस्तारवाळा पद्मद्रह वडे तेना

६१. से किं तं अन्तरदीवगा ? अन्तरदीवगा अट्ठावीसविहा पन्नत्ता । तंजहा—१ एगोरुया, २ आहासिया, ३ वेसाणिया, ४ णंगोला, ५ हयकन्ना, ६ गयकन्ना, ७ गोकन्ना, ८ सक्कुलिकन्ना, ९ आयंसमुहा, १० मेंढमुहा, ११ अयोमुहा, १२ गोमुहा, १३ आसमुहा, १४ हत्थिमुहा, १५ सीहमुहा, १६ वग्घमुहा, १७ आसकन्ना, १८ हरि-

---

६१. अन्तरद्वीपग—अन्तरद्वीपनिवासी मनुष्यो केटला प्रकारना छे ? अन्तरद्वीपग मनुष्यो अठ्यावीश प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ एकोरुक, २ आभासिक, ३ वैपाणिक, ४ नांगोलिक, ५ हयगर्ण, ६ गजकर्ण, ७ गोकर्ण, ८ शष्कुलीकर्ण, ९ आदर्शमुख, १० मेंढमुख, ११ अयोमुख, १२ गोमुख, १३ अश्वमुख, १४ हस्तिमुख, १५ सिंहमुख, १६ व्याघ्रमुख, १७ अश्वकर्ण, १८

मोक्षानुष्ठान, एवा प्रकारना कर्मप्रधान भूमि जेओनी छे ते कर्मभूमक कहेवाय छे. एवी रीते जेओनी अकर्म—पूर्वोक्त कर्म रहित भूमि छे ते अकर्मभूमक कहेवाय छे. अन्तरशब्द मध्यवाची छे, एटले लवण समुद्रना मध्यमां आवेला द्वीपो ते अन्तरद्वीपो, तेमां रहेला मनुष्यो ते 'अन्तरद्वीपगाः' अन्तरद्वीपवासी कहेवाय छे.

६१. पश्चानुपूर्वी न्यायने जणाववा माटे प्रथम अन्तरद्वीपना मनुष्योनुं प्रतिपादन करे छे—'से किं तं'—इत्यादि. ते केटला प्रकारना छे' इत्यादि पाठ सुगम छे. परन्तु ते अठ्यावीश प्रकारना छे. यद्यपि जेवा प्रकारना, जेटला प्रमाणवाळा, जेटला अंतरवाळा अने जे नामना अंतरद्वीपो हिमवान् पर्वतनी पूर्व अने पश्चिम दिशामां रहेला छे तेवा प्रकारना, तेटला प्रमाणना, तेटला अंतरवाळा, अने ते नामना ज शिखरी पर्वतनी पूर्व अने पश्चिम दिशाए रहेला छे, तेथी छप्पन अन्तर द्वीपो थाय छे, तोपण अत्यन्त सरखा होवाने

सजोएसु वा, णगरनिद्धमणेसु वा, सव्वेसु चेव असुइट्ठाणेसु, एत्थ णं समुच्छिममणुस्सा समुच्छंति अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए। असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अन्नाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेंति। सेत्तं समुच्छिममणुस्सा।

६०. से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा? गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पन्नत्ता। तंजहा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अन्तरदीवगा।

---

८ लोहीमां, ९ शुक्र—वीर्यमां, १० शुक्रपुद्गलना परिशाटमां—परित्यागमां, ११ जीवरहित कलेवरमां, १२ स्त्री—पुरुषना संयोगमां, १३ नगरनी खाळमां अने १४ सर्व अशुचिना स्थानकोमां अहीं संमूर्च्छिम मनुष्यो अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण अवगाहना वडे उत्पन्न थाय छे. ते असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी, सर्व पर्याप्तिओ वडे अपर्याप्ता अने अन्तर्मुहूर्तना आयुषवाळा ज काल करे छे. एम संमूर्च्छिम मनुष्यो कह्या.

६०. गर्भज मनुष्यो केटला प्रकारना छे? गर्भज मनुष्यो त्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—कर्मभूमक, अकर्मभूमक, अने अन्तरद्वीपग.

कहे छे—'हे भगवन्, इत्यादि पाठ सुगम छे परन्तु सर्व अशुचिना स्थानकोमां- जे कोई स्थानको मनुष्यना संसर्गथी अपवित्र थयेला छे ते बधा स्थानकोमां संमूर्च्छिम मनुष्यो उत्पन्न थाय छे. एम संमूर्च्छिम मनुष्यो कह्या

६० हवे गर्भज मनुष्योनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—'कम्मभूमगा' इत्यादि कर्म-कृषि, वाणिज्य वगेरे, अथवा

५८. से किं तं मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य।

५९. से किं तं संमुच्छिममणुस्सा? कहि णं भन्ते! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा! अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु, अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा, पासवणेसु वा, खेलेसु वा, सिंघाणएसु वा, वंतेसु वा, पित्तेसु वा, पूएसु वा, सोणिएसु वा, सुक्केसु वा, सुक्कपुग्गलपरिसाडेसु वा, विगयजीवकलेवरेसु वा, थीपुरिस-

५८. मनुष्यो केटला प्रकारना कह्या छे ? मनुष्यो बे प्रकारना कह्या छे. जेमके-संमूर्च्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्यो.

५९. संमूर्छिम मनुष्यो केटला प्रकारना छे ? हे भगवन्! संमूर्छिम मनुष्यो क्यां उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम! पीसतालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रमां, अढी द्वीप अने समुद्रोमां, पंदर कर्मभूमिमां, त्रीश अकर्मभूमिमां तथा छप्पन्न अंतरद्वीपोमां गर्भज मनुष्यना ज १ उच्चार—विष्टामां, २ मूत्रमां, ३ कफमां, ४ सिंघाणक—नासिकाना मेलमां, ५ वमेलामां, ६ पित्तमां, ७ परुमां,

लाख क्रोड, चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रियोना दश लाख क्रोड, उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रियोना दश लाख क्रोड, भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रियोना नव लाख क्रोड अने खेचर पंचेन्द्रियोना बार लाख क्रोड जातिकुलो होय छे. ए प्रमाणे पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या.

५८–५९. मनुष्योनुं स्वरूप कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—अहीं पण संमूर्च्छिम मनुष्य संबन्धे प्रवचन उपरना बहुमानने लीधे अने शिष्योंने पण 'साक्षात् भगवाने आ कह्युं छे' एम बहुमान उत्पन्न करवा माटे अंगना अन्तर्गत सूत्रनो आलापक–पाठ

समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जे ते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पन्नत्ता । तंजहा—इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा । एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । सत्तट्ठजाइकुलकोडिलक्ख नव अद्धतेरसाइं च । दस दस य होन्ति नवगा तह बारस चेव बोद्धव्वा । सेत्तं खहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया । सेत्तं पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ।

थयेलां बार लाख क्रोड जातिकुलो होय छे—एम कह्युं छे. 'सात, आठ, नव, साडाबार, दस, दस, नव अने बार लाख क्रोड जातिकुलो (बेइन्द्रियादिथी मांडीने खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच सुधी) अनुक्रमे जाणवा." एम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या, अने एम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या.

शरीरादि द्वारोने विषे जे विचार तथा स्त्री, पुरुष अने नपुंसकोनुं जे अल्पबहुत्व छे ते जीवाभिगमनी टीकाथी जाणी लेवुं ग्रन्थना विस्तारना भयथी अहीं लख्यां नथी हवे शिष्यजन उपर कृपा करवा माटे बेइन्द्रिय वगेरेनी लाखो क्रोड जातिकुलोनी संख्या बतावनार संग्रहणी गाथा कहे छे—अहीं बेइन्द्रियोथी मांडी अनुक्रमे संख्यापदनो योजना करवी. ते आ प्रमाणे बेइन्द्रियोना सात लाख क्रोड जातिकुलो होय छे तेइन्द्रियोना आठ लाख क्रोड, चउरिन्द्रियोना नव लाख क्रोड, जलचर पंचेन्द्रियोना साडा बार

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ स.) शरीरादिद्वारो संबंधे प ९३-९४ अने अल्पबहुत्व संबंधे प ८२-८७

लावगा, कवोया, कविंजला, पारेवया, चिडगा, चासा, कुक्कुडा, सुगा, वरहिणा, मयणसलागा, कोइला, सेहा, वरिल्लगमाई । सेत्तं लोमपक्खी । से किं तं समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता । ते णं नत्थि इहं, वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवन्ति । सेत्तं समुग्गपक्खी । से किं तं विययपक्खी ? विययपक्खी एगागारा पन्नत्ता । ते णं नत्थि इहं, वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवन्ति । सेत्तं विययपक्खी । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तंजहा–

वरिल्लग–इत्यादि. एम लोमपक्षी कह्या. समुद्ग पक्षी केटला प्रकारना छे ? समुद्गक पक्षी एक प्रकारना कह्या छे. तेओ अहीं अढी द्वीपमां नथी, बहारना द्वीप–समुद्रोमां होय छे. एम समुद्गक पक्षी कह्या. विततपक्षी केटला प्रकारना छे ? विततपक्षी एक प्रकारना कह्या छे. तेओ अहीं नथी, पण बहारना द्वीप–समुद्रोमां होय छे. एम विततपक्षी कह्या. ते खेचरो संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–संमूर्छिम अने गर्भज. तेमां जे संमूर्च्छिम छे ते सघळा नपुंसक छे. तेमां जे गर्भज छे ते त्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–स्त्री, पुरुष अने नपुंसक. ए प्रकारना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोना योनिथी उत्पन्न

जे तेवा प्रकारना छे ते चर्मपक्षी जाणवा. उपसंहार कहे छे—' एम चर्मपक्षी कह्या. लोमपक्षीनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—' से किं तं ' इत्यादि. लोमपक्षी केटला प्रकारना छे वगेरे. आ लोमपक्षीना भेदो लोक थकी जाणवा. समुद्गपक्षीनुं प्रतिपादन करे छे— समुद्गक पक्षी केटला प्रकारना छे—इत्यादि पाठसिद्ध जाणवुं, एम विततपक्षी संबन्धे पण सूत्र जाणवुं. ' ते खेचर जीवो संक्षेपथी बे प्रकारना छे '–इत्यादि पूर्वनी पेठे विचारवुं. तेओना योनिथी उत्पन्न थयेलां बार लाख क्रोड जातिकुलो होय छे. एओनो

पन्नत्ता। तंजहा–वग्गुली, जलोया, अडिल्ला, भारंडपक्खी, जीवजीवा, समुद्दवायसा, कण्णत्तिया, पक्खिविरालिया, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं चम्मपक्खी। से किं तं लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—ढंका, कंका, कुरला, वायसा, चक्कागा, हंसा, कलहंसा, रायहंसा, पायहंसा, आडा, सेडी, बगा, बलागा, पारिप्पवा, कोंचा, सारसा, मेसरा, मसूरा, मयूरा, सत्तहत्था, गहरा, पोंडरिया, कागा, कामिंजुया, वंजुलया, तित्तिरा, वट्टगा,

रना होय ते. एम चर्मपक्षी कह्या. लोमपक्षी केटला प्रकारना छे ? लोमपक्षी अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—ढंक, कंक, कुरल, वायस, चक्रवाक, हंस, कलहंस, राजहंस, पायहंस, आड, सेडी, बक–बगला, बलाका (बगलानी जाति), पारिप्लव, क्रौंच, सारस, मेसर, मसूर, मयूर, सप्तहस्त, गहर, पुंडरीक, काक, कामिंजुय, वंजुलग, तेतर, वर्तका–बतक, लावक, कपोत–होला, कपिंजल, पारावत–पारेवा, चटक (चकला), चास, कुकडा, शुक, बर्ही–मोर, मदनशलाका, कोकिल (कोयल), सेह,

५७. हवे खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनुं स्वरूप कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—खेचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे ? आचार्य कहे छे–खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको चार प्रकारना कह्या छे–'तद् यथा–चर्मपक्षी' इत्यादि चर्ममय पांखो जेओनी छे ते चर्मपक्षी, अने लोम–रुवांटा, पींछानी पांखो जेओनी छे ते लोमपक्षी गमन करता छता पण समुद्गक–पेटीनी पेठे बध रहेली संकुचित पांखो जेओनी छे ते समुद्गकपक्षी, हमेशां वितत–उघाडेली पांखो जेओनी छे ते विततपक्षी 'से किं तं' इत्यादि चर्मपक्षी केटला प्रकारना छे ? चर्मपक्षी अनेक प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे–'वग्गुली' इत्यादि ए भेदो लोक थकी जाणी लेवा बीजा

ते सव्वे नपुंसगा। तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पन्नना। तं जहा–इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं भुयपरिसप्पाणं नव जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। सेत्तं भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया। सेत्तं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया।

५७. से किं तं खहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया? खहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता। तंजहा—चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, वियपक्खी। से किं तं चम्मपक्खी? चम्मपक्खी अणेगविहा

प्रकारना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए भुजपरिसर्पोना योनिथी उत्पन्न थयेलां नव लाख क्रोड जातिकुलो होय छे एम कह्युं छे. एम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या. ए प्रमाणे परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या.

५७. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे? खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको चार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–१ चर्मपक्षी, २ लोमपक्षी, ३ समुद्गकपक्षी अने ४ विततपक्षी. चर्मपक्षी केटला प्रकारना छे? चर्मपक्षी अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–वागुली, जलोया, अडिल्ला, भारंडपक्षी, जीवंजीव, समुद्रवायस, कण्णत्तिया, पक्षीविरालिका, अने बीजा जे तेवा प्रका-

---

लोकथी जाणवा. एओना योनिथी उत्पन्न थयेलां नव लाख क्रोड जातिकुलो होय छे. वळी जे शरीरादि द्वारोने विशे विचार तथा स्त्रीओ, पुरुषो अने नपुंसकोनुं जे अल्पबहुत्व छे ते जीवाभिगमनी टीकाथी जाणवुं. एम भुजपरिसर्पो कह्या.

---

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ. स.) शरीरादिद्वार संबंधे प. ४३–४४ अने अल्पबहुत्व संबंधे प. ८२–८७.

५६. से किं तं भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—नवला, सेहा, सरडा, सल्ला, सरठा, सारा, खोरा, घरोइला, विस्सभरा, मूसा, मगुसा, पयलाइया, छीरविरालिया, जोहा, चउप्पाइया, जे यावन्ने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तं जहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जे ते समुच्छिमा

५६. भुजपरिसर्पो केटला प्रकारना कह्या छे ? भुजपरिसर्पो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—नकुल—नोळीआ, सेहा, शरट—काकीडा, शल्य, सरठ, सार, खोर, घरोइल—घरोळी, विश्वंभर, मूषक—उंदर, मगुस, पयलाइय—प्रचलायित, क्षीरविरालिय, जोहा, चतुष्पादिका, अने बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. जेमके—संमूर्च्छिम अने गर्भज. तेमां जे संमूर्छिम छे ते बधा य नपुंसक छे अने जे गर्भज छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे. जेमके—स्त्री, पुरुष अने नपुंसक. एवा

प्रमाणवाळा तेवा प्रकारना होय छे ते पण महोरगो जाणवा उपसंहार कहे छे—'एम महोरगो कह्या' ते स्थलचरो संक्षेपथी बे[1] प्रकारना छे' इत्यादि विचार पूर्वनी पेठे जाणवो एओना पण योनिथी उत्पन्न थयेला दस लाख जातिकुलो होय छे एओनो पण शरीरादि द्वारोने विषे जे विचार तथा स्त्री, पुरुष अने नपुंसकोनुं जे अल्पबहुत्व छे ते जीवाभिगमनी टीकाथी जाणवुं उरःपरिसर्पनी वक्तव्यतानो उपसंहार कहे छे—'एम उरःपरिसर्पो कह्या'

हवे भुजपरिसर्पोनुं स्वरूप कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—सुगम छे, परन्तु जे भुजपरिसर्पना भेदो अप्रसिद्ध छे ते

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ स) शरीरादिद्वारो संबंधे प ४३—४४ अने अल्पबहुत्व संबंधे प ८२—८७

गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पन्नत्ता । तंजहा–इत्थी, पुरिसगा, नपुंसगा । एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं उरपरिसप्पाणं दसजाइकुल-कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । सेत्तं उरपरिसप्पा ।

प्रमाण होय छे. ते स्थळमां उत्पन्न थाय छे, जळमां पण फरे छे अने स्थळमां पण फरे छे. ते अहीं अढी द्वीपमां नथी, पण (मनुष्य क्षेत्रनी) बहारना द्वीपो अने समुद्रोमां होय छे. ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. एम महोरगो कह्या. ते परिसर्प स्थलचरो संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–संमूर्छिम अने गर्भज. तेमां जे संमूर्छिम छे ते नपुंसक छे अने जेओ गर्भज छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–स्त्री, पुरुष अने नपुंसक. एवा प्रकारना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए उरपरिसर्पोना योनिथी उत्पन्न थयेला दस लाख क्रोड जातिकुलो होय छे एम कह्युं छे. एम उरपरिसर्पो कह्या.

स्वरूप कह्युं छे ते महोरगो स्थलचर विशेष होवाथी स्थळमां उत्पन्न थाय छे, अने स्थळमां उत्पन्न थवा छतां तेवा प्रकारना भवस्वभावथी जळने विशे पण स्थळनी पेठे फरे छे अने स्थळने विषे पण फरे छे. जो एवा प्रकारना छे तो केम देखाता नथी ? ए आशंकाना उत्तरमां सूत्रकार जणावे छे–' ते नत्थि इहं ' यथोक्त स्वरूपवाळा ते महोरगो अहीं–मनुष्यक्षेत्रमां नथी, ते माटे अहीं देखाता नथी. परन्तु बहारना द्वीप–समुद्रोमां होय छे. समुद्रोमां होवा छतां पण स्थलचर होवाथी पर्वत, देवनगरी आदि स्थलोमां उत्पन्न थाय छे, पण जळमां उत्पन्न थता नथी. ' जे यावन्ने तहप्पगारा ' ते सिवाय बीजा पण जे दश अंगुल वगेरे शरीर

वियत्थिं पि, वियत्थिपुहुत्तिया वि, रयणिं पि, रयणिपुहुत्तिया वि, कुच्छिं पि, कुच्छिपुहुत्तिया वि, धणुं पि, धणुपुहुत्तिया वि, गाउयं पि, गाउयपुहुत्तिया वि, जोयणं पि, जोयणपुहुत्तिया वि, जोयणसयं पि, जोयणसयपुहुत्तिया वि, जोयणसहस्सं पि। ते णं थले जाता, जलेऽवि चरंति थलेऽवि चरन्ति, ते णत्थि इह, बाहिरएसु दीवेसु समुद्दएसु हवन्ति, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं महोरगा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—संमुच्छिमा य

प्रमाण, (अहीं पृथक्त्व शब्द बेथी नव सुधीनो वाचक छे.) वितस्ति–वेंत, वेंतपृथक्त्व रत्नि–हस्त, रत्निपृथक्त्व, कुक्षि–बे हाथ, कुक्षि पृथक्त्व, धनुष, धनुषपृथक्त्व, गाउ, गाउपृथक्त्व, योजन, योजनपृथक्त्व, सो योजन, सो योजनपृथक्त्व, अने हजार योजन

५५. हवे महोरगनुं स्वरूप कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे–' से किं तं '–इत्यादि सुगम छे परन्तु वितस्ति–वेंत बार अंगुल प्रमाण समजवी रत्नि–हाथ, कुक्षि–बे हाथ, धनुष–चार हाथ, गाउ–बे हजार धनुष प्रमाण, योजन–चार गाउ अहीं वेंत वगेरेनुं प्रमाण उत्सेध अंगुलनी अपेक्षाए जाणवुं कारण के अहीं शरीरना प्रमाणनो विचार करेलो छे तथा अहीं ' अस्ति ' ए अव्यय बहुवचनवाची छे, तेनो दरेक पदनी साथे संबन्ध करवो तेथी आ अर्थ थाय छे–'सन्त्येके केचन महोरगा अङ्गुलमपि शरीरावगाहनया भवन्ति–केटला एक महोरगो छे जे शरीरनी अवगाहना वडे अंगुल प्रमाण पण होय छे, अने केटला एक महोरगो छे ' जे अंगुलपृथक्त्विका।' अंगुलपृथक्त्व प्रमाणवाळा शरीरावगाहना वडे होय छे अहीं ' इक ' प्रत्यय थयो छे अङ्गुलपृथक्त्व प्रमाण शरीरावगाहनावाळा होय छे ए भावार्थ छे. एम बाकीना सर्वेनो पण विचार करवो ' तेणं ' इत्यादि हमणां जेओनुं

५५. से किं तं महोरगा ? महोरगा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा-अत्थेगइआ अंगुलं पि, अंगुलपुहुत्तिया वि,

५५. महोरगो केटला प्रकारना छे ? महोरगो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-केटला एक अंगुलप्रमाण, अंगुल पृथक्त्व-

ज्यां नौकाथी ज जवाय ते पट्टन कहेवाय छे. " द्रोणमुख—ज्यां जळनुं निर्गम अने प्रवेश स्थान होय ते. आकर-सुवर्णनी खाण वगेरे, आश्रम-तापसना आवासयुक्त आश्रय, संवाध-ज्यां यात्राए आवेला घणा मनुष्योनो निवास होय ते,राजधानी-ज्ञे नगरमां राजा रहेतो होय ते. चक्रवर्तीनी छावणी वगेरे ए बधानो विनाश थवानो होय त्यारे 'एत्थ णं' ए चक्रवर्तीनी छावणी वगेरे स्थानोमां, आसालिका उत्पन्न थाय छे. अने ते जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण अवगाहनावाळा शरीर वडे उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाण उत्पत्तिना प्रथम समये जाणवुं. उत्कृष्टथी बार योजन अने बार योजन प्रमाण लंबाइने योग्य विष्कंभ विस्तार अने बाहल्य-जाडाइ वडे 'भूमिं दालित्ताणं' भूमि विदारीने उत्पन्न थाय छे. ते चक्रवर्तीनी छावणी वगेरेनी नीचे उत्पन्न थाय छे-ए भावार्थ छे. ते आसालिका संमूर्च्छिम होवाथी असंज्ञी छे अने मिथ्यादृष्टि छे, कारण के तेने सास्वादन सम्यक्त्वनो पण असंभव छे. ए माटे अज्ञानी छे. अने ते अन्तर्मुहूर्तना आयुषवाळी ते आयुष पूरूं करी काळ करे छे. ए प्रमाणे बीजा आगममां रहेलुं सूत्र कहीने हवे सूत्रकार उपसंहार कहे छे—ए प्रमाणे आसालिकानुं स्वरूप कह्युं.'

ते आसालिका काळ कर्या पछी तेने स्थाने मोटी भयंकर गर्ता-खाड पडे छे अने चक्रवर्तीनी छावणी वगेरे बधानो ग्रास करी जाय छे. जीवसमासमां तो आसालिकाने 'बेइन्द्रिय' कहेल छे. ए संबंधे जुओ लोकप्रकाश सर्ग ६ श्लो० ९२.

जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागमित्ताए ओगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं तयणुरूवं च णं विक्खंभ-बाहल्लेणं भूमिं दालित्ता णं समुट्ठेइ, असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अण्णाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव कालं करेइ। सेत्तं आसालिया।

आसालिका समूर्च्छिमरूपे उत्पन्न थाय छे. ते जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागमात्र अने उत्कृष्ट बार योजन प्रमाण शरीरनी अवगाहना वडे अने तेने योग्य विस्तार अने जाडाइ वडे भूमिने विदारीने उत्पन्न थाय छे. ते आसालिका असंज्ञी अने मिथ्यादृष्टि अन्तर्मुहूर्तनु आयुष पूर्ण करी मरण पामे छे. एम आसालिका कही.

कालक्रम प्रतिबंध होय त्यारे पांच महाविदेह क्षेत्रोमां उत्पन्न थाय छे ए वडे 'बीजे य अकर्मभूमिमां आसालिकानी उत्पत्ति थती नथी' एम जणाव्युं. पंदर कर्मभूमिमा के पांच महाविदेहमां पण तेनो उत्पत्ति थती नथी, पण चक्रवर्तोनी छावणोमा [अहीं पाठान्तर विकल्पार्थक छे] वासुदेवनी छावणीमां, मांडलिक-अल्प ऋद्धिवाळा सामान्य राजानी छावणीमां, महामांडलिक-अनेक देशना अधिपति राजानी छावणीमा, 'ग्रामनिवेशेषु'-इत्यादि ग्रसति बुद्ध्यादीन् गुणान्-बुद्ध्यादि गुणोनो ग्रास करे ते ग्राम, अथवा करोना गम्य-ज्यां शास्त्र प्रसिद्ध अढार करो लेवाता होय ते ग्राम, ज्यां घणा वणिकवर्गनो आवास होय ते निगम, धूळना किल्लाथी वींटायेलुं होय ते खेट, नाना किल्लाथी वींटायेलु ते कर्बट, जेनी आसपास अढी गाउनी अंदर बीजो ग्राम न होय ते मंडप, पट्टन अथवा पत्तन, प्राकृत होवाथी बन्नेय शब्दोमा एकज सरखो निर्देश थाय छे ज्यां नौकाद्वारा ज जवाय ते पट्टन, अने ज्यां गाडा, घोडा अने नौकाद्वारा जवाय ते पत्तन जेमके भरत ए सघळे कह्युं छे के—" पत्तन ते कहेवाय के ज्यां गाडा, घोडा अने नौकाथी जवाय, अने

वारेसु, बलदेवखंधावारेसु, मंडलियखंधावारेसु, महामंडलियखंधावारेसु, गामनिवेसेसु, णगरनिवेसेसु, णिगमनिवेसेसु, खेडनिवेसेसु, कब्बडनिवेसेसु, मडंबनिवेसेसु, दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु, आगरनिवेसेसु, आसमनिवेसेसु, संबाहनिवेसेसु, रायहाणीनिवेसेसु, एएसिणं चेव विणासेसु एत्थ णं आसालिया संमुच्छति।

वासुदेवनी छावणीमां, बलदेवनी छावणीमां, मांडलिकनी छावणीमां, महामांडलिकनी छावणीमां, ग्राम, नगर, निगम, खेड, कर्वट, मंडब, द्रोणमुख, पट्टन, आकर, आश्रम, संवाध अने राजधानीना स्थळोमां, एओनो विनाश थवानो होय त्यारे अहीं

छे तेज आगम उपरना बहुमानने लीधे कहे छे–हे भदन्त–परमकल्याणरूप! आसालिका कयां संमूर्च्छिमरूपे उपजे छे? आसालिका गर्भज नथी, पण संमूर्छिम छे, तेथी 'संमूर्च्छेति' संमूर्च्छिम रूपे उपजे छे–एम कहुं छे. भगवान् उत्तर आपे छे–'हे गौतम! मनुष्यक्षेत्रनी अंदर उपजे छे.'–ए कहेवा वडे 'मनुष्यक्षेत्रनी बहार तेनी उत्पत्ति नथी' एम प्रतिपादन कर्युं. तेमां पण बधा मनुष्यक्षेत्रमां तेनी उत्पत्ति नथी, पण अर्धतृतीय–अढी द्वीपमां उत्पन्न थाय छे. [अहीं अर्द्धं तृतीयं येषां ते–अर्ध छे त्रीजो द्वीप जेमां–एम अवयव वडे विग्रह थायछे अने समासार्थ समुदाय छे.] ए कहेवा वडे लवण समुद्र अने कालोदधि समुद्रमां तेनी उत्पत्ति थती नथी, एम प्रतिपादन कर्युं. 'निव्वाघाएणं'–इत्यादि. ज्यारे निर्व्याघात–प्रतिबंधनो अभाव होय त्यारे एटले पांच भरत अने पांच ऐरवत क्षेत्रोमां सुषमसुषमादिरूप अने दुःषमादिरूप काळ व्याघात–प्रतिबंधनुं कारण होवाथी व्याघात–प्रतिबन्धरूप न होय त्यारे पंदर कर्मभूमिमां उत्पन्न थाय छे. अने 'व्याघातं प्रतीत्य'–व्याघातने आश्रयी, एटले के–पांच भरत अने पांच ऐरवतमां तेवा प्रकारना

मालिणो, अही, अहिसलागा, वासपडागा, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्त मउलिणो। सेत्तं अही। से किं तं अयगरा? अयगरा एगागारा पन्नत्ता। सेत्तं अयगरा।

५४. से किं त आसालिया? कहि ण भंते! आसालिया समुच्छति? गोयमा! अंतो मणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु, निव्वाघाएण पन्नरससु कम्मभूमिसु, वाघाय पडुच्च पचसु महाविदेहेसु, चक्कवट्टिखधावारेसु, वासुदेवखधा-

अहिसलाग, वासपताका, अने ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय छे. ए प्रमाणे मुकुली अहि कह्या. अने एम अहि पण कह्या. अजगरो केटला प्रकारना छे? अजगरो एकप्रकारना कह्या छे. एम अजगरो कह्या.

५४. आसालिका केटला प्रकारे छे? हे भगवन्! आसालिका क्यां समूर्छिमरूपे उत्पन्न थाय छे? गौतम! मनुष्यक्षेत्रने विषे अढी द्वीपमां, व्याघात-प्रतिबंध न होय त्यारे पंदर कर्मभूमिमां, अने व्याघातने आश्रयी पांच महाविदेहमां, चक्रवर्तिनी छावणीमां,

निःश्वासमां विष होय ते निःश्वासविष कृष्णसर्पादि जातिभेदो लोक थकी जाणी लेवा उपसंहार करे छे—'ए प्रमाणे दर्वीकरो कह्या.' हवे मुकुली अहिनुं प्रतिपादन करे छे—'से किं तं'-इत्यादि ए पण लोकथी जाणवा अजगरोना अवान्तर (पेटा) जाति भेदो नथी, तेथी एम कह्यु छे के एक प्रकारना अजगरो कह्या छे

५४ आसालिकानुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्र कहे छे—'आसालिका केटला प्रकारनी कही छे-एम शिष्ये प्रश्न कर्या पछी भगवान् आर्य श्याम बीजा आगमोमा आसालिकाना स्वरूपनुं प्रतिपादन करनार गौतम स्वामीना प्रश्न अने भगवानना उत्तररूप जे सूत्र

काओदरा, दज्झपुप्फा, कालाहा, मेलिमिंदा, सेसिंदा, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं दव्वीकरा। से किं तं मउलिणो? मउलिणा अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—दिव्वागा, गोणसा, कसाहीया, वइउला, चित्तलिणो, मंडलिणो,

---

विप, उग्रविप, भोगविष, त्वचाविप, लालाविप, उच्छ्वासविप, निःश्वासविप, कृष्ण सर्प, श्वेत सर्प, काकोदर, दग्धपुष्प, कोलाह, मेलिमिंद, शेषेन्द्र, अने ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. एम दर्वीकर कह्या. मुकुली—फणारहित अहि केटला-प्रकारना छे? मुकुली अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—दिव्वाग, गोणस, कसाहीय, वइउल, चित्तली, मंडली, माली, अही,

---

अहि केटला प्रकारना कह्या छे? गुरु कहे छे—अहि बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—दर्वीकर अने मुकुली. तेमां दर्वी—चाटवाना जेवी होवाथी दर्वी—फणा, ते करवाना स्वभाववाळा दर्वीकर कहेवाय छे. मुकुल—फणा न थइ शके तेवी शरीरना अवयव-विशेषनो आकार, ते जेओने छे ते मुकुली साप कहेवाय छे. अर्थात् तेओ फणा करवानी शक्ति रहित होय छे. अहीं 'च' शब्द प्रत्येकना पोतपोताना अनेक भेदोनो सूचक छे. दर्वीकरना भेदो कहे छे—'से किं तं'—इत्यादि. जेओने आशी—दाढमां विष रहेलुं छे ते आशीविष. कह्युं छे के—"आसी दाढा, तग्गयविसा य आसीविसा मुणेयव्वा"। आशी एटले दाढा, तेमां रहेला विप झेरवाळा आशीविप जाणवा. जेओनी दृष्टिमां विष रहेलुं छे ते दृष्टिविप. जेओमां उग्र विष रहेलु छे ते उग्रविष. जेओना भोग—शरीरमां विष रहेलुं ते ते भोगविष, जेनी त्वचाने विषे विप छे ते त्वग्विष. प्राकृत होवाथी 'तयाविसा' एवो पाठ छे. लाला एटले मुखथी स्राव थाय ते लाळ, जेओने लाळमां विष छे ते लालाविष कहेवाय छे. [जेओना उच्छ्वासमां विष होय ते उच्छ्वासविप.] जेओना

५३ से किं तं उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता । तंजहा—अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा । से किं तं अही ? अही दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—दव्वीकरा य मउलिणो य । से किं तं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—आसीविसा, दिट्ठीविसा, उग्गविसा, भोगविसा, तयाविसा, लालाविसा, उस्सासविसा, नीसासविसा, कण्हसप्पा, सेदसप्पा,

---

आ प्रमाणे—उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो केटला प्रकारना कह्या छे ? उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ अहि, २ अजगर, ३ आसालिका, ४ महोरग. अहि केटला प्रकारना छे ? अहि बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—दर्वीकर—फणावाळा साप, अने मुकुली—फणारहित साप. दर्वीकर अहि केटला प्रकारना छे ? दर्वीकर अहि अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—आशीविष, दृष्टि-

---

कह्या छे—'उरपरिसप्प'—इत्यादि उरसा परिसर्पन्ति—जेओ छाती वडे चाले ते उरःपरिसर्पा, तेवा स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, भुजाभ्यां परिसर्पन्ति—जेओ भुजाओ वडे चाले ते भुजपरिसर्प, एवा स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको 'च' शब्द प्रत्येकना पोतपोताना अनेक भेदोनो सूचक छे तेमां उरःपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोना भेदो बतावबानी इच्छावाळा आचार्य आ प्रश्न कहे छे—उरःपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रियो केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे—उरःपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो चार प्रकारना कह्या छे जेमके—अहि, अजगर, आसालिका अने महोरग. एओना भेदो आपवा माटे प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे—'से किं तं'—इत्यादि

तंजहा—इत्थी, पुरिसगा, नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं थलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्ता-पज्जत्ताणं दस जाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया।

५२. से किं तं परिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया? परिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य भुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य।

कह्या छे—संमूछिंम अने गर्भज. तेमां जे संमूछिंम छे ते बधा य नपुंसक छे. तेमां जे गर्भज छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे. जेमके स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक. ए प्रकारे ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोना दस लाख क्रोड जातिकुलो योनिथी उत्पन्न थयेलां होय छे—एम कह्युं छे. एम चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या.

५२. परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियो केटला प्रकारना कह्या छे? परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियो बे प्रकारना कह्या छे. ते

दश लाख क्रोड जातिकुलो होय छे. अहीं संमूछिंम अने गर्भज प्रत्येकना शरीरादि द्वारोनो जे विचार तेमज स्त्री पुरुष अने नपुंसकोनुं जे अल्पबहुत्व ते, जीवाभिगमनी टीकाथी जाणी लेवुं. ए प्रमाणे चतुष्पदो कह्या.

५२. परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो केटला प्रकारना छे? आचार्य उत्तर आपे छे—परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय बे प्रकारना

---

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ. स.) प. ३६–४२. ८२–८७.

पया ? गडीपया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा-हत्थी, हत्थीपूयणया, मकुणहत्थी, खगा (ग्गा), गडा, जे यावन्न तहप्पगारा । सेत्त गडीपया । से किं त सणप्फया ? सणप्फया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा-सीहा, वग्घा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा, सियाला, विडाला, सुणगा, कोलसुणगा, (प्र-५००) कोकतिया, ससगा, चित्तगा, चिल्लुलगा, जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्त सणप्फया । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता । तंजहा-समुच्छिमा य गब्भवक्कन्तिया य । तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पन्नत्ता ।

कह्या छे ? गडीपदो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-हस्ती, हस्तीपूयणग, मकुणहस्ती, खड्गी-गेंडानी जात, गड-गेंडा, अने बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. एम गडीपदो कह्या सनखपद—नखसहित पगवाळा केटला प्रकारना कह्या छे ? नखसहित पगवाळा अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-सिंह, व्याघ्र, द्वीपी-दीपडा, अच्छ-रींछ, तरच्छ-तरस, परस्सर, शृगाल-शियाळ, बिडाल-बीलाडा, शुनक-कुतरा, कौलशुनक-घरना कुतरा, कोकतिका-लोंकडी, शशक-ससला, चित्रक-चितरा, चिल्लुलगा, अने ते सिवाय बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. एम नखसहित पगवाळा कह्या. ते स्थलचरो संक्षेपथी बे प्रकारना

खरीवाळा चतुष्पदोना भेदो बतावे छे-'से किं तं' इत्यादि बाकी बधुं सुगम छे परन्तु अहीं केटला एक जीवना भेदो अप्रसिद्ध छे ते लोकथी जाणी लेवा स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचना संक्षेपथी बे प्रकार छे-इत्यादि सत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं अहीं तेओना

घोडगा, गद्दभा, गोरक्खरा, कंदलगा, सिरिकंदलगा, आवत्तगा, जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं एगखुरा । से किं तं दुखुरा ? दुखुरा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–उट्टा, गोणा, गवया, रोज्झा, पसया, महिसा, मिया, संवरा, वराहा, अया, एलग–रुरु–सरभ–चमर–कुरंग–गोकन्नमादी, जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं दुखुरा । से किं तं गंडी-

---

प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—अश्व, अश्वतर (खच्चर), घोडा, गर्दभ (गधेडा), गोरक्षर, कंदलग, श्रीकंदलग, आवर्तग, ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते, एम एकखरीवाळा कह्या. बेखरीवाळा केटला प्रकारना कह्या छे ? बे खरीवाळा अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–ऊंट, गाय, गवय, रोझ, पसय, महिप, मृग, संवर (सावर), वराह, बकरा, घेटां, रुरु, शरभ, चमर, कुरंग अने गोकर्णादि. ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. एम बेखरीवाळा कह्या. गंडीपदो केटला प्रकारना

तिर्यग्योनिकपदनी साथे विशेषणसमास करवो. चशब्द प्रत्येकना पोतपोताना अनेक भेदोनो सूचक छे. ते अनेक भेदनुं क्रमथी प्रतिपादन करवानो इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'से किं तं' इत्यादि. चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो केटला प्रकारना छे? आचार्य उत्तर आपे छे—चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो चार प्रकारना कह्या छे. जेमके—'एकखरीवाळा' इत्यादि. तेमां दरेक पगे एक एक खरी जेओने छे ते अश्वादि एक खरीवाळा कहेवाय छे. दरेक पगे बब्बे खरीओ जेओने छे ते उष्ट्रादि बे खरीवाळा जाणवा. सुवर्णकारनी अधिकरणी–एरणने गंडी कहे छे' तेना जेवा पगवाळा हस्ती वगेरेने गंडीपद कहे छे. सणप्फया—सनखपदाः–दीर्घ नखयुक्त पगवाळा श्वानादिक कहेवाय छे. प्राकृत होवाथी सूत्रमां 'सणप्फया' एवो निर्देश छे. हवे एक

५१ से किं त थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया ? थलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता । तजहा-चउप्पयथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया य परिसप्पथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया य । से किं त चउप्पयथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया ? चउप्पयथलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता । तजहा-एगखुरा, बिखुरा, गडीपदा, सणप्फया । से किं त एगखुरा ? एगखुरा अणेगविहा पन्नत्ता । तजहा-अस्सा, अस्सतरा,

५१. स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना कह्या छे ? स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको अने परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको. चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचो केटला प्रकारना छे ? चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचो चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ एकखरीवाळा, २ बे खरीवाळा, ३ गडीपदो अने ४ सनखपद-नखयुक्त पगवाळा. एकखरीवाळा केटला प्रकारना कह्या छे ? एकखरीवाळा अनेक

जेना प्रकारो वगेरे बताव्या छे एवा पर्याप्त अने अपर्याप्त जलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचोना योनिथी उत्पन्न थयेला साडा बार लाख क्रोड जातिकुलो छे एम पूज्य तीर्थंकरोए कह्यु छे उपसहार करे छे—ए प्रमाणे जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या

'५१ हवे स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनु स्वरूप कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-जेने चार पग होय ते चतुष्पद अश्व वगेरे जाणवा उरसा-छाती वडे तथा भुजाओ-बे हस्त वडे परिसर्पन्ति-चाले ते परिसर्प साप, नोळीया वगेरे जाणवा त्यार पछी स्थलचर

एगागारा पन्नत्ता। सेत्तं सुंसुमारा। जे यावन्ने तहप्पगारा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पन्नत्ता। तंजहा—इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्ध-तेरसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। सेत्तं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया।

प्रकारना होय ते. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–संमूर्च्छिम अने गर्भव्युत्क्रान्तिक. तेमां जे संमूर्च्छिम छे ते बधा नपुंसक छे. तेमां जे गर्भव्युत्क्रान्तिक छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—स्त्री, पुरुष अने नपुंसक. ए प्रमाणे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोना योनिथी उत्पन्न थयेलां साडा बार लाख क्रोड जातिकुलो होय छे एम कह्युं छे. ए प्रमाणे जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको कह्या.

अथवा गर्भवासथी व्युत्क्रान्ति–निष्क्रमण जेओनुं छे ते गर्भव्युत्क्रान्तिक–गर्भज कहेवाय छे. तेमां जे संमूर्छिम छे ते बधा नपुंसक छे, कारण के संमूर्च्छिमपणुं नपुंसकपणानी साथे नियत संबंधवाळुं छे. तेमां जे गर्भव्युत्क्रान्तिक–गर्भज छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे. जेमके स्त्री, पुरुष अने नपुंसक. ए गर्भज अने संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो जे शरीरावगाहनादि द्वारोने विशे विचार तथा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच स्त्री, पुरुष अने नपुंसकोनो अल्पबहुत्वनो विचार ते जीवाभिगम सूत्रनी टीकामां अमे कर्यो छे तेथी जाणी लेवो. ए प्रमाणे

---

१ जुओ जीवाभिगमटीका (आ. स.) प. ३६–४२. ८२–८७.

थामच्छा, लभणमच्छा, पडागा, पडागाइपडागा, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं मच्छा। से किं तं कच्छभा? कच्छभा दुविहा पन्नत्ता। तंजहा-अट्ठिकच्छभा य मंसकच्छभा य। सेत्तं कच्छभा। से किं तं गाहा? गाहा पंचविहा पन्नत्ता। तंजहा—१ दिली, २ वेढगा, ३ मुद्धया, ४ पुलया, ५ सीमागारा। सेत्तं गाहा। से किं तं मगरा? मगरा दुविहा पन्नत्ता। तंजहा-१ सोंडमगरा य २ मट्ठमगरा य। सेत्तं मगरा। से किं तं सुंसुमारा? सुंसुमारा

(स्वस्तिक) मत्स्य, लभनमत्स्य, पताका, पताकातिपताका, अने ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. ए प्रमाणे मत्स्यो कह्या. कच्छपो केटला प्रकारना छे? कच्छपो बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे अस्थिकच्छपो अने मांसकच्छपो. एम कच्छपो कह्या. ग्राहो केटला प्रकारना छे? ग्राहो पांच प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-१ दिली, २ वेढग-वेष्टक, ३ मुद्धय-मूर्धज, ४ पुलक अने ५ सीमाकार एम ग्राहो कह्या. मगरो केटला प्रकारना छे? मगरो बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-सोंड मगर अने मट्ठ मगर एम मगरो कह्या. शिशुमारो केटला प्रकारना छे? शिशुमार एक प्रकारना कह्या छे. एम शिशुमारो कह्या. ते सिवाय बीजा जे तेवा

बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे-संमूर्च्छिम अने गर्भव्युत्क्रान्तिक-गर्भज. अहीं मूर्च्छ् धातु मोह अने समुच्छ्राय-व्याप्तिना अर्थमां छे सम् उपसर्गपूर्वक मूर्च्छ् धातुथी भाव-क्रियाना अर्थमां अ प्रत्यय थइने 'संमूर्च्छ' शब्द थाय छे, एटले गर्भ अने उपपात जन्म सिवाय एम ज प्राणीओनी उत्पत्ति थवी, ते वडे उत्पन्न थयेला ते संमूर्च्छिम कहेवाय छे [अहीं संमूर्च्छ शब्दथी इम प्रत्यय थयो छे] गर्भमां जेनी व्युत्क्रान्ति-उत्पत्ति छे तेओ (अहीं व्युत्क्रान्तिशब्द उत्पत्तिवाचक छे, केमके ते अर्थमां पूर्वाचार्यनी प्रसिद्धि छे)

५०. से किं तं जलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया? जलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया पंचविहा पन्नत्ता । तंजहा—१ मच्छा, २ कच्छभा, ३ गाहा, ४ मगरा, ५ सुंसुमारा । से किं तं मच्छा ? मच्छा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—सण्हमच्छा, खवल्लमच्छा, जुंगमच्छा, विज्झडियमच्छा, हलिमच्छा, मगरिमच्छा, रोहियमच्छा, हलीसागरा, गागरा, वडा, वडगरा, गब्भया, उसगारा, तिमी, तिमिंगिला, णक्का, तंदुलमच्छा, कणिक्कामच्छा, सालि, सत्थि-

५०. जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे? जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको पांच प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ मत्स्य, २ कच्छप, ३ ग्राह, ४ मगर अने ५ शिशुमार. मत्स्यो केटला प्रकारना छे? मत्स्यो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सण्हमच्छा–श्लक्ष्ण मत्स्यो, खवल्लमत्स्यो, जुंगमत्स्यो, विज्झडिय मत्स्यो, हलिमत्स्यो, मगरिमत्स्यो, रोहितमत्स्यो, हलीसागर, गागर, वड, वडगर, गब्भय, उसगार, तिमि, तिमिंगिल, नक्र, तंदुलमत्स्य, कणिकामत्स्य, सालि, सत्थिय-

५०. जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे? आचार्य उत्तर आपे छे—जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको पांच प्रकारना छे. ते पांच प्रकार बतावे छे— १ मत्स्य, २ कच्छप, सूत्रमां 'कच्छभ' पाठ छे त्यां पकारनो भकार प्राकृत होवाथी थयेलो छे. ३ ग्राह–झुड, ४ मकर–मगर अने ५ शिशुमार. प्राकृत होवाथी सूत्रमां 'सुंसुमार' एवो पाठ छे. मत्स्यादिनो परस्पर भेद लोकथी जाणी लेवो. परन्तु कच्छपना भेदोमां अस्थिकच्छप अने मांसकच्छप ए बे भेद छे. तेमां घणाअस्थिवाळा काचवा ते अस्थिकच्छप, अने घणामांसवाळा काचवा ते मांसकच्छप जाणवा. 'ते समासओ' इत्यादि. ते जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संक्षेपथी

४९. से किं त पचेन्द्रियतिरिक्खजोणिया ? पंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता। तजहा–१ जलयरपंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य, २ थलयरपंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य, ३ खहयरपंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य।

पृथिवीनैरयिको, ३ वालुकाप्रभा पृथिवीनैरयिको, ४ पंकप्रभा पृथिवीनैरयिको, ५ धूमप्रभा पृथिवीनैरयिको, ६ तम प्रभा पृथिवीनैरयिको, ७ तम तमःप्रभा पृथिवीनैरयिको. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. एम नैरयिको कह्या.

४९ पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे ? पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको त्रण प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको, २ स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको, ३ खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको.

रत्नप्रभापृथिवीनैरयिको वगेरे. रत्न–वज्र, वैडूर्य वगेरे, प्रभाशब्द अहीं बधे स्थळे स्वभाववाचक छे तेथी रत्नो जेनु प्रभा–स्वरूप छे ते रत्नप्रभा, एटले रत्नप्रचुर–बहु प्रकारना रत्नोवाळी, रत्नमयी पृथिवी तेमां थयेला नैरयिको ते रत्नप्रभापृथिवीनैरयिको कहेवाय छे ए प्रमाणे शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिको वगेरे सर्वधे जाणवुं

४९. हवे उद्देशना क्रमने अनुसरी तिर्यंच पंचेन्द्रियोनु स्वरूप प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे–पंचेन्द्रिय तिर्यंचो त्रण प्रकारना छे—जलचर इत्यादि 'जले चरन्ति' पाणीमां फरे ते जलचर. स्थलने विषे फरे ते स्थलचर, खे–आकाशे चरन्ति ख–आकाशने विषे चाले ते खेचर. प्राकृत होवाथी अने आर्ष होवाथी मूळ सूत्रमां 'खहयर' एवो पाठ छे त्यार बाद पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक शब्दना साथे विशेषण समास करवो

४८. से किं तं नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता। तंजहा–१ रयणप्पभापुढविनेरइया, २ सक्करप्पभापुढविनेरइया, ३ वालुयप्पभापुढविनेरइया, ४ पंकप्पभापुढविनेरइया, ५ धूमप्पभापुढविनेरइया, ६ तमप्पभापुढविनेरइया। ७ तमतमप्पभापुढविनेरइया। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्तं नेरइया।

आ प्रमाणे—१ नैरयिक–पंचेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना, २ तिर्यंचयोनिक–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना, ३ मनुष्य–पंचेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अने ४ देव–पंचेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना.

४८. नैरयिको केटला प्रकारना छे ? नैरयिको सात प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे १–रत्नप्रभापृथिवीनैरयिको, २ शर्कराप्रभा

योनि–उत्पत्तिस्थान ते तिर्यग्योनि, तेमां रहेला ते तैर्यग्योनि, एवा पंचेन्द्रिय संसारी जीवोनी प्ररूपणा ते तैर्यग्योनिक संसार समापन्न जीवप्रज्ञापना. मनुशब्द मनुष्यनो वाचक छे. जेमके राजन् शब्द राजन्यनो वाचक छे. मनुना अपत्य ते मनुष्यो, अहीं य प्रत्यय जाति अर्थमां थयेलो होवाथी मनुष्य शब्द राजन्य शब्दनी पेठे जातिवाचक छे. एवा मनुष्य पंचेन्द्रिय संसारी जीवोनी प्ररूपणा ते मनुष्य–पंचेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना. 'दीव्यन्ति'–जे स्वेच्छाए क्रीडा करे ते देवो, ते भवनपति वगेरे जाणवा. एवा पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीवोनी प्रज्ञापना ते देव–पंचेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना.

४८. हवे नैरयिकोनुं स्वरूप प्रतिपादन करवा माटे प्रश्न अने उत्तर सूत्र कहे छे.–'से किं तं' इत्यादि. नैरयिको पृथिवीना भेदथी सात प्रकारना छे, बीजी रीते तो तेना घणा भेदो थइ शके माटे पृथिवीना भेदथी तेना सात प्रकार बतावे छे–'तंजहा' इत्यादि.

पज्जत्ताण' नव जाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइ भवतीति मक्खाय। सेत्त चउरिंदिय-ससारसमावन्न-जीवपन्नवणा।

४७. से किं त पचेन्द्रिय-ससारसमावन्न-जीवपन्नवणा? २ चउव्विहा पन्नत्ता। तजहा-नेरइयपर्चिदिय-ससार-समावन्न-जीवपन्नवणा, तिरिक्खजोणियपचिन्दिय-ससारसमावन्न-जीवपन्नवणा, मणुस्सपंचिन्दिय-ससारसमा-वन्न-जीवपन्नवणा, देवपचिन्दिय-ससारसमावन्न-जीवपन्नवणा।

गोमयकीडा, अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते. ते बधा संमूर्च्छिम अने नपुसक छे. ते सक्षेपथी बे प्रकारना छे ते आ प्रमाणे—पर्याप्त अने अपर्याप्त. ए पूर्वोक्त पर्याप्त अने अपर्याप्त चउरिन्द्रिय जीवोना योनिथी उत्पन्न थयेलां नव लाख कोड जातिकुलो छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रिय ससारी जीवप्रज्ञापना कही

४७. पंचेन्द्रिय-ससारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? पंचेन्द्रिय-ससारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना चार प्रकारे छे. ते

---

४७. हवे पंचेन्द्रिय संसारी जीवनु स्वरूप कहे छे-पंचेन्द्रिय-ससारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? सूरि कहे छे-पचेन्द्रिय-ससारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना चार प्रकारे छे ते आ प्रमाणे-'नैरयिक' इत्यादि अय-इष्ट फळ आपनार कर्म, ते जेथी गयु छे ते निरय एटले नरकावासो तेने विषे थयेला ते नैरयिको, तेवा पचेन्द्रिय संसारसमापन्न जीवोनी प्रज्ञापना-प्ररूपणा करवी ते नैरयिक-पचेन्द्रिय-ससारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना अञ्च् धातु गत्यर्थक छे 'तिरोऽञ्चति' जे तीरछा-वाका चाले ते तिर्यंच, तेओनी

४६. से किं तं चउरिंदिय-संसारसमावन्न-जीवपन्नवणा? २ अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा-अंधिय-पत्तिय-मच्छिय-मसगा कीडे तहा पयंगे य। ढंकुण-कुक्कड-कुक्कुह-नंदावत्ते य सिंगिरडे ॥ किण्हपत्ता, नीलपत्ता, लोहियपत्ता, हालिद्दपत्ता, सुक्किल्लपत्ता, चित्तपक्खा, विचित्तपक्खा, ओहंजलिया, जलचारिया, गंभीरा, णीणिया, तंतवा, अच्छिरोडा, अच्छिवेहा, सारंगा, नेउरा, दोला, भमरा, भरिली, जरुला, तोट्टा, विंछुया, पत्तविच्छुया, छाणविच्छुया, जलविच्छुया, पियंगाला, कणगा, गोमयकीडा, जे यावन्ने तहप्पगारा। सव्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्ता-

---

४६. चउरिन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? चउरिन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना अनेक प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—अंधिय, पत्तिय, मक्षिका, मशक (मच्छर), कीट, पतंग, ढंकुण (वगाइ), कुक्कड, कुक्कुह, नंदावर्त, सिंगिरड, कृष्णपत्र, नीलपत्र, लोहितपत्र, शुक्लपत्र, चित्रपक्ष, विचित्रपक्ष, ओहंजलिया, जलचारिका, गंभीर, णीणिय, तंतव, अच्छिरोड, अक्षिवेध, सारंग, नेउर, दोला, भ्रमर, भरिली, जरुला, तोट्टा, विंछी, पत्रविंछी, छाणविंछी, जलविंछी, पियंगाल, कणग,

---

४६. हवे चउरिन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना कहे छे-'से किं तं' इत्यादि. आ चउरिन्द्रिय जीवो लोक थकी जाणी लेवा. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए चउरिन्द्रिय जीवोना योनिथी उत्पन्न थयेलां नव लाख क्रोड जातिकुलो होय छे. बाकीनो अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो. उपसंहार कहे छे-'ए प्रमाणे चउरिन्द्रिय संसारी जीवनी प्रज्ञापना कही.'

यंटा, इंदकाइया, इंदगोवया, तुरुतुयगा, कुच्छलवाहगा, जूया, हालाहला, पिसुया, सयवाइया, गोम्ही, हत्थिसोंडा, जे यावन्ने तहप्पगारा। सव्वे ते सम्मुच्छिमा नपुंसगा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठ जाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। सेत्तं तेइंदिय-संसारसमावन्न-जीवपन्नवणा।

लहुय, सुभग, सोवत्थिय–सौवस्तिक, सुयवेंट, इंदकाइय–इन्द्रकायिक, इन्दगोवय–इन्द्रगोप, ५ तुरुतुंबग, कुच्छलवाहग, जूया–जू, हालाहल, पिसुय, सयवाइय–शतपादिका, गोम्ही (कानखजुरा), हत्थिसोंड–हस्तिशौंड अने ते सिवायना बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते. ते बधा सम्मूर्च्छिम अने नपुंसक होय छे. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एवा प्रकारना ए तेइन्द्रिय जीवोना योनिथी उत्पन्न थयेलां आठ लाख क्रोड जातिकुलो होय छे–ए प्रमाणे कह्यु छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय-संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना कही.

तेइन्द्रिय जीवो देशविशेषथी के लोक थकी जाणी लेवा परन्तु 'गोम्ही' कर्णशृगालिका–कानखजुरो समजवो 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ते सिवाय बीजा जे तेवा प्रकारना होय ते तेइन्द्रियो जाणवा 'ते बधा सम्मूर्छिम अने नपुंसक छे'–इत्यादि पूर्वनी पेठे जाणवुं ए औपयिकप्रमुख पर्याप्ता अपर्याप्ता तेइन्द्रिय जीवोना बधा मळीने योनिथी उत्पन्न थयेला आठ लाख क्रोड जातिकुलो होय छे–एम तीर्थंकरोए कह्यु छे उपसंहार करे छे–एम तेइन्द्रिय संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना कही

१ अरुतुंबुगा शां सा

४५. से किं तं तेइंदिय-संसारसमावन्न-जीवपन्नवणा? तेइंदिय-संसारसमावन्न-जीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा-ओवइया, रोहिणिया, कुंथू, पिपीलिया, उद्दंसगा, उद्देहिया, उक्कलिया, उप्पाया, उप्पाडा, तणाहारा, कट्ठाहारा, मालुया, पत्ताहारा, तणबेंटिया, पत्तबेंटिया, पुप्फबेंटिया, फलबेंटिया, बीयबेंटिया, तेबुरणमिंजिया, तओसिमिंजिया, कप्पासट्ठिमिंजिया, हिल्लिया, झिल्लिया, झिंगिरा, किंगिरिडा, बाहुया, लहुया, सुभगा, सोवत्थिया, सुय-

४५. तेइन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? तेइन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना अनेक प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—औपयिक, रोहिणिय, कुंथु, पिपीलिका (कीडी), उद्दंसग-डांस, उद्देहिका-उद्धइ, उक्कलिया, उप्पाय,-उत्पाद, उप्पाड, उत्पाटक, तणाहार, (तृणाहार), कट्ठाहार, (काष्ठाहार), मालुका, पत्ताहार (पत्राहार), तणबेंटिय, पत्तबेंटिय, पुष्पबेंटिय, फलबेंटिय, बीजबेंटिय, तेबुरणमिंजिया, २ तओसिमिंजिय, कप्पासट्ठिमिंजिय, हिल्लिय, ३ झिल्लिय, झिंगिर, किंगिरिड, ४ वाहुय,

जातिभेदो होवाथी योनिथी उत्पन्न थयेलां अनेक जातिकुलो संभवे छे, माटे बेइन्द्रियोना सात लाख क्रोड जातिकुलो घटे छे. उपसंहार करे छे-ए प्रमाणे बेइन्द्रिय संसारी जीवो कह्या.

४५. हवे तेइन्द्रिय संसारी जीवोनुं निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे-तेइन्द्रिय संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? भगवान् कहे छे के तेइन्द्रिय संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना अनेक प्रकारनी छे. तेने 'तंजहा'-इत्यादि वडे बतावे छे-आ औपयिक प्रमुख

१ 'नेउरणमज्जिया' शां. सा. २ तेओस मिंजिया शां. सा. ३ झल्लिया शां. सा. ४ पाहुया शां. सा.

तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसिणं एवमाइयाणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्त जाइकुलकोडि-जोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। सेत्तं बेइंदिय-संसारसमावन्न-जीवपन्नवणा।

संमूर्छिम अने नपुंसक छे. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. ए पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बेइन्द्रियोना सात लाख क्रोड कुलो योनिप्रमुख—योनिथी उत्पन्न थयेलां होय छे-एम कह्यु छे. ए प्रमाणे बेइन्द्रिय संसारी जीवो कह्या.

अने संमूर्छिम नपुंसक होय छे-एबु तथार्थवगतुं वचन छे ते बेइन्द्रियो 'समासतः' संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, चशब्द योनि अने कुलना भेदथी पोताना अनेक भेदोनो सूचक छे पुलाकृमि वगेरे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एवा बेइन्द्रियोना बधा मळीने योनिप्रमुख-योनिथी उत्पन्न थयेला सात लाख क्रोड जातिकुलो होय छे-एम तीर्थंकरोए कह्यु छे अहीं तात्पर्य आ छे-जाति, कुळ अने योनिना स्वरूपने जाणवा माटे पूर्वाचार्योए स्थूल उदाहरण बताव्युं छे ते आ प्रमाणे-जाति एटले तिर्यंचगति, तेना कुलो—कृमिकुल, कीडाओनुं कुळ, वींछीनुं कुळ वगेरे. आ कुलो योनिप्रमुख—योनिथी उत्पन्न थयेला छे ते आ प्रमाणे— एकज योनिमां अनेक कुलो होय छे, जेमके छाणनी योनिमां कृमिकुल, कीडानुं कुळ, वींछीनुं कुळ वगेरे. अथवा जातिकुल' ए एक पद छे जातिकुल अने योनिमा परस्पर भेद छे कारण के एक पण योनिमा अनेक जातिकुलनो संभव छे जेमके एकज योनिमा कृमिजातिकुळ, कीटजातिकुळ, वृश्चिकजातिकुल वगेरे होय छे ए प्रमाणे एकज योनिमा अवान्तर-पेटा

णउरा, सोमंगलगा, वंसीमुहा, सूइमुहा, गोजलोया, जलोया, जालाउया, संखा, संखणगा, घुल्ला, खुल्ला, गुलया, खंधा, वराडा, सोत्तिया, मुत्तिया, कलुयावासा, एगओवत्ता, दुहओवत्ता, नंदियावत्ता, संवुक्का, माइवाहा, सिप्पिसंपुडा, चंदणा, समुद्दलिक्खा, जे यावन्ने तहप्पगारा । सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता।

गंडूयलग–गंडोला–मोटा कृमि, गोलोम, णउर, सोमंगलग, वंसीमुख, सूचिमुख, गोजलौका, जलौका, जालाउय, शंख, शंखनक–शंखला, घुल्ला, खुल्ला, गुलया, खंध, वराट–कोडा, शौक्तिक, मौक्तिक, कलुयावास, एकत आवर्त, द्विधाऽऽवर्त, नंदिकाऽऽवर्त, संवुक, —शंबुक, मातृवाह, शुक्तिसंपुट, चंदनक, समुद्रलिक्षा, अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना होय ते. ते वधा

बेइन्द्रियो अनेक प्रकारना कह्या छे–'पुलाकिमिया' वगेरे. पुलाकिमिया–गुदाना भागमां उत्पन्न थयेला कृमि. कुक्षि–उदरमां उत्पन्न थयेला ते कुक्षिकृमि. शंख–समुद्रमां उत्पन्न थयेला प्रसिद्ध छे. शंखनक–नाना शंख, जेने शंखला कहे छे. घुल्ला–घुल्लिका, खुल्ला–क्षुद्र नाना शंख, के जे समुद्रमां शंखनी आकृतिवाळा होय छे. वराट–कोडा, शुक्तिसंपुट–संपुटरूपे छीपो होय छे ते, चंदनक–अक्ष, साधुओ स्थापनाचार्य तरीके राखे छे ते. बाकीना बेइन्द्रियो संप्रदाय–परंपराने अनुसरीने जाणवा. 'जेयावन्ने तहप्पगारा' ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना जे मृत कलेवरमां उत्पन्न थयेला कृमि वगेरे होय ते वधा बेइन्द्रियो जाणवा. ते संमूर्च्छिम छे अने संमूर्छिम होवाथी ज नपुंसक होय छे. कारण के संमूर्छिमो अवश्य नपुंसक होय छे. "नारकसंमूर्छिनो नपुंसकानि" (त० अ० २ सू. ५०) नारक

१ णेउरा आ. स.

४४ से कि त बेइन्दिया ? बेइन्दिया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–पुलाकिमिया, कुच्छिकिमिया, गडूयलगा, गोलोमा,

४४. बेइन्द्रिय जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ? बेइन्द्रिय जीवो अनेक प्रकारना कह्या छे–ते आ प्रमाणे–पुलाकिमिया, कुक्षिकृमि,

नथी, परन्तु तेवा प्रकारना होय पहेले प्रत्येक वनस्पतिरूपे होय के साधारण वनस्पतिरूपे होय ते पण वनस्पतिकायपणे जाणवा 'ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे' इत्यादि पूर्वनी पेठे जाणवुं परन्तु ज्यां एक बादर पर्याप्त जीव छे त्यां तेने आश्रयी अपर्याप्ता जीवो कदाचित् संख्याता, कदाचित् असंख्याता अने कदाचित् अनन्ता होय छे प्रत्येक वनस्पतिकायिको संख्याता के असंख्याता होय छे, अने साधारण वनस्पतिकायिक तो अवश्य अनन्ता होय छे

आ साधारण अने प्रत्येकरूप अमुक वनस्पतिनी विशेषता जणावनारी आ गाथाओ अहीं बतावे छे–'कन्दा य' इत्यादि नव गाथाओ छे–कन्द–सूरण कंदादि, कंदमूलो अने वृक्षमूलो ए साधारण वनस्पतिविशेष छे गुच्छो, गुल्मो अने वल्लीओ प्रसिद्ध छे वेणु–वांस, तृण–अर्जुनादि जाणवा. पद्म, उत्पल अने शृंगाटक वगेरे प्रसिद्ध छे 'हढ' जलमां थती एक जातनी वनस्पति छे सेवाळ प्रसिद्ध छे कृष्ण, पनक, अवक, कच्छ, भाणी अने कन्दुक ए एक जातनी साधारण वनस्पति छे आ उपर कहेली बीज पीश वनस्पतिओमां कोइनी पण त्वचादिमांनी कोइ कोई पण योनि (उत्पत्ति स्थान) होय छे तात्पर्य ए छे के–कोइनी त्वचा, योनि होय छे, कोइनी छाल, यावत् कोईनुं मूळ, कोइनो अग्रभाग, कोइनो मध्यभाग अने कोइनुं बीज योनिरूप होय छे 'सेत्त' इत्यादि ए प्रमाणे चारे निगमनो सुगम छे ए प्रमाणे एकेन्द्रिय जीवो कह्या

४४ हवे बेइन्द्रिय जीवोनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे—बेइन्द्रिय जीवो केटला प्रकारे छे ? आचार्य उत्तर आपे छे के

मान करतां निगोदना जीवो अनन्त लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण थाय छे. हवे प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवोनुं प्रमाण कहे छे–एक एक लोकाकाशना प्रदेश उपर एक एक प्रत्येक वनस्पतिना जीवने स्थापन करवो. अने ए रीते मान करतां प्रत्येक वनस्पतिना जीवो असंख्य लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण थाय छे. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता प्रत्येक अने साधारण वनस्पति जीवोनुं प्रमाण बतावे छे— घनरूपे कल्पेला लोकनी प्रतर श्रेणिना असंख्यातमा भागे जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला पर्याप्ता प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवो छे, अने अपर्याप्ता प्रत्येक वनस्पतिना जीवो असंख्यात लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण होय छे. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता साधारण वनस्पतिकायिक जीवोनुं प्रमाण अनन्त लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण होय छे. 'जे यावन्ने तहप्पगारा' ते सिवायना बीजा जे अहीं कह्या

१ " चउदसरज्जू लोगो बुद्धिकओ होइ सत्तरज्जुघणो । तद्दीहएगपएसा सेढी पयरो य तव्वग्गो " ॥ लोक उंचाइमा चौद रज्जु–राज प्रमाण छे अने नीचे कंईक न्यून सात रज्जुप्रमाण पहोळो छे. अने पछी घटतो घटतो तीरछा लोकना मध्य भागमां तेनो विस्तार एक रज्जु प्रमाण छे. त्यार बाद क्रमशः वृद्धि पामतो ब्रह्मलोकना मध्य भागमां पाच रज्जु पहोळो छे अने पछी घटतो उपर लोकान्ते एक रज्जु प्रमाण छे. तेथी तेनी आकृति केड उपर हाथ मूकी पहोळा पग करी उभा रहेला पुरुषना जेवी थाय, छे, आ प्रकारना लोकनो बुद्धिथी —कल्पनाथी घन करता चतुष्कोण लंबाइ, पहोळाई अने जाडाईमां सात रज्जु प्रमाण थाय छे. ए प्रमाणे घनीकृत लोक प्रमाण दीर्घ–लांबो एक एक आकाश प्रदेशनी पंक्ति ते सूचि श्रेणि कहेवाय छे. अने ते सूचि श्रेणिनो वर्ग करवो एटले सूचि श्रेणिना आकाश प्रदेशोने तेटली संख्याए गुणवा एटले प्रतर कहेवाय छे. जेम के असत्कल्पनाए त्रण प्रदेशनी सूचि श्रेणिने त्रणे गुणतां नव प्रदेशनो प्रतर थाय छे. जुओ–शतक गा. ९७.

असंखिज्जा, सिय अणंता। एएसिणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ तंजहा—कंदा य कंदमूला य, रुक्खमूला इयावरे। गुच्छा य गुम्मा वल्ली य वेणुयाणि तणाणि य॥१॥पउमुप्पलं संघाडे हढे य सेवाल किण्हए पणए। अवए य कच्छ भाणी कदुक्केगूणवीसइमे ॥२॥ तय–छल्ली–पवालेसु य पत्त–पुप्फ–फलेसु य। मूलग्गमज्झबीएसु जोणी कस्सइ कित्तिया॥३॥सेत्तं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया। सेत्तं बायरवणस्सइकाइकाइया। सेत्तं वणस्सइ-काइया। सेत्तं एगिंदिया।

गाथाओ जाणवी–१ कन्द, २ कन्दमूल, ३ वृक्षमूल, ४ गुच्छ, ५ गुल्म, ६ वल्ली, ७ वेणु–वांस, ८ तृण, ९ पद्म, १० उत्पल, ११ संघाट, १२ हढ, १३ सेवाळ, १४ कृष्णक, १५ पनक, १६ अवक, १७ कच्छ, १८ भाणी अने १९ कदुक–एओमां कोइ कोइ वनस्पतिनी त्वचा, छाल, प्रवाळ, पांदडां, पुष्प, फळ, मूळ, अग्र, मध्य अने बीजने विषे योनि होय छे, ए प्रमाणे साधारण वनस्पतिकायिको, बादर वनस्पतिकायिको, वनस्पतिकायिको अने एकेन्द्रिय जीवो कह्या.

जाणी शकाय छे अने ते आ प्रमाणे छे—" गोळा य असंखेज्जा होंति निगोया असंखया गोळे। एक्केक्को य निगोओ अणंतजीवो मुणेयव्वो " ॥ असंख्याता गोळा छे, एक गोळामां असंख्याती निगोदो छे अने एक एक निगोद अनन्त जीवात्मक जाणवा

हवे ए निगोदना जीवोनुं प्रमाण बतावे छे—एक एक लोकाकाशना प्रदेश उपर एक एक निगोदनो जीव स्थापन करवो ए रीते

१ साधारण वनस्पतिना शरीरने निगोद कहे छे

पच्चक्खं ते परूविया जीवा । सुहुमा आणागिज्झा चक्खुप्फासं न ते [1]इंति ॥६१॥ जे यावन्ने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा तेसिणं वन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं । पज्जत्तगणिस्साए अपजत्तगा वक्कमंति । जत्थ एगो तत्थ सिय संखिज्जा, सिय

ते–बादर जीवो आ शरीरो वडे प्रत्यक्ष छे. अने सूक्ष्म जीवो आज्ञाग्राह्य छे, कारण के ते चक्षुनो विषय थता नथी. (६१.) ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना प्रत्येक के साधारण होय ते वनस्पतिकायपणे जाणवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. तेमां जे पर्याप्ता छे तेओना वर्णादेश, गन्धादेश रसादेश अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो थाय छे. तेओना संख्याता लाख योनिप्रवाहो छे. पर्याप्ताने आश्रयी अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक पर्याप्त छे त्यां कदाचित् संख्याता, असंख्याता के अनन्त अपर्याप्ता होय छे. ए वनस्पतिकायिक संबंधे आ

निगोद जीवोना शरीरो देखी शकाय छे, पण सूक्ष्म निगोदजीवोना शरीरो देखाता नथी. केमके तेओना शरीरो अनन्त जीवोना संघातरूप होवा छतां पण देखी शकाय तेवा स्वभाववाळां नथी. कारण के तेवा प्रकारना सूक्ष्म परिणाम वडे परिणत थयेलां छे. प्र०–शी रीते जाणी शकाय के निगोदरूप शरीरो अनन्त जीवोना परिणामथी परिणत थयेलां छे ? गुरु कहे छे के जिनवचनथी ज

१ यति शां. सा. वेंति ले. व. २ दस लाख योनि प्रत्येक वनस्पतिकायिकोनी अने चौद लाख योनि साधारण वनस्पतिकायिकोनी छे.

सरीराइं निगोयजीवाणऽणताण ॥५७॥ लोगागासपएसे निगोयजीव ठवेहि इक्किक्क । एव मविज्जमाणा हवंति लोगा अणता उ ॥५८॥ लोगागासपएसे परीत्तजीव ठवेहि इक्किक्क । एव मविज्जमाणा हवंति लोगा असंखिज्जा ॥५९॥ पत्तेया पज्जत्ता पयरस्स असखभागमित्ता उ । लोगाऽसखा पज्जत्तयाण' साहारणमणंता ॥६०॥ एएहिं सरीरेहिं

रहे छे.(५६) एक, बे, त्रण, यावत् संख्याता (के असख्याता) बादर निगोदजीवोना शरीरो जोवा शक्य नथी, पण अनन्त जीवोना शरीरो देखाय छे, (५७.) लोकाकाशना प्रदेश उपर एक एक निगोदनो जीव स्थापन करवो. ए प्रमाणे मान करता अनन्त लोको थाय छे. (५८.) लोकाकाशना एक एक प्रदेश उपर एक एक प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवने स्थापन करवो. ए प्रमाणे मान करतां असंख्याता लोक थाय छे. (५९.) पर्याप्ता प्रत्येक जीवो लोकाकाशना प्रतरना असख्यातमा भागे छे, अपर्याप्ता प्रत्येक जीवो असंख्यात लोकाकाश प्रमाण छे, अने साधारण जीवो अनन्त लोकाकाश प्रमाण छे. (६०.) एम प्ररूपणा करेला

प्रतीतिमा आवे तेवी रीते प्रतिपादन करे छे—जेम तपावेला लोढानो गोळो तप्त सुवर्णनी जेम बधो अग्निथी परिणत थाय छे तेम निगोदना जीवोने जाणो एटले तेवी रीते निगोदरूप पण एक एक शरीरमा ते शरीररूपे परिणत थयेला अनन्त जीवोने जाणो (५६) एम छतां एक, बे, त्रण, यावत् संख्याता अने (वा शब्दथी) असख्याता निगोद जीवोना शरीरो जोई शकवा योग्य नथी, कारण के तेवा प्रकारना शरीरोनो अभाव छे एक, बे, त्रण, सख्याता के असख्याता जीवोए ग्रहण करेला अनन्त वनस्पतिकायिकना शरीरो नथी पण अनन्त जीवोना पिंडरूप होय छे तो पछी शी रीते देखी शकाय ? तेना उत्तरमा कहे छे—'दीसंति' इत्यादि–बादर अनन्त

गहणं बहूण साहारणाण तं चेव । जं बहुयाणं गहणं समासओ तं पि इक्कस्स ॥५४॥ साहारणमाहारो साहारणमाणुपाणगहणं च । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं एयं॥५५॥जह अयगोलो धंतो जाओ तत्ततवणिज्जसंकासो। सव्वो अगणिपरिणओ निगोयजीवे तहा जाण ॥५६॥ एगस्स दोण्ह तिण्ह व संखिज्जाण व न पासिउं सक्का। दीसंति

होय छे अने जे बहु जीवोने होय छे ते पण संक्षेपथी एकने होय छे(५४).साधारण जीवोने साधारण आहार अने साधारण श्वासोच्छ्वासनुं ग्रहण- ए साधारण जीवोनुं लक्षण छे. (५५.) जेम तपावेला लोढानो गोळो तपेला सुवर्णना जेवो बधो अग्निपरिणत–अग्निथी व्याप्त थाय छे तेवी रीते निगोदना जीवो सवंधे जाण. एटले लोढाना गोळा जेवा निगोदरूप एक शरीरमां अनन्त जीवो अग्निनी पेठे व्याप्त थइने

प्राणापानग्रहण—श्वासोच्छ्वासने योग्य पुद्गलोनुं ग्रहण थाय छे, त्यार वाद एक काळे उच्छ्वास–निःश्वास होय छे. (५३.) एक साधारणवनस्पतिकायिक जीवने जे आहारादि पुद्गलोनुं ग्रहण थाय छे तेज घणा साधारण जीवोने समजवुं. तात्पर्य ए छे के जे आहारादिकने एक जीव ग्रहण करे छे तेना शरीरने आश्रयी रहेला वाकीना घणा जीवो पण तेज आहारादि ग्रहण करे छे, अने घणा जीवोने जे आहारादिनुं ग्रहण थाय छे ते संक्षेपथी–एक शरीरमां समावेश होवाथी एकने पण ग्रहण थाय छे. (५४.) उपर कहेली बावतनो उपसंहार करता कहे छे—' साधारण ' इत्यादि. एक शरीराश्रित बधा य जीवोनो उपर कह्या प्रमाणे जे साधारण आहार–आहार योग्य पुद्गलोनुं ग्रहण, साधारण श्वोसोच्छ्वासयोग्य पुद्गलोनुं ग्रहण, उपलक्षणथी साधारण उच्छ्वास–निःश्वास अने साधारण शरीरनी उत्पत्ति ते साधारण जीवोनुं लक्षण जाणवुं. (५५). हवे एक निगोदशरीरने विषे अनन्त जीवो परिणत थयेला होय छे तेम जे रीते

समय वक्कंताणं समयं तेसिं सरीरनिव्वत्ती । समयं आणुग्गहणं समयं ऊसासनीसासो ॥ ५३ ॥ इक्कस्स [illegible] ज

[साधारण जीवोनुं लक्षण]--एक साथे उत्पन्न थयेला ते जीवोनी एक काळे शरीरनी निष्पत्ति थाय छे, साथे ज श्वासोच्छ्वासनु ग्रहण अने साथे ज उच्छ्वास-निःश्वास होय छे. (५३) एकने ज जे आहारादि पुद्गलोनुं ग्रहण होय छे तेज घणा साधारण जीवोने

परिणमायेला होय छे, वाकोना किसलयादिनो आविर्भाव अवश्य मूळना जीवना परिणामथी थयेलो होतो नथी ' तेथी ' यथा किसलय उगता अनन्तकायिक होय छे ' इत्यादि गाथा कहेवानी छे तेनी साथे आ वाक्यनो विरोध नथी कारण के मूळ अने कूंपळनी अवस्थानी उत्पत्तिकाळे किसलयपणु नथी शु प्रत्येक वनस्पतिकायिकनुं सर्वदा शरीरावस्थाने आश्रयी प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकपणु छे के कोई अवस्थामां अनन्तकायिकपणु पण छे ? तेमज साधारण वनस्पतिकायिकनुं पण हमेशा अनन्तकायिकपणुं छे के कदाचित प्रत्येक वनस्पतिकायिकपणु पण संभवे छे ? तेना उत्तरमां ' सव्वो वि ' इत्यादि गाथा कहे छे. अहीं सर्वशब्द अपरिशेष-समस्तवाची छे समस्त प्रकारना प्रत्येक के साधारण वनस्पतिकाय किसलयावस्थाने प्राप्त थयेला होय त्यारे तीर्थंकर अने गणधरोए अनन्तकायिक कहेला छे, अने ते किसलयरूप अनन्तकायिक वृद्धि पामता अनन्तकायिक थाय के प्रत्येक वनस्पतिकायिकरूप थाय छे पहले के जो साधारण शरीर करवानुं होय तो साधारण थाय अने प्रत्येकशरीर करवानु होय तो प्रत्येक थाय केटला काळ पछी प्रत्येक थाय ? अन्तर्मुहूर्त पछी थाय छे आ प्रमाणे-निगोदना जीवोनी उत्कृष्टथी पण अन्तर्मुहूर्त काळनी स्थिति कही छे, अने त्यार बाद वधता ते प्रत्येकरूपे थाय छे

'समक' एक काळे उत्पन्न थयेला साधारण वनस्पतिकायिकोनी समक--एक काळे शरीरनी उत्पत्ति थाय छे, एक साथे

योनिभूत कहेवाय छे, अने विनष्टयोनिवाळुं होय ते अवश्य अचेतन होवाथी अयोनिभूत कहेवाय छे. योनिशब्दनो शो अर्थ छे? अविनष्ट शक्तिवाळुं जीवनुं उत्पत्ति स्थान एटले तेमां रहेलो जीवना परिणमननी शक्तिसहित होय ते योनि कहेवाय छे. ते योनिभूत बीजमां तेज पूर्वनो बीजनो जीव अथवा अन्य जीव आवीने त्यां उत्पन्न थाय छे. तात्पर्य ए छे के-बीजने उत्पन्न करनार जीव पोताना आयुषना क्षय थवाथी बीजनो त्याग करे छे. ते बीजने पाणी, काळ अने पृथिवीना संयोगरूप सामग्री प्राप्त थतां कदाचित तेज पूर्वनो बीजजीव मूलादि संबंधी नाम गोत्र बांधीने ते बीजमां उत्पन्न थाय छे, एटले त्यां आवीने मूलादिरूपे परिणत थाय छे. अने कदाचित् अन्य-पृथिवीकायिकादि जीव त्यां आवीने उपजे छे, 'योऽपि च मूले जीवः' जे जीव मूळने विषे छे एटले मूळरूपे परिणत थयेलो छे तेज जीव 'पत्रे प्रथमतया' प्रथम पांदडांरूपे परिणत थाय छे. माटे मूळ अने प्रथम पत्रनो कर्ता एक जीव छे. प्र०-जो एम छे तो 'सव्वो वि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ' यथा किसलय (कोमळ पांदडां) उगतां अनन्तकायिक कहेला छे—इत्यादि नीचेनी गाथानी साथे विरोध केम नहि आवे? उ०-अहीं बीजनो जीव के अन्य जीव बीजना मूळपणे उत्पन्न थईने तेनी उच्छूनावस्था-वृद्धि करे छे, अने त्यार पछी अनन्त जीवो अवश्य किसलयावस्था प्राप्त करे छे, त्यार बाद स्थितिना क्षय थवाथी ते अनन्त जीवो च्यवी जाय त्यारे आज मूळनो जीव अनन्त जीवना शरीरने पोताना शरीररूपे परिणमावीने प्रथम पांदडां सुधी वधे छे, माटे पूर्वोक्त वचननी साथे विरोध आवतो नथी. बीजा आचार्यो आ गाथानी आ प्रमाणे व्याख्या करे छे—प्रथम पत्र एटले बीजनी वृद्धिनी अवस्था, तेथी मूळ अने प्रथम पांदडानो कर्ता एक जीव छे. तात्पर्य ए छे के 'मूळ अने समुच्छूनावस्था-वृद्धिनी अवस्थानो कर्ता एक जीव छे'—ए नियम बताववाने माटे कह्युं छे के-'मूळ अने समुच्छूनावस्था-वृद्धिनी अवस्था बन्ने एक जीववडे अवश्य

सव्वोऽवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ । सो चेव विवड्ढंतो होइ परित्तो अणंतो वा ॥५२॥

योनिरूप बीजमां ते बीजनो जीव उत्पन्न थाय के अन्य जीव उत्पन्न थाय छे, परन्तु जे मूळनो जीव छे तेज प्रथमना पांदडांरूपे परिणमे छे. सर्व प्रकारना किसलय उगतां अनन्तकायिक कहेलां छे अने ते वधतां प्रत्येक होय छे के अनन्तकायिक होय छे. (५२.)

(४८-४९.) आ कुहणादि वनस्पतिना भेदो लोक थकी जाणी लेवा ए अनन्तजीवात्मक छे. परन्तु कुहुणने विषे विकल्प जाणवो कोइक कुहुण अमुक देशमां अनन्तजीवात्मक होय छे अने कोइक असंख्यात जीवात्मक होय छे (५०)

'शु बीजनो जीव ज मूळादिरूपे परिणत थाय छे एटले बीज अने मूळादिनो एक ज जीव होय छे के बीजना जीवना चव्या पछी बीजो ज जीव मूळादिमां उत्पन्न थाय छे'–ए प्रमाणे अन्यना प्रश्ननी आशंका करी तेनो उत्तर आपे छे—योनिभूत–योनिअवस्थाने प्राप्त थयेला एटले जेणे योनिपरिणामनो त्याग नथी कर्यो एवा बीजमां ते जीव अथवा बीजो जीव उत्पन्न थाय छे बीजनी बे अवस्थाओ छे–१ योनिअवस्था अने अयोनिअवस्था तेमां बीज ज्यांसुधी योनिअवस्थानो त्याग करतु नथी, पण जीवरहित–अचेतन थयेलु होय छे त्यांसुधी ते योनिभूत कहेवाय छे 'बीज जीवरहित थयेलु छे' ते निश्चयथी जाणी शकातु नथी, तेथी विशिष्ट ज्ञान रहित मनुष्य एटले अत्यारे सचेतन के अचेतन होय पण जे अविनष्टयोनिवाळु–उगवानी शक्तिवाळु होय ते बीज

१ कुहणा सबधे लोकप्रकाशमां कह्यु छे के—"कुहणा अपि बोद्धव्या नामान्तरतिरोहिता । स्युश्च देशविशेषेषु चतुर्थोपांगदर्शिता"। कुहणा अमुक देशमां प्रसिद्ध छे पण तेना बीजा नामो वडे ओळखाता नथी, अने ते चोथा उपांग पन्नवणामां बताव्या छे जुओ पत्र ४१८

घोसाडयं पंडालं तिंदूयं चेव तेंदूसं ॥४८॥ विंटसमंसकडाहं एयाइं हवंति एगजीवस्स। पत्तेयं पत्ताइं सकेसरम-केसरं मिंजा ॥४९॥ सप्फाए सज्झाए उव्वेहलिया य कुहणकुंदुक्के। एए अणंतजीवा कुंदुक्के होइ भयणा उ ॥५०॥
बीए जोणिब्भूए जीवो वक्कमइ सो व अन्नो वा। जोऽवि य मूले जीवो सोऽवि य पत्ते पढमयाए ॥५१॥

(४६–४७). पूसफळ–पुष्यफळ, कालिंगडा, तुंव, त्रपुष–काकडी, एलवालुक, वालुक, घोपातक, पडोल–पटोल, तिंदुक अने-तिंदूस–एओना वृन्त–डींटीया, मांस–गर्भ अने कटाह–उपरनी छाल एक जीवना छे. पांदडां एक एकजीववाळां छे. केसरसहित अने केसररहित दरेक बीज एक एक जीवाश्रित छे. (४८–४९.) सप्फाय, सज्झाय, उव्वेहलिया, कुहणा अने कुंदुक्क ए-अनन्त-जीवात्मक छे. तेमां कुंदुकने विषे भजना–विकल्प जाणवो. (५०).

दरेक पांदडां एक एक जीवात्मक होय छे अने पुष्पो अनेक जीवात्मक छे. (४५–४७.) पूसफळ, ए प्रमाणे कालिंग फळ, तुंबीफळ, त्रपुष (काकडी), एलवालु–चीभडानो जात, वालुक–चीभडुं, घोपातक–कडवा तुरीयां, पटोल, तेंदुक अने तिंदुस फळो छे, ए प्रत्येक फळोनां वृन्त, समांस–गर्भसहित कटाह–फळना उपरनी छाल एटले वृन्त, गर्भ अने कटाह ए त्रणे एक जीवना छे–अर्थात् त्रणे एक जीवाश्रित छे. तथा पूसफळथी मांडी तिंदुस सुधीनी दरेक वनस्पतिना पांदडां प्रत्येकजीवाश्रित छे. एटले एक एक जीवाश्रित छे. केसर सहित अने केसर रहित बीज पण प्रत्येक जीवाश्रित होय छे. एटले केसर अने बीजो दरेक प्रत्येक जीवाश्रित छे.

१ सप्पासे शां. सा. २ सव्वाए शां. सा. ३ जीवे शां. सा.

विंट बाहिरपत्ता य कन्निया चेव एगजीवस्स। अब्भितरगा पत्ता पत्तेय केसरा मिंजा ॥४५॥ वेणु-नल-इक्खुवाडिय-समासइक्खू य इक्कडे रंडे। करकर सुंठि विहंगु तणाण तह पव्वगाणं च ॥४६॥ अच्छि पव्वं बलिमोडओ य एगस्स होंति जीवस्स। पत्तेय पत्ताइ पुप्फाइ अणेगजीवाइ ॥४७॥ पुस्सफलं कालिंगं तुंब तउसेलवालुवालुकं।

जाणवा. (४१) पद्म, उत्पल, नलिन, सुभग, सौगंधिक, अरविन्द, कोकनद, शतपत्र अने सहस्रपत्र–एओना वृन्त–डींटीया, बहारना पांदडां अने कर्णिका ए त्रणे एक जीवना छे. अने अंदरना पांदडां, केसर अने मींज ए प्रत्येक एक जीववाळा छे. (४४–४५). वेणु–वांस, नळ–बरु, इक्षुवाटिका, समासइक्षु, इक्कड, रंड, करकर, सुंठ, विहंगु, तृण अने पर्ववाळी वनस्पतिनी आंख, पर्व–गांठ अने बलिमोटक–पर्वनुं परिवेष्टन ए बधा एकजीवना छे. पत्रो प्रत्येक–एक एक जीवात्मक अने पुष्पो अनेकजीवात्मक छे.

कायिक वनस्पतिना लक्षण रहित होय ते पण प्रत्येक वनस्पतिकायिको जाणवा (४३) पद्म, उत्पल, नलिन, सुभग, सौगन्धिक, अरविन्द, कोकनद, शतपत्र अने सहस्रपत्रना वृन्त–डींटीया अने तेना बहारना पांदडां के प्रायः लीलां होय छे ते, अने पद्मना आधाररूप कर्णिका छे ते त्रणे य एकजीवात्मक छे, अने जे अंदरनी पांखडीओ, केसर अने बीज छे ते दरेक एक एक जीवाश्रित छे (४४) वेणु–वांस, नड–बरु, तथा इक्षुवाटिका वगेरे लोक थकी जाणी लेवा तथा धरो वगेरे तृण, अने पर्वयुक्त (गांठवाळी) वनस्पति, तेओनी जे आंख, पर्व अने बलिमोटक–पर्वनुं चक्राकार–गोळाकार परिवेष्टन होय छे ते बधा एक जीवाश्रित छे ए बधानो

---

१ विहुंय शां सा

य। एए अणंतजीवा एगो जीवो बिसमुणाले ॥४२॥ पलंडूल्हसुणकंदे य कंदली य कुंदुंबए। एए परित्तजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥४३॥ पउमुप्पलनलिणाणं सुभगसोगंधियाण य। अरविंदकोकणाणं सयवत्तसहस्सपत्ताणं ॥४४॥

असंख्यातजीववाळां अने अनन्तजीववाळां जाणवा. (४०) जे कोइ नालबद्ध पुप्पो छे ते संख्याता जीववाळां होय छे अने जे स्निहु–थोरना पुप्पो अने तेना जेवा बीजा पुप्पो छे ते अनन्तजीववाळा होय छे. (४१). पद्मिनीकन्द, उत्पलिनी कन्द, अंतर कन्द अने झिल्ली ए अनन्तजीवात्मक छे अने बिस–नाल अने मृणाल–पद्मनी डांडली एकजीवात्मक छे. (४२). पलांडूकन्द, लसुनकंद, कंदलीकन्द अने ए कुस्तुंबक प्रत्येकजीववाळा छे अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना होय ते पण प्रत्येकशरीरवाळा

संख्याता जीववाळां, केटलापक असंख्याता जीववाळां अने केटलापक अनन्त जीववाळां होय छे, ते आगमने अनुसरीने जाणवा. (४०.) आ संबंधे कंइक विशेप बतावे छे–तेमां जे जाइ वगेरेना नालबद्ध पुप्पो छे ते बधां संख्यातजीववाळां तीर्थंकरगणधरोए कहेलां छे. थोरना पुप्प अनन्तजीवात्मक छे, अने ते सिवायना बीजां पुप्पो थोरना पुप्प जेवां होय ते पण अनन्तजीवात्मक जाणवां. (४१.) पद्मिनीकंद, उत्पलिनीकन्द, अन्तरकन्द–जलमां उत्पन्न थयेली एक जातनी वनस्पतिनो कन्द, झिल्लिका–वनस्पतिविशेप–ए बधा य अनन्तकायिक छे. परन्तु पद्मिन्यादिना बिस–नाल अने मृणाल–कमलदंड ए बन्ने एकजीवाश्रित छे. (४२.) पलांडुकन्द, लसुनकन्द, अने कंदलीकन्द, कुस्तुंबक–ए बधा य प्रत्येकजीवाश्रित जाणवा. ते सिवायना बीजा पण तेवा प्रकारना एटले अनन्त-

१ कुसुंबए आ. सा.

पत्त सच्छीर जं च होइ निच्छीरं । जं पि य पणट्ठसंधि अणंतजीवं वियाणाहि ॥३९॥ पुप्फा जलया थलया य विंटबद्धा य नालबद्धा य । संखिज्जमसंखिज्जा बोद्धव्वाऽणंतजीवा य ॥४०॥ जे केइ नालियाबद्धा पुप्फा संखिज्ज जीविया भणिया । णिहुया अणंतजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥४१॥ पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदे तहेव झिल्ली

जेने भांगता भंगस्थान चक्रना आकारवाळु (गोळ अने लीसुं) होय अने ग्रन्थी-गांठ चूर्ण-रजथी व्याप्त होय, तेमज भंगस्थान पृथिवीना सरखु होय ते अनन्तजीववाळी वनस्पति जाणवी. (३८). गुप्त शिरा-नसोवाळु, क्षीरवाळु, के क्षीर विनानु होय अने प्रनष्टसंधि-जेनी वच्चेनो सांधो देखातो न होय ते पांदडु अनन्तजीवात्मक जाणवुं. (३९). जलज-जळमां थयेलां, स्थलज-स्थळमां थयेलां, वृन्तबद्ध—डींटीयावाळां अने नालबद्ध—नाळवाळां पुष्पो संख्यातजीववाळां,

तात्पर्य ए छे के सूर्यना किरणोथी तपेला क्यारानी तरिना प्रतरखंड-पोपडीना जेवो सम-सरखो भंग होय ते अनन्त कायिक जाणवा (३८) हवे फरीथी बीजुं लक्षण कहे छे—जे पत्र-पांदडु सक्षीर-दूधवाळु होय, के निःक्षीर-दूधविनानु होय पण गुप्तनसोवाळु अने प्रनष्टसंधि-जेना बे अर्ध भागनी वच्चेनो सांधो सर्वथा न देखातो होय ते पत्र अनन्तजीवात्मक जाणवु (३९.)

हवे पुष्पादिसंबंधी विशेषता कहे छे—पुष्पो चार प्रकारना छे ते आ प्रमाणे—१ जलज-जळमां उत्पन्न थयेलां सहस्रपत्र वगेरे, २ स्थलज-स्थळमां उत्पन्न थयेलां कोरंटक वगेरेना पुष्पो ते प्रत्येकना बब्बे भेद छे केटलांक वृन्तबद्ध होय छे जेमके अतिमुक्त वगेरे, अने केटलांक जाइ वगेरेना पुष्पो नालबद्ध होय छे अहीं तेओमां केटलांक पत्रादिनी अंदर रहेला जीवोनी अपेक्षाए

तहाविहा ॥३५॥ जस्स खंधस्स कट्ठाओ छल्ली तणुयरी भवे। परित्तजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना तहाविहा ॥३६॥
जीसे सालाए कट्ठाओ छल्ली तणुयरी भवे। परित्तजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना तहाविहा ॥३७॥

चक्कागं भज्जमाणस्स गंठी चुण्णघणो भवे। पुढविसरिसभेदेण अणंतजीवं वियाणाहि ॥३८॥ गूढछिरागं

जे मूळना काष्ठथी तेनी छाल वधारे पातळी होय ते छाल तथा तेना जेवी बीजी छाल प्रत्येक जीववाळी जाणवी. (३४). ए प्रमाणे कन्द (३५) स्कन्ध (३६) अने शाखा (३७) संबंधे सरखो पाठ कहेवो.

मध्यवर्ती गर्भथी तेनी छाल पातळी होय ते प्रत्येकजीववाळी जाणवी. ते सिवायनी बीजी पटले प्रत्येक शरीरपणे निश्चित छालथी अन्य छाल होय ते पण प्रत्येकशरीर जीववाळी समजवी. एम कन्दादि विषे त्रणे गाथाओ विचारवी (३४–३७).

'यस्य मूलस्य भग्नस्य समो भंग प्रदृश्यते' जे मूळ भागतां तेनो भंग सरखो स्पष्टरूपे जणाय–इत्यादि अनन्तकायनुं लक्षण कह्युं. तेने स्पष्टपणे प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ लक्षण कहे छे.–'चक्कागं' इत्यादि. जे मूळ, स्कन्ध–थड, त्वचा, शाखा, पत्र अने पुष्पादिने भांगतां भंगस्थान चक्रक–चक्रना आकारवाळुं गोळ अने तद्न सम–सरखुं होय ते मूळादिक अनन्त जीवात्मक जाण. तथा ग्रन्थी–गांठ अथवा सामान्य रीते भंगस्थान चूर्ण–रजथी व्याप्त होय, अथवा जे पत्रादिने भांगतां चक्रना आकारवाळो भंग अने ग्रन्थिने स्थाने परागना जेवी रज व्याप्त थवी–ए पूर्वोक्त लक्षण सिवाय भंगस्थान पृथ्वीना सरखुं होय,

---

१ तणुययरी आ. स. २ सरिसेण भेएण आ. सा.

कट्ठाओ छल्ली बहलतरी भवे । अणतजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ने तहाविहा ॥३०॥ जस्स कन्दस्स कट्ठाओ छल्ली बहलतरी भवे । अणतजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ने तहाविहा ॥३१॥ जस्स खंधस्स कट्ठाओ छल्ली बहलतरी भवे । अणतजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना तहाविहा ॥३२॥ जीसे सालाए कट्ठाओ छल्ली बहलतरी भवे । अणतजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना तहाविहा ॥३३॥ जस्स मूलस्स कट्ठाओ छल्ली तणुयतरी भवे । परित्तजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना तहाविहा ॥ ३४ ॥ जस्स कन्दस्स कट्ठाओ छल्ली तणुतरी भवे । परित्तजीवा उ सा छल्ली जे यावन्ना

जे मूलना काष्ठथी तेनी छाल वधारे जाडी होय ते छाल तथा तेवा प्रकारनी बीजी छाल अनन्तकायिक जाणवी. (३०). जे कन्दना काष्ठथी तेनी छाल वधारे जाडी होय ते छाल अने तेना जेवी बीजी छाल अनन्त जीवात्मक जाणवी. (३१). जे स्कन्धना काष्ठथी तेनी छाल वधारे जाडी होय ते छाल तथा तेना जेवी बीजी छाल अनन्तजीवात्मक जाणवी. (३२). जे शाखाना काष्ठथी तेनी छाल वधारे जाडी होय ते छाल तथा तेना जेवी बीजी छाल अनन्त जीववाळी जाणवी. (३३).

हवे मूलादिनी छालनुं अनन्तकायिकपणुं जाणवा माटे लक्षण कहे छे—जे मूळना काष्ठ-मध्य भागमां रहेला गर्भथी तेनी छाल जाडी होय ते अनन्तजीवात्मक जाणवी 'जेयावन्ना तहाविहा' अने जे अनन्त जीवपणे निश्चित थयेली छालथी बीजी छाल पण तेना जेवी होय ते पण अनन्तजीवात्मक जाणवी एम कन्द, स्कन्ध अने शाखा संबंधे त्रणे गाथाओनो विचार करवो (३०-३३) हवे तेज छालनुं प्रत्येकजीवपणुं जाणवा लक्षण कहे छे-'यस्य मूलस्य' इत्यादि चार गाथाओ छे—जे मूलना काष्ठथी—

भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से कंदे जे यावन्ने तहाविहा ॥२१॥ जस्स खंधस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से खंधे जे यावन्ने तहाविहा ॥२२॥ जीसे तयाए भग्गाए हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवा तया सा उ जे यावन्ने तहाविहा ॥२३॥ जस्स सालस्स भग्गस हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से साले जे यावन्ने तहाविहा ॥२४॥ जस्स पवालस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे पवाले उ जे यावन्ने तहाविहा ॥२५॥ जस्स पत्तस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से पत्ते जे यावन्ने तहाविहा ॥२६॥ जस्स पुप्फस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से पुप्फे जे यावन्ने तहाविहा ॥२७॥ जस्स फलस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे फले से उ जे यावन्ने तहाविहा ॥२८॥ जस्स बीयस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवे उ से बीए जे यावन्ने तहाविहा ॥२९॥ जस्स मूलस्स

वाळां जाणवां. (२०). ए प्रमाणे (२१) कन्द, (२२) स्कन्ध, (२३) त्वचा, (२४) शाखा, (२५) प्रवाल, (२६) पत्र, (२७) पुष्प, (२८) फळ अने (२९) बीजने भांगवाथी विषम भंग देखाय ते अने तेवा प्रकारना बीजा कन्दादि प्रत्येक जीववाळा जाणवा. एम मूळनी पेठे कन्दादि दरेकने आश्रयी सरखो पाठ कहेवानो छे.

सिवायना बीजां मूळो जे भांगेला नथी पण तेवा प्रकारना हीरवाळा (खांचावाळा), भांगेला मूळना सरखां होय ते प्रत्येक-जीवात्मक जाणवां. एम कन्दादि संबन्धी नवे गाथाओ जाणवी. (२०–२९.)

उ से पुप्फे जे यावन्ने तहाविहा ॥१७॥ जस्स फलस्स भग्गस्स समो भगो पदीसए। अणन्तजीवे फले से [redacted] जे यावन्ने तहाविहा ॥१८॥ जस्स बीयस्स भग्गस्स समो भगो पदीसए। अणन्तजीवे उ से बीए जे यावन्ने तहाविहा ॥ १९॥

जस्स मूलस्स भग्गस्स हीरो भगो पदीसए। परित्तजीवे उ से मूले जे यावन्ने तहाविहा ॥२०॥ जस्स कंदस्स

थाथी सरखो भग देखाय ते पुष्प अने बीजां तेना जेवां पुष्पो अनन्त जीववाळा जाणवां (१७). जे फळने भागवाथी सरखो भग देखाय ते फळ अने बीजां तेना जेवा फळो अनन्त जीववाळां जाणवां. (१८). जे बीजने भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते बीज अने बीजां तेना जेवा बीजो अनन्त जीवात्मक जाणवां. (१९).

जे मूळ भांगवाथी हीर-विषम (दांतावाळो, खडबचडो) भंग देखाय ते मूळ अने तेवा प्रकारना अन्य मूळो प्रत्येक जीव-

---

आणवु ते सिवायना बीजा मूळो जे भागवामां आव्या न होय पण तेवा प्रकारना-भांगेला मूळना सरखा होय ते मूळो पण अनन्त जीवात्मक जाणवां ए प्रमाणे कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाल, पत्र, पुष्प, फळ अने बीज संबन्धे पण सर्व गाथाओनुं व्याख्यान करवुं (१०-१९)

हवे प्रत्येकशरीरवाळी वनस्पतिनु लक्षण कहेवाने माटे सूत्रकार दस गाथाओ जणावे छे-'यस्य' इत्यादि जे मूळने भागवाथी तेना भगस्थळे हीर-विषम छेदवाळा खडबचडो के खाचावाळो भाग स्पष्टरूपे जणाय ते मूळ प्रत्येक जीवात्मक जाणवुं, ते

तहाविहा ॥१२॥ जीसे तयाए भग्गाए समो भंगो पदीसए। अणंतजीवा तया सा उ जे यावन्ने तहाविहा ॥१३॥ जस्स सालस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसए। अणंतजीवे य से साले जे यावन्ने तहाविहा ॥१४॥ जस्स पवालस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसए। अणंतजीवे पवाले से जे यावन्ने तहाविहा ॥१४॥ जस्स पत्तस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसए। अणंतजीवे उ से पत्ते जे यावन्ने तहाविहा ॥१६॥ जस्स पुप्फस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसए। अणंतजीवे

होय ते अनन्त जीवात्मक जाणवा. (११). जे स्कन्ध भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते स्कन्ध अने बीजा तेवा प्रकारना स्कन्धो अनन्तजीववाळा जाणवा. (१२). जे त्वचाने भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते त्वचा तथा तेना जेवी बीजी त्वचा अनन्तजीववाळी जाणवी. (१३). जे शाखाने भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते शाखा तथा बीजी तेना जेवी शाखा अनन्त जीववाळी जाणवी. (१४). जे प्रवालने भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते प्रवाल तथा बीजा तेना जेवा प्रवालो अनन्तजीवात्मक जाणवा. (१५). जे पांदडुं भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते पांदडुं तथा तेनां जेवा बीजां पांदडां अनन्त जीववाळां जाणवां. (१६). जे पुष्पने भांग-

इत्यादि. जेनुं मूळ भांगवाथी [१]समभंग-एटले एकान्त सरखो चक्रना आकारवाळो भंग स्पष्टरूपे देखाय ते मूळ अनन्त जीवात्मक

१ वनस्पतिसप्ततिमां समभंगनुं लक्षण आ प्रमाणे कयुं छे—" खडी वगेरेना चूर्ण वडे बनावेली वर्ती—वाटनो भंग जेवो बधे स्थळे सरखो होय छे तेवो, अथवा कयारानी तरी—पोपडीना जेवो होय ते समभंग जाणवो. जे हमेशां समभंगवाळा होय ते अनन्तकायिको समजवा. परंतु जे कोमळपणाथी समभंगवाळा होय ते अनन्तकायिको न जाणवा.—जुओ लोकप्रकाश प. ४०८

तणमूल–कंदमूले वसीमूलेत्ति आवरे । संखिज्जमसंखिज्जा बोधव्वाऽणंतजीवा य ॥८॥ सिंघाडगस्स गुच्छो अणेगजीवो उ होति नायव्वो । पत्ता पत्तेयजीया दोन्नि य जीवा फले भणिया ॥९॥ जस्स मूलस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसइ । अणंतजीवे उ से मूले जे यावन्ने तहाविहा ॥१०॥ जस्स कंदस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसइ । अणंतजीवे उ से कंदे जे यावन्ने तहाविहा ॥११॥ जस्स खंधस्स भग्गस्स समो भंगो पदीसइ । अणंतजीवे उ से खंधे जे यावन्ने

अनन्तकायिक जीवो जाणवा. (७) तृणमूल, कंदमूल अने वांसनु मूळ संख्याता, असंख्याता के अनन्त जीवात्मक जाणवुं. (८). शींगोडानो गुच्छ अनेक जीवात्मक जाणवो. पांदडा एक एक जीववाळा होय छे, अने तेना फळमां बे जीवो छे. (९)

[अनन्तकायिक अने प्रत्येक वनस्पतिनुं लक्षण–] जे मूळने भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते मूळ अने ए सिवाय बीजां तेना जेवा मूळो होय ते पण अनन्तजीवात्मक जाणवां.(१०). जे कन्द भांगवाथी सरखो भंग देखाय ते तथा तेना जेवा बीजा कन्दो

बीजा तेवा प्रकारना होय ते पण अनन्तजीववाळा जाणवा (१–७) 'तृण' इत्यादि तृणनुं मूळ, कन्दनुं मूळ अने वांसनुं मूळ एओमां क्यांइक जातिभेदथी के देशभेदथी संख्यात जीवो अने क्यांइक असंख्याता जीवो अने क्यांइक अनन्त जीवो जाणवा (८) 'शृंगाटकस्य' इत्यादि. शींगोडानो गुच्छ अनेकजीववाळो जाणवो, कारण के तेना त्वचा अने शाखा वगेरे अनेकजीवात्मक छे परन्तु तेमां जे पांदडां छे ते एक एक जीववाळा होय छे अने एक एक फळने विषे बब्बे जीवो कह्या छे (९) 'यस्य मूलस्य'

१ वसमूलेत्ति शी सा वंसीमूलित्ति के व

रुरु–कुंण्डरिया जीरु छीरविराली तहेव किट्टी य । हालिद्दा सिंगवेरे य आलुगा मूलए इय ॥२॥ कंबूया कन्नुक्कड मँहुपोवलइ तहेव महुसिंगी । णीरुहा सप्पसुयंधा छिन्नरुहा चेव बीयरुहा ॥३॥ पाढा मियवालुंकी महुररसा चेव रायवल्ली य । पउमा य माढरि दंती चंडी किट्टीत्ति यावरा ॥४॥ मासपण्णि मुग्गपण्णी जीविय-रसहे य रेणुया चेव। काओली खीरकाओली तहा भंगी नही इय ॥५॥ किमिरासि भद्दमुत्था णंगलई पेलुगा इय । किण्हे पउले य हढे हरतणुया चेव लोयाणी ॥६॥ कण्हकंदे वज्जे सूरणकंदे तहेव खल्लूडे । एए अणंतजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥७॥

मुसुंढि, (१). रुरु, कुंडरिका, जीरु, क्षीरविदारिका, किट्टि, हरिद्रा–हलदर, शृंगबेर–आदु, आलु–बटाटा, मूलग–मूळा, (२). कंबूया, कन्नुकड, महुपोवलई, मधुशृंगी, नीरुहा, सर्पसुगंधा, छिन्नरुहा, बीजरुहा, (३). पाठा, मृगवालुंकी, मधुररसा, राजवल्ली, पउमा–पद्मा, माढरी, दंती, चंडी, किट्टी, (४). मापपर्णी, मुद्गपर्णी, 'जीविय–रसहे' जीवक, रसह–ऋपभक, रेणुका, काकोलि, क्षीरकाकोली, भंगी, नही, (५). कृमिराशि, भद्रमुस्ता–मोथ, णंगलइ–लांगली–दूधीओ वज, पेलुगा, कृष्ण, पउल, हढ, हरतनुका, लोयाणी, (६). कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरणकंद, खल्लूर–ए अनन्तकायिक जीवो अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना होय ते पण तेमां केटला एक साधारण वनस्पतिकायिको अतिप्रसिद्ध होवाथी अने केटला एक देशविशेषथी स्वयं जाणवा. उपर कह्या सिवायना

१ कुंदुरिया शां. सा. २ जारु छीरु शा. सा. ३ कंछूया कडछू शां. सा. ४ सुमत्तओ व. आ. स. ५ जीवियरसिके ले. व. जीवियरसभे य शां. सा. ६ खल्लूरे आ. स.

४५ से किं त साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी थिहू त्थिभगा। अस्सकन्नी सीहकन्नी सिउंढि तत्तो मुसुंढी य ॥ १ ॥

---

४५. साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको अनेक प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—अवक, पनक–फुग, सेवाल, लोहिणी–रोहिणी, थीहू, थिभगा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिउंढि,

---

छे अने ते यथा सरसवो परिपूर्ण शरीरवाळा पोतपोताना शरीरनी अवगाहना वडे जुदा जुदा रहेला छे, 'तथा'—ते प्रमाणे आज रूपमा वडे प्रत्येकशरीरवाळा जीवोना शरीरसमुदायो जुदी जुदी पोतपोताना शरीरनी अवगाहनावाळा होय छे अहीं श्लेषद्रव्यने स्थाने रागद्वेषथी संचित थयेला तेवा प्रकारना कर्म छे, अने यथा सरसवने स्थाने प्रत्येक शरीरो छे यथा सरसवोनु ग्रहण सरसवोनुं जुदापणु जाणवाथी भिन्न भिन्न अवगाहनावाळा प्रत्येक शरीरोनुं जुदापणु जणाववा माटे छे अहीं बीजु दृष्टान्त कहे छे—जेम घणा तलथी मिश्रित थयेली तिलपापडी–तलसांकळी जुदा जुदा पोतपोतानी अवगाहनावाळा तलरूप होवा छता कथंचित्–द्रव्यनी अपेक्षाए एकरूप होय छे, तेम आज रूपमा वडे प्रत्येकशरीरी जीवोना शरीरसमुदायो कथंचित् एकरूप अने जुदी जुदी पोतपोतानी अवगाहनावाळा होय छे हवे उपसंहार कहे छे—'एम प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको कह्या

४५. हवे साधारणवनस्पतिकायिकनु प्रतिपादन करवा माटे सूत्र कहे छे—साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे के—साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको अनेक प्रकारना छे ते आ प्रमाणे–अवक, पनक–इत्यादि

सरिसवाणं सिलेसमिस्साण वट्टिया वट्टी । पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥२॥ जह वा तिलपप्पडिया बहुएहिं तिलेहि संहता संती। पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥३॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया ॥

सरसवोनी एक वर्ती–वाट करी होय तेवा प्रत्येकशरीरी (वनस्पतिकायिक) जीवोना शरीरना समुदायो जाणवा. अथवा घणा तलना समुदायवाळी तलपापडी होय तेम प्रत्येकशरीर वनस्पति जीवोना शरीरसमुदायो होय छे. एम प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको कह्या.

हवे कहेली अने नहि कहेली वनस्पतिनो संग्रह करवा माटे आ गाथाओ कहे छे–'नानाविध' इत्यादि. वृक्षोना तेमज उपलक्षणथी गुच्छ अने गुल्मादिना पण अनेक प्रकारना संस्थान–आकृतिवाळां पांदडां एक एक जीवाश्रित होय छे, अने स्कन्ध पण एक जीवाश्रित होय छे. शुं बधी वनस्पतिओनो स्कन्ध एक जीववाळो होय छे? नहि, ताड, सरल अने नाळीएरीनो स्कन्ध एक जीववाळो होय छे. ताड, सरल अने नाळीएरीनुं ग्रहण उपलक्षण छे, तेथी बीजी वनस्पतिओनो पण स्कन्ध आगमने अनुसरी एक जीवाश्रित जाणवो. अने ते सिवाय अन्य वनस्पतिओना प्रत्येक स्कन्धो तो अनेक प्रत्येकशरीरवाळा अनेक जीवाश्रित होय छे ते अर्थात् जाणवुं. कारण के "खंधा वि अणेगजीविया" 'स्कन्धो पण अनेक जीववाळा होय छे' एम पूर्वे कह्युं छे. जो स्कन्धो प्रत्येकशरीरवाळा अनेक जीवाश्रित होय तो एक खंड शरीरनी आकृतिवाळा केम जणाय छे? तेओना अवस्थाननुं स्वरूप दृष्टांत द्वारा जणावे छे—'जह सगल' इत्यादि. जेम श्लेष–चीकाशवाळा द्रव्य वडे मिश्रित थयेला सरसवोनी करेली वर्ति–वाट एकरूपे

४४. से किं तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा-आए, काए, कुहणे, कुणक्के, दव्वहलिया, सप्पाए, सज्झाए, छत्तोए, वंसी णहिया कुरए । जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं कुहणा ।

णाणाविहसंठाणा रुक्खाणं एगजीविया पत्ता । खंधा वि एगजीवा ताल-सरल-णालिएरीणं ॥१॥ जह सगल-

४४. कुहणा केटला प्रकारना छे ? कुहणा अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—आय, काय, कुहण, कुणक, दव्वहलिया, सप्फाय, सज्झाय, छत्रौक, वंसी, नहिया, कुरय, अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते कुहणा जाणवा. एम कुहणा कह्या.

वृक्षोना—वनस्पतिना नानाविध संस्थान—अनेक प्रकारनी आकृतिवाळा पांदडां एकजीववाळा होय छे, अने ताड, सरल अने नाळीएरी प्रमुख वृक्षोना स्कंधो—थडो पण एकजीववाळा होय छे. जेम श्लेष—चीकाशवाळा द्रव्यवडे मिश्रित थयेला समग्र

४३–४४ आ गुच्छादि भेदो प्रायः तेना स्वरूपथी ज प्रसिद्ध छे, अने केटलाक भेदो देशविशेषथी जाणी लेवाना छे अहीं गुच्छादि भेदोमां ज्यां एक वनस्पतिनुं नाम एक भेदमां ग्रहण करी पुनः तेज वनस्पतिनुं नाम बीजा भेदोमां पण ग्रहण कर्युं छे, त्यां तेना समान नामनी भिन्न जातनी वनस्पति जाणवी अथवा एक वनस्पति अनेक जातनी होय छे जेमके, नाळीएरी पत्रबीजवाळी होवाथी 'एकास्थिक' कहेवाय छे, तेनी त्वचा वलयना आकारनी होवाथी वलय पण कहेवाय छे माटे एक वनस्पति अनेक जातनी होवाथी भिन्न भिन्न भेदोमां तेनुं नाम आवे तो ते विरुद्ध न समजवुं

१ सप्पाए आ स २ छत्ताए शा सा ३ णहिया कुरए शा सा

४३. से किं तं जलरुहा ? जलरुहा अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा–उदए, अवए, पणए, सेवाले, कलंबुया, हढे य कसेरुया, कच्छ, भाणी, उप्पले, पउमे, कुमुदे, णलिणे, सुभए, सुगंधिए, पोण्डरीयए, महापोण्डरीयए, सयपत्ते, सहस्सपत्ते, कल्हारे, कोकणदे, अरविंदे, तामरसे, भिसे, भिसमुणाले, पोक्खले, पोक्खलत्थलए, जे यावन्ने तहप्पगारा। से तं जलरुहा।

आलिसंद-चोळा, सतीन-मठ, पलिमंथ-चणा, अळसी, करुंबो, कोद्रव-कोदरा, कांग, रालग, वरट्ट–वंटी–सामो, कोदूस–कोरदूषक-एक जातना कोदरा, सण, सरसव, मूळाना बीज अने ए सिवायनी बीजी तेवा प्रकारनी वनस्पति होय ते ओषधीओ जाणवी. ए प्रमाणे ओषधीओ कही.

४३. जलरुहो केटला प्रकारना छे ? जलरुहो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–उदक, अवक, पनक, सेवाल, कलंबुय, हढ, कसेरुय, कच्छ, भाणी, उत्पल, पद्म, कुमुद, नलिन, सुभग, सौगंधिक, पुंडरीक, महापुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, कल्हार, कोकनद, अरविंद, तामरस, बिस, बिसमृणाल, पुष्कर, स्थलज पुष्कर अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते जलरुहो जाणवा. एम जलरुहो कह्या.

---

१ पोक्खलत्थिभुए आ. स.

अविल–साएय जियतए चेव ॥२॥ तुलसी कण्ह उराले फणिज्जए अज्जए य भूयणए। चोरग–दमणग–मरुयग सतपुप्फींदीवरे य तहा ॥३॥ जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्त हरिया।

४२ से किं त ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ। तजहा—साली–वीही–गोहूम–जव–जव-जव-कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसद-सतीण-पलिमथग-अयसी-कुसुंभ–कोद्दव–कगू-रालग–वरा(रट्ट)-साम-कोदूस-सण-सरिसव-मूलगबीया। जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्त ओसहीओ ॥

तदुलेज्जग-तांदळजो, वत्थुल-वास्तुल, पोरग, मज्जारया, विल्ली, (बीछी), पालक-पालखया-पालखनीभाजी, दकपिप्पली-जळपीपर, दव्वी–दार्वी–दारुहळदर ? सोत्थिय–स्वतिक–चटींगण, साय, मडूकी-ब्राह्मी, मूलक-मूळा, सरसव, अंबील, साएय, जियन्तय–जीवन्तक-माळवदेश प्रसिद्ध जीवशाक, तुलसी, कृष्णा–काळी तुलसी, उराल, फणिज्जक–मरवो, अज्जय–अर्जक-नामी तुलसीना छोड, भूजनक, चोरक मरवानी जाति (?) दमनक–डमरो, मरवो, सतपुष्प, इंदीवर अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते हरितो जाणवा. एम हरितो कह्या.

४२. ओषधीओ केटला प्रकारनी कही छे ? ओषधीओ अनेक प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–शालि–कलमादि, व्रीहि, गोधूम (घउं), यव, जवजव–एक जातना जव, कलाय (वटाणा) मसूर, तल, मग, माष–अडद, निप्फाव-वाल, कुलत्थ–कळथी,

---

१ भूयणए आ स २ धारग आ स

४०. से किं तं वलया ? वलया अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—ताल-तमाले तक्कलितोयली साली य सारकल्लाणे। सरले जावति केतइ कदली तह चम्मरुक्खे य ॥१॥ भुयरुक्ख-हिंगुरुक्खे लवंगरुक्खे य होइ बोद्धव्वे। पूयफली खज्जुरी बोद्धव्वा णालिएरी य ॥२॥ जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं वलया।

४१. से किं तं हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—अज्जोरुह-वोडाणे हरितग तह तंदुलेज्जगतणे य। वत्थुल-पोरग-मज्जारयाई बिल्ली य पालक्का ॥१॥ दगपिप्पली य दव्वी सोत्थियं-साए तहेव मंडुक्की। मूलग-सरिसव

पव्वय, पोडइल, अर्जुन, आषाढक, रोहितांश, सुय, वेय, क्षीर, भुस, एरंड, कुरुविंद, करकर, सुंठ, विभंगु, मधुर तृण, छुरय, सिप्पिय, सुंकलीतृण, अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते. ए प्रमाणे तृणो कह्या.

४०. वलय वनस्पति केटला प्रकारनी कही छे ? वलय वनस्पति अनेक प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—ताड, तमाल, तक्कलि, तोयली, साली—शाल्मली, सारकल्लाण, सरल—चीड, जावती, केतकी, केळ, चर्मवृक्ष, भुजवृक्ष-भोजपत्रवृक्ष, हिंगुवृक्ष, लवंगवृक्ष, पूगफली (सोपारी), खजूरी, नाळीएरी, अने ते सिवायनी बीजी तेवा प्रकारनी होय ते वलय वनस्पति जाणवी. एम वलय वनस्पति कही.

४१. हरित वनस्पति केटला प्रकारनी छे ? हरित वनस्पति अनेक प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—अज्जोरुह, वोडाण, हरितक

---

१ धम्मरुक्खे य आ. स. २ अब्भोरुह शा. सा. ३ सोत्तिय आ. स.

३८. से किं तं पव्वगा ? पव्वगा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—इक्खू य इक्खुवाडी वीरण तह इक्कडे भमासे य । सुंठे सरे य वेत्ते तिमिरे सतपोरग-नळे य ॥१॥ वंसे वेलू कणग ककावंसे य चावंवसे य । उदग कुडए विमए कंडावेलू य कल्लाणे ॥२॥ जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं पव्वगा ।

३९. से किं तं तणा ? तणा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा-सेडिय–भंतिय–होंतिय-दब्भ–कुसे पव्वग य पोइ-इला । अज्जुण असाढग रोहियंसे सुय–वेय–खीर–भुसे ॥१॥ एरंडे कुरुविंदे करकर सुंठे तहा विभंगू य । महुर-तण-छुरय-सिप्पिय सुंकलितणे य ॥२॥ जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं तणा ।

---

३८. पर्वग (पर्ववाळी) वनस्पति केटला प्रकारे छे ? पर्ववाळी वनस्पति अनेक प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—इक्षु, इक्षुवाटिका, वीरण-वाळो, इक्कड—इत्कट, भमास, सुंठ, शर, वेत्र—नेतर, तिमिर, शतपोरक, नल (बरु), वांस, वेणु-वांसनी जात, कनक—वांसनी जात, कर्कावंश, चापवंश, उदग, कुडग, विमत, कंडावेणु, अने कल्याण, तथा ते सिवायनी बीजी तेवा प्रकारनी होय ते पर्ववाळी वनस्पति जाणवी. एम पर्ववाळी वनस्पति कही.

३९. तृणो केटला प्रकारना कह्या छे ? तृणो अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सेडिय, भंतिय, होन्तिय, दर्भ, कुश,

---

१ वीरणो त– आ स २ यमासे य आ स ३ संडिय-भंतिय– आ स ४ करजर सुंठे आ० स ५ खिप्पय घा घा

वागुलीया पाववल्ली तह देवदाली य ॥ २७ ॥ अप्फोया अइमुत्तग–णागलया कण्ह-सूरवल्ली य। संघट्ट–सुमणसा वि य जासुवण-कुविंदवल्ली य ॥३॥ मुद्दिय अंबावल्लि छीरविरालि जयंति गोवाली। पाणी–मासावल्ली गुंजावल्ली य वच्छाणी। ॥४॥ ससबिंदु-गोत्तफुसिया गिरिकण्णई मालुया य अंजणई। दहिफोल्लई कागणि मोगली य तह अक्कबोंदी य ॥ ५ ॥ जे यावन्ने तहप्पगारा। से त्तं वल्लीओ ॥

तुंवी, त्रपुपी-काकडी, एलवालुंकी–एक जातनी काकडी, घोपातकी (कडवी घींसोडी), पंडोला, पंचाङ्गुलिका, नीली–गळी, कंडूइया, कट्टुइया, कंकोडी, कारेली, सुभगा–मोगरानी जाति, कुयधाय, वागुलीया, पाववल्ली, देवदाली (कुकडवेल), अप्फोया-आस्फोता–अनन्तमूळ, अतिमुक्त, नागलता–नागरवेल, कृष्णा–जटामांसी, सूरवल्ली–सूर्यवल्ली–सुरजमुखीनी वेल, संघट्टा, सुमणसा, जासुवण, कुविंदवल्ली, मुद्दिया-मृद्विका–द्राक्षना वेला, अंबावल्ली–आम्रवल्ली, क्षीरविदारिका, जयंती, गोपाली–श्वेत सारिवा, पाणी, मासावल्ली–मापपर्णी (?) गुंजावल्ली–चणोठीनी वेल, वच्छाणी–वत्सादनी–गजपीपर, शशबिन्दु, गोत्तफुसिया (गोत्रस्पर्शिका), गिरिकर्णिका (गरणी), मालुका, अंजनकी, दहिफोल्लई (दधिपुष्पिका), काकणी, मोगली, अर्कबोंदि अने ते सिवायनी वीजा तेवा प्रकारनी वनस्पति होय ते वल्लिओ जाणवी. ए प्रमाणे वल्लिओ कही.

१ देवदारू य शा. सा. २ अप्पोया ले. व. अप्फेया आ. स. ३ अप्पाभल्ली आ. स. ले. व. ४ किण्हछीराली आ. स. ५ जियंति शा. सा. ६ गोवल्ली शा. सा. ७ विच्छाणी आ. स.

फत्थुल सेवाल गठि मगदंतिया चेव ॥२॥ चंपगजाई णवणीइया य कुंदो तहा महाजाई । एवमणेगागारा हवंति गुम्मा मुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्तं गुम्मा ।

३६. से किं तं लयाओ ? लयाओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ । तंजहा–पउमलया णागलय–असोग–चंपगलया य चूतलता । वणलय–वासंतिलया अइमुत्तय–कुंद–सामलया ॥ जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं लयाओ ॥

३७ से किं तं वल्लीओ ? वल्लीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ । तंजहा–पूसफली कालिंगी तुंबी तउसी य एलवालुंकी । घोसाडई पडोला पंचंगुलिआ य नीली य ॥१॥ कड्डया कंडुइया कक्कोडई कारियल्लई सुभगा । कुयधाय

जाति, वासंती–नेमाली, वत्थुल–वात्थुल, कत्थुल, सेवाल, ग्रन्थी, मृगदन्तिका (एक जातना पुष्पनो छोड), चंपकजाति, नवणीइया, कुंद–मोगरानी जाति, महाजाति–एम अनेक आकारना गुल्मो जाणवा. एम गुल्मो कह्या.

३६. लता केटला प्रकारे छे? लता अनेक प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–पद्मलता, नागलता, अशोकलता, चंपकलता, चूतलता–वेलीयो आंबो, वनलता, वासंतीलता–मोगरानी वेल, अतिमुक्तलता–माधवीलता, कुंद–मोगरानोवेल, अने श्यामलता–श्वेत उपलसरी, ए सिवाय बीजी तेवा प्रकारनी वनस्पति होय ते लताओ जाणवी. एम लताओ कही.

३७. वल्लीओ केटला प्रकारे छे ? वल्लीओ अनेक प्रकारे छे ? ते आ प्रमाणे–पूसफली, कालिंगी–जंगली तरबुचना वेला,

---

१ कंगूया कंडुइया आ स २ कुयवाय वागलीया आ स

डिय कत्तुंबरि अत्थई चेव तलउडा ॥३॥ सण–पाण–कासमुद्दग–अग्घाडग–साम–सिंदुवारे य। करमद्द–अद्दरूसग–करीर–एरावण–महित्थे ॥ ४ ॥ जाउलग–माल–परिली–गयमारिणि–कुव्वकारिया भंडी। जावई केयइ तह गंज पाडला दासि–अंकोल्ले ॥ ५ ॥ जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं गुच्छा।

३९. से किं तं गुम्मा ? गुम्मा अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा–सेरियए णोमालिय–कोरंटय–बंधुजीवग–मणोज्जे पिइय–पाण–कणयर–कुज्जय तह सिंदुवारे य ॥ १ ॥ जाई मोग्गर तह जूहिया य तह मल्लिया य वासंती। वत्थुल

कासमर्द–कासुंदरो, अग्घाडग (अघेडो), श्यामा–प्रियंगु–घउंला, सिंदुवार–धोळा फुलवाळी नगोड, करमर्द–करमदां, अद्दरूसग–अरडुसो, करीर–केरडो, ऐरावण–(नारंगी ?) महित्थ, (३) जाउलग, मालग, परिली, गजमारिणी–करेण, कुव्वकारिया, भंडी–मजीठ, जीवन्ती–डोडी, केतकी, गंज, पाटला–पाडल, दासि–लीला पुप्पवाळो कांटाशेरीओ, अंकोल अने ए सिवायनी बीजी तेवा प्रकारनी वनस्पति होय ते गुच्छो जाणवा.

३५. गुल्मो केटला प्रकारना छे ? गुल्मो अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—सैरियक–धोळा पुष्पवाळो कांटाशेरियो, नवमालिका–नरमाळी, कोरंटक–पीळा पुप्पवाळो कांटाशेरीयो, बंधुजीवक–बपोरीयो, मणोज्ज–मनोज्ञ–मोगरानी जाति, पिइय, पाण, कणेर, कुज्जय–कुब्जक–सफेद गुलाब, सिंदुवार-धोळाफुलवाळी निगुंडी, जाती-जाइ, मोगरो, यूथिका–जूइ, मल्लिका–मोगरानी

---

१ अट्टुई शां. सा. अट्ठई ले. व. अट्टई पा. सं. भं. २ गुंज ले. व. ३ दास अं–शा. सा.

३४ से किं तं गुच्छा ? गुच्छा अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—वाइंगणि-सल्लइ-थुंडई य तह कच्छुरी य जासुमणा । रूवी आढइ णीली तुलसी तह माउलिंगी य ॥१॥ कत्थुंभरि पिप्पलिया अतसी वेल्ली य कायमाइया । चुच्चू पडोलकदलि विउव्वा वत्थुले बदरे ॥२॥ पत्तउर सीयउरए हवति तहा जवसए य बोद्धव्वे । णिग्गु-

२६ दधिपर्ण, २७ लोध्र (लोदर), २८ धव (धावडी), २९ चंदन, ३० अर्जुन (साजड), ३१ नीप (भूमिकदंब), ३२ कुटज (इंद्रजव), ३३ कदंब, ए सिवाय बीजा तेवा प्रकारना होय ते बहुबीजवाळा वृक्षो जाणवा. एना मूलो, कंदो, स्कंधो, त्वचा, शाखा अने प्रवालो—पल्लवांकुरो असंख्यजीववाळा छे. पांदडाओ एक एक जीववाळा छे, पुष्पो अनेक जीववाळा छे अने फलो बहुबीजवाळा छे. ए प्रमाणे बहुबीजवाळा वृक्षो कह्या. एम वृक्षो कह्या.

३४. गुच्छो केटला प्रकारना छे ? गुच्छो अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—वाइंगिणी-रींगणी, सल्लकी-सालेडुं, थुंडकी, (बोन्दकी), कच्छुरी-कवच, जासुमणा (जीसुमणा), रूपी, आढकी (तुवेर), नीली (गळी), तुलसी, मातुलींगी-बीजोरानी जात, (१) कुस्तुंभरी, पिप्पलिका (पीपर), अलसी, वल्ली (विल्ली), काकमाची (पीलुडी), चुच्चु, पटोलकदली, विउव्वा, वत्थुल-वास्तुक(?) बदर-बोरडी, पत्तउर, सीयउर, जवसय-जवासो, निर्गुंडी-नगोड, कस्तुंबरि-धाणा, अत्थई, तलउडा, शण, पाण,

१ पोंदइ य शां सा २ कत्थुरी आ स ३ जासुमणा आ स ४ विल्ली य आ स ५ चुच्चुपडोला कदलि शां सा चुच्चू ए-छे व

९ दाडम, १० अश्वत्थ–पींपळो, ११ उंबरो, १२वड, १३ न्यग्रोध (चोतरफ वडवाइ फेलाइ होय ते वड), १४ नंदिवृक्ष–पारस-पींपळो, १५ पिप्पली–पींपर, १६ शेतरी–पींपळानी जात, १७ प्लक्षवृक्ष–पींपळो, १८ कांकोदुंबरी (नानो उंबरो), १९ कुस्तुं-बरी, २० देवदाली,२१ तिलक, २२ लकुच (फणसनी जात),२३ छत्रोघ, २४ शिरीष (सरसडो), २५ सप्तपर्ण (सातवीण),

तेना मूळ, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा अने प्रवाल दरेक असंख्य जीववाळा प्रत्येकशरीरात्मक छे, पांदडां एक एक जीववाळा छे, पुष्पो अनेक जीवात्मक छे अने फळो बहुबीजवाळा छे. हवे उपसंहार करे छे–'एम बहुबीजवाळा वृक्षो कह्या–इत्यादि एवे प्रकारना निगमनो सुगम छे.

रूप छे, तेने अंबाडो अथवा अंभेडो कहेवामां आवे छे, हिन्दीमां अंबाडा कहे छे. 'आम्रातक आम्रसदृशफलः' तेनुं फळ आंबाना जेवुं अने कदमां सोपारीना जेवडुं होय छे. पण तेने एक बीज होय छे, अने अहीं बहुबीजवाळा वृक्षोमां तेनी गणना करवामां आवी छे. माटे आम्रातक–अंबाडक कोई बीजी वनस्पति होवी जोईए. अथवा कोई देशमां आमळानी पेठे बहु बीजवाळुं पण आम्रातक होय. ३ नंदिवृक्ष पारस पींपळो, ४ शतरि ए पींपळानी जाति संभवे छे. पण वनस्पतिकोशमां तेनुं नाम मळतुं नथी. ५ काकोदुंबरी ए उंबरानी जात छे. तेने ढेडउंबरो कहे छे. ६ कुस्तुंबरि ए जंगली अंजीरनी जाति होय एम संभवे छे ७ तिलक विशेषक, पुण्ड्रक, दग्धरुह, छिन्नरुह ए बधा पर्यायशब्दो छे. ८ लकुच (क्षुद्रः पनसः) ए फणसनी जाति छे. हिन्दीमां तेने बडहर कहे छे. ९ छत्रोघ ए नामनी वनस्पति वनस्पतिकोशमां मळती नथी, पण छत्राक वृक्ष छे, अने ते वावळनी एक जाति छे. पण तेनुं प्राकृत रूप 'छत्ताए' एवुं थाय. ९ दधिवन्न दधिपर्ण संबंधे कांईपण माहीती मळती नथी, पण कपित्थ–कोठावाचक दधिपुष्प के दधित्थ शब्दो मळे छे.

३३ से किं तं बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पन्नत्ता। तंजहा—अत्थिय-तेंदु-कविट्ठे अंबाडग-माउलिंग बिल्ले य। आमलग फणिस-दालिम आसोट्ठे उंबर-वडे य ॥१॥ णग्गोह-णंदिरुक्खे पिप्परी सयरी पिलुंखरुक्खे य। काउंबरि कुत्थुंभरि बोद्धव्वा देवदाली य ॥२॥ तिलग लउग छत्तोह-सिरीसे सत्तवन्न-दहिवन्ने। लोद्ध-धव चंदण-ज्जुण-णीमे कुडए कयंबे य ॥३॥ जे यावन्ने तहप्पगारा। एतेसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि, खंधा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला बहुबीयगा। से त्तं बहुबीयगा। सेत्तं रुक्खा।

---

३३. बहुबीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे? बहुबीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ अस्थिक, (अगस्तिक ?), २ तिन्दुक–टींबरु, ३ कपित्थक–कोठा, ४ अंबाडक, ५ मातुलिंग (बीजोरं), ६ बिल्व (बीला), ७ आमळां, ८ फणस,

---

३३ हवे बहुबीजवाळा वृक्षनुं प्रतिपादन करवा माटे प्रश्न करे छे–'बहुबीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे?' आचार्य उत्तर आपे छे–बहुबीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारना छे अस्थिकथी आरंभी कदंब सुधीमां केटलाएक अति प्रसिद्ध छे अने केटला एक देशविशेषथी जाणी लेवा परन्तु अहीं आमळा वगेरे लोक प्रसिद्ध छे ते न लेवा, कारणके तेनामां एकज बीज होय छे, पण अमुक देशमां प्रसिद्ध बहुबीजवाळा होय ते ग्रहण करवा ते सिवायना बीजा पण तेवा प्रकारना होय ते बहुबीजवाळा वृक्षो जाणवा

---

१ अस्थिक ए नामनी वनस्पति अत्यारे उपलब्ध नथी कदाच अत्थिय (अगस्तिक) अगथीयो होय २ अंबाडग ए आम्रातफलं प्राकृत

आ वनस्पति हाथीने बहु प्रिय छे. मोचकी अने मालुक ए बन्ने अमुक देशमां प्रसिद्ध वनस्पति छे. बकुल-बोरसळी, पलाश-केसुडो, करंज-कणजीओ, पुत्रंजीवक देशविशेषमां प्रसिद्ध छे, अरिष्ट-पिचुमन्द (?) अरीठा, बिभीतक-बेहेडा, भल्लातक-भीलामानुं झाड-जेना भीलामा नामना फळो लोकप्रसिद्ध छे. उंबेभरिका (?) क्षीरिणी-गंभारी, धातकी, प्रियाल-रायणनुं वृक्ष, पूतिनिंबकरंज, श्लक्ष्णा (सुरका ?) शिंशपा-शीशम, असन-बीयानुं झाड, पुन्नाग-नागकेसर, नाग, श्रीपर्णी-सीवण अने अशोक ए लोकप्रसिद्ध छे. ते सिवाय बीजा पण तेवा प्रकारना ते ते देशमां थनारा वृक्षो होय ते बधाय एकास्थिक-एक बीजवाळा वृक्षो जाणवा. एओना मूळो पण असंख्य जीववाळा एटले-असंख्याता प्रत्येकशरीरी जीववाळा छे. एम कन्दो, स्कंधो-थडो, त्वचा, शाखा अने प्रवाल-पल्लवो पण दरेक असंख्य प्रत्येकशरीरी जीववाळा जाणवा. तेमां जे कंदनी नीचे रहेला अने भूमिनी अंदर चोतरफ फेला-येला होय छे ते मूळो, अने ते मूळना उपर कन्द होय छे ते लोक प्रसिद्ध छे. स्कन्ध-थड, त्वचा-छाल, प्रवाल-पल्लवांकुर अने पांदडा-प्रत्येक जीववाळा छे एटले एक एक पांदडाने आश्रयी एक एक जीव रहेलो छे. 'पुष्पो अनेक जीववाळा छे,' कारण के घणुं करी पुष्पनी दरेक पांखडीए एक एक जीव होय छे. फळो एकबीजवाळां छे. उपसंहार कहे छे—'ए प्रमाणे एकास्थिक वृक्षो कह्या.'

---

३. टीकाकार अरिष्टनो पर्यायशब्द 'पिचुमन्द' मुके छे, पण पिचुमन्दनो अर्थ लींबडो थाय छे, अने पहेलांज आवी गयेल छे. माटे अहीं अरीठानुं झाड लेवुं एम संभवे छे.

उंबेभरिया—खीरिणि घोद्धव्वे धायइ—पियाले ॥ २ ॥ पूइयनिंबकरंजे सुण्हा तह सीसवा य असणे य । पुन्नाग—नाग रुक्खे सीवण्णि तहा असोगे य ॥ ३ ॥ जे यावण्णे तहप्पगारा । एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि, खंधा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीविया, फला एगट्ठिया । से त्त एगट्ठिया ।

प्मातक—गुंदो, सल्लकी, मोचकी (शेमळो), मालुक (कृष्ण तुलसी), बकुल—बोरसली, पलाश—खाखरो, करंज, पुत्रंजीव, अरीष्ट—अरीठा, बहेडा, हरितक—हरडे, भीलामा, उंबेभरिका (?) क्षीरिणी (गंभारी), धातकी—धावडी, प्रियाल—रायण, पूति-निंबकरंज—(पूतिकरंज) कांचकानुं झाड, सुण्हा—श्लक्ष्णा, शिंशपा—शीसम, असन—बीयो, पुन्नाग—नागकेसर, नागवृक्ष (वछनाग), श्रीपर्णी—सीवण, अशोक अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना वृक्षो. एओना मूलो, कंदो, स्कंधो—थडो, त्वचा, शाखा अने प्रवालो (नाना पांदडां) असंख्यातजीववाळा होय छे. पांदडां प्रत्येकजीववाळां, पुष्पो अनेक जीववाळां, अने फळो एक बीजवाळां छे. एम एकबीजवाळा वृक्षो कह्यां.

वृक्षो अनेक प्रकारना कह्या छे जेमके—'निंबय' इत्यादि बन्ने गाथाओ छे तेमां लींबडो, आंबो, जांबु अने कोशाम्र प्रसिद्ध छे शाल—सर्जतरु, राळ, 'अंकोल्ल'—अंकोठ, प्राकृत होवाथी लक्षमां ल्लनो ल थयो छे पीलु—प्रसिद्ध छे, शेलु—श्लेष्मातक—गुंदो, सल्लकी—

---

१ पूइयनिंबयरए शां सा २ सेण्हा शां सा

३१. से किं तं रुक्खा ? रुक्खा दुविहा पण्णत्ता । तंजहा–एगट्ठिया य बहुबीयगा य ।

३२. से किं तं एगट्ठिया ? एगट्ठिया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा—'णिंब–ब–जंबु–कोसंब–साल–अंकुल्ल–पीलु सेलू य । सल्लइ–मोयइ–मालुय–बउल–पलासे करंजे य ॥ १ ॥ पुत्तंजीवयऽरिट्ठे विहेलए हरिडए य भिल्लाए ।

३१. वृक्षो केटला प्रकारे कह्या छे ? वृक्षो बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–एकास्थिक–एकबीजवाळा अने बहुबीजवाळा.

३२. एकास्थि–एक बीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारे कह्या छे ? एक बीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–लींबडो, आंबो, जांबु, कोसंब–कोशाम्र, क्षुद्राम्र, जंगली आंबो. साल–राळनुं झाड, अंकोल (हिंदी–ढेरा), पीलु, सेलु–श्ले-

३१. उद्देशना क्रम प्रमाणे निर्देश थाय छे–ए न्यायथी प्रथम वृक्षनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार प्रश्न करे छे–'वृक्षो केटला प्रकारे छे' ? आचार्य उत्तर आपे छे–वृक्षो बे प्रकारे कह्या छे. जेम के–एकास्थिक–एकबीजवाळा अने बहुबीजवाळा. तेमां जेओने एक एक फळमां एक एक बीज होय छे ते एकास्थिक अथवा एक बीजवाळा वृक्षो कहेवाय छे. तथा घणुं करी अस्थिबन्ध सिवाय ज फळनी अंदर जेओने घणा बीजो छे ते बहु बीजवाळा वृक्षो कहेवाय छे.

३२. हवे एक बीजवाळा वृक्षोनुं प्रतिपादन करवा प्रश्न करे छे 'एक बीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे ? एक बीजवाळा

१. नाममात्रथी वस्तुनुं कथन करवुं ते उद्देश अने विस्तारथी तेनुं स्वरूप बताववुं ते निर्देश. २. फळ उपरनी अस्थिना जेवी कठण त्वचाने अस्थिबंध कहे छे. जेम के नाळीयेर, बदाम वगेरेने होय छे. अने तेमां प्रायः एकज बीज होय छे.

गुम्मा ४ लता य ५ वल्ली य ६ पव्वगा चेव ।७ तण –८ वलय–९ हरिय–१० ओसहि–११ जलरुह–१२ कुहणा य बोद्धव्वा ।

११ जलरुहो, अने १२ कुहणा ए प्रमाणे जाणवा.

प्रकारना छे ते आ प्रमाणे—१ आम्रादि वृक्षो, २ रींगणी प्रमुख गुच्छो, ३ नवमालिका वगेरे गुल्मो, ४ चंपकलता वगेरे लताओ, अहीं जेओना स्कन्ध प्रदेशने विषे उपर वळी एक शाखा सिवाय मोटी बीजी शाखाओ न नीकळे ते चंपकलता वगेरे लताओ जाणवी वल्ली–कोहळी अने चीभडी प्रमुखना वेला, पर्वग–शेरडी वगेरे गांठोवाळी वनस्पति. तृण–घास, कुंजक –जिंजयो, अर्जुन वगेरे, केवडी, केळ वगेरे वलय वर्गनी वनस्पति जाणवी, कारण के तेओनी छाल वलयना आकार जेवी होय छे तांदळजी, वास्तुक वगेरे हरितवर्गनी वनस्पति समजवी फळना पाकवा पछे जेनो नाश थाय छे ते डांगर प्रमुख ओषधी जाणवी पाणीमां उगनार उदक, अवक अने पनक वगेरे जलरुह, अने भूमिस्फोट जेवुं नाम छे ते कुहणा, ते काय, काय प्रमुख जाणवा

१ उदक, अवक अने पनक पाणीमां उगनार कमळना वर्गनी अप्रसिद्ध वनस्पति छे जो के पनक एटले पांच वर्णनी फुग कहेवाय छे, पण ते साधारण वनस्पति छे, अने आ पनक तो प्रत्येक वनस्पतिना भेद रूप जलरुहना वर्गनी वनस्पति छे २ कुहणा भूमिस्फोट नामे प्रसिद्ध छे–एम टीकाकार जणावे छे, अने भूमिस्फोट तो बीलाडीना टोप नामे ओळखाती साधारण वनस्पति छे, ते आथी जुदी समजवी

२८. से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया ? सुहुमवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता। तंजहा–पज्जत्तगसुहुमवणस्सइकाइया य अपज्जत्तगसुहुमवणस्सइकाइया य। सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया।

२९. से किं तं बादरवणस्सइकाइया ? बादरवणस्सइकाइया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया य साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया य।

३०. से किं तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ दुवालसविहा पन्नत्ता। तंजहा–१ रुक्खा २ गुच्छा ३

---

२८. सूक्ष्म वनस्पतिकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? सूक्ष्म वनस्पतिकायिको बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतिकायिको. एम सूक्ष्म वनस्पतिकायिको कह्या.

२९. बादर वनस्पतिकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? बादर वनस्पतिकायिको बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको अने साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको.

३०. प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको बार प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ वृक्षो, २ गुच्छो, ३ गुल्मो, ४ लताओ, ५ वेलो, ६ पर्वगो, ७ तृणो, ८ वलयो, ९ हरितो, १० ओषधिओ,

---

ते साधारण. तेवुं साधारण शरीर जेओने होय ते साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको कहेवाय छे. 'से किं तं' इत्यादि. हवे प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको केटला प्रकारना छे ? आचार्य उत्तर आपे छे–प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको बार

२७ से किं तं वणस्सइकाइया ? वणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता। तंजहा–सुहुमवणस्सइकाइया य बायर-वणस्सइकाइया य।

देशथी, रसादेशथी अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो थाय छे. तेओना सख्याता लाख योनिद्वारो छे. पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक छे त्यां अवश्य असंख्याता छे. ए प्रमाणे बादर वायुकायिको कह्या. एम वायुकायिको कह्या.

२७. वनस्पतिकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ? वनस्पतिकायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सूक्ष्म वनस्पतिकायिको अने बादर वनस्पतिकायिको.

ते शुद्धवात बस्ति के मसक वगेरेमा रहेलो ते 'शुद्ध वायु'–एम अन्य आचार्य कहे छे 'ते संक्षेपथी'–इत्यादि बधुं पूर्ववत जाणवुं अहीं पण सख्याता लाख–सात लाख योनिद्वारो जाणवा एम वायुकायिको कह्या

२७–२९. हवे वनस्पतिकायिकनुं प्रतिपादन करवा माटे सूत्रकार कहे छे–यावत्–'सूक्ष्म वनस्पतिकायिको कह्या' त्यां सुधी सुगम छे 'से किं तं' इत्यादि बादर वनस्पतिकायिका केटला प्रकारे छे ? बादर वनस्पतिकायिको बे प्रकारे छे जेम के–प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिको अने साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिको तेमां 'एकं एकं प्रति गतं' एक एक जीवने प्राप्त थयेलु ते प्रत्येक शरीर. तेवुं प्रत्येक शरीर जेओने होय ते प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतिकायिको कहेवाय छे 'समानं यथा भवति तथा आ–समन्तात् धारणं येन' श्वासोच्छ्वासादिनो उपभोग समान पणे थाय तेम आ–एक रूपे अनन्त जीवोने जे शरीर वडे धारण करवुं

उक्कलियावाए, मंडलियावाए, गुंजावाए, झझावाए, संवट्टवाए, घणवाए, तणुवाए, सुद्धवाए, जे यावण्णे तहप्पगारा। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पज्जतगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एतेसिणं वण्णादेसेणं, गन्धादेसेणं, रसादेसेणं, फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तया वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा। सेत्तं बादरवाउकाइया। सेत्तं वाउकाइया।

दक्षिणनो वायु, उत्तरनो वायु, ऊर्ध्व दिशानो वायु, अधोदिशानो वायु, तीरछो वायु, विदिशानो वायु, वातोद्भ्राम, वातोत्कलिका, वातमंडलिका, उत्कलिकावात, मंडलिकावात, गुंजावात, झंझावात, संवर्तवात, घनवात, तनुवात, शुद्धवात, अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना वायुओ बादर वायुकायिक तरीके जाणवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे तेओ असंप्राप्त–विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. जे पर्याप्ता छे तेओना वर्णादेशथी, गन्धा-

---

वंटोळीओ, घणा तरंगोवडे मिश्रित थयेलो जे वायु वाय छे ते उत्कलिकावात. मंडलिकावात–प्रारंभथी मांडी पुष्कळ मंडलाकारे जे वायु वाय छे ते. जे गुंजारव करतो वायु वाय छे ते गुंजावात. झंझावात–वृष्टिसहित वायु, अन्य आचार्य तेने अशुभ अने निष्ठुर वायु कहे छे. तृणादिने नमाववाना स्वभाव वाळो संवर्तक वायु, घनपरिणाम वाळो वायु घनवात कहेवाय छे, ते रत्नप्रभा पृथिवी वगेरेनी नीचे रहेलो छे. द्रव परिणामवाळो (प्रवाही) वायु ते तनुवात, ते घनवातनी नीचे रहे छे. मन्द अने स्थिर वायु

२४ से किं त वाउकाइया ? वाउकाइया दुविहा पन्नत्ता । तंजहा–सुहुमवाउकाइया य बादरवाउकाइया य ।

२५ से किं त सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता । तंजहा–पज्जत्तगसुहुमवाउकाइया य अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइया य । सेत्तं सुहुमवाउकाइया ।

२६ से किं त बादरवाउकाइया ? बादरवाउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता । तंजहा–पाईणवाए, पडीणवाए, दाहिणवाए, उदीणवाए, उड्ढवाए, अहोवाए, तिरियवाए, विदिसीवाए, वाउब्भामे, वाउक्कलिया, वायमंडलिया,

२४. वायुकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ? वायुकायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–सूक्ष्म वायुकायिको अने बादर वायुकायिको.

२५. सूक्ष्म वायुकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? सूक्ष्म वायुकायिको बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको अने अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिको. एम सूक्ष्म वायुकायिको कह्या.

२६. बादर वायुकायिको केटला प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–प्राचीन वात–पूर्वनो वायु, प्रतीचीन वात–पश्चिमनो वायु,

२४–२६ हवे वायुकायिकनुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे—सूत्र स्पष्ट छे परन्तु पूर्व दिशाथी जे वायु आवे छे ते प्राचीनवात. एम अपाचीनवात–पश्चिमनो वायु, दक्षिण वात अने उत्तरनो वायु आणवो. ऊंचे गमन करतो जे वायु वाय छे ते ऊर्ध्ववात, एम अधोवात अने तीरछो वात पण समजवो. वातोद्भ्राम–अनवस्थित वायु, वातोत्कलिका–समुद्रनी पेठे वायुना तरंगो, वातमंडली–

गारा। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता। तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एएसिणं वन्नादेसेणं, गन्धादेसेणं, रसादेसेणं, फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखिज्जा सेत्तं बादरतेऊकाइया। सेत्तं तेऊकाइया।

अग्निकण), निर्घात, संघर्षथी उत्पन्न थयेलो अने सूर्यकान्त मणि निश्रित. अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना तेजस्कायिको ते बधा बादर तेजस्कायिकपणे जाणवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते असंप्राप्त–विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. तेमां जे पर्याप्ता छे एओना वर्णादेशथी, गन्धादेशथी, रसादेशथी अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो थाय छे अने संख्याता लाख योनिद्वारो थाय छे. पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक पर्याप्त छे त्यां अवश्य असंख्याता अपर्याप्ता होय छे. ए प्रमाणे बादर तेजस्कायिको कह्या. एम तेजस्कायिको कह्या.

संघर्षसमुत्थित–अरणि वगेरे काष्ठना परस्पर घसावाथी थयेलो अग्नि. सूर्यकान्तमणिनिःसृत– सूर्यना आकरां किरणना योगे सूर्यकान्त मणिथी जे अग्नि उत्पन्न थाय छे ते. ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना तेजस्कायिको होय ते बधा बादर तेजस्कायिकपणे जाणवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे '–इत्यादि बधुं पूर्ववत् जाणवुं. परन्तु संख्याता लाख एटले सात लाख योनिद्वारो कह्या छे. एम तेजस्कायिको कह्या.

२२ से किं त सुहुमतेउक्काइया ? सुहुमतेउक्काइया दुविहा पन्नत्ता। तजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। सेत्त सुहुमतेउक्काइया।

२३ से किं त बादरतेउक्काइया ? बादरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता। तजहा—ईंगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए, सुद्धागणी, उक्का, विज्जू, असणी, णिग्घाए, संघरिससमुट्ठिए, सूरकन्तमणिणिस्सिए, जे यावन्ने तहप्प-

२२. सूक्ष्म तेजस्कायिको केटला प्रकारना कह्या छे ? सूक्ष्म तेजस्कायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे— पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए प्रमाणे सूक्ष्म तेजस्कायिको कह्या.

२३. बादर तेजस्कायिको केटला प्रकारना कह्या छे ? बादर तेजस्कायिको अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे— अंगारा, ज्वाला, मुर्मुर—भाठो, अर्चि (उडती ज्वाला), अलात—उंबाडीउं, शुद्धाग्नि, उल्का, विद्युत्, अशनि (आकाशमां पडता

२१–२३ हवे तेजस्कायिकोनुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—सर्व सुगम छे परन्तु अंगार—धूमरहितनो अग्नि, ज्वाला—पळता खेर वगेरे काष्ठनी अग्निनी साथे संबंधवाळी ज्वाळ, परन्तु कोइ आचार्य तेने दीवानी शिखा कहे छे मुर्मुर— छाणा वगेरेमां राखथी मिश्रित थयेला अग्निना कणो, अर्चि—अग्निनी साथे संबंध विनानी अधर उडती ज्वाळा, अलात— उंबाडीयुं, शुद्धाग्नि—लोढाना गोळा वगेरेमां जे अग्नि होय छे ते, उल्का—तुरछी, रेखासहित खरतो तारो देखाय छे ते अशनि—आकाशमां पडता अग्निमय कण—रेखा विनानो खरतो तारो देखाय छे ते विद्युत् प्रसिद्ध छे निर्घात—वैक्रिय वज्रना आघातथी थयेलो अग्नि

२१. से किं तं तेऊकाइया ? तेऊकाइया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा-सुहुमतेऊकाइया य वादरतेऊकाइया य।

बे प्रकारना छे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे तेओ असंप्राप्त-विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. तेमां जे पर्याप्ता छे एओना वर्णादेशथी, गन्धादेशथी, रसादेशथी अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो थाय छे. अने संख्याता लाख योनिद्वारो छे. पर्याप्तनी निश्राए अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक पर्याप्त छे त्यां अवश्य असंख्याता अपर्याप्ता होय छे. ए प्रमाणे वादर अप्कायिको कह्या. एम अप्कायिको कह्या.

२१. तेजस्कायिको केटला प्रकारना कह्या छे? तेजस्कायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-सूक्ष्म तेजस्कायिको अने वादर तेजस्कायिको.

उष्ण परिणामवाळुं पाणी, क्षारोदक-कंइक खारुं पाणी, जेमके लाटदेशादिने विषे केटलाक कुवा वगेरेमां खारुं पाणी होय छे. खट्टोदक- कंइक खाटा परिणामवाळुं पाणी, अम्लोदक- स्वभावथी ज कांजीनी पेठे खाटा स्वभाववाळुं पाणी, लवण समुद्रमां रहेलुं ते लवणोदक, वारुण समुद्रमां रहेलुं (मदिराना जेवा रसवाळुं पाणी) वारुणोदक, क्षीर समुद्रमां रहेलुं क्षीरोदक, इक्षु समुद्रमां रहेलुं क्षोदोदक अने पुष्करवर समुद्रादिमां रहेलुं रसोदक. ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना भिन्न भिन्न रस-स्पर्शादिवाळा घृतोदकादि वादर अप्कायिको छे ते वादर अप्कायिकपणे समजवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना छे-इत्यादि बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. परन्तु संख्याता लाख योनिप्रवाहो कह्या छे त्यां पण सात लाख जाणवा. ए प्रमाणे अप्कायिको कह्या.

२०. से किं तं बादरआउकाइया ? बादरआउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता । तंजहा–उस्सा, हिमए, महिया, करए, हरतणुए, सुद्धोदए, सीतोदए, उसिणोदए, खारोदए, खट्टोदए, अम्बिलोदए, लवणोदए, वारुणोदए, खीरोदए, घओदए, खोतोदए, रसोदए, जे यावन्ने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता । तं जहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं गन्धादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं । पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखिज्जा । सेत्तं बादरआउकाइया । सेत्तं आउकाइया ।

१९. बादर अप्कायिको केटला प्रकारना कह्या छे ? बादर अप्कायिको अनेक प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे– अवश्याय–झाकळ, हिम–बरफ, महिका–धूमस, करा, हरतनु–(वनस्पति उपरना पाणीना बिन्दु) शुद्धोदक, शीतोदक, उष्णोदक, क्षारोदक, खाटोदक (कडक खाटु पाणी), अम्लोदक (खाटु पाणी), लवणोदक, वरुणोदक, (मदिराना स्वादवाळु पाणी,) क्षीरोदक, घृतोदक, क्षोदोदक (इक्षुना रस जेवु पाणी) अने रसोदक (पाणीना जेवा स्वादवाळु)–इत्यादि बीजा तेवा प्रकारना उदको होय ते. ते संक्षेपथी

हरतनु–जे पृथिवीने भेदीने थतुं अंकुर, के घास वगेरेना अग्र भाग उपर बंधायेला पाणीना बिंदुओ, शुद्धोदक–आकाशथी पडेलुं अथवा नदी वगेरेनु पाणी ते स्पर्श अने रसादिना भेदथी अनेक प्रकारनु छे ते अनेक प्रकार बताये छे–शीतोदक–नदी, तळाव, कुवा, वाव, अने पुष्करिणी प्रमुख जलाशयने विषे शीत परिणामवाळुं पाणी उष्णोदक–स्वभावथीज कोइ झरा वगेरेने विषे

१८. से किं तं आउक्काइया? आउक्काइया दुविहा पण्णत्ता। तंजहा–सुहुमआउक्काइया य बादरआउक्काइया य।

१९. से किं तं सुहुमआउक्काइया? सुहुमाउकाइया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा–पज्जत्तसुहुमआउकाइया य अपज्जत्तसुहुमआउकाइया य। सेत्तं सुहुमआउकाइया।

---

१८. अप्कायिको केटला प्रकारना कह्या छे? अप्कायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे — सूक्ष्म अप्कायिको अने बादर अप्कायिको.

१९. सूक्ष्म अप्कायिको केटला प्रकारना छे? सूक्ष्म अप्कायिको बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे– पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिको अने अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिको. ए प्रमाणे सूक्ष्म अप्कायिको कह्या.

एटले प्राणीओना उत्पत्तिस्थानो व्यक्तिगत भेदथी असंख्याता छे तो पण जाति–अमुक वर्णादिनी समानताने आश्रयी एकज योनि गणवी. तेथी सूक्ष्म अने बादर पृथिवीकायिकोनी मळी संख्याता (सात) लाख योनि थाय छे. पर्याप्तानी निश्राए असंख्याता अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक पर्याप्त छे त्यां तेनी निश्राए अवश्य असंख्याता अपर्याप्ता होय छे. उपसंहार कहे छे–'सेत्तं' इत्यादि वडे निगमन सुगम छे. ए प्रमाणे पृथिवीकायिको कह्या.

१८. हवे अप्कायिकोनुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे–सुगम छे. 'उस्सा' अवश्याय–झाकळ, हिम–ठरी गयेलुं पाणी. महिका धूमस, गर्भमास–मागशर वगेरे महिनाओमां सूक्ष्म वृष्टि थाय छे ते, करक–घनोपल, घनरूपे थयेला ठरी गयेला उपल–पाणीना ककडा,

मरण पामे छे, आयुष बान्ध्या सिवाय मरण पामता नथी अने आयुषनो बन्ध शरीर अने इन्द्रिय पर्याप्ति पूरी थया पछी ज थाय छे, ते सिवाय थतो नथी माटे शरीर अने इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण थाय, अने उच्छ्वासपर्याप्ति अपूर्ण होय त्यारे अपर्याप्त जीवो मरण पामे छे अन्य आचार्य कहे छे के 'असंप्राप्त एटले सामान्य रीते वर्णादिने नहि प्राप्त थयेला' ए अर्थ युक्त नथी कारण के शरीरनी साथे ज वर्णादि होय छे, अने शरीर तो शरीरपर्याप्तिवडे ज थयेलुं छे" तेमां जे पर्याप्ता छे एटले जेओए स्वयोग्य बधी पर्याप्तिओ पूर्ण करली छे तेओना वर्णादेशथी—वर्णना भेदनी विवक्षाथी, एम गन्धादेशथी, रसादेशथी अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो थाय छे जेमके वर्ण कृष्णादि भेदथी पांच प्रकारे छे गन्ध सुगन्ध अने दुर्गन्ध एम बे प्रकारे छे, रस कडवा वगेरे पांच प्रकारनो छे स्पर्श मृदु, कर्कश वगेरे आठ प्रकारनो छे वळी एक एक वर्णादिना तारतम्य भेदथी अनेक पेटा भेदो थाय छे जेमके, भ्रमर, कोयल अने काजळमां अनुक्रमे कृष्ण वर्णनो तरतमभाव होवाथी तेना कृष्ण, कृष्णतर अने कृष्णतम—इत्यादि रूपे अनेक भेदो थाय छे ए प्रमाणे नीलादिवर्णने विषे पण योजना करवी एम गन्ध, रस अने स्पर्शने विषे पण जाणवु तथा वर्णोना परस्पर संयोगथी धूसर (धूसरो) कावरचितरा वगेरे अनेक भेदो थाय छे एम गन्धादिना पण परस्पर गन्धादिना योगथी घणा भेदो थाय छे, माटे वर्णादिनी विवक्षा करतां हजारो भेदो थाय छे, अने संख्याता लाख योनिप्रमुख—योनिद्वारो थाय छे ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिकोनी एक एक वर्ण, गन्ध, रस अने स्पर्शने विषे संवृत योनि होय छे तेना वळी त्रण प्रकार थाय छे—सचित्त, अचित्त अने मिश्र तेना वळी त्रण प्रकार छे—शीत, उष्ण अने शीतोष्ण प्रत्येक शीतादिना पण तरतमभावथी अनेक भेदो थाय छे ए प्रमाणे स्वस्थानने आश्रयी व्यक्तिभेदथी विशिष्ट वर्णादि युक्त असंख्य योनिओ छतां जातिने आश्रयी एक ज योनि गणाय छे

वालुका–अवरखना कणोथी मिश्रित थयेली रेती. आ खर बादर पृथिवीकायना भेदो छे. मणिना भेदो पण बादर पृथिवीकायना भेदरूपे जाणवा. ते मणिना भेदो बतावे छे. 'गोमेध्यक' इत्यादि. २३ गोमेध्यक २४ रुचक, २५ अंक, २६ स्फटिक, २७ लोहिताक्ष, २८ मरकत–नीलम, २९ मसारगल्ल, ३० भुजमोचक, ३१ इन्द्रनील, ३२ चंदन, ३३ गैरिक, ३४ हंसगर्भ, ३५ पुलक, ३६ सौगन्धिक, ३७ चंद्रप्रभ, ३८ वैडूर्य, ३९ जलकान्त अने ४० सूर्यकान्त. ए प्रमाणे पहेली गाथाथी पृथिव्यादि चौद भेदो, बीजी गाथाथी हडताळ वगेरे आठ भेदो, त्रीजी गाथाथी गोमेध्यकादि मणिना नव भेदो अने चोथी गाथाथी बाकीना नव भेदो. एम बधा मळीने चाळीश भेदो खरबादरपृथिवीकायिकना कह्या. ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना पद्मरागादि मणिना भेदो होय ते खरबादर पृथिवीकायपणे जाणवा. ते सामान्यरूपे बादर पृथिवीकायिको संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते असंप्राप्त–स्वयोग्य बधी पर्याप्तिओने प्राप्त थयेला नथी. अथवा असंप्राप्त एटले विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. ते आ प्रमाणे –वर्णादिना भेदनी विवक्षा करवामां आवे तो तेओनो कृष्णादि वर्णरूपे व्यवहार करी शकातो नथी. कारण के शरीरादि पर्याप्तिओ पूरी थया पछी बादर जीवोमां वर्णादिनो विभाग प्रकट थाय छे, पण अपूर्ण होय त्यारे थतो नथी. ते अपर्याप्ता जीवो उच्छ्वास पर्याप्ति पूरी कर्या सिवाय ज मरण पामे छे, माटे तेओमां स्पष्ट वर्णादिनो विभाग होतो नथी माटे 'असंप्राप्त'–वर्णादिने नहि प्राप्त थयेला कह्या छे.

प्र० –अपर्याप्त जीव शरीर अने इन्द्रिय पर्याप्ति पूरी थया बाद उच्छ्वास पर्याप्ति अपूर्ण होय त्यारे केम मरण पामे छे, पण शरीर अने इन्द्रिय पर्याप्ति अपूर्ण होय त्यारे केम मरण पामता नथी? उ० – बधा प्राणीओ आवता भवनुं आयुष बांधीने ज

ते समासओ दुविहा पन्नत्ता। तजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थण जे ते अपज्जत्तगा ते ण असपत्ता। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेण, रसादेसेण, गंधादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ, संखेज्जाइ जोणिप्पमुहसतसहस्साइ। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा। से त्त खरबायरपुढविकाइया। सेत्त बायरपुढविकाइया। सेत्त पुढविकाइया।

वैडूर्य, ३९ जलकान्त (चन्द्रकान्त), ४० सूर्यकान्त. (४) इत्यादि यावत् तेवा प्रकारना बीजा होय ते पण खर बादर पृथिवीकायिको जाणवा. ते संक्षेपथी बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते असमाप्त–विशिष्ट वर्णादिने प्राप्त थयेला नथी. जे पर्याप्ता छे तेओना वर्णादेशथी, गन्धादेशथी, रसादेशथी अने स्पर्शादेशथी हजारो भेदो छे अने तेओना संख्याता लाख योनिद्वारो छे. पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. ज्यां एक पर्याप्त छे त्यां अवश्य असंख्याता अपर्याप्ताओ होय छे. ए प्रमाणे खर बादर पृथिवीकायिको कह्या.

२ शर्करा–नाना पत्थरना ककडा, ३ वालुका– रेती, ४ उपल–टाकणा वगेरे उपकरणनी घडवा लायक पत्थर, ५ शिला–देवमदिरनी पीठादिने उपयोगी मोटो पत्थर. ६ लवण–समुद्रादिना पाणीथी बनेलु मीठु, ऊष–खारो, जेनाथी ऊखर जमीन कहेवाय छे ८ लोढु, ९ तांबु, १० जसत, ११ सीसु, १२ रूपुं, १३ सुवर्ण ए प्रसिद्ध छे १४ वज्र–हीरो, १५ हडताल, १६ हिंगलो अने १७ मणसील प्रसिद्ध छे १८ सासग–पारो, १९ अंजन–सौवीराजन–सुरमो वगेरे, २० प्रवाल–परवाळा, २१ अभ्रपटल (अबरख) प्रसिद्ध छे अभ्र

सुवन्ने य १४ वइरे य ॥१॥ १५ हरियाले १६ हिंगुलए १७ मणासिला १८–२० सासगं–जण–पवाले। २१ अब्भपडल २२ ब्भवालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जए य २४ रुयए २५ अंके २६ फलिहे य २७ लोहियक्खे य। २८ मरगय २९ मसारगल्ले ३० भुयमोयग ३१ इन्दनीले य ॥ ३ ॥ ३२ चंदण ३३ गेरुय ३४ हंसगब्भ ३५ पुलए ३६ सोगन्धिए य बोद्धव्वे। ३७ चन्दप्पभ ३८ वेरुलिए ३९ जलकंते ४० सूरकंते य ॥ ४॥ जेयावन्ने तहप्पगारा।

---

९ तांबु, १० जसत, ११ सीसुं, १२ रूपुं, १३ सुवर्ण, १४ वज्ररत्न, (१) १५ हडताल, १६ हिंगळो, १७ मणसील, १८ सासग–पारो, १९ अंजनरत्न, २० प्रवाल, २१ अभ्रपटल (अबरख), २२ अभ्रवालुका अने मणिना भेदो–ए बधा बादर पृथिवीकायने विशे जाणवा. (२) २३ गोमेध्यक, २४ रुचक, २५ अंक, २६ स्फटिक, २७ लोहिताक्ष, २८ मरकत, २९ मसारगल्ल, ३० भुजमोचक, अने ३१ इन्द्रनील, (३) ३२ चंदनरत्न, ३३ गेरिक, ३४ हंसगर्भ, ३५ पुलक, ३६ सौगन्धिक, ३७ चंद्रप्रभ, ३८

ते पूर चाल्युं जाय त्यारे जे कोमळ अने मृदु पंकरूप माटी होय छे के जेने जलनो मळ कहेवामां आवे छे ते पनकमृत्तिका. ते रूप जीवो पण अभेदोपचारथी पनकमृत्तिका कहेवाय छे. हवे उपसंहार कहे छे–ए प्रमाणे श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको कह्या.

१७. खर बादर पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे? आचार्य उत्तर आपे छे–खर बादर पृथिवीकायिको अनेक प्रकारे कह्या छे. तेना चाळीश भेद तो मुख्यपणे कह्या छे. ते चाळीश भेदो सूत्रमां कहेली चार गाथावडे बतावे छे–जेम भामा कहेवाथी सत्याभामानुं ग्रहण थाय छे तेम पृथिवी कहेवाथी १ शुद्ध पृथिवी जाणवी, ते नदीना कीनारानी भेखड वगेरे रूप समजवी.

या, २ नीलमत्तिया, ३ लोहियमत्तिया, ४ हालिद्दमत्तिया, ५ सुक्किल्लमत्तिया, ६ पाण्डुमत्तिया, ७ पणगमत्तिया। सेत्त सण्हबादरपुढविकाइया।

१७ से किं तं खरबायरपुढविकाइया? खरबायरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता। तंजहा–१ पुढवी य २ सक्करा ३ वालुया य ४ उवले ५ सिला य ६–७ लोणू–से। ८ अय ९ तंब १० तउय ११ सीसय १२ रुप्प १३

---

१ कृष्णमृत्तिका–काळी माटी, २ नीलमृत्तिका, ३ लोहितमृत्तिका–राती माटी, ४ हारिद्रमृत्तिका–पीळी माटी, ५ शुक्लमृत्तिका–धोळी माटी, ६ पांडुमृत्तिका अने ७ पनकमृत्तिका. ए प्रमाणे श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको कह्या.

१७. खर बादर पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे? खर बादर पृथिवीकायिको अनेक प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—१ शुद्ध-पृथिवी, २ शर्करा (कांकरा), ३ वालुका (रती), ४ उपल (नाना पत्थर), ५ शिला, ६ लवण, ७ ऊष–खारो, ८ लोढु,

---

१६ श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे? आचार्य उत्तर आपे छे—श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको सात प्रकारे छे ते सात प्रकार 'तंजहा' इत्यादि सूत्र वडे बतावे छे–कृष्णमृत्तिका–काळी माटी, नीलमृत्तिका–लीली माटी, राती माटी, पीळी माटी अने धोळी माटी वगेरे. पण वर्णना भेदथी पांच प्रकार कह्या छे पांडु मृत्तिका–अमुक देशमां धूळरूपे रहेली छतां 'पांडु' ए नामे प्रसिद्ध छे तेथी जीवो पण अभेदोपचारथी पांडुमृत्तिकारूप कहेवाय छे 'पनकमृत्तिका' इति नदी वगेरेना पूरथी व्याप्त थयेला प्रदेशमां ज्यारे

१५. से किं तं बादरपुढविकाइया ? बादरपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—सण्हबादरपुढविकाइया य खरबादरपुढविकाइया य।

१६. से किं तं सण्हबायरपुढविकाइया ? सण्हबायरपुढविकाइया सत्तविहा पन्नत्ता। तंजहा—१ किण्हमत्ति-

१५. बादर पृथिवीकायिकोना केटला प्रकार छे ? बादर पृथिवीकायिकोना बे प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—श्लक्ष्ण–मृदु बादर पृथिवीकायिको अने खर–कठण बादर पृथिवीकायिको.

१६. श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिकोना केटला प्रकार छे ? श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिकोना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—

१५. सूक्ष्म पृथिवीकायिको कह्या, हवे बादर पृथिवीकायिको कहेवानी इच्छावाळा आचार्य ते संबन्धे प्रश्नसूत्र कहे छे—बादर पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे ? आचार्य उत्तर आपे छे—बादर पृथिवीकायिको बे प्रकारे छे—श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको अने खर बादर पृथिवीकायिको. श्लक्ष्ण–चूर्ण थयेल लोष्ट–ढेफाना जेवी मृदु पृथिवी, तेवा स्वरूपवाळा जीवो पण उपचारथी श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको कहेवाय छे. अथवा श्लक्ष्ण–मृदु बादर पृथिवी जेओनुं शरीर छे तेओ श्लक्ष्ण बादर पृथिवीकायिको कहेवाय छे. अहीं स्वार्थमां 'इक' प्रत्यय थयो छे. 'च' शब्द पोताना अनेक पेटा भेदोनो सूचक छे. खर–संघात विशेष अथवा कठीनता विशेषने प्राप्त थयेली पृथिवी, तेवा स्वरूपवाळा जीवो पण उपचारथी खर कहेवाय छे. अथवा पूर्वनी पेठे खर बादर पृथिवी जेओनुं शरीर छे तेओ खर बादर पृथिवीकायिको कहेवाय छे.

बधी पर्याप्तिओनो पण समाप्तिकाल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण छे पर्याप्तिओ जेने होय ते पर्याप्ता कहेवाय छे एवा सूक्ष्मपृथिवीकायिको ते पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिको कहेवाय छे अहीं मूळमां आवेलो 'च' शब्द पोताना लब्धिपर्याप्त अने करणपर्याप्त रूप बे भेदोनो सूचक छे जेओ स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी करता नथी ते अपर्याप्ता एवा सूक्ष्म पृथिवीकायिको ते अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिको कहेवाय छे अहीं पण 'च' शब्द करण अने लब्धिनिमित्तक करणअपर्याप्ता अने लब्धिअपर्याप्ता एवा बे भेदोनो सूचक छे, ते आ प्रमाणे—सूक्ष्मपृथिवीकायिक अपर्याप्त लब्धि अने करण एवे बे प्रकारना छे तेमा जेओ अपर्याप्तावस्थामां ज मरण पामे छे ते लब्धि अपर्याप्ता अने जेओए हजी करणो—शरीर इन्द्रियादि पर्याप्तिओ पूरी करी नथी पण अवश्य पूर्ण करशे तेओ करण अपर्याप्ता कहेवाय छे उपसंहार करे छे—ए प्रमाणे सूक्ष्म पृथिवीकायिको कह्या

शरीरपर्याप्ति सूक्ष्म छे, कारण के ते घणां सूक्ष्म द्रव्यना समूहथी बनेली छे तेथी इन्द्रियपर्याप्ति वधारे सूक्ष्म छे, तेनाथी पण श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति सूक्ष्म छे तेथी भाषापर्याप्ति सूक्ष्म छे अने तेथी मनःपर्याप्ति वधारे सूक्ष्म छे तेनो उत्तरोत्तर सूक्ष्मता दृष्टान्तथी बतावे छे—सूतर कांतवु अने काष्ठ वगेरे घडवानी पेठे, जाडु सूतर कांतनारी अने झीणु सूतर कांतनारी कातवानो एक साथे आरंभ करे तेमां जाडु सूतर कांतनारी जल्दी कोकडु पूरु करे अने झीणुं सूतर कांतनारी लांबा काळे पूरु करे काष्ठ घडवामां पण आज क्रम छे थांभला वगेरेनु चोरस वगेरे मोटी कारीगरीनुं काम थोडा काळमां थाय छे अने तेज थांभलो पत्ररचना अने पुतळीओ वगेरे सहित घडवामां आवे तो लांबा काळे तैयार थाय छे जुओ—तत्त्वार्थटीका (अ ८ सू. १२)

थाय छे. ते आ प्रमाणे—पहेली आहारपर्याप्ति पूरी थाय छे, त्यार पछी शरीरपर्याप्ति, त्यार पछी इन्द्रियपर्याप्ति—इत्यादि क्रमथी थाय छे. आहारपर्याप्ति उत्पत्तिना प्रथम समये ज पूरी थाय छे अने बाकीनी प्रत्येक पर्याप्तिओ अनुक्रमे अन्तर्मुहूर्ते पूरी थाय छे.

प्र०—आहारपर्याप्ति प्रथम समये ज पूरी थाय एम शाथी जाणी शकाय? उ०—आहारपदना बीजा उद्देशकमां आ सूत्र छे—"हे भगवन्! आहारपर्याप्ति वडे अपर्याप्त जीव शुं आहारक होय के अनाहारक होय? हे गौतम! आहारक न होय, पण अनाहारक होय." आहारपर्याप्ति वडे अपर्याप्त जीव विग्रह गतिमां ज होय छे, पण उत्पत्ति क्षेत्रमां आवेलो होतो नथी. कारण के उत्पत्ति क्षेत्रमां आवेलो जीव प्रथम समये ज आहारक होय छे. तेथी आहारपर्याप्तिनो काळ एक समयनो ज छे. जो उत्पत्ति क्षेत्रमां आव्या छतां पण आहारपर्याप्ति वडे अपर्याप्त होत तो उत्तरसूत्र एम कहेत के 'कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय.' जेम शरीरादिपर्याप्तिओ वडे अपर्याप्त जीव कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय—एम कह्युं छे.

अने मूकवाना सामर्थ्यने उत्पन्न करवानी क्रियानी परिसमाप्ति ते मनःपर्याप्ति—एम कोई आचार्य इन्द्रिय पर्याप्तिथी जुदी मनःपर्याप्ति माने छे, अने इन्द्रिय पर्याप्तिना ग्रहण वडे मनःपर्याप्तिनुं ग्रहण करता नथी. पण मनःपर्याप्तिने कोइ माने छे अने कोई मानता नथी—एम समजवानुं नथी.

आसा युगपदारब्धानामपि क्रमेण समाप्तिः, उत्तरोत्तरसूक्ष्मतरत्वात्, सूत्रदार्वादिकर्तनघटनवत् । आ छ ए पर्याप्तिओनो एक साथे आरंभ थाय छे, पण अनुक्रमे समाप्ति थाय छे. अनुक्रमे समाप्ति थवानुं कारण जणावे छे—'उत्तरोत्तर सूक्ष्म होवाथी'. जेमके आहारपर्याप्तिथी

एकेन्द्रिय, संज्ञी सिवाय बेइन्द्रियादि, अने संज्ञीने अनुक्रमे चार, पांच अने छ पर्याप्तिओ होय छे ए संबंधे प्रज्ञापना ग्रन्थना मूल टीकाकारे कह्यु छे के–"एकेन्द्रियाने चार, विकलेन्द्रियाने पांच, असंज्ञीने पांच अने संज्ञीने छ पर्याप्तिओ होय छे" उत्पत्तिना प्रथम समये जेने जेटली पर्याप्तिओ योग्य छे तेटली बधी पर्याप्तिओनो एक साथे आरंभ थाय छे अने एक पछी एक एम अनुक्रमे पूरी पर्याप्तिओ थवा पामे विशेषपणे शरीर, इन्द्रिय, भाषा, मन अने श्वासोच्छ्वासने योग्य पुद्गलो ग्रहण करवाना थाय छे प्रथम समये ग्रहण करेला तथा प्रतिसमय ग्रहण कराता एवा ते पुद्गलोथी ज करणनी निष्पत्ति थाय छे ते पर्याप्तिशब्दवाच्य छे तेथी एम पण जणाय छे के शरीरने योग्य पुद्गलोथी शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियने योग्य पुद्गलोथी इन्द्रियपर्याप्ति, भाषाने योग्य पुद्गलोथी भाषापर्याप्ति, श्वासोच्छ्वासने योग्य पुद्गलोथी श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति अने मनने योग्य पुद्गलोथी मनःपर्याप्तिनी निष्पत्ति संभवे छे

'त्वगादीन्द्रियनिर्वर्तनक्रियापरिसमाप्तिरिन्द्रियपर्याप्तिः' । त्वक्–स्पर्शनेन्द्रिय अने आदि शब्दथी, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र अने मन, तेओना स्वरूपने उत्पन्न करवानी क्रियानी परिसमाप्ति ते इन्द्रियपर्याप्ति

'प्राणापानक्रियायोग्यद्रव्यग्रहण–निसर्गशक्तिनिर्वर्तनक्रियापरिसमाप्तिः प्राणापानपर्याप्तिः' । उच्छ्वास अने निःश्वासनी क्रियाने योग्य श्वासोच्छ्वास वर्गणाना द्रव्यने ग्रहण करवानी अने मूकवानी शक्ति–सामर्थ्यने उत्पन्न करवानी क्रियानी परिसमाप्ति ते श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति

'भाषायोग्यद्रव्यग्रहणनिसर्गशक्तिनिर्वर्तनक्रियापरिसमाप्तिर्भाषापर्याप्तिः' । भाषाने योग्य भाषावर्गणाना द्रव्यने ग्रहण करवा अने मूकवानी शक्ति–सामर्थ्यने उत्पन्न करवानी क्रियानी परिसमाप्ति ते भाषापर्याप्ति

'मनस्त्वयोग्यद्रव्यग्रहण–निसर्गशक्तिनिर्वर्तनक्रियापरिसमाप्तिर्मनःपर्याप्तिरित्येके' । मनरूपे परिणमन योग्य मनोवर्गणा द्रव्यने ग्रहण करवा

छे तेमज प्रतिसमय ग्रहण कराय छे के जे ते पुद्गलोना संबन्धथी ते रूपे परिणत थता जाय छे ते पुद्गलोनी आहारादि
पुद्गलोने खल अने रसरूपे परिणमन करवानी शक्ति ते पर्याप्ति. जेम के उदरमां रहेला पुद्गलविशेषनी आहारना पुद्गलने
खल अने रसरूपे परिणमन करवानी शक्ति छे. ते पर्याप्ति छ प्रकारे छे–१ आहारपर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इन्द्रियपर्याप्ति,
४ श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति, ५ भाषापर्याप्ति अने ६ मनःपर्याप्ति. जे शक्तिथी बाह्य आहारने ग्रहण करी खल अने रसरूपे परिणमन करे
ते आहारपर्याप्ति. जे शक्तिथी रसरूपे थयेला आहारने रस, रुधिर, मांस, मेद–चरबी अस्थि, मज्जा अने वीर्य रूप सात धातुपणे
परिणमन करे ते शरीरपर्याप्ति. जे शक्तिथी धातुरूपे परिणमावेला आहारने इन्द्रियरूपे परिणमन करे ते इन्द्रियपर्याप्ति. आज
अर्थ बीजे स्थळे पण अन्य प्रकारे कहेलो छे–"पांच इन्द्रियोने योग्य पुद्गलो ग्रहण करी अनाभोगजन्य–उपयोग सिवाय प्रवृत्त थयेला
वीर्य वडे इन्द्रियरूपे परिणमन करवानी शक्ति ते इन्द्रियपर्याप्ति." जे शक्तिथी उच्छ्वासयोग्य पुद्गलो ग्रहण करी उच्छ्वासपणे
परिणमावी अवलंबन करी मूके ते उच्छ्वासपर्याप्ति . जे शक्तिथी भाषायोग्य पुद्गलो लइने भाषापणे परिणमावी अवलंबन करीने
छोडी दे ते भाषापर्याप्ति. जे शक्तिथी मनने योग्य पुद्गलो लइने मनपणे परिणमावी अवलंबन करीने छोडी दे ते मनःपर्याप्ति.

'गृहीतस्य शरीरतया संस्थापनक्रियापरिसमाप्तिः शरीरपर्याप्तिः'। सामान्यरूपे ग्रहण करेला पुद्गलोने शरीर रूपे संस्थापन–रचना क्रियानी परिसमाप्ति ते शरीरपर्याप्ति.

अहीं प्रज्ञापना सूत्रना टीकाकारे पर्याप्तिनी व्याख्यामां उत्पत्तिस्थाने आवीने जीव जे पुद्गलो ग्रहण करे छे अने पछी प्रतिसमय जे पुद्गलो ग्रहण कराय छे–एम सामान्य रूपे कह्युं छे, पण कया पुद्गलो ग्रहण करे छे–एम स्पष्ट कह्युं नथी, परन्तु तत्त्वार्थकारे आहार-

आहारग्रहण करवामां समर्थ करणनी उत्पत्ति ते आहारपर्याप्ति, शरीरना करणनी निष्पत्ति ते शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियना करणनी उत्पत्ति ते इन्द्रियपर्याप्ति, उच्छ्वास अने निःश्वासने योग्य करणनी उत्पत्ति ते प्राणापानपर्याप्ति भाषा योग्य पुद्गलोने ग्रहण करवामां अने छोडवामां समर्थ करणनी उत्पत्ति ते भाषापर्याप्ति कह्यु छे के–" आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा अने मननी उत्पत्ति जे पुद्गलोथी थाय छे तेना प्रति जे करण ते पर्याप्ति सिद्धान्तमां छ पर्याप्तिओ प्रसिद्ध छे तो अहीं पांच पर्याप्तिओ केम कही ? तेनो उत्तर ए छे के अहीं इन्द्रिय पर्याप्तिना ग्रहणथी मन पर्याप्तिनुं ग्रहण करेलु छे, माटे पांच पर्याप्तिओ कही छे (प्र०–) शास्त्रकारे मनने अनिन्द्रिय कह्यु छे तो इन्द्रियना ग्रहणथी मननुं ग्रहण केम थाय ? (उ०–) जेम शब्दादि विषयने ग्रहण करनार साक्षात् चक्षु आदि छे, तेवु मन नथी, अने सुखादिने साक्षात् ग्रहण करनार मन छे, माटे मन संपूर्ण इन्द्रिय नथी, पण इन्द्र–आत्मानुं लिंग होवाथी इन्द्रिय पण छे अहीं पांच ज पर्याप्तिओ कही छे ते बाह्य करणनी अपेक्षाए जाणवी, पण मन अन्तःकरण छे माटे मनःपर्याप्ति जुदी कही छे, तेमां कंइ पण दोष नथी ए रीते प्रकारे मनःपर्याप्तिनो संभव छे अहीं तैजस अने कार्मण शरीर सहित ज आत्मानी विवक्षित क्रियानी परिसमाप्ति एटले विवक्षित क्रिया–करवामां समर्थ करणनी उत्पत्ति ते पर्याप्ति औदारिकादि शरीरनी प्रथम उत्पत्तिमां ज आ पर्याप्तिओनो विचार कर्यो छे आ छ ए पर्याप्तिओना आरंभ एक साथे थाय छे अने अनुक्रमे पूरी थाय छे पण साथे पूरी थती नथी कारण के उत्तरोत्तर पर्याप्तिओ अधिक अधिक काळे समाप्त थाय छे तेमां आहार पर्याप्तिनुं स्वरूप भाष्यकार कहे छे–"शरीरेन्द्रिय–वाङ्–मन–प्राणापानयोग्यदलिकद्रव्याहरणक्रियापरिसमाप्तिराहारपर्याप्ति "। शरीर, इन्द्रिय, भाषा, मन, अने प्राणापान–श्वासोच्छ्वासने योग्य दलिक–पुद्गलोनी आहरण–ग्रहण क्रियानी परिसमाप्ति ते आहारपर्याप्ति करणविशेष छे अहीं मनना ग्रहण करवाथी स्पष्ट रीते इन्द्रिय पर्याप्तिना ग्रहणथी मनःपर्याप्तिनु ग्रहण कर्युं छे

१४. से किं तं सुहुमपुढविकाइया? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता। तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य। सेत्तं सुहुमपुढविकाइया।

१४. सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे? सूक्ष्म पृथिवीकायिको बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे— पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको अने अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको. ए प्रमाणे सूक्ष्म पृथिवीकायिको कह्या.

द्रव्यनी पेठे सर्वलोकव्यापी छे अने बादर पृथिवीकायिक लोकना प्रतिनियत–अमुक भागमां रहेला छे. तेनुं प्रतिनियत देशवर्तिपणुं आ सूत्रना बीजा पदमां जणावशे.

१४. हवे सूक्ष्म पृथिवीकायिकना स्वरूपनी जिज्ञासावाळो शिष्य प्रश्न करे छे—सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटला प्रकारना छे? आचार्य उत्तर आपे छे—सूक्ष्म पृथिवीकायिकोना पर्याप्त–स्वयोग्य पर्याप्ति सहित अने अपर्याप्त–स्वयोग्य पर्याप्ति रहित–एवा बे प्रकार छे. तेमां आहारादि पुद्गलोने ग्रहण करवामां अने तेने रसादि रूपे परिणमन करवामां हेतुभूत आत्मानी शक्तिविशेष ते पर्याप्ति. ते पुद्गलोना उपचयथी थाय छे. तात्पर्य ए छे के–उत्पत्ति स्थाने आवीने जीवे प्रथम समये जे पुद्गलो ग्रहण करेला

१. पर्याप्तिः क्रियापरिसमाप्तिरात्मनः। विवक्षित आहारग्रहण, शरीरनिर्वर्तनादि क्रिया करवामां समर्थ करणनी निष्पत्ति ते पर्याप्ति, ते पुद्गल रूप छे अने ते ते क्रियाना कर्ता आत्मानुं करणविशेष छे. जे करणविशेषथी आत्मामां आहारादि ग्रहण करवानुं सामर्थ्य उत्पन्न थाय ते करण जे पुद्गलोथी नीपजे तेवा प्रकारना परिणामवाळा आत्माए ग्रहण करेला पुद्गलो पर्याप्तिशब्दथी व्यवहाराय छे. जेम के–

१३ से किं त पुढविकाइया ? पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता। तजहा—सुहुमपुढविकाइया य बादरपुढविकाइया य।

---

१३. पृथिवीकायिको केटला प्रकारे कह्या छे ? पृथिवीकायिको बे प्रकारे कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सूक्ष्म पृथिवीकायिको अने बादर पृथिवीकायिको.

प्रतिपक्षरूप छे तेथी त्यार पछी तेजस्कायिको ग्रहण करवामां आव्या छे अग्नि वायुना संबंधथी वृद्धि पामे छे माटे त्यार बाद वायुकायिको सूचवामां आव्या छे दूर रहेलो वायु वृक्षनी शाखाना कंपवाथी जणाय छे माटे त्यार पछी वनस्पतिकायिकोनुं ग्रहण कर्युं छे

१२ हवे पृथिवीकायिक जीवोना स्वरूपने नहि जाणनार शिष्य ते संबंधे प्रश्न करे छे—पृथिवीकायिको केटला प्रकारे छे ? आचार्य उत्तर आपे छे—पृथिवीकायिको बे प्रकारे छे सूक्ष्मनाम कर्मना उदयथी सूक्ष्म पृथिवीकायिको अने बादरनाम कर्मना उदयथी बादर पृथिवीकायिको कहेवाय छे सूक्ष्मपणुं अने बादरपणुं ए कर्मना उदयजन्य छे, पण बोर अने आमळानी पेठे सापेक्ष नथी [जेम आमळाथी बोर सूक्ष्म—नानुं होय छे अने आमळा बोरथी मोटा होय छे कुंथुआनी अपेक्षाए हस्ती बादर—मोटो होय छे, अने बादर हस्तीनी अपेक्षाए कुंथुओ सूक्ष्म—नानो होय छे, तेम सूक्ष्मपणुं अने बादरपणुं सापेक्ष नथी] च शब्द सूक्ष्म पृथिवीकायिकना पण पर्याप्त, अपर्याप्तादि अनेक भेदो अने बादर पृथिवीकायिकना पण शर्करा, वालुकादि घणा भेदोनो सूचक छे तेमां सूक्ष्म पृथिवीकायिक पेटीमां संपूर्ण भरेला सुगंधी

१२. से किं तं एगेन्दिय-संसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा ? एगेन्दिय-संसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा पञ्चविहा पन्नत्ता। तंजहा-पुढविकाइया, आउक्काइया, तेउक्काइया, वाउक्काइया, वणस्सइकाइया।

१२. एकेन्द्रिय संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? एकेन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे— १ पृथिवीकायिको, २ अप्कायिको, ३ तेजस्कायिको, ४ वायुकायिको अने वनस्पतिकायिको.

मनुष्यनी पेठे सर्व इन्द्रियोना विषयनुं ज्ञान थवाथी ते पांच इन्द्रियवाळो छे. तो पण ते बाह्य-द्रव्य इन्द्रियोना अभावथी 'पंचेन्द्रिय' कहेवातो नथी"

१२. एकेन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? आचार्य कहे छे—एकेन्द्रिय-संसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना पांच प्रकारे छे, कारण के एकेन्द्रियो पांच प्रकारना छे. ते पांच प्रकार कहे छे-'तंजहा' इत्यादि. पृथिवी कठीनता रूपे प्रसिद्ध छे. ते पृथिवी जेओनुं काय-शरीर छे ते पृथिवीकाय अथवा पृथिवीकायिको कहेवाय छे. अहीं स्वार्थमां इकप्रत्यय थयो छे. अप्-पाणी, प्रवाही रूपे प्रसिद्ध छे. ते जेओनुं काय-शरीर छे ते अप्कायिको, तेजस्-अग्नि, ते जेओनुं काय-शरीर छे ते तेजस्कायिको, वायु जेओनुं काय-शरीर छे ते वायुकायिको. लतादि रूप वनस्पति जेओनुं काय-शरीर छे ते वनस्पतिकायिको. अहीं पृथिवी सर्व भूतोनो आधार होवाथी प्रथम पृथिवीकायिकोनुं ग्रहण कर्युं छे. त्यार पछी तेने विषे रहेला होवाथी अप्कायिकोनुं ग्रहण कर्युं छे. अप्कायिक अग्निना

१ जुओ विशेषावश्यक भाष्य गा० ३००१.

स्वरूपणे निरूपण करेलुं छे, तेथी अहीं फरीथी तेनुं निरूपण करता नथी भावेन्द्रिय लब्धि–क्षयोपशम अने उपयोग–एम बे प्रकारे छे अने ते अनियत रूपे होय छे, कारण के एकेन्द्रियोने पण क्षयोपशम अने उपयोग रूप पांचे भावेन्द्रियनो संभव छे केम के तेनुं कार्य केटलाक एकेन्द्रियोमां देखाय छे जेम के, उन्मत्त स्त्रीना गीतना शब्दने सांभळवाथी, तेना विलासपूर्वक कटाक्षना निरीक्षणथी, तेना मोढामांथी नाखेला मधना कोगळाना गन्धने सुंघवाथी, तेना रसनुं आस्वादन करवाथी अने तेना स्तनादि अवयवना स्पर्शथी बकुलादि वृक्षोने प्रमोद थवाने लीधे जलदी पुष्प अने फळो आवे छे ए संबंधे कह्यु छे के–" जे बकुलादि वृक्षोने स्पर्शनेन्द्रिय सिवाय बाकीनी इन्द्रियोनुं ज्ञान होय छे, तेथी तेने इन्द्रियावरणना क्षयोपशमनो संभव छे" माटे भावेन्द्रिय लोकव्यवहारप्रसिद्ध एकेन्द्रियादि व्यवहारनुं कारण नथी, परन्तु द्रव्येन्द्रियो कारण छे जेम के–जेने स्पर्शनेन्द्रिय रूप एक बाह्य द्रव्येन्द्रिय छे ते एकेन्द्रिय कहेवाय छे एवी रीते बे इन्द्रियो जेने छे ते बेइन्द्रिय, यावत् जेने पांच इन्द्रियो छे ते पंचेन्द्रिय कह्युं छे के–" बकुलने

छता पण कोई पण द्रव्यादिथी उपकरणना विघातनो संभव छे, तेथी तेनो कथंचित् भेद छे जेमके–कदंबपुष्पादिना आकारवाळी अभ्यन्तर निर्वृत्ति छता पण अति कठोर मेघनी गर्जना वडे इन्द्रियनी शक्तिनो उपघात थतां प्राणीओ शब्दादि विषय जाणवाने समर्थ थता नथी भावेन्द्रिय पण बे प्रकारे छे– लब्धि अने उपयोग तेमां श्रोत्रेन्द्रियादिना विषयने ग्रहण करनार सर्व आत्मप्रदेशोना श्रोत्रेन्द्रियादिना आवरणनो क्षयोपशम ते लब्धि पोतपोताना विषयमां लब्धिरूप इन्द्रियने अनुसारे आत्मानो व्यापार ते उपयोग अहीं द्रव्य अने भाव रूप बन्ने प्रकारनी इन्द्रियो ग्रहण करवी कारण के बेमांथी एकना पण अभावमां इन्द्रिय प्रत्यक्ष घटतुं नथी जुओ नन्दिसूत्र टीका (आ स प० ७४–७५)

रसन अने घ्राण–नासिका रूप त्रण इन्द्रियो जेओने छे ते जू, मांकण वगेरे तेइन्द्रिय जीवो जाणवा. स्पर्शन, रसन, घ्राण अने चक्षु रूप चार इन्द्रियो जेओने होय ते डांस, मच्छर वगेरे चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा. स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्र रूप पांच इन्द्रियो जेओने छे ते मांछलां, मगर, मनुष्यादि वधा पंचेन्द्रिय जीवो जाणवा. आ 'एक बे, त्रण वगेरे इन्द्रियोनी प्राप्ति असंव्यवहार राशिथी आरंभी प्रायः आज क्रमथी थाय छे' ए वताववा माटे आ प्रमाणे एकेन्द्रियादिनो क्रमपूर्वक उपन्यास करेलो छे. इन्द्रियो बे प्रकारे छे. जेम के–द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय. तेमां द्रव्येन्द्रिय निर्वृत्ति अने उपकरण–ए बे प्रकारनी छे. तेनुं* नन्दिसूत्रनी टीकामां सचि-

* इन्द्रियना बे प्रकार छे—द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय. तेमां द्रव्येन्द्रियना बे प्रकार छे–निर्वृत्ति अने उपकरण. निर्वृत्ति–आकारविशेष. तेना पण बे प्रकार छे–बाह्य निर्वृत्ति अने अभ्यन्तर निर्वृत्ति. तेमां बाह्य निर्वृत्ति अनेक प्रकारनी छे. एटले तेनुं प्रतिनियत आकार रूपे वर्णन करवुं शक्य नथी. जेमके मनुष्यना कान भ्रुकुटीना सीधा भागमां अने नेत्रना बन्ने पडखे रहेला छे. घोडाना कान माथाना अग्र भागे अने बन्ने नेत्रोनी उपर रहेला छे, तेनो अग्रभाग तीक्ष्ण छे. ए प्रमाणे जातिभेदथी अनेक प्रकारनो बाह्य निर्वृत्ति छे. अभ्यन्तर निर्वृत्ति तो वधा य प्राणीओने सरखी होय छे. तेमां श्रोत्रेन्द्रियनो आकार कदंवपुष्पना जेवो छे. चक्षुइन्द्रियनो आकार मसूरचन्द्र–मसूरनी दाळ जेवो छे. घ्राणेन्द्रियनो आकार अतिमुक्तक पुष्पना जेवो छे. रसनेन्द्रियनो आकार अस्त्राना जेवो छे अने स्पर्शनेन्द्रियनो आकार नाना प्रकारनो छे. अही स्पर्शनेन्द्रियनी निर्वृत्तिमा प्रायः बाह्य अने अभ्यन्तरनो भेद नथी. कारण के तत्त्वार्थनी मूल टीकामा ए प्रमाणे कहेलुं छे–खड्गना जेवी बाह्य निर्वृत्तिनी खड्गनी धार सरखी स्वच्छ पुद्गलना समूहरूप अभ्यन्तर निर्वृत्ति छे अने तेनी शक्तिविशेष ते उपकरणेन्द्रिय. आ उपकरण रूप द्रव्येन्द्रियनो अभ्यन्तर निर्वृत्तिथी कथंचित् भेद छे. कारण के शक्ति अने शक्तिवाळानो कथंचित् भेद छे. अभ्यन्तर निर्वृत्ति

११ से किं त ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा ? ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा पञ्चविहा पण्णत्ता । तंजहा—१ एगेंदिय–ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा, २ बेइन्दिय–ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा, ३ तेइन्दिय–ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा, ४ चउरिन्दिय–ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा, ५ पञ्चिन्दिय–ससारसमावण्ण–जीवपण्णवणा।

---

११. ससारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना पांच प्रकारे कही छे. ते आ प्रमाणे—१ एकेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना, २ बेइन्द्रिय०, ३ तेइन्द्रिय०, ४ चउरिन्द्रिय० अने ५ पचेन्द्रिय०

अप्रथमसमयसिद्ध पहेले सामान्य रीते विवक्षित प्रथम समय सिवायना बीजा सिद्ध ए ज बाबत विशेष रूपे कहे छे– द्वितीय समयसिद्ध, तृतीयसमयसिद्ध, चतुर्थसमयसिद्ध इत्यादि यावत् शब्दना कथनथी पचमसमयसिद्धादि ग्रहण करवा 'सेत्तं' इत्यादि पदने निगमनो सुगम छे ए प्रमाणे असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना कही

११ हवे ससारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार ते संबधे प्रश्नसूत्र कहे छे—'संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना पाच प्रकारे कही छे ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रिय–ससारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना' इत्यादि तेमां स्पर्शनेन्द्रिय रूप एक इन्द्रिय जेओने छे ते एकेन्द्रिय—पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति ए पाच प्रकारना छे जेनु स्वरूप आगळ उपर कहेवाशे एवा एकेन्द्रिय–संसारसमापन्न–जीवोनी प्रज्ञापना–प्ररूपणा करवी ते एकेन्द्रिय–ससारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना ए प्रमाणे बेइन्द्रियादि सर्व पदोमा अक्षरनी घटना करवी परन्तु स्पर्शन अने रसन ए बे इन्द्रियो जेमोने छे ते शंख, छीप वगेरे बेइन्द्रियो जाणवा स्पर्शन,

१०. से किं तं परम्परसिद्ध–असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव सङ्खिज्जसमयसिद्धा, असङ्खिज्जसमयसिद्धा, अणन्तसमयसिद्धा। सेत्तं परम्परसिद्ध–असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा। सेत्तं असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा।

१०. परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे कही छे ? परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अनेक प्रकारे कही छे. ते आ प्रमाणे—अप्रथमसमयसिद्ध, द्वितीयसमयसिद्ध, तृतीयसमयसिद्ध, चतुर्थसमयसिद्ध, यावत्–संख्यात समयसिद्ध, असंख्यातसमयसिद्ध, अने अनन्तसमयसिद्ध. एम परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना कही. ए प्रमाणे असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना पण कही.

१०. परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? आचार्य कहे छे–परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अनेक प्रकारे कही छे, कारण के परंपरसिद्धो अनेक प्रकारना छे. ते अनेक प्रकार कहे छे–'तं जहा' इत्यादि. 'तद्यथा' ए अनेक प्रकार बताववामां वपराय छे. 'अप्रथमसमयसिद्ध'–जेओ प्रथम समये सिद्ध थयेला नथी ते अप्रथमसमयसिद्ध छे. एटले परम्पर सिद्धना प्रथम समयवर्ती जाणवा, अर्थात् सिद्धपणाना बीजा समये वर्तमान सिद्ध ते अप्रथमसमयसिद्ध कहेवाय छे. जेने सिद्ध थयाने त्रण आदि समयो थया होय ते द्वितीयसमयसिद्धादि कहेवाय छे. एटले के जेने मोक्षे गया बे समय थया छे ते अप्रथमसमयसिद्ध, अने त्रण समय थया छे ते द्वितीयसमयसिद्ध, चार समय थया छे ते तृतीयसमयसिद्ध–इत्यादि जाणवुं. अथवा

शिष्यना उपकारने माटे आ गाथानी व्याख्या कराय छे-आठ समय सुधी निरंतर एकथी मांडी बत्रीश सुधी मोक्षे जाय तात्पर्य ए छे के-पहेले समये जघन्यथी एक, बे अने उत्कृष्ट बत्रीश सिद्ध थाय, बीजे समये जघन्यथी एक, बे अने उत्कृष्ट बत्रीश, एम आठमे समये पण जघन्यथी एक, बे अने उत्कृष्टथी बत्रीश सिद्ध थाय त्यार पछी अवश्य अन्तर पडे तेत्रीशथी मांडी अडतालीश सुधी निरंतर मोक्षे जाय तो सात समय सुधी जाय, त्यार पछी अवश्य अन्तर पडे ओगणपचासथी आरंभी साठ सुधी उत्कृष्ट छ समय सुधी निरंतर मोक्षे जाय अने त्यारबाद अवश्य अन्तर पडे एकसठथी मांडी बहोंतेर सुधी निरंतर मोक्षे जाय तो पांच समय सुधी जाय त्यार पछी अन्तर पडे तहोंतेरथी मांडी चोराशी पर्यन्त निरन्तर मोक्षे जाय तो उत्कृष्ट चार समय सुधी जाय, त्यार पछी अवश्य अन्तर पडे पंच्याशीथी छन्नु सुधी निरन्तर मोक्षे जाय तो त्रण समय सुधी जाय, त्यार पछी अवश्य अन्तर पडे सत्ताणुथी मांडी एकसो बे सुधी निरंतर मोक्षे जाय तो उत्कृष्ट बे समय सुधी जाय, त्यारबाद अवश्य अन्तर पडे एकसो त्रणथी मांडी एकसो आठ सुधी मोक्षे जाय तो एक समय सुधी ज जाय, पण बे त्रण समय सुधी न जाय ए प्रमाणे एक समये उत्कृष्ट एकसो आठ मोक्षे जाय ते माटे अनेक सिद्धा पदोमां वधारे एकसो आठ जाणवा

अहीं पूर्वपक्षी शंका करे छे के-'तीर्थसिद्ध अने अतीर्थसिद्ध-ए बे भेदमां ज बाकीना भेदोनो समावेश थाय छे तो बीजा भेदोने ग्रहण करवानुं शुं प्रयोजन'? तेनुं समाधान ए छे के खरी रीते ए बे भेदमां बाकीना बधा भेदोनो समावेश थाय छे, परन्तु तीर्थसिद्ध अने अतीर्थसिद्ध-ए बे भेदो कहेवाथी बाकीना भेदोनुं ज्ञान न थाय, अने विशेष भेदोनुं परिज्ञान थवा माटे शास्त्रना आरम्भनो प्रयत्न छे, माटे बाकीना बीजा भेदोनुं ग्रहण कर्युं छे हवे उपसंहार कहे छे—ए प्रमाणे अनन्तरसिद्ध-असंसारी जीवनी प्रज्ञापना कही

अधोगतिमां मनोवीर्यनुं विषमपणुं जोवाथी ऊर्ध्व गतिमां विषमपणुं मानवुं योग्य नथी. कह्युं छे के–" तिर्यंचो नीचे विषम गतिवाळा छतां उपर सहस्रार देवलोक पर्यन्त समानपणे जाय छे," माटे (स्त्रीओमां) अधोगतिनुं न्यूनपणुं (निर्वाणगमनना अभावमां) हेतु नथी." माटे स्त्री–पुरुषोनुं अधोगति संबन्धे विषमपणुं छतां समानपणे निर्वाण प्राप्त थाय–ए निश्चित छे.

'वळी जेओनुं वादलब्धि वगेरेमां सामर्थ्य नथी' इत्यादि कह्युं ते पण अयुक्त छे. वादलब्धि, वैक्रियलब्धि अने विशिष्ट पूर्वगत श्रुतना अभावमां पण माषतुषादि मुनिओने निर्वाणनी प्राप्ति थयेली छे. कह्युं छे के–' वादलब्धि अने वैक्रियादि लब्धिना अभावे तथा श्रुत अल्प छतां, जिनकल्प अने मनःपर्यव सिवाय पण मोक्षगमननो अभाव होतो नथी.' वळी जो स्त्रीओमां वादादिलब्धि वगेरेना अभावनी पेठे मोक्षनो पण अभाव होत तो ते प्रमाणे सिद्धान्तमां प्रतिपादन कर्युं होत. जेमके जम्बूस्वामी पछी केवलज्ञाननो अभाव कह्यो छे, परन्तु कोइ स्थळे स्त्रीओने निर्वाणनो अभाव कह्यो नथी."

(९) पुरुषना शरीरनी आकृति रूपे छतां मोक्षने प्राप्त थयेला ते पुंलिंगसिद्ध. (१०) ए प्रमाणे नपुंसकना आकारे विद्यमान छतां मोक्षे गयेला ते नपुंसकलिंग सिद्ध जाणवा. (११) रजोहरणादिरूप साधुना वेशमां रहीने मोक्षे गयेला ते स्वलिंगसिद्ध. (१२) परिव्राजकादि संबन्धी वल्कल, भगवा वस्त्र वगेरे रूप द्रव्यलिंगमां रही मोक्षे गयेला ते अन्यलिंगसिद्ध. (१३) गृहस्थना वेशमां मोक्षे गयेला मरुदेवी प्रमुख ते गृहिलिंगसिद्ध जाणवा. (१४) एक एक समये एक एक मोक्षे गयेला ते एकसिद्ध अने (१५) एक समये अनेक मोक्षे गयेला ते अनेकसिद्ध. एक समयमां अनेक मोक्षे जाय तो वधारेमां वधारे १०८ सुधी जाय. जे माटे कह्युं छे के–

" बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरी य बोद्धव्वा। चुलसीई छन्नउइ उ दुरहियमट्ठुत्तरसयं च ॥

पूर्वपक्षी एम कहे के–'सम्मूर्छिमादि प्राणीओमां बन्ने प्रकारे सर्वोत्कृष्ट मनोवीर्यनो अभाव जणाय छे, तेथी अहीं स्त्रीओमां पण बन्ने प्रकारना मनोबळनो अभाव मानवो जोइए. परन्तु सम्मूर्छिमादि जन्तुओमां एम जणाय छे तेथी अहीं ए प्रमाणे केम मानी शकाय? बहिर्व्याप्तिमात्रथी कोइ हेतु साध्यनो गमक–साधक थतो नथी, पण अन्तर्व्याप्तिथी साध्यनो साधक थाय छे. अन्तर्व्याप्ति प्रतिबन्धना सामर्थ्यथी जणाय छे. अहीं प्रतिबन्ध–नियत संबन्ध नथी, कारण के सप्तम पृथिवीनुं गमन निर्वाणनुं कारण नथी, तेमज सप्तम पृथिवीगमननी साथे निर्वाणगमननुं नियत साहचर्य नथी. केम के चरम शरीरीने सप्तम पृथिवीगमन सिवाय निर्वाण प्राप्त थाय छे. प्रतिबन्ध–व्याप्ति सिवाय एकना अभावमां बीजानो अवश्य अभाव होतो नथी. जो एम होय तो के ते वस्तुना अभावमां सर्वना अभावनो प्रसंग थाय.

अहीं पूर्वपक्षी एम कहे के–जो एम छे तो संमूर्छिमादि प्राणीओनुं निर्वाणगमन केम थतुं नथी? तेनो उत्तर ए छे के तथाभवस्वभावथी तेओ निर्वाणने प्राप्त थता नथी. ते आ प्रमाणे–संमूर्छिमादि जन्तुओ भवस्वभावथी ज यथावत् सम्यग्दर्शनादिने प्राप्त करवा शक्तिमान् नथी, माटे तेओने निर्वाणनो संभव नथी. स्त्रीओ तो पूर्वे कह्या प्रकारे यथावत् सम्यग्दर्शनादिने प्राप्त करवा योग्य छे, माटे तेओमां निर्वाणगमननो अभाव नथी. वळी भुजपरिसर्पो बीजी नरकपृथिवी सुधी जाय छे, आगळ जता नथी, कारण के तेओमां आगळनी नरकपृथिवीगमनना कारणभूत तेवा प्रकारना मनोवीर्यनो अभाव छे. पक्षीओ त्रीजी नरक सुधी, चतुष्पदो चोथी नरक सुधी अने उरःपरिसर्प पांचमी नरकपृथिवी सुधी जाय छे, अने बधा ऊर्ध्व लोकमां वधारेमां वधारे सहस्रार देवलोक सुधी जाय छे. माटे

१ साहचर्य मात्रनो संबन्ध ते बहिर्व्याप्ति अने हेतु अने साध्यनो नियत संबन्ध ए अन्तर्व्याप्ति छे

समये होय, अने अयोगी अवस्था तो अमारा जेवा चर्मचक्षुवाळाने अप्रत्यक्ष छे, तो स्त्रीपणानी साथे रत्नत्रयना प्रकर्षनो विरोध शी रीते जणाय? कारण के अदृष्ट वस्तुनी साथे दृष्ट वस्तुनो विरोध जाणी शकातो नथी. जो तेम थाय तो पुरुषोमां पण रत्नत्रयना प्रकर्षना विरोधनो प्रसंग प्राप्त थाय.

कदाच पूर्वपक्षी एम कहे के—जगतमां सर्वोत्कृष्ट पदनी प्राप्ति सर्वोत्कृष्ट अध्यवसायथी थाय छे, अन्य प्रकारे थती नथी, आ वात आपणा बन्नेने आगम प्रमाणथी सिद्ध छे, सर्वोत्कृष्ट बे पद छे—सर्वोत्कृष्ट दुःखनुं स्थान अने सर्वोत्कृष्ट सुखनुं स्थान. सर्वोत्कृष्ट दुःखनुं स्थान सातमी नरक पृथिवी छे, तेनाथी उत्कृष्ट बीजुं दुःखनुं स्थान नथी. सर्वोत्कृष्ट सुखनुं स्थान मोक्ष छे. तेमां स्त्रीओने सातमी नरकपृथिवीनुं गमन आगममां निषेध्युं छे, अने निषेधनुं कारण त्यां जवाने योग्य तथाविध सर्वोत्कृष्ट मनोवीर्यपरिणतिनो तेओमां अभाव छे, अने ते सातमी नरकपृथिवीमां गमनना निषेधथी जणाय छे. स्त्रीओने मोक्ष नथी, कारण के तेओमां निर्वाणनो हेतु तेवा प्रकारना सर्वोत्कृष्ट मनोवीर्यपरिणामनो असंभव छे. अनुमानप्रयोग आ प्रमाणे छे—स्त्रीओने निर्वाणनो असंभव छे. कारण के तेओनुं सातमी नरकपृथिवीमां गमन थतुं नथी, संमूर्छिमादिनी पेठे. वळी वादलब्धिमां, वैक्रियादि लब्धिमां अने पूर्वगत श्रुतना अध्ययनमां जे स्त्रीओनुं सामर्थ्य नथी, ते स्त्रीओमां मोक्षगमननुं सामर्थ्य छे एम मानवुं अशक्य छे." ते अयुक्त छे. कारण के जो स्त्रीओमां सातमी नरकपृथिवीना गमननुं कारण सर्वोत्कृष्ट मनोबलनो अभाव छे, एटला उपरथी एम केम मानी शकाय के स्त्रीओमां मोक्षनुं कारण सर्वोत्कृष्ट मनोबलनो अभाव छे. 'जे मनुष्य पृथ्वी खेडवी वगेरे काम करी शकवा समर्थ नथी ते शास्त्रोनुं पण अध्ययन करी शकतो नथी' एम मानवुं शक्य नथी. कारण के तेम मानवामां प्रत्यक्ष विरोध आवे छे.

धर्मना उपकरण तरीके ग्रहण करे छे स्त्रीओ वस्त्र सिवाय पोतानु रक्षण करवामा समर्थ होती नथी, तेम शीतकालादिकने विषे ध्यान दशामा स्वाध्यायादि पण करी शकती नथी माटे दीर्घकाळ पर्यन्त संयमनुं परिपालन करवा माटे यतना–सावधानता वडे यतना परिभोग करता स्त्री परिग्रहवाळी न कहीं शकाय

अहीं पूर्वपक्षी एम कहे के–स्त्रीओने पण सम्यग् दर्शनादिक रत्नत्रयनो संभव छे, पण संभव मात्रथी ते मोक्ष आपनार थता नथी, परन्तु प्रकर्षावस्थाने–संपूर्णताने प्राप्त थयेलां मोक्ष आपनार थाय छे जो एम न मानाय तो दीक्षा पछी तुरतज थवाने सामान्य रीते मोक्ष पदनी प्राप्ति थाय स्त्रीओने प्रकर्षावस्थाने प्राप्त थयेलां सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रयनो असंभव छे, माटे तेमनुं निर्वाण थतु नथी " ते पण अयुक्त छे, कारण के स्त्रीओमां सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रयना प्रकर्ष थता नथी–एम जणावनार कोइ प्रमाण नथी केमके सर्व देश अने सर्व काळमा स्त्रीओने विषे रत्नत्रयना प्रकर्षनो असंभव जणावनार कोइ प्रमाण नथी कारण के देश अने काळथी दूर रहेली वस्तुमां प्रत्यक्षनी प्रवृत्ति थती नथी, अने प्रत्यक्षनी अप्रवृत्तिमा अनुमाननो पण संभव नथी तेमज सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रयना प्रकर्षनो असंभव जणावनार कोइ पण आगम नथी उलटुं तेना संभवने जणावनार ठेकाणे ठेकाण आगमना पुष्कळ प्रमाण छे जेम के आ प्रस्तुत सूत्र माटे स्त्रीओमां सम्यग्दर्शनादिना प्रकर्षनो असंभव नथी

अहीं पूर्वपक्षी शंका करे के " जेम स्वभावथी ज आतपनी साथे छायानो विरोध छे, तेम स्त्रीपणानी साथे ज सम्यग्दर्शनादिना प्रकर्षनो विरोध छे माटे स्त्रीओमा निर्वाणनो असंभव छे–एम अनुमान करी शकाय छे "– ते युक्ति विरुद्ध होवाथी अयुक्त छे ते आ प्रमाणे—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रयनो प्रकर्ष ते कहेवाय के जेना पछी तुरत ज मुक्तिपद प्राप्त थाय ते अयोगी अवस्थाना छेल्ला

करे छे, देव अने असुरोने पण दुर्धर एवा ब्रह्मचर्यने धारण करे छे, मासक्षपणादि तपस्या पण करे छे, तो तेओने मोक्षनो
संभव केम न होय ?"
ते आ प्रमाणे—
स्त्रीओने सम्यग्दर्शन अने ज्ञान होय छे, परन्तु चारित्र होतुं नथी, कारण के तेओमां संयमनो अभाव होय छे.
स्त्रीओने अवश्य वस्त्रनो उपभोग करवो पडे छे, जो तेम न करे तो नग्न स्त्रीओ तिर्यंच स्त्रीओनी पेठे पुरुषोने पराभव योग्य थाय,
लोकमां निंदा थाय, माटे स्त्रीओए अवश्य वस्त्रनो परिभोग करवो जोइए. वस्त्रनो परिभोग करवामां परिग्रह थाय छे अने परिग्रहनी
प्राप्तिमां संयम होतो नथी.
ए कथन अयोग्य छे, केम के तेमां सिद्धान्तनुं सम्यग्ज्ञान नथी. वास्तविक रीते मूर्छा—ममत्वपरिणाम ए परिग्रह छे 'मुच्छा
परिग्गहो वुत्तो' मूर्छाने परिग्रह कहेलो छे—एवुं आवश्यक निर्युक्तिनुं वचन छे. कारण के अन्तःपुर सहित छतां पण आरिसाभवनमां
रहेलो मूर्छारहित भरत चक्रवर्ती परिग्रह रहित कहेवाय छे. जो ते परिग्रह सहित होय तो तेने केवलज्ञान उत्पन्न न थाय. वळी
मूर्छाना अभावमां वस्त्रना संसर्गमात्रथी परिग्रह थाय तो कोइ जिनकल्पिक साधुने धूमस सहित टाढ पडती होय त्यारे 'आजे असह्य
टाढ छे' एम समजी कोइ धर्मार्थी पुरुष तेमना मस्तक उपर वस्त्र ओढाडे तो ते मुनि परिग्रही थाय, परन्तु ते मानवुं इष्ट नथी.
माटे वस्त्रना संसर्ग मात्रथी परिग्रह थतो नथी, पण मूर्छा ए परिग्रह छे. अने ते मूर्छा स्त्रीओने वस्त्रादिकमां होती नथी, कारण के तेने

दिवस अने रात्रिना पहेला अने छेल्ला पहोरे जे भणाय ते कालिक उत्तराध्ययनादि जाणवुं. अने जे कालवेळा सिवाय बधा समये भणाय ते
उत्कालिक दशवैकालिकादि श्रुत जाणवुं. जुओ नंदिसूत्र टीका आ. अ. २०४—१.

गयेला ते बुद्धबोधितसिद्ध कहेवाय छे (८) स्त्रीलिंगसिद्ध–आ बधामां पण केटलाक स्त्रीलिंगे सिद्ध थयेला होय छे स्त्रीलिंग–ए स्त्रीपणानु सूचक छे स्त्रीपणु त्रण प्रकारे छे–वेद, शरीराकृति अने वेश तेमां अहीं शरीराकृतिनुं प्रयोजन छे, पण वेद अने वेशनु प्रयोजन नथी, केमके वेदना उदयमां सिद्धपणु होतु नथी अने वेश अप्रमाण छे ए संबंधे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे–'स्त्रीनु लिंग ते स्त्रीलिंग, ते स्त्रीपणानु उपलक्षण–सूचक छे ते त्रण प्रकारे छे–वेद, शरीराकार अने वेश, अहीं शरीराकारनो अधिकार छे, वेद अने वेशनो अधिकार नथी स्त्रीनो आकार छता जेओ मोक्षे गयेला छे ते स्त्रीलिंगसिद्ध कहेवाय छे, तेथी दिगंबरो कहे छे के–'स्त्रीओने निर्वाण नथी' ते वातनो प्रतिषेध जाणवो कारण के स्त्रीना निर्वाणनु कथन साक्षात् आ सूत्रे ज करेलुं छे, अने तेनो प्रतिषेध करवो ते युक्तिसंगत नथी ते आ प्रमाणे—

"मुक्तिमार्ग ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप छे, केम के "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः" (अ १ सू १) एवुं तत्त्वार्थ सूत्रनु वचन छे सम्यग्दर्शनादि पुरुषोनी पेठे स्त्रीओने पण संपूर्णपणे होय छे ते आ प्रमाणे—स्त्रीओ पण संपूर्ण प्रवचनना अर्थनी रुचिवाळी होय छे, षडावश्यक, कालिक अने उत्कालिक भेदवाळा श्रुतने जाणे छे, अने सत्तर प्रकारना निर्दोष संयमनु पालन

द्रव्यलिंग जाणवु. प्रथम भंग तुल्य चरक–परिव्राजकादि समजवा, कारण के तेनु द्रव्यलिंग अने भावलिंग बन्ने अशुद्ध छे बीजा भंग तुल्य पार्श्वस्थादि जाणवा, कारण के तेओनु भावलिंग अशुद्ध छे त्रीजा भंग समान द्रव्यलिंग रहित प्रत्येकबुद्ध अने चोथा भंगसमान शीलयुक्त श्रमणो जाणवा जुओ आव० नि० गा ११३८, ३९ आ ध प० ५२७–१

१ अंगबाह्य श्रुत बे प्रकारनु छे–आवश्यक अने आवश्यकव्यतिरिक्त आवश्यकव्यतिरिक्त श्रुत बे प्रकारनु छे–कालिक अने उत्कालिक. तेमां

करेलुं श्रुत उपस्थित होय तो तेने देवो लिंग-वेष आपे छे. अथवा तो गुरु पासे जईने वेषनो स्वीकार करे छे. जो एकला विचरवा समर्थ होय अथवा तो तेनी तेवी इच्छा होय तो ते एकाकी विचरे छे, नहि तो गच्छवासी थाय छे. जो पूर्वे (पूर्व जन्ममां) अध्ययन करेलुं श्रुत उपस्थित न होय तो अवश्य गुरु पासे जईने वेषने ग्रहण करे छे अने गच्छनो अवश्य त्याग करतो नथी. ए संबंधे कह्युं छे के " [स्वयंबुद्धने] पूर्वे अध्ययन करेलुं श्रुतज्ञान होय छे अथवा होतुं नथी, जो नथी होतुं तो ते अवश्य गुरु पासे जईने वेष स्वीकारे छे अने गच्छमां रहे छे. जो पूर्वे अध्ययन करेलुं श्रुतज्ञान होय छे तो तेने देवता लिंग-वेष आपे छे, अथवा गुरु पासे जईने वेश ग्रहण करे छे. जो एकाकी विहरवा समर्थ होय तो, अथवा तेनी तेवी इच्छा होय तो एकलो विहरे छे, अन्यथा गच्छमां रहे छे." प्रत्येकबुद्धने तो अवश्य पूर्वे (पूर्व जन्ममां) अध्ययन करेलुं जघन्यथी अगियार अंग अने उत्कृष्टथी कंईक न्यून दश पूर्व श्रुत होय छे. अने तेने देवता लिंग-वेष आपे छे, अथवा कदाचित् लिंगरहित पण होय छे. कह्युं छे के "प्रत्येकबुद्धने पूर्वे अध्ययन करेलुं श्रुत अवश्य होय छे अने ते जघन्यथी अगियार अंग अने उत्कर्षथी कंईक न्यून दश पूर्व श्रुत होय छे. तेने देवता लिंग आपे छे, अथवा लिंगरहित पण होय छे. माटे कह्युं छे—रूप्पं पत्तेयबुद्धा" (७) बुद्धबोधितसिद्ध—बुद्ध—आचार्यना उपदेशथी बोध पामी मोक्षे

१. रूप्पं पत्तेयबुद्धा टंकं जे लिंगधारिणो समणा। दव्वस्स य भावस्स य छेओ समणो समाओगे॥

रूपा तुल्य प्रत्येकबुद्धो छे अने टंक—सिक्का जेवा वेषधारी श्रमणो छे. द्रव्यलिंग अने भावलिंगना योगे श्रमणो छेक—यथार्थ समजवा. अहीं रूपा अने टंक—सिक्कानी चतुर्भंगी छे—१ रूपुं अशुद्ध अने सिक्को विषमाक्षरवाळो, २ रूपुं अशुद्ध अने सिक्को समअक्षरवाळो, ३ रूपुं शुद्ध अने सिक्को विषमाक्षरवाळो अने ४ रूपुं शुद्ध अने सिक्को समअक्षरवाळो. अहीं शुद्ध रूपाना समान भाव लिंग अने सिक्काना समान

तीर्थंकरभिन्न तेमां अहीं तीर्थंकरथी भिन्न स्वयंबुद्धनो अधिकार छे प्रत्येकबुद्ध कोई पण बाह्य कारणथी बोध पामे छे " प्रत्येक-बाह्य वृषभादिक वस्तु जोईने बोध पामेला ते प्रत्येकबुद्ध-एवी तेनी व्युत्पत्ति थाय छे आगममां कह्युं छे के-करकंडूप्रमुख राजर्षिने बाह्य कारणथी बोधि प्राप्त थयेल छे, अने ते बोधि प्राप्त करीने अवश्य एकाकी ज विचरे छे, परन्तु गच्छवासी साधुओनी पेठ साथे मळीने विचरता नथी ए संबंधे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे के-"प्रत्येक-बाह्य वृषभादि कारणने जोईने बोध पामेला होय छे, अने बाह्य कारणथी बोध पामेला तेओनो अवश्य प्रत्येक-एकाकी विहार होय छे माटे तेओ प्रत्येकबुद्ध कहेवाय छे" [उपधिकृत विशेषता-] स्वयंबुद्धने बार प्रकारनो पात्रादिक उपधि-उपकरण होय छे अने प्रत्येक बुद्धने जघन्य अने उत्कृष्ट एम बे प्रकारना उपधि होय छे तेमां जघन्य उपधि बे प्रकारनो अने उत्कृष्ट उपधि वस्त्र सिवाय नव प्रकारनो होय छे कह्युं छे के-"प्रत्येकबुद्धने जघन्य बे प्रकारनो अने उत्कृष्टथी वस्त्र सिवाय नव प्रकारनो उपधि होय छे" [श्रुत अने लिंगनी विशेषता-] स्वयंबुद्धने पूर्वे (पूर्व जन्ममां) अध्ययन करेलुं श्रुत होय छे अथवा नथी होतुं [परन्तु नवीन अध्ययन करेलुं श्रुत होय छे] जो पूर्वे अध्ययन

१ स्वयंबुद्धने बार प्रकारनो उपधि होय छे—१ पात्र, २ पात्रबंध-झोळी, जेमां पात्रो मूकी भिक्षा लावी शकाय एवो चोखुणो वस्त्रनो टुकडो, ३ पात्रस्थापन, जेमां पात्र मूकवामां आवे छे ते कंबलनो खंड, ४ पात्रकेसरिका-कोमळ वस्त्रनो खंड, परन्तु हाल तेना बदले ऊननी प्रमार्जनिका वापरवामां आवे छे ५ पटलो, भिक्षाए जतां पात्रना उपर जे ढांकवामां आवे छे, ६ रजस्त्राण-जे पात्रनी वच्चे वस्त्र मूकवामां आवे छे, ७ गोच्छक-कंबलनो टुकडो, जे पात्रना उपर बांधवामां आवे छे-ए सात प्रकारनो पात्र संबंधी उपधि छे तथा ८-१० त्रण वस्त्रो, जेमां बे सूतरना वस्त्रो अने एक कंबल, ११ रजोहरण अने १२ मुहपत्ति

कालमां तीर्थनो विच्छेद थया पछी जेओ जाति स्मरणादि वडे सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्ग प्राप्त करी मोक्षे गयेला ते तीर्थना व्यवच्छेद काले सिद्ध थयेला अतीर्थसिद्ध जाणवा. (३) तीर्थंकरसिद्ध–तीर्थंकर थइने जेओ मोक्षे गयेला होय ते तीर्थंकर सिद्ध कहेवाय छे. (४) अतीर्थंकरसिद्ध—मात्र सामान्य केवली थइने मोक्षे गयेला ते अतीर्थंकरसिद्ध जाणवा. (५) स्वयंबुद्धसिद्ध–जेओ कोईना उपदेश सिवाय पोतानी मेळे बोध पामीने मोक्षे गयेला छे ते स्वयंबुद्ध सिद्ध. (६) प्रत्येकबुद्धसिद्ध–जेओ प्रत्येकबुद्ध थइने मोक्षे गयेला छे तेओ प्रत्येकबुद्धसिद्ध कहेवाय छे. (प्र०–)स्वयंबुद्ध अने प्रत्येकबुद्धमां शो तफावत छे? (उ०–) तेओमां बोधि, उपधि, श्रुत अने लिंग–बाह्य वेषनो तफावत छे. बोधिकृत विशेषता–स्वयंबुद्ध कोई पण बाह्य कारण सिवाय बोध पामे छे, कारण के स्वयं–पोताना जातिस्मरणादि ज्ञान वडे बुद्धाः–बोध पामेला ते स्वयंबुद्ध–एवी तेनी व्युत्पत्ति थाय छे. तेना बे प्रकार छे.–तीर्थंकर अने तीर्थंकर सिवायना स्वयंबुद्ध. अहीं तीर्थंकर सिवायना स्वयंबुद्धनो अधिकार छे. ए संबंधे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे के–" स्वयंबुद्ध बे प्रकारना छे. तीर्थंकर अने

नथी अने सुविधिनाथथी आरंभी शांतिनाथ सुधीना मध्यवर्ती आठ तीर्थंकरोना सात आंतराओमां तीर्थनो विच्छेद थयो छे. तेमां सुविधिनाथ अने शीतलनाथनी वच्चे पल्योपमना चोथा भाग सुधी तीर्थनो विच्छेद थयो छे. शीतलनाथ अने श्रेयांसनाथनी वच्चे पल्योपमनो सोळमो भाग, श्रेयांस अने वासुपूज्यनी वच्चे पल्योपमना त्रण चतुर्थांश, वासुपूज्य अने विमल जिननी वच्चे पल्योपमनो चोथो भाग, विमल अने अनन्त जिननी वच्चे पल्योपमना त्रण चतुर्थांश, अनन्तनाथ अने धर्मनाथनी वच्चे पल्योपमनो चोथो भाग, अने धर्मनाथ अने शांतिजिननी वच्चे पल्योपमनो चोथो भाग तीर्थनो विच्छेद थयो छे. बधो मळी पल्योपमना चोथा भाग हीन त्रण पल्योपम तीर्थनो विच्छेदकाळ छे. जुओ प्रवचन सारोद्धार गा. ४३०–४३१.

बुद्धसिद्धा, ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा, ७ बुद्धबोहियसिद्धा, ८ इत्थीलिंगसिद्धा, ९ पुरिसलिंगसिद्धा, १० नपुंसकलिंगसिद्धा, ११ सलिंगसिद्धा, १२ अन्नलिंगसिद्धा, १३ गिहिलिंगसिद्धा, १४ एगसिद्धा, १५ अणेगसिद्धा। सेत्त अणतर-सिद्ध० ७ बुद्धबोधितसिद्ध, ८ स्त्रीलिंगसिद्ध, ९ पुरुषलिंगसिद्ध, १० नपुंसकलिंगसिद्ध, ११ स्वलिंगसिद्ध, १२ अन्यलिंगसिद्ध, १३ गृहस्थलिंगसिद्ध, १४ एकसिद्ध अने १५ अनेक सिद्ध. ए प्रमाणे अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना कही.

अनन्तर सिद्धो सिद्धावस्थानी पूर्वे उपाधि-विशेषताना भेदथी पंदर प्रकारना छे ते पंदर प्रकार बतावे छे-' तजहा ' इत्यादि 'तद्यथा ए शब्द पंदर भेद बताववा माटे छे

(१) तीर्थसिद्ध—'तीर्यतेऽनेन' जेनाथी संसार समुद्र तराय ते तीर्थ पहेले यथावस्थित सर्व जीवाजीवादि पदार्थोनी प्ररूपणा करनार तीर्थंकर प्रणीत प्रवचन, ते ज्ञानस्वरूप होवाथी निराधार होतुं नथी माटे तेना आधार रूप संघ अथवा प्रथम गणधर तीर्थ कहवाय छे ए संबंधे कह्युं छे के "हे भगवन्! तीर्थ-(प्रवचन) ए तीर्थ (तरवानुं साधन) छे के तीर्थंकर तीर्थ छे? हे गौतम! अरिहंत भगवन्त तीर्थंकर छे अने तीर्थ तो चार प्रकारनो श्रमणप्रधान संघ अथवा प्रथम गणधर छे" ते तीर्थ उत्पन्न थया पछी तेना सद्भावमां जेओ सिद्ध थया होय ते तीर्थसिद्ध कहेवाय छे (२) अतीर्थसिद्ध-अतीर्थ-तीर्थनी उत्पत्ति न थई होय त्यारे अथवा वच्चे तीर्थनो विच्छेद थया पछी सिद्ध थयेला ते अतीर्थसिद्ध कहेवाय छे तेमां तीर्थनी उत्पत्ति थया पहेला मोक्षे गयेला मरुदेवी प्रमुख जाणवा, कारण के तेओना मोक्षगमन समये तीर्थ उत्पन्न थयु नहोतुं तथा सुविधिनाथ प्रमुख तीर्थंकरना वच्चेना

१ ऋषभदेवथी मांडी सुविधिनाथ पर्यन्त अने शान्तिनाथथी मांडी महावीर सुधीना नव तीर्थंकरोना आठ आंतरामां तीर्थनो विच्छेद थयो

९. से किं तं अणन्तरसिद्ध-असंसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा? अणन्तरसिद्ध-असंसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा पण्णरसविहा पण्णत्ता। तंजहा-१ तित्थसिद्धा, २ अतित्थसिद्धा, ३ तित्थगरसिद्धा, ४ अतित्थगरसिद्धा, ५ सयं-

९. अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना पंदर प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे— १ तीर्थसिद्ध, २ अतीर्थसिद्ध, ३ तीर्थंकरसिद्ध, ४ अतीर्थंकरसिद्ध, ५ स्वयंबुद्धसिद्ध, ६ प्रत्येकबुद्ध सिद्ध,

---

८. असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? आचार्य उत्तर आपे छे—बे प्रकारे छे. अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना अने परंपरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना. तेमां जेओने सिद्ध थयाने एक पण समयनुं अन्तर नथी-एटले वर्तमान समये सिद्ध थयेला छे ते अनन्तर सिद्धो. तेओना स्वरूपनी प्ररूपणा ते अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना. जेओने सिद्ध थयाने एक, बे, त्रण इत्यादि समयोनुं अन्तर पडयुं छे ते परम्पर सिद्धो. विवक्षित प्रथम समये जेओ सिद्ध थयेला होय तेनी अपेक्षाए जेने सिद्ध थयाने बीजो समय थयो होय ते पर, तेनी अपेक्षाए जेने सिद्ध थयाने त्रीजो समय थयो होय ते पर, एम एक एक समयनी वृद्धि करता यावत् अनन्त अतीत काळ सुधी मोक्षे गयेला ते बधा परम्पर सिद्धो कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के विवक्षित सिद्धना प्रथम समयनी पूर्वे द्वितीयादि समयोमां यावत् अनन्त अतीत काळ पर्यन्त मोक्षे गयेला ते बधा परम्पर सिद्धो कहेवाय छे.

९. अनन्तरसिद्ध-असंसारसमापन्न-जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? आचार्य उत्तर आपे छे के-'पंदर प्रकारे छे.' कारण के

७ से किं तं जीवपन्नवणा ? जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—संसारसमावण्ण–जीवपन्नवणा य असंसारसमावण्ण–जीवपन्नवणा य ।

८ से किं तं असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा ? असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता । तंजहा–अणन्तरसिद्ध–असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा य परम्परसिद्ध–असंसारसमावण्ण–जीवपण्णवणा य ।

७. जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? जीवप्रज्ञापना बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अने असंसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना.

८. असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे – अनन्तरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अने परंपरसिद्ध–असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना.

---

७. हवे जीवप्रज्ञापनानुं स्वरूप प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार ते संबंधे प्रश्नसूत्र कहे छे—'जीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे' ? आचार्य उत्तर आपे छे–'जीवप्रज्ञापना बे प्रकारे छे'–संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना अने असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना तेमां नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवगतिना अनुभव रूप संसारने सम्–एकीभाव–तन्मयता वडे प्राप्त थयेला ते संसारसमापन्न जीवो, तेओनी प्रज्ञापना–स्वरूपनुं निरूपण करवुं ते संसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना असंसार–मोक्षने प्राप्त थयेला ते असंसारसमापन्न जीवो, तेओना स्वरूपनुं निरूपण करवु ते असंसारसमापन्न–जीवप्रज्ञापना

जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणता वि। २०, १००. सेत्तं रूविअजीवपन्नवणा। सेत्तं अजीवपन्नवणा।

जे संस्थानथी आयत संस्थान–दीर्घाकारपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे अने स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. (२०–१००). एम रूपी–अजीवप्रज्ञापना कही, अने ए प्रमाणे अजीवप्रज्ञापना पण कही.

अविरोधी जणाय छे. तेथी उपर कह्या प्रमाणे ज भांगानी संख्या थाय छे, अने ते पण स्थूल न्यायने आश्रयी कहेली छे. जो एम न होय तो ए वर्णादिमां प्रत्येक वर्णनुं अनन्त तारतम्य होवाथी अनन्त भांगा संभवे. ए वर्णादि परिणामोनी स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी असंख्यातो काळ जाणवी. हवे उपसंहार कहे छे—'सेत्तं अजीवपन्नवणा' एम अजीवप्रज्ञापना कही.

महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। २०.

जे सठाणओ चउरससठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीयफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। २०

रसपणे, अने स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. (२०)

जे संस्थानथी चतुरस्रसंस्थान—चतुष्कोणाकारपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे अने स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे परिणत होय छे. (२०)

विवक्षा छे, अने तेओने बीजा वर्णादि संभवता नथी स्पर्शना विचारमा प्रस्तुत स्पर्शना प्रतिपक्ष स्पर्श सिवाय बीजा स्पर्शो लाकमां पण

रिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि।

जे संठाणओ तंससंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि,

---

रसपणे अने स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. (२०)

जे संस्थानथी त्र्यस्रसंस्थान—त्रिकोणाकारपणे परिणत छे ते वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य

जो के अहीं बादर स्कन्धोमां पांचे य वर्णो, बन्ने गंधो, अने पांचे रसो होय छे, तेथी मर्यादित—अपेक्षित वर्णादि सिवाय बाकीना वर्णादि वडे पण भांगा संभवे छे, तो पण तेज बादर स्कन्धोमां व्यवहारथी जे कृष्णवर्णादि युक्त अवान्तर—पेटा स्कन्धो छे, जेम के शरीरस्कंधमां ज लोचनस्कन्ध कृष्ण छे, तेना अन्तर्गत कोइक स्कन्ध रातो छे, तेनी अंदर बीजो शुक्ल स्कन्ध छे वगेरे, तेनी अहीं

ण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। २०

जे संठाणओ वट्टसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णप-

---

गन्धपणे, रसथी कडवा वगेरे पांचे य रसपणे अने स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे परिणत होय छे. (२०)

जेओ संस्थानथी वृत्त संस्थान–वर्तुलाकारपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य

हवे संस्थानने आश्रयी कहे छे—'जेओ संस्थानथी परिमंडल संस्थानपणे परिणत छे' तेओना ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, अने ८ स्पर्शने आश्रयी बधा मळी वीश भेद थाय छे एटले परिमंडल संस्थानपणे परिणत थयेला स्कंधोना वीश भागा थाय छे ए प्रमाणे २० वृत्त संस्थान–वर्तुलाकारपणे परिणमेला, २० त्र्यस्र संस्थानपणे परिणत थयेला, २० चतुरस्र संस्थानपणे परिणमेला अने २० आयत संस्थानपणे परिणत थयेला स्कंधोना थाय छे बधा मळीने सो भागा थाय छे एम वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अने संस्थानना बधा मळीने ५३० पांचसो त्रीस भांगा थाय छे

फासपरिणया वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणया वि। संठाणणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २३.

जे फासओ लुक्खफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणता वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २३, १८४.

जे संठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियव-

---

कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत अने उष्ण स्पर्शपणे तथा संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२३)

जेओ स्पर्शथी रूक्ष स्पर्शपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे अने स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत अने उष्ण स्पर्शरूपे तथा संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२३ १८४.)

जेओ संस्थानथी परिमंडल संस्थानपणे परिणत छे तेओ वर्णथी काळा वगेरे पांचे य वर्णपणे, गन्धथी सुरभि अने असुरभि बन्ने

जे फासओ उसिणफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किलवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणया वि, वट्टसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आयतसठाणपरिणता वि। २१

जे फासओ निद्धफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किलवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुय-

---

जेओ स्पर्शथी उष्ण स्पर्शपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे, स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, स्निग्ध अने रुक्षस्पर्शपणे तथा संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२१)

जेओ स्पर्शथी स्निग्ध स्पर्शपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे, स्पर्शथी

संठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २३।

जे फासओ सीयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणता वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणता वि, दुब्भिगन्धपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि। लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आयतसंठाणपरिणया वि २३।

स्पर्शथी कर्कश, मृदु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्शपणे अने संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२३)

जेओ स्पर्शथी शीत स्पर्शपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे, स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्शपणे तथा संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२३)

स्पर्शना परिणामवाळा अने २३ रूक्ष स्पर्शना परिणामवाळा स्कन्धोना थाय छे. ए बधा मळीने एकसो चोराशी भांगाओ थाय छे.

णता वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, सीयफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, णिद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणता वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणता वि, वट्टसठाणपरिणया वि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आययसठाणपरिणया वि २३।

जे फासओ लहुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणता वि, सुक्किल्लवण्णपरिणता वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणता वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणता वि, वट्ट-

---

स्पर्शथी कर्कश, मृदु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्षपणे अने संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२३)

जेओ स्पर्शथी लघु—हलका स्पर्शपणे परिणत छे ते वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे

स्पर्शना परिणामवाळा, २३ लघुस्पर्शना परिणामवाळा, २३ शीतस्पर्शना परिणामवाळा, २३ उष्णस्पर्शना परिणामवाळा, २३ स्निग्ध

जे फासओ मउयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणता वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणता वि, दुब्भिगन्धपरिणता वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि। सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २३।

जे फासओ गुरुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणता वि, हालिद्दवण्णपरिणता वि, सुक्किल्लवण्णपरिणता वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणता वि, दुब्भिगन्धपरि-

जेओ स्पर्शथी मृदु—कोमळ स्पर्शपणे परिणत होय छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी बन्ने य गन्धरूपे, रसथी पांचे य रसरूपे, स्पर्शथी गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्शपणे अने संस्थानथी पांचे य संस्थानरूपे परिणत होय छे. (२३)

जेओ स्पर्शथी गुरु—भारे स्पर्शपणे परिणत होय छे ते वर्णथी पांचे य वर्णपणे, गन्धथी बन्ने य गन्धपणे, रसथी पांचे य रसपणे,

छे तेओना ५ वर्ण, २ गन्ध, ५ रस, प्रतिपक्षी स्पर्शनो अभाव होवाथी ६ स्पर्श अने ५ संस्थानने आश्रयी बधा मळी त्रेवीश भेद थाय छे. ए रीते कर्कश स्पर्शना परिणामवाळा स्कन्धोना त्रेवीश भांगा थाय छे. २३ एटला ज भांगा मृदुस्पर्शना परिणामवाळा, २३ गुरु-

वि, वट्टसठाणपरिणता वि, तससठाणपरिणता वि, चउरससठाणपरिणता वि, आययसठाणपरिणया वि। २०, १००.

जे फासतो कक्खडफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणता वि, सुक्किल्लवण्णपरिणता वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणता वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, णिद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणता वि। सठाणतो परिमण्डलसठाणपरिणता वि, वट्टसठाणपरिणता वि, तससठाणपरिणता वि, चउरससठाणपरिणता वि, आयतसठाणपरिणया वि २१।

संस्थानथी पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२०–१००).

जेओ स्पर्शथी कर्कश–खरसट स्पर्शपणे परिणत छे तेओ वर्णथी काळा वगेरे पांचे य वर्ण रूपे, गन्धथी सुरभि अने असुरभि बन्ने गन्धपणे, रसथी कडवा वगेरे पांचे य रसपणे, स्पर्शथी गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष स्पर्शपणे अने संस्थानथी परिमंडलादि पाचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२१)

स्पर्शने आश्रयी कहे छे—'जेओ स्पर्शथी कर्कश–खरसट स्पर्शपणे परिणत छे'–इत्यादि जेओ स्पर्शथी कर्कश स्पर्शना परिणामवाळा

जे रसओ अम्बिलरसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणयावि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया विं, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २०.

जे रसओ महुररसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणता वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणता

जेओ रसथी अम्ल—खाटा रसपणे परिणमेला छे तेओ वर्णथी काळा वगेरे पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी सुरभि अने असुरभि बन्ने य गन्धपणे, स्पर्शथी कर्कशादि आठे य स्पर्शपणे अने संस्थानथी परिमंडलादि पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२०)

जेओ रसथी मधुररसपणे परिणत छे तेओ वर्णथी पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी बन्ने य गन्धरूपे, स्पर्शथी आठे य स्पर्शपणे अने

वीश भांगा थाय छे. एम पांच रसना संयोगे सो भांगा थाय छे.

फासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आयतसंठाणपरिणया वि। २०

जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, नीलवण्णपरिणता वि, लोहियवण्णपरिणता वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणता वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि। आयतसंठाणपरिणया वि। २०

गन्धरूपे, स्पर्शथी कर्कशादि आठे य स्पर्शरूपे अने संस्थानथी परिमण्डलादि पांचे य संस्थानरूपे परिणत होय छे. (२०)

जेओ रसथी कषाय–तूरा रसपणे परिणत छे तेओ वर्णथी काळा वगेरे पांचे वर्णरूपे, गन्धथी सुरभि अने असुरभि बन्ने य गन्धपणे, स्पर्शथी कर्कशादि आठे य स्पर्शपणे अने संस्थानथी परिमण्डलादि पांचे य संस्थानपणे परिणत होय छे. (२०)

ए प्रमाणे कटुक–तीखा रसपणे परिणत थयेला, तूरा रसपणे परिणत, अम्ल रसपणे परिणत अने मधुर रसपणे परिणत स्कन्धोना पण पांचे

परिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २६, ४६.

जे रसओ तित्तरसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया

पण परिणत होय छे. रसथी कडवा, तीखा, तूरा, खाटा अने मधुर रसपणे पण परिणमेला होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष स्पर्शपणे परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वृत्त, त्र्यस्र, चतुरस्र अने आयत संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२३–४६).

जेओ रसथी तिक्त–कडवा रसरूपे परिणत छे तेओ वर्णथी काळा वर्णपणे, नील, लोहित–राता, हारिद्र–पीळा अने शुक्ल–

होय छे ५, एम पांच रसने आश्रयी ५, आठ स्पर्शने आश्रयी ८ अने पांच संस्थानने आश्रयी ५–एम बधा मळी त्रेवीश भेद थाय छे. ए प्रमाणे सुरभिगन्धपणे परिणत थयेला स्कन्धोना त्रेवीश भांगा थाय छे. एम दुरभिगन्धपणे परिणत स्कन्धोना पण त्रेवीश भांगा थाय छे. बधा मळीने गन्धपदना छेंताळीश भांगा समजवा.

हवे रसने आश्रयी कहे छे—जेओ 'रसतः' रसनी अपेक्षाए तिक्तरस–कडवा रसपणे परिणमेला स्कन्धो छे तेओना ५ वर्ण,

वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणता वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि। चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २०

जे रसओ कडुयरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीत-

---

श्वेतवर्णपणे परिणत होय छे. गन्धथी सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, अने रुक्ष स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वृत्त, त्र्यस्र, चतुरस्र, अने आयत संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२०)

जेओ रसथी कटुक–तीखा रसरूपे परिणत छे तेओ वर्णथी काला वगेरे पांचे य वर्णरूपे, गन्धथी सुरभि अने असुरभि बन्ने य

---

२ गंध, ८ स्पर्श अने ५ संस्थान–एम बधा मळी वीश प्रकार थाय छे एम कडवा रसपणे परिणत स्कन्धोना वीश भांगा थाय छे

रूपी अजीव-प्रज्ञापना

वर्णादिनो संबन्ध.

॥ ३७ ॥

या वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, गरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि। २३.

जे गन्धओ दुब्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, णीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किल्लवण्णपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरस-

---

रसथी कडवा, तीखा, तुरा, खाटा, अने मधुर रसपणे पण परिणत होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वृत्त–वर्तुल; त्र्यस्र–त्रिकोण, चतुरस्र–चतुष्कोण अने आयत संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२३)

जेओ गन्धथी दुरभिगन्धपणे परिणमेला छे तेओ वर्णथी काळा वर्णपणे, नील, लोहित–राता, हारिद्र–पीळा, अने शुक्ल वर्णपणे

हवे गंधने आश्रयी कहे छे—जे 'गंधतः' गंधने आश्रयी सुरभिगन्धना परिणामवाळा होय छे ते वर्णने आश्रयी काळा वर्णना परिणामवाळा, नीलवर्णना परिणामवाळा, रातावर्णना परिणामवाळा, पीळावर्णना परिणामवाळा अने शुक्लवर्णना परिणामवाळा पण

जे वण्णओ सुक्किल्लवण्णपरिणता ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणता वि, दुब्भिगन्धपरिणता वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीयफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, णिद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणता वि। सठाणओ परिमडल सठाणपरिणया वि, वट्टसठाणपरिणया वि, तंससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणयावि, आययसठाणपरिणया वि। २०, १००

जे गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिण-

---

जेओ वर्णथी ५ शुक्ल वर्णपणे परिणत छे तेओ गन्धथी सुरभिगन्धपणे अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत होय छे. रसथी कडवा, तीखा, तूरा, खाटा अने मधुररसपणे पण परिणत होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण स्निग्ध अने रुक्ष स्पर्शरूपे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वर्तुल, त्रिकोण, चतुष्कोण अने आयत संस्थानरूपे पण परिणत होय छे. (२० १००).

जेओ गन्धथी सुरभि गन्धपणे परिणत छे तेओ वर्णथी काळा, नील, रक्त, पीत अने शुक्ल वर्णपणे पण परिणत होय छे.

परिणत, पीळा वर्णपणे परिणत अने शुक्लवर्णपणे परिणत स्कन्धोना पण वीश वीश भागा थाय छे एम पाच वर्णा थई सो भांगा थाय छे

जे वण्णओ हालिद्दवण्णपरिणया ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणयावि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तर-
सपरिणया वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ
कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरि-
णया वि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलसंठाणप-
रिणया वि, वट्टसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणता वि। आयतसंठाणपरिणता वि। २०.

शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वृत्त, त्र्यस्र, चतुरस्र, अने आयत संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२०)

जेओ वर्णथी ४ हारिद्र–पीळा वर्णरूपे परिणत छे तेओ गन्धथी सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत होय छे. रसथी कडवा, तीखा, तूरा, खाटा अने मधुर रसपणे पण परिणमेला होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष स्पर्शरूपे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वर्तुल, त्रिकोण, चतुष्कोण अने आयत संस्थानपणे पण परिणमेला होय छे. (२०)

संस्थान ए वधा मळी वीश भंग कृष्ण–काळा वर्णपणे परिणमेला स्कन्धोना थाय छे. ए प्रमाणे नील वर्णपणे परिणमेला, रक्त वर्णपणे

लसण्ठाणपरिणता वि, वट्टसठाणपरिणया वि, तससण्ठाणपरिणया वि, चउरससण्ठाणपरिणया वि, आयतसण्ठाणपरिणया वि। २०

जे वण्णओ लोहियवण्णपरिणया ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणता वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणता वि, वट्टसठाणपरिणता वि, तससठाणपरिणया वि, चउरससठाणपरिणया वि, आयतसठाणपरिणता वि। २०

स्पर्शपणे पण परिणत होय छे. संस्थानथी परिमंडल, वृत्त–वर्तुल, त्र्यस्र–त्रिकोण, चतुरस्र–चतुष्कोण अने आयत संस्थानपणे पण परिणत होय छे. (२०)

जेओ वर्णथी १ लोहित–रक्त वर्णरूपे परिणत छे ते गन्धथी सुरभि गन्धपणे अने दुरभि गन्धपणे पण परिणत होय छे. रसथी कडवा रसपणे तीखा रसपणे, तुरा रसपणे, खाटा रसपणे अने मधुर रसपणे पण परिणत होय छे. स्पर्शथी कर्कश, मृदु, गुरु, लघु,

गधपणे परिणत होता नथी ए प्रमाणे रस, स्पर्श अने संस्थानने आश्रयी भंगो कहेवा तेमां बे गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श अने पांच

णपरिणता वि, वट्टसण्ठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आयतसंठाणपरिणया वि। २०.

जे वण्णओ नीलवण्णपरिणता ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणता वि, कसायरसपरिणता वि, अम्बिलरसपरिणता वि, महुररसपरिणता वि। फासओ कक्खडफासपरिणता वि, मउयफासपरिणता वि, गुरुयफासपरिणता वि, लहुयफासपरिणता वि, सीतफासपरिणता वि, उसिणफासपरिणता वि, निद्धफासपरिणता वि, लुक्खफासपरिणता वि। संठाणओ परिमण्ड-

कर्कश–वरसठ स्पर्शपणे, मृदु–कोमळ स्पर्श पणे, गुरु–भारे स्पर्शपणे, लघु स्पर्शपणे, शीत स्पर्शपणे, उष्ण स्पर्शपणे, स्निग्ध स्पर्शपणे अने रूक्ष स्पर्शपणे पण परिणत छे. संस्थानथी परिमंडल संस्थानपणे, वृत्त–वर्तुल संस्थानपणे, त्रिकोण संस्थानपणे, चतुष्कोण संस्थानपणे अने आयत संस्थानपणे पण परिणत छे. (२०)

जेओ वर्णथी २ नील वर्णपणे परिणत छे तेओ गन्धथी सुरभिगन्धपणे अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत छे. रसथी कडवा, तीखा, तूरा, खाटा अने मधुर रसपणे पण परिणत छे. स्पर्शथी कर्कश–वरसठ, मृदु–कोमळ, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष

'गन्धतः' गन्धने आश्रयी सुरभिगन्धपणे अने दुरभिगन्ध–दुर्गन्धपणे पण परिणत होय छे. तात्पर्य ए छे के तेओ गंधनी अपेक्षाए विकल्पे केटला एक सुरभिगन्धपणे परिणत होय छे अने केटला एक दुरभिगन्धपणे पण परिणत छे, परन्तु अमुक एक ज

६. जे वण्णओ कालवण्णपरिणता ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणता वि, दुब्भिगन्धपरिणता वि। रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। सण्ठाणओ परिमण्डलसण्ठा-

६. जेओ वर्णथी १ काळा वर्ण रूपे परिणत छे तेओ गन्धथी सुरभि—सुगन्धरूपे अने दुरभि—दुर्गन्ध रूपे पण परिणत छे. रसथी कडवा रस रूपे, तीखा रस रूपे, कषाय—तूरा रस रूपे, अम्ल—खाटा रस रूपे अने मधुर रस रूपे पण परिणत छे. स्पर्शथी

भेद छे तेमां प्रथम परिमंडल सिवायना प्रत्येकना ओजप्रदेशजनित—एकी संख्यावाळा प्रदेशोथी उत्पन्न थयेल अने युग्मप्रदेशजनित—बेकी संख्यावाळा प्रदेशोथी उत्पन्न थयेल—एवा बे भेद छे वृत्त संस्थानने विषे पांच, बार, सात अने बत्रीस प्रदेशो छे त्र्यस्र संस्थानमां त्रण, छ, पांत्रीश अने चार प्रदेशो छे चतुरस्र संस्थानमां नव, चार, सत्तावीश अने आठ प्रदेशो छे आयत संस्थानमां त्रण, बे, पंदर अने छ तथा पीस्तालीश अने बार प्रदेशो पण छे वीश अने चालीश प्रदेशो परिमंडल संस्थानने विषे छे

६ हवे एज वर्णादिनो परस्पर संवेध—संबंध कहे छे—जे इत्यादि 'वर्णतः' वर्णने आश्रयी काळा वर्णपणे परिणत छे तेओ

१ आयत संस्थानना श्रेण्यायत, प्रतरायत अने घनायत—ए त्रण भेद थाय छे अने ते प्रत्येकना ओजप्रदेशजनित अने युग्मप्रदेशजनित एवा बे भेद थाय छे बधा मळी आयत—संस्थानना छ भेद थाय छे

१८ युग्मप्रदेश-घनायत- चार परमाणुओनुं बनेलुं अने चार आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे. तेमां पूर्वे कहेला छ प्रदेशना प्रतरायतना उपर तेवीज रीते तेटला परमाणुओ मूकवा.

१९ प्रतरपरिमंडल- वीश परमाणुओनुं बनेलुं अने वीश आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे. ते आ प्रमाणे-पूर्वादि चार दिशाओमां प्रत्येक दिशाए चार चार परमाणुओ स्थापवा अने विदिशाओमां प्रत्येक विदिशाए एकएक परमाणु मूकवो. स्थापना-

२० घनपरिमंडल-चाळीश परमाणुओनुं बनेलुं अने चाळीश आकाश प्रदेशोमां रहेलुं छे. तेमां तेज वीश परमाणुओनी उपर बीजा वीश परमाणुओ मूकवा.

आ प्रमाणे ए संस्थानोनी प्ररूपणा करी छे. कारण के जो एथी पण न्यून प्रदेशो होय तो उपर कहेला संस्थानो थतां नथी. ए अर्थनो संग्रह करनारी आ उत्तराध्ययन निर्युक्तिनी गाथाओ छे—

" परिमंडले य वट्टे तंसे चउरंस आयए चेव । घण-पयर पढमवज्जं ओजपएसे य जुम्मे य ॥
पंचग-बारसगं खलु सत्तग-बत्तीसगं च वट्टम्मि । तिग-छक्क-पणगतीसा चत्तारि य होंति तंसंमि ॥
नव चेव तहा चउरो सत्तावीसा य अट्ठ चउरंसे । तिग-युग-पन्नरसेव य छच्चेव य आयए होंति ॥
पणयाला बारसगं तह चेव य आययंमि संठाणे । वीसा चत्तालीसा परिमंडलए य संठाणे " ॥

अर्थ—परिमंडल, वृत्त, त्र्यस्र (त्रिकोण), चतुरस्र, (चतुष्कोण), अने आयत-ए पांच संस्थान छे. तेना घन अने प्रतर बे

जुओ आ. स. उत्तरा० गाथा ३८-४१ प. २८-१.

१२ युग्मप्रदेश-घनचतुरस्र—आठ परमाणुओथी उत्पन्न थयेलुं अने आठ आकाश प्रदेशोमां रहेलुं छे ते आ प्रमाणे-चार प्रदेशना पूर्वोक्त प्रतरना उपर बीजा चार परमाणुओ मूकवा

१३ ओजप्रदेश-श्रेण्यायत—त्रण परमाणुवाळुं अने त्रण आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे तेमां तीरछा निरंतर त्रण परमाणुओ स्थापवा स्थापना— [ooo]

१४ युग्मप्रदेश-श्रेण्यायत—बे परमाणुवाळुं अने बे आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे ते आ प्रमाणे-(तीरछा) बे परमाणुओ मूकवा स्थापना— [oo]

१५ ओजप्रदेश-प्रतरायत—पंदर परमाणुओ वडे बनेलुं अने पंदर आकाश प्रदेशमां रहेलुं होय छे तेमां पांच प्रदेशनी त्रण पंक्तिओ तीरछी स्थापन करवी स्थापना— [ooooo / ooooo / ooooo]

१६ युग्मप्रदेश-प्रतरायत—[illegible] परमाणुओनुं बनेलुं अने छ आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे तेमां त्रण त्रण प्रदेशनी बे पंक्ति स्थापवी. स्थापना— [ooo / ooo]

१७ ओजःप्रदेश-घनायत—पीस्तालीश परमाणुओथी उत्पन्न थयेलुं अने तेटला ज आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे तेमां पूर्वे कहेला पंदर प्रदेशना प्रतरायतनी नीचे अने उपर तेमज पंदर पंदर परमाणुओ मूकवा

७ ओजःप्रदेश–घनत्र्यस्र– पांत्रीस परमाणुओ वडे बनेलुं अने पांत्रीश आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे. ते आ प्रमाणे–तीरछा निरन्तर पांच परमाणुओ मूकवा, तेओनी नीचे नीचे अनुक्रमे तीरछा चार, त्रण, बे अने एक परमाणु मूकवो. एम पंदर प्रदेशवाळुं प्रतर थाय छे. स्थापना— आज प्रतरना उपर सर्व पंक्तिओमां अंते रहेला एक एक प्रदेशने छोडी दस परमाणुओ मूकवा, तेम ज तेना उपर उपर छ, त्रण अने एक एम अनुक्रमे परमाणुओ मूकवा. स्थापना— आ बधा मळीने पांत्रीश प्रदेशो थाय छे.

८ युग्मप्रदेश–घनत्र्यस्र– चार प्रदेशोनुं बनेलुं अने चार आकाश प्रदेशमां रहेलुं होय छे. त्रण प्रदेशना बनेला प्रतरत्र्यस्रना एक परमाणुनी उपर एक परमाणु मूकवो. तेथी बधा मळी चार प्रदेशो थाय छे.

९ ओजःप्रदेश–प्रतरचतुरस्र– नव परमाणुओनुं बनेलुं अने नव आकाश प्रदेशोमां रहेलुं होय छे. तेमां तीरछा निरन्तर त्रण प्रदेशवाळी त्रण पंक्तिओ स्थापवी. स्थापना—

१० युग्मप्रदेश–प्रतरचतुरस्र– चार परमाणुओनुं बनेलुं अने चार आकाश प्रदेशोमां रहेलुं छे. तेमां तीरछा बे आकाश प्रदेशवाळी बे पंक्ति स्थापवी.

११ ओजःप्रदेश–घनचतुरस्र– सत्यावीश परमाणुओनुं बनेलुं अने सत्यावीश आकाश प्रदेशोमां रहेलुं होय छे. तेमां नवप्रदेशना बनेला पूर्वोक्त प्रतरनी उपर अने नीचे नव नव प्रदेशो स्थापवा. तेथी सत्यावीश प्रदेशोनुं ओजःप्रदेश–घनचतुरस्र थाय छे.

चार आकाश प्रदेशमा रूचकना आकारे (गोस्तनना आकारे) स्थापवा अने तेनी चारे तरफ बाकीना आठ परमाणुओ मूकवा स्थापना- 

३ ओज प्रदेश-घनवृत्त- सात प्रदेश वडे बनेलुं अने सात आकाश प्रदेशमा रहेलु होय छे ते आ प्रमाणे-ते ज पांच प्रदेशना प्रतरवृत्तना मध्य भागमा रहेला परमाणुनी उपर अने नीचे एक एक परमाणु मूकवो तेथी ए प्रमाणे सातप्रदेशवाळुं घनवृत्त थाय छे

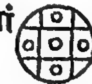
४ युग्मप्रदेश-घनवृत्त- बत्रीश प्रदेशवाळुं अने बत्रीश आकाश प्रदेशोमा रहेलुं होय छे ते आ प्रमाणे-पूर्वोक्त बार प्रदेशना प्रतरवृत्तना उपर बार परमाणुओ मूकवा अने तेनी उपर ने नीचे बीजा चार चार परमाणुओ मूकवा

५ ओज प्रदेश-प्रतरत्र्यस्र- त्रण प्रदेशनु बनेलु अने त्रण आकाश प्रदेशमा रहेलु छे ते आ प्रमाणे-तीरछा बे परमाणुओ मूकवा त्यार पछी प्रथम परमाणुनी नीचे एक परमाणु मूकवो स्थापना- 

६ युग्मप्रदेश-प्रतरत्र्यस्र- छ परमाणुओथी उत्पन्न थयेलुं अने छ आकाश प्रदेशमां रहेलुं छे तेमा तीरछा निरन्तर त्रण परमाणुओ स्थापवा त्यार पछी प्रथम परमाणुनी हेठे उपर अने नीचे एम बे परमाणुओ मूकवा अने बीजानी नीचे एक परमाणु मूकवो स्थापना- 

कार रूपे परिणत, ३ त्र्यस्र संस्थान–त्रिकोणाकृति रूपे परिणत, ४ चतुरस्र संस्थान–चतुष्कोणाकृति रूपे परिणत अने ५ आयत संस्थान–दंडाकारपणे परिणत होय छे.

परिणत, कुंभारना चक्र वगेरेनी पेठे वृत्तसंस्थान–वर्तुलाकारपणे परिणत, शींगोडा वगेरेनी पेठे त्र्यस्रसंस्थान–त्रिकोणाकारपणे परिणमेला, कुंभिका वगेरेनी पेठे चतुरस्रसंस्थान–चार खुणावाळा आकारपणे परिणमेला, अने दंडादिनी पेठे आयत संस्थान–दीर्घाकारपणे परिणमेला होय छे. आ परिमंडलादि संस्थानो घन अने प्रतरना भेदथी बे प्रकारना होय छे. अने तेमां परिमंडल संस्थानने छोडी बाकीना संस्थानो ओजःप्रदेशजनित–विषम संख्यावाळा (एक, त्रण, पांच–इत्यादि एकी संख्यावाळा) प्रदेशोथी उत्पन्न थयेला अने युग्म प्रदेशजनित–सम संख्यावाळा (बे, चार, छ इत्यादि बेकी संख्यावाळा) प्रदेशोथी उत्पन्न थयेला–एम बे प्रकारना छे. तेमां उत्कृष्ट परिमंडलादि बधा संस्थानो अनन्त परमाणुओथी उत्पन्न थयेला अने असंख्याता आकाश प्रदेशमां रहेलां छे ए प्रसिद्ध छे. अने जघन्य संस्थान नियत संख्यावाळा परमाणुथी बनेला छे. परन्तु ते बताव्या सिवाय जाणी शकाय तेम नथी माटे शिष्यवर्ग उपर उपकार करवा माटे अहीं दर्शावाय छे—

१ ओजःप्रदेश–प्रतरवृत्त–पांच परमाणुओ वडे बनेलुं अने पांच आकाश प्रदेशमां रहेलुं होय छे. जेम के–एक परमाणु वच्चे मूकवो अने चार परमाणुओ अनुक्रमे पूर्वादि चार दिशाओमां मूकवा. स्थापना– 

२ युग्मप्रदेश–प्रतरवृत्त– चार परमाणुओ वडे बनेलुं अने चार आकाश प्रदेशमां रहेलुं होय छे. तेमां निरन्तर चार परमाणुओ

जे संठाणपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता। तं जहा–१ परिमंडलसंठाणपरिणया, २ वट्टसंठाण०, ३ तंससंठाण०, ४ चउरंससंठाण०, ५ आयतसंठाण०।

—१ कर्कश–बरसठ स्पर्श रूपे परिणत, २ मृदु–कोमळ स्पर्श रूपे परिणत, ३ गुरु–भारे स्पर्श रूपे परिणत, ४ लघु–हलका स्पर्शरूपे परिणत, ५ शीत स्पर्श रूपे परिणत, ६ उष्ण स्पर्शपणे परिणत, ७ स्निग्ध स्पर्शपणे परिणत, अने ८ रुक्ष स्पर्शपणे परिणत.

जे संस्थान परिणत छे ते पांच प्रकारना छे. जेम के—१ परिमंडल संस्थान–वलयाकारपणे परिणत, २ वृत्तसंस्थान–वर्तुला-

प्रकारना कह्या छे जेम के–१ कडवा तुंबडानी पेठे कडवा रस रूपे परिणमेला, २ सुंठ वगेरेनी पेठे कटुक–तीखा रस रूपे परिणमेला, ३ काचा कोठानी पेठे कषाय–तुरा रसपणे परिणमेला, ४ आम्लवेतस वगेरेनी जेम अम्ल–खाटा रसपणे परिणमेला, अने ५ साकर वगेरेनी जेम मधुर रसपणे परिणत थयेला होय छे जेओ स्पर्शपणे परिणत छे तेओ आठ प्रकारना छे जेम के–१ पत्थर वगेरेनी पेठे कर्कश–बरसठ स्पर्शपणे परिणत थयेला, हंस अने रू वगेरेनी पेठे मृदु–कोमळ स्पर्शपणे परिणत, वज्रादिनी पेठे गुरु–भारे स्पर्शपणे परिणत, आकडाना रू वगेरेनी पेठे लघु–हलका स्पर्शपणे परिणत, कमळना डाळखा वगेरेनी जेम शीतस्पर्शपणे परिणत, अग्नि वगेरेनी पेठे उष्ण स्पर्शपणे परिणत, घी वगेरेनी पेठे स्निग्ध स्पर्शपणे परिणत अने भस्मादिनी पेठे रुक्ष स्पर्शपणे परिणत होय छे

जेओ संस्थान–आकारपणे परिणत छे ते पांच प्रकारना कह्या छे जेम के–वलय–चुडीनी पेठे परिमंडल संस्थानपणे

१ नळ्यनी पेठे बहारना भागमां वर्तुलाकार अने अंदरनो भाग खाली होय ते परिमंडल अने कुंभारना चाकडानी पेठे अंदरनो भाग खाली न होय ते वृत्त संस्थान समजवु

यरसपरिणता, ३ कसायरसपरिणता, ४ अंबिलरसपरिणता, ५ महुररसपरिणता। जे फासपरिणता ते दुविहा पन्नत्ता। तं जहा—१ कक्खडफासपरिणता, २ मउयफासपरिणता, ३ गरुयफासपरिणता, ४ लहुयफासपरिणता, ५ सीयफासपरिणता, ६ उसिणफासपरिणया, ७ णिद्धफासपरिणया, ८ लुक्खफासपरिणया।

५. जे वर्णपणे परिणमेला छे ते पांच प्रकारे छे., जेमके—१ कालवर्णपरिणत—काळा वर्णरूपे परिणमेला, २ नीलवर्णपरिणत—लीला वर्णपणे परिणमेला, ३ लोहितवर्णपरिणत—राता वर्णपणे परिणमेला, ४ हारिद्रवर्ण—पीळा वर्णपणे परिणमेला अने ५ शुक्लवर्णपणे परिणमेला. जे गन्धपणे परिणत छे ते बे प्रकारना छे. जेमके—सुरभिगन्ध—सुगन्धरूपे परिणत अने दुरभिगन्ध—दुर्गन्धरूपे परिणत. जे रसपरिणत छे ते पांच प्रकारना छे. जेमके—१ तिक्त—कडवा रसरूपे परिणत, २ कटुक—तीखा रसरूपे परिणत, ३ कषाय—तूरा रस रूपे परिणत, ४ अम्ल—खाटा रस रूपे परिणत अने ५ मधुर—मिष्टरस रूपे परिणत. जे स्पर्शपणे परिणत छे ते आठ प्रकारना कह्या छे. जेम के

५. जेओ वर्णपणे परिणत छे तेओ पांच प्रकारे कह्या छे. जेम के—१ काजळ वगेरेनी पेठे कृष्ण वर्णपणे परिणत, २ गळी वगेरेनी पेठे नीलवर्णपणे परिणत, ३ हींगळो वगेरेनी जेम राता वर्णपणे परिणत, ४ हळदरनी पेठे पीत वर्णपणे परिणत, अने ५ शंखादिनी पेठे शुक्लवर्णपणे परिणत होय छे. जे गन्धपणे परिणत होय छे ते बे प्रकारना कह्या छे. जेम के—सुरभि—सुगन्धपणे परिणत अने दुरभि—दुर्गन्धपणे परिणत. 'च' शब्द पुद्गलोनो ते ते रूपे परिणाम थवामां विशेषता नथी एम जणाववा माटे छे. ते आ प्रमाणे—कोइ पण रूपे रहेला पुद्गलो सामग्रीना वशथी जेम सुरभिगन्धपणे परिणमे छे, तेम कोइ पण रूपे रहेला पुद्गलो सामग्रीना संयोगथी दुर्गन्धपणे परिणमे छे. चंदनादिनी पेठे सुगन्धपणे परिणमेला अने लसण वगेरेनी पेठे दुर्गन्धपणे परिणमेला जाणवा. जे रसपणे परिणत छे ते पांच

५ जे वन्नपरिणया ते पचविहा पन्नत्ता। तजहा–१ कालवन्नपरिणया, २ नीलवन्न परिणया, ३, लोहियवन्नपरिणया, ४ हालिद्दवन्नपरिणया, ६ सुक्किल्लवन्नपरिणया। जे गधपरिणता ते दुविहा पन्नत्ता। तजहा–सुब्भिगधपरिणया य दुब्भिगंधपरिणया य। जे रसपरिणता ते पचविहा पन्नत्ता। त जहा–१ तित्तरसपरिणता, २ कडु-

निर्विभाग–जेनो भाग कल्पी न शकाय एवा भागो स्कन्धप्रदेशो कहेवाय छे अहीं पण बहुवचन प्रदेशोनुं अनन्तपणुं बतावया माटे छे 'परमाणुपुद्गला' परम–अत्यत सूक्ष्म अणुओ, जेनो भाग कल्पी न शकाय एवा निर्विभाग द्रव्य रूप पुद्गलो ते परमाणुपुद्गलो अने स्कन्धरूप परिणाम रहित केवळ परमाणुओ जाणवा

'ते सक्षेपथी' इत्यादि ते स्कन्धादि यथायोग्यपणे संक्षेपथी पाच प्रकारना कह्या छे ते आ प्रमाणे–'वर्णपरिणताः' वर्णरूपे परिणाम पामेला, वर्णपरिणामवाळा एम गधपरिणत, रसपरिणत, स्पर्शपरिणत अने संस्थानपरिणत–आकाररूपे परिणत जाणवा अहीं परिणत–परिणमेला' ए भूतकाळनो निर्देश कर्यो छे, ते वर्तमान अने भविष्यकाळनो उपलक्षक–सूचक छे वर्तमान अने भविष्य सिवाय भूतकाळना समय नथी जेमके–जे वर्तमानपणाने अतिक्रान्त थयेलो छे ते अतीत कहेवाय छे जे अनागतपणाने अतिक्रमी गयो छे ते वर्तमान छे ए सबधे कह्यु छे के–"भवति स नामातीतो य प्राप्तो नाम वर्तमानत्वम्। एष्यश्च नाम स भवति यः प्राप्स्यति वर्तमानत्वम्" ॥ जे वर्तमानपणाने प्राप्त थयेलो ते अतीत छे अने जे वर्तमानपणाने पामशे ते भविष्य छे तेथी वर्ण परिणत–वर्णरूपे परिणमेला, परिणमे छे अने परिणमशे ते बधा (वर्णपरिणत शब्दथी) जाणवा ए प्रमाणे गधपरिणत अने रसपरिणत इत्यादि पण समजवा

४. से किं तं रूविअजीवपन्वणा ? रूविअजीवपन्वणा चउव्विहा पन्नत्ता । तंजहा—१ खंधा, २ खंधदेसा, ३ खंधप्पएसा, परमाणु पोग्गला । ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता । तंजहा—१ वन्नपरिणया, २ गंधपरिणया, ३ रसपरिणया, ४ फासपरिणया, ५ संठाणपरिणया ।

(मू०) ४. रूपीअजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? रूपीअजीवप्रज्ञापना चार प्रकारे कही छे. ते आ प्रमाणे—स्कन्धो, स्कन्धदेशो, स्कन्धप्रदेशो अने परमाणुपुद्गलो. ते पुद्गलो संक्षेपथी पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ वर्णपरिणत, २ गन्धपरिणत, ३ रसपरिणत, ४ स्पर्शपरिणत अने ५ संस्थानपरिणत.

---

४. पुनः रूपीअजीवप्रज्ञापना संबंधे शिष्य प्रश्न करे छे—'रूपीअजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे' ? आचार्य कहे छे—रूपीअजीवप्रज्ञापना चार प्रकारे कही छे. जेम के—'स्कन्धाः' स्कन्दन्ति—पुद्गलोना जुदा पडवाथी शोषण पामे—सूकाय, अने धीयन्ते—पुद्गलोना मळवाथी वृद्धि पामे ते स्कन्धो कहेवाय. पृषोदरादिमां पाठ होवाथी स्कन्धशब्दनी निष्पत्ति थाय छे. अहीं बहुवचन पुद्गलस्कन्धोनुं अनन्तपणुं जणाववा माटे छे. ते अनन्तपणुं नथी घटतुं एम नथी, कारण के आगममां कह्युं छे. ते संबंधे आगळ कहेशे के—'द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय अनन्त छे'—इत्यादि. 'स्कन्धदेशाः' स्कन्धोना ज स्कन्धरूपपरिणामनो त्याग नहि करता एवा बुद्धिकल्पित बे त्रण इत्यादि प्रदेशना समुदाय रूप विभागो ते स्कन्धदेशो. अही पण बहुवचन अनन्तानन्तप्रदेशी तेवा प्रकारना स्कन्धोमां देशनुं अनन्तपणुं बताववा माटे छे. 'स्कन्ध प्रदेशाः' स्कन्ध रूप परिणामने प्राप्त थयेला स्कन्धोना ज बुद्धिकल्पित प्रकृष्ट—अत्यंत सूक्ष्म देशो—

अहीं 'धर्मास्तिकाय' ए पद मंगळ रूप छे, कारण के ते आदिमां [illegible] छे. अने पदार्थोनी प्ररूपणानो प्रारंभ कर्यो छे तेथी मंगळने माटे प्रारंभमां धर्मास्तिकायनुं ग्रहण कर्युं छे धर्मास्तिकायनो प्रतिपक्षी अधर्मास्तिकाय छे. ए माटे त्यार पछी अधर्मास्तिकायनुं ग्रहण छे आ बन्नेनुं आधारभूत आकाश छे, माटे त्यार पछी आकाशास्तिकायनुं ग्रहण छे. ते पछी अजीवना साधर्म्यथी अद्धासमयनुं कथन छे अथवा अहीं धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय सर्वव्यापक नथी. जो सर्वव्यापक होय तो तेना सामर्थ्यथी जीव अने पुद्गलोनो अस्खलित (सर्वत्र) प्रचार थवाथी लोक अने अलोकनी व्यवस्था नहीं थाय. लोक अने लोक अने अलोकनी व्यवस्था तो छे कारण के सूत्रमां तो ते एटले [illegible] जणाय छे. तेथी [illegible] होवाथी ते बन्ने रहेला छे तेटलो लोक अने बाकीनो अलोक—एम सिद्ध थाय छे ए संबंधे कह्युं छे के—"धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनुं व्यापकपणुं होय तो जीव अने पुद्गलोनो सर्वत्र प्रचार थवाथी लोक पण अलोक जेवो [illegible] परन्तु ए आगमथी [illegible] नथी." ते माटे लोकाकाश व्यापीने धर्म अने अधर्म द्रव्य रहेलां छे ए प्रमाणे तेनुं अव्यापकपणुं होवाथी परिमित लोक सिद्ध थाय छे" तेथी लोक अने अलोकनी व्यवस्थानुं कारण धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय छे तेथी ए बन्नेनुं प्रारंभमां ग्रहण करेलुं छे. तेमां पण मांगलिक होवाथी प्रथम धर्मास्तिकायनुं ग्रहण कर्युं छे तेनो प्रतिपक्षी होवाथी ते पछी अधर्मास्तिकायनुं ग्रहण कर्युं छे ते पछी लोकालोक व्यापी होवाथी आकाशास्तिकायनुं ग्रहण छे त्यार बाद लोकमां समयक्षेत्र अने तेथी भिन्न क्षेत्रनी व्यवस्था करनार होवाथी अद्धासमयनुं ग्रहण छे ए प्रमाणे आगमने अनुसरी थोडुं पण युक्तिसंगत होय ते कहेवुं आ संबंधे घणुं ज कहेवुं बस छे प्रस्तुत प्रज्ञापनानो उपसंहार करे छे—एम अरूपीअजीवप्रज्ञापना कही

एटलुं ज कहेवुं बस छे, कारण के बीजे स्थळे आ वादनो विचार कर्यो छे. तथा 'धर्मास्तिकायनो देश'—ते ज धर्मास्तिकायनो बुद्धिकल्पित बे, त्रण, संख्याता, असंख्याता प्रदेशोनो विभाग. 'धर्मास्तिकायना प्रदेशो'—ते धर्मास्तिकायना अत्यंत सूक्ष्म निर्विभाग—जेनो बीजो भाग कल्पी न शकाय तेवा विभागो. ते असंख्याता छे, कारण के ते लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे, ए हेतुथी बहुवचन मूक्युं छे.

धर्मास्तिकायथी प्रतिपक्ष अधर्मास्तिकाय छे. तात्पर्य ए छे के स्थितिपरिणामने प्राप्त थयेला जीव अने पुद्गलोने स्थिति परिणाममां अवलंबन, अमूर्त, असंख्यात प्रदेशना समूहरूप अधर्मास्तिकाय छे अधर्मास्तिकायनो देश अने अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पूर्वनी पेठे जाणी लेवा. तथा "आकाशन्तेऽस्मिन्" पदार्थो पोतपोताना स्वभावने नहि छोडवारूप मर्यादा वडे जेमां स्वरूपथी प्रतिभासित थाय ते आकाश. जो 'आ' अभिविधि—व्याप्तिना अर्थमां होय त्यारे 'आ' सर्व भावोनी व्याप्ति वडे—सर्व भावोमां व्यापकपणे प्रतिभासमान थाय ते आकाश. तेना अस्ति—प्रदेशनो काय—समूह ते आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायनो देश अने प्रदेशो पूर्वनी पेठे जाणवा. परन्तु प्रदेशो अनन्ता जाणवा. कारण के अलोक अनन्त छे.

'अद्धासमय.' अद्धा—ए कालनी संज्ञा छे, ए रूप समय ते अद्धासमय. अथवा अद्धा—काळनो समय—निर्विभाग भाग ते अद्धासमय. आ काळ वास्तविक रीते एक ज वर्तमान समय रूप छे, अतीत अने अनागत समय रूप नथी. कारण के तेओ अनुक्रमे विनाश पामेला अने उत्पन्न नहि थयेला होवाथी अविद्यमान छे. तेथी समयना समूहनो अभाव होवाथी तेमां देश अने प्रदेशनी कल्पना थती नथी. पूर्व समयनो नाश थया पछी पछीना समयनो सद्भाव होय छे. तेथी तेना समुदाय अने समिति इत्यादि असंभवित होवाने लीधे आवलिकादि केवळ व्यवहारने माटे ज कल्पेला छे एम जाणवुं.

पुद्गलो ज रूपादिवाळा छे रूपी सिवायना अरूपी धर्मास्तिकायादि अजीव ते अरूपी अजीव तेओनी प्रज्ञापना ते अरूपीअजीवप्रज्ञापना एने बदाथी पूर्वनी पेठे एनेतुं प्राधान्य बताववा माटे छे

१ तेमां अल्प वक्तव्यता होवाथी प्रथम अरूपी अजीवप्रज्ञापनानुं वर्णन करवानी इच्छाथी सूत्रकार आ सूत्र कहे छे–"से" शब्द अथशब्दना अर्थमां छे अथ का सा अरूप्यजीवप्रज्ञापना? अरूपीअजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? आचार्य कहे छे –अरूपी अजीवप्रज्ञापना दस प्रकारे कही छे अरूपी अजीवो दस प्रकारना होवाथी तेनी प्ररूपणा पण दस प्रकारनी कही छे ते दस प्रकार बतावे छे–'तद्यथा' ए जे भेदो कहेवाना छे ते भेदोनुं कथन प्रगट करवाने माटे छे तद्–दशविधत्वं–दस प्रकार, अथवा 'तद्' ए सर्व लिंग अने सर्व वचनमां वर्तमान अव्यय छे एटले सा दशविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथा भवति तथा दर्श्यते–ते दस प्रकारे अरूप्यअजीवप्रज्ञापना जे प्रकारे छे ते प्रकारे बतावाय छे–"धर्मास्तिकाय" इति. स्वभावथी ज गतिपरिणामने प्राप्त थयेला जीव अने पुद्गलोना गतिस्वभावने धारण करवाथी–पोषण करवाथी 'धर्म' कहेवाय छे अस्ति एटले प्रदेशो, तेओनो काय–समूह, कारण के गण, काय, निकाय, स्कन्ध, वर्ग, तेमज राशि–ए पर्यायशब्दो छे अस्तिकाय–प्रदेशोना समूह आ वडे परिपूर्ण धर्मास्तिकाय रूप अवयवी द्रव्य कहे छे अवयवी एटले अवयवोनो तेवा प्रकारनो संघातरूप परिणामविशेष छे, परन्तु अवयव द्रव्योथी जुदु द्रव्य नथी कारण के जुदा स्वरूपे तेनो उपलंभ (ज्ञान) थतो नथी लंबाइ अने पहोळाइपणे संघातरूप परिणामविशेषने प्राप्त थयेला तन्तुओना ज लोकमां पट तरीके व्यवहार थाय छे पण तन्तुओथी जुदु पट नामे द्रव्य नथी ए संबंधे अन्य आचार्योए पण कह्युं छे–"तन्तुआदिथी भिन्नरूपे पटादिनुं ज्ञान थतु नथी, परन्तु विशिष्ट रचनाविना ज पटादि रूपे व्यवहार थाय छे आ संबंधे

३. से किं तं अरूविअजीवपन्नणा ? अरूविअजीवपन्नवणा दसविहा पन्नत्ता, तंजहा–धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए। सेत्तं अरूविअजीवपन्नवणा ॥

३. अरूपीअजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? अरूपीअजीवप्रज्ञापना दस प्रकारे कहेली छे. ते आ प्रमाणे–१ धर्मास्तिकाय, २ धर्मास्तिकायनो देश अने ३ धर्मास्तिकायना प्रदेशो. ४ अधर्मास्तिकाय, ५ अधर्मास्तिकायनो देश अने ६ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो. ७ आकाशास्तिकाय, ८ आकाशास्तिकायनो देश अने ९ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, तथा १० काळ. ए प्रमाणे अरूपीअजीवप्रज्ञापना कही.

" कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः। एकरस–वर्ण–गंधो द्विस्पर्शः कार्यलिंगश्च ॥ "

द्विप्रदेशथी मांडी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सुधीना जे बधा पौद्गलिक कार्यो छे ते बधानुं छेवटनुं कारण परमाणु छे, पण परमाणुनुं कारण कोई नथी. ते सूक्ष्म अने पर्यायार्थपणे अनित्य छतां द्रव्यार्थपणे नित्य छे. तेमां एक रस, एक वर्ण, एक गन्ध अने शीत अने उष्ण, स्निग्ध अने रूक्ष–ए चार परस्पर विरोधी स्पर्शोमांथी बे अविरोधी स्पर्शो छे. वळी ते कार्यवडे अनुमेय–अनुमान करवा योग्य छे." माटे परस्पर रूपादिनो नियत संबंध छे. अथवा स्पर्शरूपादिनी अभेदरूप मूर्ति ते रूप, ते जेओने होय ते रूपी. एवा रूपी अजीवनी प्रज्ञापना–प्ररूपणा ते रूपीअजीवप्रज्ञापना. एटले पुद्गलस्वरूप अजीवनी प्रज्ञापना ए भावार्थ छे. कारण के

२ से किं तं अजीवपन्नवणा? अजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—रूविअजीवपन्नवणा य अरूविअजीवपन्नवणा य।

२. अजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे कही छे? अजीवप्रज्ञापना बे प्रकारे कही छे. जेम के—रूपीअजीवप्रज्ञापना अने अरूपीअजीवप्रज्ञापना.

प्राणो छे द्रव्य प्राणोना पण संबंधथी नारकादि संसारी जीवो छे, अने केवळ भाव प्राणो वडे पांच प्रकारना ज्ञानवाळा सिद्ध जीवो छे जीवोनी प्रज्ञापना—प्ररूपणा ते जीवप्रज्ञापना. जीवथी विपरीत अजीवरूप धर्मवाळा अजीव होय छे अने ते धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमय—काळरूप छे. अजीवोनी प्रज्ञापना ते अजीवप्रज्ञापना. सूत्रमां बे प्रकार छे ते सर्वे य प्रज्ञापनानुं प्रधानपणुं बताववा माटे छे, अहीं बेमांथी कोई पण प्रज्ञापनानुं गौणपणुं नथी ए प्रमाणे बधे य अक्षरार्थ करवो

२ ए प्रमाणे सामान्यपणे प्रज्ञापनाना बे भेद बतावी हवे तेनुं विशेष स्वरूप जाणवा माटे अल्प वक्तव्य होवाथी प्रथम अजीव प्रज्ञापनानुं प्रतिपादन करवाने इच्छावाळा सूत्रकार ते संबंधे प्रश्नसूत्र कहे छे—"अथ किं सा अजीवप्रज्ञापना"? 'अजीवप्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? अथवा का सा अजीवप्रज्ञापना'? आचार्य कहे छे—अजीवप्रज्ञापना बे प्रकारे कही छे जेम के—रूपीअजीवप्रज्ञापना अने अरूपीअजीवप्रज्ञापना जेओने रूप छे ते रूपी रूपनुं ग्रहण गन्धादिनुं उपलक्षण—सूचक छे, गंधादि सिवाय रूपनो असंभव छे जेम के—दरेक परमाणुमां रूप, रस, गन्ध अने स्पर्श होय छे ए संबंधे कह्युं छे के—

श्रोता पात्र—उपदेशने योग्य छे." मूळमां 'से' शब्द मगधदेश प्रसिद्ध अव्यय छे, अने ते तत्र शब्दना अर्थमां अने अथ शब्दना अर्थमां छे. अथ शब्द वाक्यना प्रारंभमां वपराय छे 'किं' शब्द बीजाने प्रश्न करवाना अर्थमां छे. एटले तेनो समुदायार्थ आ प्रमाणे छे—प्रश्न करवा योग्य स्थानादि पदो दूर रहो, कारण के वाणीनी प्रवृत्ति अनुक्रमे थाय छे, एटले प्रज्ञापना पदना पछी तेओनो उपन्यास कर्यो छे. पण तेमां एटलुं प्रथम पूछुं छुं के—'किं प्रज्ञापना'? प्रज्ञापना केटला प्रकारे छे? अथवा प्राकृतशैलीथी अभिधेयनी जेम लिंग—जाति अने वचननी योजना करवी—ए न्यायथी आ प्रमाणे जाणवुं. 'का तावत् प्रज्ञापना'? ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न कर्यो एटले पूज्य गुरुदेव शिष्यना वचनने अनुसरी तेना आदर माटे तेणे कहेला प्रज्ञापना शब्दनो पुनरुच्चार करी कहे छे—'प्रज्ञापना बे प्रकारे छे—जीवप्रज्ञापना अने अजीवप्रज्ञापना. अहीं कोइ पण शिष्यनुं नामग्रहण कर्या सिवायना आ उत्तर सूत्र वडे सूचित करे छे के—सर्व सूत्र गणधरना प्रश्न अने तीर्थंकरना उत्तर रूप नथी, पण कोइ कोइ सूत्र अन्यथा—बीजी रीते पण छे. तो पण घणे भागे तो तेवा प्रकारनुं छे. जेथी कह्युं छे के—" अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं " अरिहंतो अर्थनो उपदेश करे छे अने गणधरो निपुणताथी सूत्रनी रचना करे छे. " तेमां प्रज्ञापनानो अर्थ पूर्वनी पेठे समजवो. ते बे प्रकारे कहेली छे. ज्यारे अहीं तीर्थंकरो ज उत्तर आपनारा होय त्यारे आ अर्थ जाणवो—अन्य तीर्थंकरोए पण प्रज्ञापना बे प्रकारे कहेली छे. ज्यारे तीर्थंकरना मतने अनुसरनारा कोइ आचार्य उत्तर आपनार होय त्यारे तीर्थंकर अने गणधरोए बे प्रकारे कही छे—एम जाणवुं. तेना बे प्रकार बतावे छे—'तं जहा' इत्यादि. जेम के—जीवप्रज्ञापना अने अजीवप्रज्ञापना. ' तद्यथा ' ए जे भेदो कहेवाना छे ते भेदोनुं कथन प्रगट करवा माटे छे. जीवन्ति —प्राणोने धारण करे ते जीवो. प्राणो बे प्रकारना छे—द्रव्य प्राणो अने भाव प्राणो. तेमां इन्द्रियादि द्रव्य प्राणो छे अने ज्ञानादि भाव

१ प्रज्ञापना पद

१ से किं तं पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता । तंजहा—जीवपन्नवणा य अजीवपन्नवणा य ।

१. प्रज्ञापना केटला प्रकारे छे ? प्रज्ञापना बे प्रकारे छे. जेम के—जीवप्रज्ञापना अने अजीवप्रज्ञापना.

कर्मपद, चोवीशमुं कर्मबंधकपद आ पदमां जे प्रकारे जीव कर्म बांधे ते प्रकारे तेनी प्ररूपणा करवामां आवी छे एम पचीशमुं कर्मवेदक पद छे, तेमां जीव क्युं कर्म बांधतो केटली कर्मप्रकृति वेदे एम बन्धनी साथे उदयना संबंधनुं निरूपण कर्युं छे छव्वीशमुं वेदबंधकपद छे जे कर्मप्रकृतिओने वेदे—अनुभवे ते वेद, तेने बंध थाय ते वेदबंध, तात्पर्य ए छे के केटली प्रकृतिओ वेदतो केटली प्रकृतिओनो बन्ध थाय—एम उदयनी साथे बन्धना संबंधनुं निरूपण करवामां आव्युं छे माटे ते पदनुं नाम वेदबंधक छे ए प्रमाणे कइ प्रकृतिने वेदतो केटली प्रकृतिओने अनुभवे—ए अर्थने प्रतिपादन करनार वेदवेदक नामे सत्यावीशमुं पद छे अठ्यावीशमुं आहारनुं प्रतिपादन करेलुं होवाथी आहारपद ए प्रमाणे ओगणत्रीशमुं उपयोग पद छे त्रीशमुं पश्यत्ता—दर्शनता पद छे एकत्रीशमुं संज्ञापद, बत्रीशमुं संयमपद, तेत्रीशमुं अवधिपद, चोत्रीशमुं प्रविचार—स्त्रीना विषयोपभोग संबंधे प्रविचारणा पद, पांत्रीशमुं वेदना अने छत्रीशमुं समुद्घातपद छे ए प्रमाणे पदोनो उपन्यास करेलो छे

१ हवे पदना सूत्रो कहेवाना छे तेमां प्रथम पदनुं पहेलुं सूत्र आ छे—' अथ का सा प्रज्ञापना ' इत्यादि आ सूत्रनो अहीं शो प्रस्ताव—अवसर छे ? आ प्रश्नसूत्र छे अने ते प्रारंभमां मूकवामां आवेलुं छे तेथी एम जणावे छे के—मध्यस्थ, बुद्धिमान् अने जिज्ञासु प्रश्न करनारने अरिहंत भगवंते उपदेशेला तत्त्वोनी प्ररूपणा करवी ए संबंधे कह्युं छे के—" मध्यस्थ, बुद्धिमान् अने जिज्ञासु

१ प्रज्ञापना पद प्रज्ञापनाना भेद. ॥१६॥

२० अन्तक्रिया, २१ अवगाहना–संस्थान, २२ क्रिया, २३ कर्म, २४ कर्मबन्धक, २५ कर्मवेदक, २६ वेदबन्धक, २७ वेदवेदक, २८ आहार, २९ उपयोग, ३० पश्यत्ता–दर्शनता, ३१ संज्ञा, ३२ संयम, ३३ अवधि, ३४ प्रविचारणा, ३५ वेदना अने ३६ समुद्घात–ए छत्रीस पदो छे.

आ प्रज्ञापनामां छत्रीश पदो छे. पद, अधिकरण, अर्थाधिकार–ए पर्याय शब्दो छे. ते पदो आ प्रमाणे छे–प्रज्ञापनाविषयक प्रश्नने आश्रयी प्रवृत्त थयेलुं होवाथी प्रथम प्रज्ञापना पद कहेवाय छे. ए प्रमाणे पृथिवीकायिकादि जीवोना स्थानोनुं निरूपण करेलुं होवाथी बीजुं स्थानपद, पृथिवीकायिकादि जीवोनुं दिशा, गति वगेरे सत्यावीश द्वारो वडे अल्पबहुत्व वगेरे घणुं कहेवानुं होवाथी त्रीजुं बहुवक्तव्यपद, नैरयिकादि जीवोनी स्थिति–आयुषनुं प्रमाण कहेलुं होवाथी चोथुं स्थिति पद, जीव अने अजीवना औदयिक, क्षायोपशमिक अने क्षायिक भावने आश्रयी विशेष–पर्यायनुं निरूपण होवाथी पांचमुं विशेष अथवा पर्याय पद. प्राणीओना व्युत्क्रान्ति–उपपातविरहादि अर्थाधिकार युक्त होवाथी छठ्ठुं व्युत्क्रान्ति पद, जीवोना उच्छ्वासनिःश्वास क्रियानो विरहकाळ अने अविरहकाळना परिमाणनुं निरूपण करेलुं होवाथी सातमुं उच्छ्वासपद, आहारादि संज्ञानुं वर्णन करेलुं होवाथी आठमुं संज्ञा पद. जीवोनी शीत, उष्ण, शीतोष्ण–इत्यादि रूपे योनिनुं निरूपण करेलुं होवाथी नवमुं योनिपद. 'रत्नप्रभा पृथिवी चरम छे के अचरम छे' इत्यादि प्रश्नने उद्देशीने आ पदनो प्रारंभ थयेलो होवाथी दशमुं चरमपद. अगियारमुं भाषापद, बारमुं शरीरपद, तेरमुं परिणाम पद, चौदमुं कषायपद, पंदरमुं इन्द्रियपद, पंदर प्रकारना योगनुं वर्णन होवाथी सोळमुं प्रयोगपद, सत्तरमुं लेश्यापद, अढारमुं कायस्थितिपद, ओगणीशमुं सम्यक्त्वपद, वीशमुं अन्तक्रियापद, एकवीशमुं अवगाहनासंस्थानपद, बावीशमुं क्रियापद, त्रेवीशमुं

प्रज्ञापनानो विषय—

पन्नवणा ठाणाइं बहुवत्तव्वं ठिई विसेसा य। वक्कन्ती ऊसासो सन्ना जोणी य चरिमाइं ॥ ४ ॥
भासा सरीर परिणाम कसाय इन्दिए पओगे य। लेसा कायठिईया सम्मत्ते अन्तकिरिया य ॥ ५ ॥
ओगाहणासठाणे किरिया कम्मे इयावरे। [कम्मस्स] बन्धए [कम्मस्स] वेदए [ए] वेदस्स बन्धए वेयवेयए ॥६॥
आहारे उवओगे पासणया सन्नि सञ्जमे चेव। ओही पवियारण वेदणा य तत्तो समुग्घाए ॥ ७ ॥

(मू०)१ प्रज्ञापना, २ स्थान, ३ बहुवक्तव्य, ४ स्थिति, ५ विशेष, ६ व्युत्क्रान्ति, ७ उच्छ्वास, ८ संज्ञा, ९ योनि, १० चरम, ११ भाषा, १२ शरीर, १३ परिणाम, १४ कषाय, १५ इन्द्रिय, १६ प्रयोग, १७ लेश्या, १८ कायस्थिति, १९ सम्यक्त्व,

---

वळी आ प्रज्ञापना अनेक विविध अर्थाधिकार सहित होवाथी चित्र, कुसुम रत्न अने पारना दृष्टिवाद अंगना निष्यन्द—झरणरूप छे अहीं सूत्रमा नपुंसकपणानो निर्देश प्राकृत होवाथी थयो छे तेम भगवान महावीर वर्धमान स्वामीए अध्ययननो अर्थ इन्द्रभूति प्रमुख गणधरोने पासे वर्णवेलो होवाथी अध्ययन वर्णवेलुं छे एम कह्युं छे, तेम हुं पण ते प्रमाणे वर्णवीश

प्र०—भगवान महावीरे कह्युं छे तेवा प्रकारे छद्मस्थनी वर्णन करवानी शक्ति क्यांथी होय?

उ०—एम कहेवामां दोष नथी सामान्यरूपे कहेवा लायक पदार्थोना वर्णनमात्रने आश्रयी ए प्रमाणे कहेलुं छे—'हुं पण ते प्रमाणे वर्णन करीश' तात्पर्य ए छे के हुं तेने अनुसारे वर्णन करीश, पण स्वमतिकल्पनाथी नहि करुं.

अज्झयणमिणं चित्तं सुयरयणं दिट्ठिवायणीसन्दं। जह वन्नियं भगवया अहमवि तह वन्नइस्सामि ॥५॥

आ प्रज्ञापना रूप अध्ययन चित्र-विचित्र, श्रुतरत्नरूप अने दृष्टिवादना बिन्दुसमान छे. तेने भगवान् महावीरे जे प्रकारे वर्णव्युं छे ते प्रकारे हुं पण वर्णवीश.

प्राधान्य वाक्योना श्रुतरत्नोनी अपेक्षाए नथी, परंतु स्वरूपथी छे. ते भगवान्-ज्ञान, ऐश्वर्य अने धर्मादिवाळा, "आर्य"-आरात् अव्यय दूर अने समीप अर्थनो वाचक छे. 'आराद् यातः' एटले सर्व हेय धर्मोथी दूर गयेला अने गुणो वडे समीप गयेला, ते आर्य श्यामसूरिने नमस्कार थाओ.

प्र०—आ प्रज्ञापना नामे अध्ययन छे, तो तेनी आदिमां अनुयोगादि द्वारनो उपन्यास केम करता नथी ?

उ०—अध्ययनना प्रारंभमां उपक्रमादि अनुयोगद्वारोनो उपन्यास अवश्य करवो जोईए-एवो नियम नथी. 'नियम नथी' एम शाथी जणाय ? एनो उत्तर ए छे के नंदि अध्ययनादिने विषे उपक्रमादि अनुयोगोनो उपन्यास देखातो नथी.

---

१. अनुयोग—सूत्रार्थनी व्याख्या, तेना द्वार-उपाय ते अनुयोगद्वार. तेना चार प्रकार छे—१ उपक्रम, निक्षेप, अनुगम अने नय. दूर रहेला शास्त्रादिने ते ते प्रतिपादनना प्रकारो वडे समीपमां लइ जवुं-निक्षेपने योग्य करवुं ते उपक्रम. नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव वडे विचार करवो ते निक्षेप. सूत्र अने अर्थनो अनुकूल संबंध करवो ते अनुगम. अनन्त धर्मयुक्त वस्तुनो एक धर्मवडे विचार करवो ते नय. अर्थात् एक अंश ग्रहण करनार बोध ते नय.

नमस्कार सबंधे पच्चे अन्य आचार्ये करेली आ बे गाथाओ छे—पूर्वना आपनारने वाचक कहे छे श्रेष्ठ वाचको ते वाचकवर अथवा वाचकप्रधान कहेवाय छे तेओनो वंश—प्रवाह, परंपरा तेमा थयेला, सप्तमी प्राकृत होवाथी पञ्चमी विभक्तिनो निर्देश छे कारण के प्राकृतमां सर्व विभक्तिओना अर्थमा सर्व विभक्तिओ यथासंभव प्रवर्ते छे ए सबंधे पाणिनि कहे छे—"व्यत्ययोऽप्यासां" आ विभक्तिओनो व्यत्यय—फेरफार थाय छे आर्यश्यामसूरि वाचकना वंशमा थयेला छे अने सुधर्मास्वामिथी मांडीने त्रेवीशमा छे ते बुद्धिथी शोभित होवाथी धीर पुरुष छे जगतनी त्रिकालावस्थानुं मनन करे ते मुनि एटले विशिष्ट ज्ञानयुक्त छे वळी जेमनी बुद्धि पूर्वना ज्ञानवडे समृद्ध—वृद्धि पामेली छे

प्र०—जे वाचकना वंशमा थयेला होय ते पूर्व श्रुतवडे समृद्धबुद्धिवाळा अवश्य होय, तो आ विशेषणनुं शुं प्रयोजन छे?

उ०—ए सत्य छे परन्तु वाचको पूर्वविद् छता पण तेओ छ स्थानकने प्राप्त थयेला होय छे अर्थात् तेओ ज्ञानमा एक बीजाथी हीनाधिक होय छे कोइ पूर्वधरोमा पण मतिज्ञानने आश्रयी छ स्थानक कहेवामा आवशे तेथी बीजा पूर्वविद् करता अधिकता बताववा आ विशेषण आपवामा आव्युं छे, माटे दोष नथी अहीं 'ण' अव्ययनुं ह्रस्वपणुं अने बुद्धियान्नुं दीर्घपणुं आर्षपणाथी थयेलुं छे श्रुत पण अपार होवाथी अने ज्ञानादि रत्नयुक्त होवाथी सागर जेवुं छे ते श्रुतसागरथी 'विणेऊण' देश्य प्राकृत छे एटले साम्प्रत कालना पुरुषने योग्य वीणीने प्रज्ञापना रूप उत्तम—प्रधान श्रुतरत्न शिष्योने आप्युं छे अहीं

१ परस्पर हीनाधिकता बताववा माटे सूत्रमां वृद्धि अने हानिना छ स्थानको कह्या छे—१ अनन्तभागवृद्धि, २ असङ्ख्यातभाग वृद्धि, ३ सङ्ख्यातभागवृद्धि, ४ सङ्ख्यातगुणवृद्धि, ५ असङ्ख्यातगुणवृद्धि अने ६ अनन्तगुणवृद्धि एवा ज हानिना छ स्थानको छे

वायगवरवंसाओ तेवीसइमेण धीरपुरिसेणं । दुद्धरधरेण मुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥

सुयसागरा विणेऊण जेण सुयरयणमुत्तमं दिन्नं । सीसगणस्स भगवओ तस्स नमो अज्जसामस्स ॥ ४ ॥

(मू०) वाचकना श्रेष्ठ वंशमां (सुधर्मास्वामिथी आरंभीने) त्रेवीशमा, धीर पुरुष, दुर्धर–प्राणातिपातविरमणादि महाव्रतने धारण करनारा अने पूर्वश्रुतवडे जेनी बुद्धि समृद्ध थयेली छे एवा जे मुनिए श्रुतसागरथी वीणीने प्रधान श्रुतरत्न शिष्यगणने आप्युं ते भगवत् आर्य श्यामाचार्यने नमस्कार हो.

पांचमा विशेष पदमां, दसमा चरम पदमां अने तेरमा परिणाम पदमां जीव अने अजीवनी प्रज्ञापना छे. सोळमा प्रयोगपदमां अने बावीशमा क्रियापदमां आश्रवनी, त्रेवीशमा कर्मप्रकृतिपदमां बन्धनी, छत्रीशमा समुद्घातपदमां केवलीसमुद्घातनी प्ररूपणाना प्रसंगे संवर, निर्जरा अने मोक्षनी तथा बाकीना स्थानादि पदमां कोई कोई भावनी प्रज्ञापना करेली छे. अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावरूप सर्व भावोनी प्रज्ञापना छे. कारण के ते सिवाय बीजी कोइ पण प्रज्ञापनीय (प्ररूपणा करवा योग्य) वस्तु नथी. तेमां पहेला प्रज्ञापनापदमां जीव अने अजीव द्रव्यनी, बीजा स्थान पदमां जीवना आधारभूत क्षेत्रनी, चोथा स्थिति पदमां नारकादि स्थितिनुं निरूपण करेलुं होवाथी काळनी अने बाकीना पदोमां संख्या, ज्ञानादिपर्याय, व्युत्क्रान्ति अने उच्छ्वासादि भावोनी प्रज्ञापना करवामां आवी छे.

(टी०) आ गाथानो 'अज्झयणमिणं चित्तं' ए गाथानी साथे संबन्ध छे. जेणे आ प्रज्ञापनानो प्राणीओना उपकारने माटे श्रुतसागरथी उद्धार कर्यो छे ते आर्य श्यामसूरि पण नजीकना उपकारी छे माटे अमारा सरखाने नमस्कार करवा योग्य छे. तेथी तेना

फरता घूअडना टाळाने सूर्यना कीरणो भमराना पण जेवा (काळा) लागे छे एटले प्रकाश आपनारा सूर्यना कीरणो पण तेओने अंधकार रूप लाग छे" माटे भगवंतना वचनथी भव्योने ज उपकार थाय छे पण अभव्योने थता नथी तेथी 'भव्यजननिर्वृतिकर' एवुं भगवंतने विशेषण आपवामां आव्युं छे एवा भगवंते शुं कर्युं छे? ते कहे छे–'उपदर्शिता' उप–समीपपणे, जेम श्रोताओने जल्दी यथावस्थित तत्त्वना बोध थाय तेवी रीते स्पष्ट वचना वडे दर्शिता–उपदेश कर्यो छे कोनो उपदेश कर्यो छे? प्रज्ञापनानो उपदेश कर्यो छे प्रज्ञाप्य-तेऽनया–जे शब्दसमूह वडे जीवादि भावनी प्ररूपणा कराय ते प्रज्ञापना प्रज्ञापना केवा प्रकारनी छे? 'श्रुतरत्ननिधानम्' अहीं रत्नो बे प्रकारना छे—जेम के द्रव्यरत्न अने भावरत्न वैडूर्य, मरकत, इन्द्रनील वगेरे द्रव्य रत्नो छे अने श्रुत अने ज्ञानादि भावरत्नो छे तेमा द्रव्यरत्नो तात्त्विक नथी, माटे अहीं भावरत्नोनो अधिकार छे अहीं (श्रुतान्येव रत्नानि) श्रुतरूप रत्ना ते श्रुतरत्नो एवो समास करवो पण (श्रुतानि च रत्नानि च) श्रुत अने रत्नो–एवो द्वन्द्व समास तेमज (श्रुतानि रत्नानीव) रत्नना जेवुं श्रुत–एवो समास पण न करवो, कारण के प्रथम द्वन्द्व समासना पक्षमां अहीं श्रुत सिवाय द्रव्य रत्नोनो अधिकार नथी, बीजा पक्षमां श्रुत ज तात्त्विक रत्न रूप होवाथी पार्थिवा रत्ना वडे उपमानो अभाव छे, श्रुत रत्नाना निधान जेवी प्रज्ञापना ते श्रुतरत्ननिधान छे कोनी प्रज्ञापना छे? ए जणावे छे—सर्वभावोनी प्रज्ञापना छे जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा अने मोक्ष, ए सर्व भावो–तत्त्वो छे जेमके आ प्रज्ञापनामां छत्रीस पदो छे तेमां प्रथम प्रज्ञापना पदमां, बीजा बहुवक्तव्यता पदमां

१ अहीं जैनागममां द्रव्य अने भाव शब्द पारिभाषिक छे पौद्गलिक परिणामने द्रव्य अने आत्मिक परिणामने भाव कह छे वैडूर्यादि रत्नो पौद्गलिक परिणामरूप होवाथी द्रव्यरत्नो छे अने श्रुतचारित्रादि आत्मिक परिणामरूप होवाथी भावरत्नो कहवाय छे

निमित्ते 'भगवता' ए बीजुं विशेषण कहे छे. भग–समग्र ऐश्वर्यादि रूप छे. ए संबंधे कह्युं छे के—"समग्र ऐश्वर्य, रूप, यश, श्री, धर्म अने प्रयत्न–ए छनी भग एवी संज्ञा छे. जेने भग होय ते भगवान् कहेवाय. अहीं अधिक अर्थमां वत् प्रत्यय थयो छे. त्रण लोकना अधिपति होवाथी बीजा प्राणीओनी अपेक्षाए अतिशय भग–ऐश्वर्य तो वर्धमान स्वामीनुं छे. एटले परम अर्हत् संबंधी महिमायुक्त भगवंते, (प्रज्ञापना बतावी छे.) केवा प्रकारना भगवंते बतावी छे ? तथाविध अनादि पारिणामिक भावना योगथी सिद्धि गमनने योग्य होय ते भव्य, एवा भव्य जीवने निर्वृति–निर्वाण एटले सर्व प्रकारना कर्ममलना क्षयवडे स्वरूप प्राप्ति थवाथी परम सुखनी प्राप्ति थवी, तेनुं कारणभूत सम्यग्दर्शनादि पण कारणने विषे कार्यना उपचारथी निर्वाण कहेवाय छे, एटले भव्य जनोने निर्वाणना कारणभूत सम्यग्दर्शनादि करवाना स्वभाववाळा भगवंते प्रज्ञापना बतावी छे.

प्र० —"भव्यग्रहण करवानुं कारण अभव्यनो निषेध करवा माटे छे. जो एम न होय तो अहीं भव्यनुं ग्रहण निरर्थक छे. तो आ उपरथी एम समजाय छे के भगवान् भव्योने ज सम्यग्दर्शनादि करे छे, अभव्योने करता नथी. परन्तु भगवंत वीतराग होवाथी तेमनामां पक्षपातनो असंभव छे तेथी उपरनी वात तेमने विषे घटी शकती नथी."

उ० –सत्य वस्तुतत्त्वना अज्ञानथी आ शंका थयेली छे. जेम सूर्य कोइ पण प्रकारना भेद सिवाय प्रकाश आपे छे, तेम भगवान् पण कोइ पण प्रकारना भेद सिवाय प्रवचनना अर्थनो उपदेश करे छे, परन्तु स्वभावथी ज सूर्यप्रकाश घूअडने उपकारक थतो नथी. तेम भगवाननो उपदेश अभव्योने उपकारक थतो नथी. ए संबंधे श्रीसिद्धसेन दिवाकर कहे छे–"हे लोक बान्धव ! सद्धर्मना बीजने वाववामां निर्दोष–संपूर्ण कुशलता छतां तमारे पण खील–खेड्या विनाना क्षेत्रो हतां ते आश्चर्य रूप नथी. कारण के अंधकारमां

सुयरयणनिहाण जिणवरेण भवियजणनिव्वुइकरेण । उवदसिया भगवया पन्नवणा सव्वभावाण ॥२॥

(मू०) भव्य जनोने मोक्षनु कारण अने जिनवर–सामान्य केवलीमा श्रेष्ठ एवा भगवंत महावीरे श्रुतरत्नोना निधानभूत एवी सर्व भावोनी प्रज्ञापना बतावेली छे.

पगमादि चारे य अतिशयो ते सिवायना बीजा शरीरनी सुगन्ध वगेरे अतिशयोना उपलक्षण–सूचक छे कारण के बीजा अतिशयो सिवाय केवळ चार अतिशयो होता नथी, तेथी चोत्रीश अतिशय युक्त श्रमण महावीरने वांदु छुं एम कहेलुं समजवुं

(टी०) ऋषभादि अन्य तीर्थंकरोने छोडीने भगवंत महावीरने नमस्कार करवानु शु प्रयोजन छे ? तेओ वर्तमान तीर्थना अधिपति होवाने लीधे नजीकना उपकारी होवाथी तेमने नमस्कार कर्यो छे ते भगवंत महावीरनु निकट उपकारीपणु बतावे छे—'श्रुतरत्ननिधानम्' अहीं प्रज्ञापना विशेष्य छे अने बाकीना केटलाक समानाधिकरण अने केटलाक व्यधिकरण विशेषणो छे जिन–सामान्य केवलीमां तीर्थंकर होवाथी वर–उत्तम एवा महावीरे, सर्वभावोनी प्रज्ञापनानो उपदेश कर्यो छे भगवंत महावीर वर्तमान तीर्थना अधिपति छे, ते सिवाय बीजा कोइ वर्तमान तीर्थना अधिपति नथी अहीं छद्मस्थ अने क्षीणमोह जिननी अपेक्षाए सामान्य केवली पण जिनवर कहेवाय, तेथी शिष्यवर्ग तेवा प्रकारना केवलज्ञानीने जिनवर तरीके समजे माटे तीर्थंकरपणानो बोध थवा

१ समानाधिकरण–समान विभक्तिवाळुं विशेषण अने भिन्न विभक्तिवाळु व्यधिकरण विशेषण छे अहीं 'श्रुतरत्ननिधान' ए समानाधिकरण विशेषण छे अने बीजा बधा व्यधिकरण विशेषणो छे

वाना धर्मवाळुं ते अनित्य. तेथी तेने पण भिन्न काळमां रहेली बे क्रियानुं कर्तापणुं न घटी शके. कारण के (उत्तर क्षणमां) कर्तानुं अवस्थान–विद्यमानपणुं नथी. आ संबन्धे वधारे विस्तारनुं प्रयोजन नथी. केम के अन्य स्थळे तेनी सारी रीते चर्चा करेली छे. त्वाप्रत्यय उत्तर क्रिया सापेक्ष होवाथी हवे उत्तर क्रिया जणावे छे—'वंदामि' इत्यादि. जिनवरेन्द्र महावीरने वंदन करुं छुं. वीर् धातु पराक्रमना अर्थमां छे. भगवंतनुं महावीर नाम यादृच्छिक नथी, परन्तु गुणनिष्पन्न–सार्थक छे, अने ते परिषहोपसर्गादिने विषे यथार्थ अने असाधारण वीरपणुं जोईने देवो अने दानवोए पाडेलुं छे.' कह्युं छे के—"भय अने भयना कारणोमां अचल हता तथा परिग्रह अने उपसर्ग सहन करवामां समर्थ हता, तेथी देवोए 'महावीर' एवुं नाम कर्युं छे." आथी अपायापगमातिशय सूचित कर्यो छे. 'जिनवरेन्द्रम्' जेओ रागादि शत्रुओने जिते ते जिन कहेवाय छे. ते चार प्रकारना छे—श्रुतजिन, अवधिजिन, मनःपर्यवजिन अने केवलीजिन. तेमां केवलीजिननुं ग्रहण करवा माटे 'वर' शब्द जोडवामां आव्यो छे. ते जिनोमां पदार्थना भूत, वर्तमान अने भावी स्वभावने जणावनार केवळज्ञानयुक्त होवाथी वर–श्रेष्ठ छे. तेओ तीर्थंकर नहीं छतां सामान्य केवली पण होय, तेथी तीर्थंकरनुं ग्रहण करवा माटे इन्द्रनुं ग्रहण कर्युं छे. जिनवरेन्द्र–अत्यन्त पुण्यना समुदाय रूप तीर्थंकरनाम कर्मना उदयथी तीर्थंकर जाणवा. आथी ज्ञानातिशय अने पूजातिशय कह्यो छे. केम के ज्ञानातिशय सिवाय जिनोमां उत्तमपणुं अने पूजातिशय सिवाय जिनवरोमां इन्द्रपणुं घटी शकतुं नथी. वळी तेओ त्रैलोक्यना गुरु छे. गृणाति–यथावस्थित प्रवचन–सिद्धान्तना अर्थनो उपदेश करे ते गुरु. भगवान् अधोलोकनिवासी भवनपति देवोने, तिर्यग्लोकनिवासी व्यन्तर, नर, पशु, विद्याधर अने ज्योतिष्कोने तथा ऊर्ध्वलोकनिवासी वैमानिक देवोने धर्मनो उपदेश करे छे, माटे तेओ त्रण लोकना गुरु छे. आथी वचनातिशय सूचित कर्यो. आ अपाया-

" ध्मातं सितं येन पुराणकर्म यो वा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि । ख्यातोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥ "

" जेमणे प्राचीन कर्मोने बाळी नाख्यां छे, जेओ निर्वाण रूप महेलना शिखरे बिराजमान छे, प्रसिद्ध, उपदेष्टा अने कृतकृत्य थयेला छे ते सिद्ध मने मंगल करनार थाओ "

सिद्धा नामादि भेदथी अनेक प्रकारे छे, माटे उपर कहेला सिद्धनो बोध थवा माटे विशेषण कहे छे—" अपगतजरामरणभयान्" जरा—वयनी हानि, मरण—प्राणोनो त्याग करवो, भय इहलोकादि सात प्रकारनो छे कह्युं छे के—" १ इहलोक भय, २ परलोक भय, ३ आदान भय, ४ अकस्मात् भय, ५ आजीविका भय, ६ मरण भय अने ७ अपयश भय जेओना जरा, मरण अने भय सर्वथा फरीथी नहि उत्पन्न थवा वडे नष्ट थया छे एवा सिद्धोने त्रिविधे—मन, वचन अने काययोग वडे, आथी प्रणयोगना व्यापार रहित वचन प्रत्यर्पण छे एम जणाव्युं 'अभिवन्द्य' अभिमुख वंदन करीने—प्रणाम करीने; ए वडे उत्तर काळनी क्रिया साथे समान कर्ता होवाथी पूर्वकाळवाची धातुथी त्वाप्रत्ययनुं विधान थतु होवाने लीधे एकान्त नित्य अने एकान्त अनित्य पक्षनो निषेध सूचित कर्यो छे कारण के एकान्त नित्य अने एकान्त अनित्य पक्षमां त्वाप्रत्ययनो संभव नथी ते आ प्रमाणे—अप्रच्युत—जे नाश नहि पामेलुं, उत्पन्न नही थयेलुं अने स्थिर एक स्वभाववाळु होय ते नित्य कहेवाय अने ते नित्य वस्तुनुं जुदा जुदा काळनी बे क्रियानुं कर्तापणुं शी रीते घटे ? केमके नित्य वस्तु सदा एक स्वभाववाळी होवाथी हमेशां कोइ पण एकज क्रियाना विद्यमानपणानो प्रसंग थाय स्वभावथी एक क्षण रहे

१ उत्तरकाळवाची धात्वर्थनी साथे समानकर्तावाळा पूर्वकाळवाची धातुथी बीजा धातुनो संबंध होय त्यारे 'त्वा' प्रत्यय थाय छे जुओ सिद्ध० ५–४–४७

तेमां आदि मंगल ' ववगयजरमरणभए ' —इत्यादि गाथाथी कर्युं छे, कारण के इष्ट देवनी स्तुति परम मंगलरूप छे. उपयोग पदमां ' कइविहेण भंते ! उवओगे पन्नत्ते ? ' —हे भगवन् ! केटला प्रकारनो उपयोग कहेलो छे—इत्यादि वडे मध्यम मंगल कर्युं छे, कारण के उपयोग ज्ञान स्वरूप छे अने ज्ञान कर्मक्षयनुं प्रधान कारण होवाथी मंगल स्वरूप छे. ' ज्ञान कर्मक्षयनुं प्रधान कारण छे ' ते वात असिद्ध छे—एम नथी. कारण के आ संबन्धे आगममां स्पष्ट कहेलुं छे—" अज्ञानी जे कर्मने घणा क्रोड वर्षे क्षय करे छे, तेने त्रणगुप्तिवाळो ज्ञानी श्वासोच्छ्वास मात्रमां क्षय करे छे. " तथा छेवटे समुद्घात पदमां केवलीसमुद्घात समाप्त थया बाद सिद्धाधिकारनी साथे संबन्ध धरावता " निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का । सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता " ॥—इत्यादि ग्रन्थ वडे अवसान मंगल कर्युं छे.

जेणे सित—बांधेला आठ प्रकारना कर्मेन्धनने जाज्वल्यमान शुक्लध्यानाग्नि वडे ध्मात—बाळी नांख्यां छे तेओ सिद्ध कहेवाय छे अथवा षिधु धातु गत्यर्थक छे. एटले जेओ (सेधन्ति स्म) फरीथी अहीं नहि आववा वडे मोक्षपुरने प्राप्त थयेला छे. अथवा षिधु धातु निष्पत्तिना अर्थमां छे. सिध्यन्ति स्म—जेओ कृतार्थ थयेला छे, अथवा षिधु धातु शासन अने मांगल्यार्थक छे, (सेधन्ति स्म) जेओए शासन—उपदेश कर्यो छे, अथवा तो जेणे मंगलरूपतानो अनुभव कर्यो छे. अथवा जेओ सिद्ध—नित्य छे, कारण के तेमनी स्थिति अनन्त छे. अथवा भव्योए तेमना गुणो जाणेला होवाथी जेओ सिद्ध—प्रसिद्ध छे. कह्युं छे के—

१ सर्व दुःखोने तरी गयेला, जन्म, जरा अने मरणना बंधनथी मुकायेला, अव्याबाध सुखने प्राप्त थयेला स्वाभाविक सुखवाळा सिद्धो शाश्वत काळ पर्यंत रहे छे.

श्रोतानु अनन्तर प्रयोजन प्रस्तुत अध्ययनना अर्थनु ज्ञान अने परंपर प्रयोजन मोक्षप्राप्ति छे तेओ (श्रोताओ) प्रस्तुत अध्ययनने अर्थथी सारी रीते जाणीने संसारथी विरक्त थाय छे, विरक्त थयेला तेओ संसारथी नीकळवानी इच्छावाळा थई संयममार्गमां आगमने अनुसरी सम्यक् प्रवृत्ति करे छे, अने प्रवृत्त थयेला तेओने संयमना उत्कर्ष वडे सर्व कर्मनो नाश थवाथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे

अभिधेय—अहीं जीव अने अजीवनु स्वरूप अभिधेय छे, अने ते पहेला प्रज्ञापना शब्दनी व्युत्पत्तिथी जणावेलुं छे

संबन्ध—संबन्ध बे प्रकारनो छे उपायोपेयभाव (कार्यकारणभाव) अने गुरुपर्वक्रमलक्षण तेमांनो प्रथम उपायोपेयभाव संबन्ध तर्कानुसारी शिष्यने उद्देशीने कहेलो छे जेम के वचनरूप आ सूत्र उपाय—कारणरूप छे अने तेनुं परिज्ञान उपेय (कार्य) छे—ए तर्कगम्य छे गुरुपर्वक्रमलक्षण संबन्ध केवळ श्रद्धानुसारी शिष्यने अनुलक्षीने कहेलो छे, तेने सूत्रकार स्वयमेव आगळ कहेशे

मंगल—आ प्रज्ञापना सूत्र सम्यग्ज्ञाननु कारण होवाथी अने तेथी ते परंपराए मोक्षपदनु साधन होवाथी श्रेयस्कर छे तेथी तेमां विघ्न न आवे माटे विघ्नसमूहनी शान्तिनिमित्ते अने शास्त्र मंगलरूप छे पण शिष्यने जणाववा माटे स्वतः मंगलरूप छतां पण शास्त्रनी आदिमां, मध्यमां अने अन्ते मंगल कहेवु जोईए. शास्त्रनी आदिमां करेलुं मंगल निर्विघ्नपणे शास्त्रनो पार पामवा माटे छे, मध्य मंगल ग्रहण करेला शास्त्रार्थने स्थिर करवा माटे छे, अने अन्त्य मंगल शिष्य–प्रशिष्यादिनी परंपरा वडे तेनो विच्छेद न थाय ते माटे करेलुं छे ए संबंधे कह्युं छे के—"शास्त्रनी आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां मंगल करवु जोईए. तेमां आदि मंगल शास्त्रना अर्थनो निर्विघ्नपणे पार पामवा माटे छे ग्रहण करेला शास्त्रार्थनी स्थिरता माटे मध्यम मंगल छे अने अन्तिम मंगल तेना शिष्य–प्रशिष्यादि वडे तेनो विच्छेद न थाय ते निमित्ते छे"

प्रणमत गुरुपदपङ्कजमधरीकृतकामधेनुकल्पलतम् । यदुपास्तिवशान्निरुपममश्नुवते ब्रह्म तनुभाजः ॥ ३ ॥
जडमतिरपि गुरुचरणोपास्तिसमुद्भूतविपुलमतिविभवः । समयानुसारतोऽहं विदधे प्रज्ञापनाविवृतिम् ॥ ४ ॥

नमस्कार करता देवोना मुकुटमां पडेला प्रतिबिंबना मिषथी भवपंकथी सर्व जगतनो उद्धार करवा माटे होयनी एम जेणे बहु रूपो कर्यां छे एवा श्रीमहावीर भगवंतनो जय थाओ.

जिनवचन रूपी अमृतना समुद्रने वंदन करुं छुं, के जेनुं बिन्दुमात्र ग्रहण करी जीवो जन्म, जरा अने व्याधि रहित थाय छे.

कामधेनु अने कल्पलताथी पण श्रेष्ठ एवा गुरुना चरणकमलने प्रणाम करो, कारण के जेनी उपासनाथी प्राणीओ निरुपम एवा ब्रह्मने–मोक्षने प्राप्त थाय छे.

जडबुद्धिवाळो छतां पण गुरुना चरणनी उपासनाथी विपुलमतिवाळो थइने हुं बीजा शास्त्रोने अनुसरी आ प्रज्ञापनासूत्रनी टीका करुं छुं.

प्र—प्रकर्षेण ज्ञाप्यन्ते अनया—सर्व अन्य तीर्थिकोना तीर्थंकरोने असाध्य एवा यथार्थ स्वरूपना निरूपणद्वारा जे वडे जीवाजीवादि पदार्थो जणावाय–शिष्यनी बुद्धिमां उताराय ते प्रज्ञापना.

आ प्रज्ञापना सूत्र समवाय नामे चोथा अंगनुं उपांग छे. कारण के ते तेमां कहेला अर्थनुं प्रतिपादन करे छे. समवायांगमां कहेला अर्थनुं अहीं प्रतिपादन करवुं निरर्थक छे एम शंका न करवी, कारण के तेमां प्रतिपादन करेला अर्थनुं अहीं विस्तारथी प्रतिपादन करवुं ते मन्दबुद्धिवाळा शिष्यना उपर उपकार करवा माटे होवाथी सार्थक छे. आ उपांग पण सर्व जीवा-

जीवादि पदार्थनुं शासन (उपदेश) करतु होवाथी शास्त्र छे अने तेथी तेना प्रारंभमां बुद्धिमान पुरुषोनी प्रवृत्ति थवा माटे प्रयोजन विषय अने संबंध ए त्रण यावत अने मंगलनु अवश्य प्रतिपादन करवुं जोइए. कह्यु छे के–" बुद्धिमानोनी प्रवृत्ति थवा माटे शास्त्रना प्रारंभमां प्रयोजनादि त्रण यावत तथा इष्ट अर्थनी सिद्धि माटे मंगल पण अवश्य कहेवु जोइए."

प्रयोजन — तेमां प्रयोजनना बे प्रकार छे पर – अनन्तर अने अपर – परंपर वळी पण एकना बब्बे प्रकार छे — कर्ता संबंधी अने श्रोता संबंधी द्रव्यार्थिक नयना मतनो विचार करता (अर्थनी अपेक्षाए) शास्त्र नित्य होवाथी तेनो कर्ता नथी ए संबंधे कह्यु छे के – " आ द्वादशांगी कदाचित न होती एम नथी, कदाचित नथी एम नथी, कदाच नहि हशे एम पण नथी, परंतु ध्रुव, नित्य अने शाश्वती छे " पर्यायार्थिक नयना मतनो विचार करता शास्त्र (शब्दरचना रूप होवाने लीधे) अनित्य होवाथी तेनो कर्ता अवश्य छे तत्त्वनो (प्रमाणनो) विचार करतां आगम सूत्र अने अर्थ उभय रूप होवाथी अर्थनी अपेक्षाए नित्य अने सूत्रनी अपेक्षाए अनित्य होवाथी तेना कर्तापणानी कथंचित् सिद्धि थाय छे तेमां सूत्रना कर्तानु अनन्तर प्रयोजन प्राणीओ उपर उपकार करवानुं अने परंपर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति छे कह्यु छे के – " जे सर्वज्ञे कहेला उपदेश वडे दुःखथी पीडित थयेला प्राणीओ उपर उपकार करे छे ते थोडा काळमां मोक्ष प्राप्त करे छे "

आगमना अर्थनुं प्रतिपादन करनारा अर्हंतोने शुं प्रयोजन छे ? कंई पण नथी कारण के ते कृतकृत्य छे प्रयोजन सिवाय अर्थना प्रतिपादन करवानो प्रयास निर्हेतुक छे' – ए शंका न करवी कारण के अर्थने प्रतिपादन करवानो प्रयत्न तीर्थंकरनाम कर्मना विपाकोदयथी थाय छे ए संबंधे कह्यु छे के — " ते तीर्थंकरनाम कर्म केम वेदाय ? ग्लानिरहितपणे धर्मदेशना आपवाथी वेदाय छे "

१ जुओ नंदिसूत्र आ स पृ० २४७–१

श्रोतानुं अनन्तर प्रयोजन प्रस्तुत अध्ययनना अर्थनुं ज्ञान अने परंपर प्रयोजन मोक्षप्राप्ति छे. तेओ (श्रोताओ) प्रस्तुत अध्ययनने अर्थथी सारी रीते जाणीने संसारथी विरक्त थाय छे, विरक्त थयेला तेओ संसारथी नीकळवानी इच्छावाळा थइ संयममार्गमां आगमने अनुसरी सम्यक् प्रवृत्ति करे छे, अने प्रवृत्त थयेला तेओने संयमना उत्कर्ष वडे सर्व कर्मनो क्षय थवाथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

अभिधेय—अहीं जीव अने अजीवनुं स्वरूप अभिधेय छे, अने ते पहेलां प्रज्ञापना शब्दनी व्युत्पत्तिथी जणावेलुं छे.

संबन्ध—संबन्ध बे प्रकारनो छे. उपायोपेयभाव (कार्यकारणभाव) अने गुरुपर्वक्रमलक्षण. तेमांनो प्रथम उपायोपेयभाव संबन्ध तर्कानुसारी शिष्यने उद्देशीने कहेलो छे. केम के शब्दरचना रूप आ सूत्र उपाय–बोधनुं कारण छे अने तेनुं परिज्ञान उपेय (कार्य) छे–ए तर्कगम्य छे. गुरुपर्वक्रमलक्षण संबन्ध केवळ श्रद्धानुसारी शिष्यने अनुलक्षीने कहेलो छे, तेने सूत्रकार स्वयमेव आगळ कहेशे.

मंगल—आ प्रज्ञापना सूत्र सम्यग्ज्ञाननुं कारण होवाथी अने तेथी ते परंपराए मोक्षपदनुं साधन होवाथी श्रेयरूप छे. तेथी तेमां विघ्न न आवे माटे विघ्नसमूहनी शान्तिनिमित्ते अने शास्त्र मंगल रूप छे एम शिष्यने जणाववा माटे स्वतः मंगल रूप छतां पण शास्त्रनी आदिमां, मध्यमां अने अन्ते मंगल कहेवुं जोईए. शास्त्रनी आदिमां करेलुं मंगल निर्विघ्नपणे शास्त्रनो पार पामवा माटे छे, मध्य मंगल ग्रहण करेला शास्त्रार्थने स्थिर करवा माटे छे, अने अन्त्य मंगल शिष्य–प्रशिष्यादिनी परंपरा वडे तेनो विच्छेद न थाय ते माटे करेलुं छे. ए संबंधे कह्युं छे के—"शास्त्रनी आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां मंगल करवुं जोइए. तेमां आदि मंगल शास्त्रना अर्थनो निर्विघ्नपणे पार पामवा माटे छे. ग्रहण करेला शास्त्रार्थनी स्थिरता माटे मध्यम मंगल छे अने अन्तिम मंगल तेना शिष्य–प्रशिष्यादि वंशनो विच्छेद न थाय ते निमित्ते छे."

द्वितीय स्थान पद २१७–३४०

वाचकवर भगवद्–आर्यश्यामाचार्यविरचित

प्रज्ञापनासूत्र

मूल तथा

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित

टीकाना अनुवादसहित

प्रथम भाग पद १–५

अनुवादक अने संशोधक—पंडित भगवानदास हर्षचन्द्र

संवत् १९९१ मूल्य ५-०-० प्रत ५००

आ पुस्तक पंडित भगवानदास हर्षचन्द्रे पोताना शारदामुद्रणालयमां
छपावी प्रसिद्ध कर्युं. जैनसोसायटी नं. १५, अमदावाद.

निवेदन

प्रस्तुत प्रज्ञापना सूत्रना अनुवाद करवानी शरूआत आजथी लगभग त्रण वरस पहेला करेली, ते वखते मात्र मूळनो अनुवाद अने टीकानो अनुवाद तैयार करी पुस्तकाकारे छपाववा इच्छा हती, परन्तु पाछळथी साधु अने साध्वी वगेरेने आ ग्रन्थ अध्ययनमा वधारे उपयोगी थइ पडे माटे मूळ, तेनो अनुवाद अने टीकाना अनुवाद सहित पत्राकारे बहार पाडवा इच्छा थई अने ते प्रमाणे आजे तेनो प्रथम खंड प्रकाशित थाय छे

आ प्रज्ञापना सूत्र चोथा समवायांगनु उपांग कहेवाय छे, परन्तु अंग घणु संक्षिप्त छे अने प्रज्ञापना घणु विस्तृत छे तेमा छत्रीश विषयो छे अने तेमाना दरेक विषयने पद कहेवामा आवे छे एक एक विषय उपर खूब बारीकीथी अने तलस्पर्शी विचार करेलो छे आ सूत्रना कर्ता वाचकना वंशमा सुधर्मा स्वामीनी त्रेवीशमी पाटे थयेला पूर्वधर आर्यश्यामाचार्य छे अने टीकाकार आचार्य मलयगिरिजी छे अने तेमनो परिचय छेवटे प्रस्तावनामा आपवा इच्छा छे

अत्यारे प्रकाशित थयेला प्रथम खंडमां प्रथमथी आरभी पाच पदो छे—१ प्रज्ञापनापद, २ स्थानपद, ३ अल्पबहुत्वपद, ४ स्थितिपद अने ५ विशेष अथवा पर्याय पद प्रथम प्रज्ञापना पदमा जीव अने अजीव संबन्धी सूक्ष्मपणे सविस्तर विवेचन करेलु छे अने तेथी प्रथम पदनो घणो विस्तार थई गयो छे बीजा स्थानपदमा जीवोना स्थाननु निरूपण करवामा आव्यु छे, त्रीजा अल्पबहुत्व पदमा दिशा, इन्द्रिय, काय वगेरे सत्यावीश द्वारोने आश्रयी अल्पबहुत्व कहेवामां आव्यु छे चोथा स्थितिपदमा दरेक जीवोनी स्थिति–आयुष संबंधे कहेवामा आव्यु छे, अने पाचमा विशेषपदमा जीव अने अजीवना पर्यायो संबंधे कथन छे

आ सूत्रना संशोधनमां आगमोदय समिति तरफथी प्रकाशित थयेल प्रज्ञापना सूत्र सटीक, तथा शांतिसागरना भंडारनी सटीक प्रत अने एक त्रुटित प्रतनो उपयोग करेलो छे, तेमां जे शुद्ध पाठ लाग्यो ते मुक्यो छे अने पाठान्तर क्वचित् क्वचित् आपवामां आवेलां छे.

आ पुस्तक त्रण खंडमां संपूर्ण करवामां आवशे. आ प्रथम खंड पहेलां उत्कृष्टमुद्रणालयमां छापवा आप्यो हतो, अने तेमां प्रथमना सत्तर फोर्म छपायेलां छे, त्यार पछी तेना संचालके केटलीक मुश्केलीओने अंगे काम आगळ चलाववा माटे अशक्ति जणाव्याथी अमारा शारदामुद्रणालयमां छपावी बाकीनो भाग प्रकाशित कर्यो छे. बीजो भाग पण लगभग पूरो थवा आव्यो छे अने जो आगन्तुक विघ्न नहि आवे तो आवता पर्युषणा पर्व पहेला त्रणे भागमां आ पुस्तक पूरुं करवामां आवशे.

आ पुस्तकना संशोधन अने मुद्रणमां काळजी राखवामां आवी छे, छतां बुद्धिदोषथी, दृष्टिदोषथी के त्वराथी छपाववाने लीधे जे भूलो रही होय अथवा सूत्र विरुद्ध लखाण थयुं होय ते माटे क्षमा मागुं छुं, अने विद्वानोने प्रार्थुं छुं के तेओ सूचना करी अनुगृहीत करशे.

छेवटे कर्मग्रन्थना अभ्यासी मारा मित्र भाई हीरालाल देवचंदे प्रेसकोपी जोवामां तथा प्रुफ तपासवामां तेमज प्रकाशनना अंगे उपयोगी सूचना करवामां मने अमूल्य सहाय आपी छे ते माटे तेनी कृतज्ञता पूर्वक अहीं नोंध लइ विरमुं छुं.

शारदाभवन
जैनसोसाइटी–अमदावाद
संवत् १९९१,
चैत्रवदी द्वादशी.

प्रकाशक.

प्रज्ञापना सूत्र-प्रथम भाग

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२४	२	हालिदेवन्न	हालिद्दवन्न-
२५	१	तुचिहा	अट्ठचिहा
८९	१	प्रमा	प्रज्ञा
१९८	५	नोर्थङ्करना नीर्थमा	तीर्थङ्करना तीर्थमा
२०८	८	चतुर्गुरुक (आयंबिल)	चतुर्गुरुक (उपवास)
२२५	६	पञ्जत्त-	पज्जत्त-
२४२	९	नरयिक	नैरयिक
२४२	१२	कृष्णाप्रभा	कृष्णप्रभा
२६०	१०	पञ्चाङ्गुलि	पञ्चांगुलि-
३१२	१०	पलास	पचास
३१३	४	मयखाय	मक्खाय
३२४	१०	वेताळीश	बेंताळीश
३२४	११	विष्कमनो वग	विष्कम्भनो वर्ग
३३०	९	नामे चोथा	नामे त्रीजा
३३२	१	सिद्धो	सिद्धि
३४९	१	तेंद्रिया	तेइंद्रिया
३६०	१५	१३	१२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
३६९	१	सखेज्जगुणा	असंखेज्जगुणा
३६९	७	त्रसकायिको संख्यात	त्रसकायिको असख्यात
३६९	१३	सूक्ष्म अपर्याप्ता सख्यातगुणा	सूक्ष्ममां अपर्याप्ताथी पर्याप्ता सख्यातगुणा
४०५	९	मतिज्ञानी	मतिअज्ञानी
४१०	८	जीयो अने अनन्त	जीयो अनन्ता-
४१०	१३	शक्तिवाळा छे	शक्तिवाळा छे, तेथी भाषा लब्धिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिकायिको अनन्तगुणा छे
४१८	११	आकाशस्तिकाय	आकाशास्तिकाय
४२३	५	तेथी तेथी	तेथी
४४७	८	तिर्य ोकमां	तिर्यग्लोकमा
४९०	६	अन्तोमुहुत्त	अन्तोमुहुत्त
५३४	१३	पगर मुहूर्त	बीजा मुहूर्त
५६५	१	अणता	अणता